प्रकाशक :

प्रभात प्रकाशन,

मथुरा।

☆

१९५७ ई०

☆

☆

अनुवादक :

राजनाथ एम० ए०

☆

मूल्य

तीन रुपया

☆

मुद्रक :

सुभाष प्रिंटिंग प्रेस,

तिलक द्वार,

मथुरा।

गोर्की की श्रेष्ठ कहानियाँ

खण्ड १

दो शब्द

मैक्सिम गोर्की जीवन के निम्नतर स्तर में से उठा था और उसकी कहानिया इतने बड़े सत्य और दर्द से भरी हुई हैं कि वे मिटती हुई रात में से उगते हुए सूरज की तरह नयी आशा से भर उठती हैं। गोर्की रूस का ही नहीं संसार का एक महान लेखक है। उसके पात्र जीवन की पूर्णता, सामाजिक विषमता और मन की गहराइयों को एक साथ प्रगट करते हैं और यही उसकी वह अभूतपूर्व सफलता है जो विरोधियों का भी शीश सम्मान से झुका देती है। जो पढ़ना जानकर गोर्की को नहीं पढ़ता, वह मनुष्य की प्रगति को पहिचानने से इन्कार करता है

—रांगेय राघव

भूमिका

संसार के सबसे बड़े पाँच कथाकार चुने जाय तो उनमें एक नाम मेक्सिम गोर्की का होगा। आधुनिक विश्व प्रगतिशील साहित्य का वह पितामह है। संसार की कोई भी समृद्ध भाषा नहीं है जिसके साहित्यकारों पर थोड़ा बहुत गोर्की का प्रभाव न पड़ा हो।

गोर्की की इस महत्ता का सबसे बड़ा कारण यह है कि उसने समाज के उन वर्गों और लोगों का चित्रण किया जिन्हें साहित्य में जगह न मिली थी, जिनकी मानवता को साहित्यकारों ने पहचाना न था। गोर्की आपको ऐसी दुनियाँ में ले जाता है जहा की विभीषिका देखकर आप सिहर उठते हैं और कहते हैं क्या यह सब भी सम्भव है? मनुष्य के परस्पर सम्बन्ध कितना नीचे गिर सकते हैं, वे मनुष्यता मे कितना रीते हो सकते हैं, इसका अन्दाज गोर्की की रचनाएं पढ़कर लगता है। गोर्की का साहित्य उस समाज-व्यवस्था का तीव्र खण्डन है जिसका आधार व्यक्तिगत सम्पत्ति है, जहा मनुष्य की जगह पैसे की पूजा होती है। गोर्की ने दिखाया है कि इस समाज में मनुष्यता नाम की चीज पैसे वालों के यहां नहीं है। उनके यहाँ हर चीज की कीमत पैसे से आंकी जाती है। वे प्रेम, इन्सानियत, देशभक्ति मानवता आदि की बातें करते हैं लेकिन इनका ऊपरी रूप और कुछ होता है, भीतरी तत्त्व कुछ और। गोर्की ने दिखाया है कि सच्ची मनुष्यता के अंकुर उन लोगों में फूट रहे हैं, जो सम्पत्तिहीन हैं, समाज से परित्यक्त हैं। इनका जीवन पतित है, पशुओं जैसा है, शिक्षा और संस्कृति से वंचित है, फिर भी वह अपने भीतर सच्ची मनुष्यता के अंकुर छिपाये हैं जैसे काली रात के आंचल में भोर की लालिमा छिपी रहती है।

अपने चारों ओर पतन और पीड़ा के दृश्य देखने पर भी गोर्की ने मानव के भविष्य में अडिग विश्वास कायम रखा। मनुष्यता की विजय में

उसकी आस्था कभी नहीं टूटी। इसीलिये वह आगे चलकर सोवियत समाज के विजयी मानव का चितेरा बन गया। जिस संघर्षरत मानव का उसने पहले चित्रण किया था, उसे विजयी होते देखकर उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने कहा साहित्य में अब नये वीरों की गाथा लिखी जायगी और ये वीर समाज हित के लिये स्वाधीनता से श्रम करने वाले वीर होंगे।

गोर्की के जीवन के स्वार्थ और जन साधारण के जीवन के स्वार्थ में कोई अन्तर न था। वह गरीबों के साथ घुल मिलकर रहा, उनके साथ लडा और विजयी हुआ, इसी कारण उसकी लेखनी में इतनी शक्ति है। वह हृदय को इस तरह छू सकती है।

गोर्की की महत्ता का दूसरा कारण यह है कि वह लेखक की जिम्मेदारी समझता था, उसने अपनी कला को सम्हालने के लिये अथक् परिश्रम किया था। वह कला के प्रति उदासीन न था। जनता के सामने जो फेंक दूँगा, वही वह उठा लेगी, यह उसका दृष्टिकोण न था। उसकी कहानियाँ पढ़कर यह पता नहीं लगता कि उसने कितना रूसी, फ्रेंच, अंग्रेजी आदि भाषाओं का साहित्य सीखा होगा। उसने दूसरों से बहुत कुछ सीखा लेकिन इससे उसकी मौलिकता और भी चमक उठी। गोर्की की रचनायें महाकवियों जैसी हैं, उनमें कल्पना की विशदता है, मनुष्य की आदिम भावनाओं का घात प्रतिघात है। उसके चरित्र धरती आकाश के बीच विराट मूर्तियों की तरह हृदय पर अंकित हो जाते हैं। उसकी उपमायें अनूठी हैं, उसकी वर्णन शैली बहुत ही सजीव है।

हिन्दी में गोर्की का जितना ही अनुवाद हो, उतना ही अच्छा। श्री राजनाथ शर्मा ने इन कहानियों का जो सुन्दर अनुवाद किया है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। आशा है पुस्तक से पाठकों का मनोरञ्जन भी होगा और भारतीय मनुष्यता की विजय में उनका विश्वास और भी दृढ होगा।

—रामविलास शर्मा

कथा-सूची





चेलकश

नीला दक्खिनी आसमान, धूल से ढका होने के कारण सीसे के से रङ्ग का दिखाई दे रहा था। गर्मियों का सूरज सुन्दर धुँधले परदे में से नीचे हरे रङ्ग के समुद्र पर झांक रहा था। परन्तु उसका प्रतिबिम्ब समुद्र के पानी में पड़ा धुँधला दिखाई दे रहा था, जो नाव की पतवारों की चोट से, जहाजों के पंखों से, तुर्की मछली मारने वाली नावों की पेंदी में लगे लम्बे शहतीरों से तथा और बहुत से दूसरे जहाजों, स्टीमरों आदि के कारण जो उस बन्दरगाह में आ जा रहे थे, झागों से भर उठा था। सख्त पत्थर की दीवालों से घिरी हुई लहरें, जो पानी के ऊपर चलने वाले भारी जहाजों के कारण उत्पन्न हो रही थीं, जहाजों के किनारों और तट से टकरा कर लौट आती थीं! वे गरजती और व्याकुल होकर झाग डालती थीं। पानी में चारों तरफ कूड़ा करकट बहता हुआ दिखाई पड़ता था।

लंगरों की जंजीरों की खनखनाहट, सामान को ढोने वाले रेल के डिब्बों के आपस में टकराने की आवाज, पत्थरों के ऊपर खींची जाती हुई लोहे की चद्दरों की कर्कश ध्वनि, लकड़ियों की आपस में टकराने की और गाड़ियों के चलने की, जहाजों की सीटियों की कान के परदे फाड़ने वाली कर्कश ध्वनि जो धीमी होकर धीरे धीरे एक गूंज के रूप में शेष रह जाती थी, जहाजों से माल उतारने और चढ़ाने के प्लेट फार्म पर काम करने वाले मजदूरों, मल्लाहों

और फौजी चुँगी के पहरेदारों आदि की ऊँची आवाजें, कार्य व्यस्त दिवस के उस अद्भुत शोरोगुल से भरे हुए कर्कश संगीत में मिलकर काँपती और लहराती हुई उस बन्दरगाह के वातावरण में गूँजती रहती थीं और उस बन्दरगाह के आस पास बसी हुई बस्ती से दूसरे प्रकार के शोरोगुल की लहरें उठतीं, उसमें मिलकर गूँजतीं और लहरातीं जिससे वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण एक विचित्र प्रकार की ध्वनियों की लहरों से काँपता रहता। कर्कश चीख पुकार की ध्वनियाँ वहाँ की गर्दभरी और गर्म हवा को चीरती रहतीं।

दीवालों के पत्थर, लोहा, लकड़ी, सड़क पर बिछे हुए ऊँचे नीचे रोड़े, जहाज, आदमी आदि सब जीवन देवता के प्रति गायी गई इस कर्कश प्रार्थना के स्वर को पीते रहते। परन्तु मनुष्यों की आवाजें, जो इस शोरोगुल में मुश्किल से सुनाई पड़तीं, बहुत धीमी और हास्यप्रद सी लग रही थीं। और वही आदमी, जिन्होंने इस भयकर शोरोगुल को उत्पन्न किया था, अत्यन्त दीन और हास्यजनक से प्रतीत हो रहे थे। उनके गन्दे कंकालवत् दुबले पतले शरीर जो अपनी पीठ पर सामान ढोते ढोते झुक गए थे उस धूल के गुब्बार, गर्मी और शोर से भरे हुए वातावरण में इधरसे उधर रेंगते से दिखाई देते। उन लोहे की विशालकाय दैत्यों जैसी मशीनों, सामान के ऊँचे ढेरों खड़खड़ाते हुए रेल के डिब्बों और उनके चारों तरफ फैली हुई उन वस्तुओं की तुलना में, जिन्हें स्वय उन्होंने पैदा किया था, वे मनुष्य अत्यन्त तुच्छ और उपेक्षित से लगते थे। उन चीजों ने, जिन्हें उन्हीं लोगों ने बनाया था, उन्हें गुलाम बना लिया था और उनके व्यक्तित्व को विकृत कर उन्हे नष्ट कर दिया था।

बड़े २ विशालकाय दैत्यों जैसे स्टीमर, समुद्र में खड़े चीखते, फुफकारते और गहरी साँसें सी लेते थे। उनके द्वारा उत्पन्न किये हुए प्रत्येक शब्द में उन मनुष्यों की काली धूल धूसरित शक्लों के प्रति एक घृणा और उपेक्षा की भावना भरी होती थी, जो वहाँ पर रेंगते हुए, गुलामों की तरह दूसरों के लिए किए हुए परिश्रम से उत्पन्न वस्तुओं से, गहरे गोदामों को

भर रहे थे। मजदूरों की लम्बी कतारें, जो अपनी पीठ पर लाखों मन अनाज से भरे हुए बोरों को ढोकर जहाजों के लोहे के गोदामों को भर रहे थे—केवल इसलिए कि उन्हें इसके बदले में अपना पेट भरने के लिए अनाज के कुछ दाने मिल जायेंगे—ऐसी विचित्र सी लगतीं कि उन्हें देखकर हरेक की आँखों में आँसू छलछला उठते उस वातावरण का वह विरोधी दृश्य जो इन कङ्काल जैसे कृश शरीरों वाले मनुष्यों के पसीने से भरे हुए शरीरों, जो थकावट, शोर और गरमी से अशक्त हो रहे थे और उन विशाल शक्तिशाली सूर्य की रोशनी में चमकती हुई मशीनों की तुलना से उत्पन्न हो रहा था, जिन्हें इन्हीं लोगों ने बनाया था और जो भाप से न संचलित होकर इन्हीं लोगों के रक्त और शक्ति से चल रही थीं। यह सम्पूर्ण दृश्य एक क्रूर एवं कठोर काव्य सा प्रतीत हो रहा था।

वह व्यग्र बना देने वाला कोलाहल, वह गर्द का गुब्बार जो साँस लेने में कष्ट देता और आँखों को अन्धा बनाता, झुलसाने और पूर्ण रूप से क्लान्त बना देने वाली गर्मी और वहाँ की प्रत्येक वस्तु भयंकर अस्थिरता का ऐसा वातावरण उपस्थित कर रही थी जो एक भयंकर विस्फोट का रूप धारण करने को प्रस्तुत था। एक ऐसा भयंकर विस्फोट जो वहाँ की दूषित वायु को शुद्ध कर उसे स्वतन्त्रतापूर्वक 'साँस लेने के योग्य बना देता जिसके पश्चात् सम्पूर्ण पृथ्वी पर एक शान्ति का साम्राज्य छा जाता और यह गर्दगुब्बार से भरा हुआ, बहरा, चिड़चिड़ा और क्षुब्ध बना देने वाला कोलाहल समाप्त हो जाता ऐसा। होने पर नगर,समुद्र और आकाश बिल्कुल स्वच्छ, शान्त और भव्य बन जाते।

धीरे २ एक घड़ी ने बारह घन्टे बजाये। जब उनकी लहराती ध्वनि हवा में विलीन हो गई तो मजदूरों का वहशी संगीत मधुर और शान्त प्रतीत होने लगा और कुछ समय उपरान्त एक असन्तोषपूर्ण भनभनाहट में बदल गया। आदमियों की आवाजें और समुद्र का स्वर स्पष्ट सुनाई देने लगा। अब दोपहर के खाने का समय हो गया था।

१

बन्दरगाह में काम करने वाले मजदूरों ने काम समाप्त कर दिया और गपशप करने वाले झुन्डों में बंट कर वे इधर उधर बिखर गये। बिखर कर उन्होंने बेचने वाली औरतों से कुछ खाने का सामान खरीदा और छायादार स्थानों में पड़े हुए पत्थरों पर बैठ कर खाने लगे। उसी समय ग्रिसका चेलकश वहाँ आया जो यहाँ का पुराना काम करने वाला था और जिसे यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि वह एक पक्का शराबी, चतुर और सहासी चोर है। वह नगे पैर था। वह पैरों में एक फटा हुआ खुरदरे कपड़े का बना पजामा पहने हुए था। सिर पर टोपी भी नहीं थी। उसकी मैली कमीज, जिसका कालर फट गया था, छाती पर खुली हुई थी जिससे उसकी गले की दुबली पतली हड्डियों पर चढ़ी हुई साँवली चमड़ी दिखाई दे रही थी। उसके बिखरे हुए काले बाल, जिनमें कहीं कहीं सफेदी आ गई थी और उसका झुर्रीदार लालची चेहरा यह बता रहा था कि वह अभी सोकर आया है। उसकी भूरी मूँछों में एक तिनका अटका हुआ था। उसके बाँये गाल पर उगे हुए सूअर के से कड़े बालों में भी एक तिनका उलझा हुआ था। उसके एक कान के पीछे ताजी दातौन अटकी हुई थी। लम्बा, दुर्बल, गोल कन्धों वाला वह व्यक्ति सड़क के पत्थरों पर धीरे धीरे चला आ रहा था। चलते समय वह अपनी बाज की सी लम्बी और तीखी नाक चढ़ाता हुआ अपनी सतर्क, भूरी और चमकदार आँखों से इधर उधर निगाह डाल रहा था जैसे उन मजदूरों में किसी को ढूँढ रहा हो। रह रह कर उसकी लम्बी घनी भूरी मूछें खड़ी हो जातीं, पीठ पर किए हुए दोनों हाथों को वह कभी २ रगड़ने लगता और उसकी लम्बी टेढ़ी उँगलियाँ आपस में उलझ उठतीं। यहाँ भी जहाँ उसके जैसे सैकड़ों सूखे चेहरों वाले व्यक्ति थे, वह अपनी उन लालची आँखों के कारण जो बाज की सी थीं, तुरन्त पहचान लिया जाता। उसकी वह सतर्क चाल जो ऊपर से देखने पर शान्त मालूम पड़ती परन्तु जिसमें एक विचित्र बेचैनी और सतर्कता

भरी हुई थी जैसी शिकारी चिड़ियों में पाई जाती हैं, यह संकेत करती कि वह एक छुटा हुआ बदमाश है।

जब वह नंगे पैरों वाले एक मजदूरों के झुण्ड के पास आया जो कोयले ढोने की टोकरियों के एक ढेर की छाया में बैठा हुआ था, एक मोटा लड़का जिसके बुद्धू चेहरे पर घावों के लाल निशान बने हुए थे और गर्दन पर ताजे पड़े हुए खरोंचों के निशान थे, उससे मिलने के लिए उठ खड़ा हुआ। चेलकश के साथ-साथ चलते उहु उसने धीमी आवाज में कहा—

"मल्लाहों की दो कपड़े की गाँठें खो गई हैं ...... वे उन्हें ढूँढ रहे हैं।"

"तो फिर ?" चेलकश ने लड़के को ऊपर नीचे देखते हुए कहा।

"तो फिर" से तुम्हारा क्या मतलब है ? मैं कहता हूँ कि वे उनकी तलाश कर रहे हैं। समझे, मुझे केवल यही कहना था।"

"क्या ? क्या वे इस काम में मुझसे मदद माँगने के विषय में कुछ कह रहे थे ?"

चेलकश मुस्कराया और उसने जहाजी पुलिस के स्टेशन को ओर देखा।

"जहन्नुम में जाओ "

लड़का वापस जाने के लिये मुड़ा लेकिन चेलकश ने यह कहते हुए उसे रोका—

"ए ! तुम तो आज पूरा तमाशा बने हुए हो ? तुम्हारा यह चौखटा किसने बिगाड़ दिया है ?" और फिर उसने पूछा—"क्या तुमने यहीं कहीं मिश्का को देखा है ?"

"उसे तो बहुत अरसे से नहीं देखा है ?" दूसरे ने चिड़चिड़ाते हुए कहा—और चेलकश को अकेला छोड़कर अपने साथियों के पास चला गया।

चेलकश आगे बढ़ा। हरेक ने पुराने परिचित के समान उसको दुआ सलाम की। परन्तु आज वह कुछ चिड़चिड़ा हो रहा था, इसलिये अपनी आदत के अनुसार हँसी मजाक में उत्तर न देकर वह उन पर गुर्राता-सा जा रहा था।

अकस्मात सामने के एक ढेर के पीछे से एक गहरी हरी मैली वर्दी पहने हुए, कठोरता की साक्षात् प्रतिमा के समान चुङ्गी का सिपाही निकल आया। वह दृढ़ता पूर्वक चेलकश का रास्ता रोक कर उसके सामने खड़ा हो गया। एक हाथ से उसने अपनी तलवार की मूँठ पकड़ी और दूसरा चेलकश का कालर पकड़ने के लिये बढ़ाते हुए कहा—

"रुको ! तुम कहाँ जा रहे हो ?"

चेलकश एक कदम पीछे हट गया और उस सिपाही के खुश मिजाज परन्तु चालाक चेहरे की ओर देखकर फीकी सी हँसी हँसा।

उस चुङ्गी के सिपाही ने अपने चेहरे पर कठोरता लाने के लिये अपने गोल फूले हुए लाल गालों को फुलाया, भौंहों में गाँठ दी और आँखों को भयङ्करता पूर्वक नचाया, परन्तु इससे उसका चेहरा हास्यास्पद सा लगने लगा। वह वास्तव में कठोर न बन सका।

"मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि तुम यहाँ मत घूमा करो। मैंने यह भी कहा था कि यदि मैंने तुम्हें पकड़ लिया तो तुम्हारी पसलियाँ तोड़ दूँगा। परन्तु फिर तुम यहाँ दिखाई दे रहे हो !" वह चीखा।

"कहिये आपके कैसे मिजाज हैं, महाशय सेमियोनिच ! आज बहुत दिनों बाद मुलाकात हुई।" चेलकश ने अत्यन्त मधुरतापूर्वक मिलाने के लिये हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

"अगर मैं तुम्हें एक शताब्दी तक न देखूँ तो भी मेरा हृदय तुम्हारे वियोग में फटेगा नहीं। यहाँ से भाग जाओ।"

इतने पर भी सेमियोनिच ने उसका आगे बढ़ाया हुआ हाथ अपने हाथ में लेकर हिलाया।

"मुझे बताओ," चेलकश ने सेमियोनिच का हाथ अपनी मजबूत उङ्गलियों से पकड़ कर मित्रतापूर्वक हिलाते हुए पूछा—"यहाँ कहीं तुमने मिश्का को देखा है ?"

"कौन मिश्का? मैं किसी मिश्का को नहीं जानता! तुम यहाँ से भाग जाओ, भाई, वर्ना यदि गोदाम के सन्त्री ने तुम्हें देख लिया तो वह......"

'वह लाल बालों वाला आदमी जिसके साथ पिछली बार मैंने कोस्ट्रोमा में काम किया था।"

'वह जिसके साथ तुम चोरी करने जाया करते थे, वही न? वे तुम्हारे उस मिश्का को अस्पताल ले गए। उस दुर्घटना में उसकी एक टाँग टूट गई थी। अच्छा हजरत अब आप यहाँ से चलते बनिये जब तक कि मैं भले आदमियों की तरह से कह रहा हूँ वर्ना अभी गर्दन में धक्का देकर निकाल दूंगा"

"यह बात है! और तुम कह रहे थे कि तुम मिश्का को नहीं जानते। बहरहाल तुम उसे जानते तो हो। अच्छा, तुम इतने उत्तेजित किस बात पर हो रहे हो, सेमियोनिच?

'अच्छा, अच्छा मुझे बातों में फंसाने की कोशिश मत करो! भाग जाओ यहाँ से, मैं तुम से कहे देता हूँ।'

सिपाही क्रुद्ध हो उठा था। चारों तरफ देखते हुए उसने चेलकश की पकड़ से अपना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न किया। परन्तु चेलकश अपनी घनी भौंहों के नीचे से शान्ति पूर्वक उसकी ओर देखता रहा। और उसका हाथ और मजबूती से पकड़ कर कहता गया:

'मुझे धक्का मत दो! मैं अपनी पूरी बात कह कर चला जाऊँगा! अच्छा पहले यह बताओ कि तुम्हारे दिन कैसे कट रहे हैं। आज कल बच्चे ठीक हैं न?" चमकती आँखों और व्यंग्य के साथ हंसते हुये उसने कहा. "मैं बहुत दिनों से तुम से मिलना चाह रहा था परन्तु इधर बहुत व्यस्त रहा—मगर पीने में......।"

"अच्छा, अच्छा! यह सब बकवास बन्द करो! अपने मजाकों को रहने दो, शैतान। मैं तुम्हारी खोपड़ी गर्म कर दूँगा अगर तुम नहीं गए तो. क्या! तुम्हारा इरादा दफ्तरों और मकानों में चोरी करने का है?"

'कुछ भी हो ? यहाँ इस काम के लिये बहुत सामान पड़ा हुआ है। बहुत अधिक सेमियोनिच ! मैंने सुना है कि तुमने कपड़े की दो गाँठें फिर उड़ादीं। सावधानी से काम करो, सेमियोनिच ! देखो, तुम कहीं पकड़े न जाओ ?"

सेमियोनिच गुस्से से काँपने लगा। उसके मुँह मे झाग भर आया और उसने कुछ कहने की कोशिश की। चेलकश ने उसका हाथ छोड़ दिया और लम्बी डगें भरता अन्धेरे दरवाजे की ओर चल दिया। सतरी गालियाँ देता हुआ उसके पीछे चला।

चेलकश प्रसन्न होकर मुँह से सीटी के स्वर में कुछ गुनगुनाने लगा। दोनों हाथ पतलून की जेबों में डाले वह बड़े इत्मीनान से चलने लगा और चलता हुआ रास्ते में मिलने वालों पर ताने कसता और उत्तर में वैसे ही तानें सुनता चलता चला गया।

"ए मिश्का ! देखो मालिक तुम्हारी कितनी फिकर रखते हैं।" आदमियों के एक झुँड में से, जो खाना खाने के बाद वहाँ सुस्ता रहा था, एक मज़दूर ने चिल्ला कर कहा।

"मेरे पैरों में जूते नहीं है इसलिये सेमियोनिच देख रहा है कि कहीं मेरा पैर किसी नुकीली चीज पर पड़ कर कट न जाय।" चेलकश ने उत्तर दिया।

वे फाटक पर पहुँच गये। दो सिपाहियों ने चेलकश के कपड़ों की तलाशी ली और तब धीरे से उसे सड़क पर धक्का देकर निकाल दिया। चेलकश ने सड़क पार की और एक सराय के सामने पड़े हुए पत्थर पर बैठ गया। बन्दरगाह के फाटक से सामान से भरी हुई गाड़ियों की एक कतार निकली। एक दूसरी खाली गड़ियों की कतार बाहर की तरफ से आई। उनके गाड़ीवान अपनी सीटों पर बैठे हुए हिचकोले खा रहे थे। बन्दरगाह से भयकर कोलाहल और धूल का गुब्बारा बाहर आ रहा था।

इस उन्मत्त कोलाहल में चेलकश ने अपनी मूल बात सोची। गहरा फायदा, जिसके लिये कम मेहनत परन्तु अधिक बुद्धिमानी की जरूरत थी, उसके सम्मुख मुस्करा रहा था। उसे अपनी चतुरता पर पूरा विश्वास था।

आँखें सिकोड़ते हुए उसने उस आनन्द और उत्सव की कल्पना की जो उसे कल सुबह प्राप्त होगा जब कि उसकी जेबें नोटों से भरी होंगी। उसने अपने साथी मिश्का के विषय में सोचा। उस रात को वह उसके लिये बहुत लाभ-दायक सिद्ध होता यदि उसकी टाँग न टूट गई होती। उसने यह सोच कर मन ही मन गालियाँ दीं कि वह आज मिश्का के बिना अपना काम करने में सफल हो सकेगा या नहीं। उसे ताज्जुब हुआ कि रात को भी ऐसा ही मौसम रहेगा या नहीं। उसने आकाश की ओर देखा, फिर अपनी निगाहें नीची कर सड़क की ओर देखने लगा।

उससे लगभग छः कदम की दूरी पर, मोड़ के पास पत्थरों का सहारा लिए एक लड़का बैठा हुआ था। वह हाथ की बुनी हुई नीली कमीज और उसी कपड़े की पतलून पहने हुए था। उसके जूते फटे हुए थे और सिर पर बिल्कुल फटी हुई भूरी टोपी थी। उसकी बगल में एक छोटा सा थैला और बिना मुँह का एक हँसिया घास में रस्सी से भली प्रकार बँधा हुआ पड़ा था। उस लड़के के कन्धे चौड़े, बाल घने और सुन्दर, धूप से साँवला पड़ा हुआ चेहरा और बड़ी बड़ी नीली आँखें थीं जिनसे वह चेल-कश की ओर विश्वासपूर्वक देख रहा था।

चेलकश ने अपने दाँत फाड़े, जीभ निकाली और भयंकर चेहरा बना कर उसकी ओर घूर कर देखने लगा। पहले तो अचकचा कर उस लड़के ने चेलकश की ओर देखा परन्तु फिर अचानक जोर से हँस पड़ा और चिल्ला कर बोला—'तुम बड़े अजीब से लग रहे हो" और फिर थोड़ा सा उठ कर अजीब तरह से वह चेलकश की ओर खिसका और अपने साथ ही थैला और हँसिए को भी पत्थरों पर घसीटता लाया।

"क्या शायद पीकर आ रहे हो, भाई?" उसने चेलकश के पैरों में लिपट कर पूछा।

"हाँ, बच्चे कुछ ऐसा ही मालूम है।" चेलकश ने मुस्कराते हुए स्वीकार किया। अचानक इस बच्चे की सी निर्दोष आँखों वाले सुन्दर, स्वस्थ लड़के के प्रति उसके मन में स्नेह की भावना उत्पन्न हो उठी।

"क्या तुम घास काटने गये थे ?" उसने पूछा।

हाँ ! · परन्तु इसमें मिहनत अधिक थी और पैसा कम। मैं इसमें कुछ भी न कमा पाया। और वे आदमी। वे सैकड़ों की तादाद में थे ! वे लोग अकाल वाले जिलों से यहाँ भर आये और उन्होंने कीमतें कम करा दीं। फिर इस काम में रह ही क्या गया था। क्रुबान में वे केवल साठ कोपेक देते थे। यह मजदूरी कितनी कम थी !··· · और वे कहते हैं कि वे पहले तीन, चार और पाँच रूबल तक मजदूरी देते थे।"

"पहले ! पहले तो वे तीन रूबल एक रूसी की शक्ल देख कर ही दे देते थे में दस साल पहले खुद यहाँ काम करता था—मैं उन लोगों के पास जाता और कहता—मैं एक रूसी हूँ। वे मुझे ऊपर से नीचे तक देखते, मेरी बाँहों को टटोलते और आश्चर्य पूर्वक सिर हिलाते हुए कहते अच्छा ये तीन रूबल लो ! और उसके बाद वे खाना और शराब देते और जब तक मन चाहे तब तक रहने के लिये आग्रह करते।"

चेलकश की इन बातों को वह लड़का मुँह फाड़े, अपने गोल चिकने मुँह पर आश्चर्य और श्रद्धा के भाव लिए सुन रहा था। परन्तु शीघ्र ही उसे मालूम हो गया कि यह बदमाश उसका मजाक उड़ा रहा है। यह जान कर वह बड़ी जोर से हँस पड़ा। चेलकश मूछों में अपनी मुस्कराहट को छिपाये गम्भीर बना रहा।

"मैं जैसे मूर्ख हूँ ? तुम ऐसे बात कर रहे हो जैसे सब कुछ सच है और मैं उसे सुन कर सच समझ रहा हूँ। परन्तु' फिर भी, वहाँ पहले हालत अच्छी थी।"

"अच्छा और मैं क्या कह रहा हूँ ? क्या मैंने यह नहीं कहा कि पहले हालत ··· "

'मुझे बहलाओ मत !" हाथ के इशारे से लड़के ने उसे टोकते हुए कहा—"तुम कौन हो—मोची ? या दर्जी ? मेरा मतलब तुमसे है।"

'मैं ?' चेलकश ने पूँछा और एक क्षण सोच कर बोला—"मैं मछुआ हूँ"

"मछुआ ? ऐसी बात है। अच्छा तो तुम मछली पकड़ते हो ?"

"मछली ? मछली ? यहाँ के मछुए केवल मछली ही नहीं पकड़ते अधिकतर वे समुद्र में डूबे हुए शरीर, खोए हुए लंगर, डूबे हुए जहाज और इसी तरह की दूसरी चीजें ढूँढते हैं। इस काम के लिए उनके पास एक विशेष प्रकार के काँटे होते हैं ...."

"वाह ! यह सब झूठ है......मछुए तो वे होते हैं जिनके विषय में एक गीत में कहा गया है-' सागर के गर्म तट पर हम अपने जाल फँसाते हैं और खलिहानों तथा गोदामों पर हम जाल डालते हैं......"

"क्या तुम कभी ऐसे मछुओं से मिले हो ?" लड़के की ओर कठोरता पूर्वक देखते हुए मुस्कराहट के साथ चेलकश ने पूछा।

"उन्हे देखा है ? हाँ, उन्हें मैं कहा देखता ? लेकिन मैंने उनके विषय में सुना है......."

"तुम्हारा उनके विषय में क्या ख्याल है ?......"

"तुम्हारा मतलब है, उस तरह के मछुओं के विषय में ... .वे बुरे आदमी नहीं होते। वे आजाद हैं। उन्हें इस बात की आजादी है......"

"आजादी से तुम्हें क्या मतलब ? क्या तुम्हें आजादी पसंद है ?"

"तुम्हारा क्या ख्याल है ? खुद अपना मालिक होना। जहाँ चाहो वहाँ जाओ, जो चाहो वह करो, मुझे तो ऐसा ही चाहिए। तुम बिल्कुल आजाद होगे, तुम्हारे गले में गुलामी की जन्जीर नहीं होगी। समय अच्छा बीतेगा किसी बात की चिन्ता नहीं होगी। केवल मन में भगवान का ध्यान रखो। इससे अच्छा और क्या हो सकता है ?"

चेलकश ने घृणा पूर्वक थूका और अपना मुँह दूसरी तरफ घुमा लिया।

"मुझे तो यह ऐसा भी लगता है," लड़के ने कहना जारी रखा, "मेरा बाप मर गया है हमारे पास एक छोटा सा खेत है। मेरी माँ बुढ़िया है। जमीन सब सूख गई है। मैं क्या करूँ मुझे जिन्दा तो रहना ही है। परन्तु कैसे ? मैं नहीं जानता। मैं अपने आप सोचता हूँ कि मैं किसी घर पर

में जाकर वहाँ का घर- जमाई बन कर रहूँ। लेकिन इससे फायदा क्या? अगर ससुर अपनी लड़की को जायदाद में से एक अच्छा सा हिस्सा दे दे तो सब ठीक हो जाय और हमारी गृहस्थी जम जाय। परन्तु क्या तुम सोचते हो कि वह ऐसा करेगा। रत्ती भर भी नहीं। वह शैतान सब कुछ अपने लिए रख कर मुझ से केवल गुलामी करवाना चाहता है
वर्षों तक। तुम समझे मेरा मतलब? लेकिन यदि मैं सौ या डेढ़ सौ रूबल कमालूँ तो मैं आजाद हो जाऊँगा और अपने ससुर से कह दूँगा कि हजरत आप अपनी जायदाद अपने पास रखिए–मुझे नहीं चाहिये। अगर तुम मार्था को एक हिस्सा दे दोगे तो ठीक है लेकिन अगर तुम नहीं दोगे तो भगवान को धन्यवाद दो कि गाँव में वही एक अकेली लड़की नहीं है! फिर मैं पूर्ण स्वतन्त्र हूँगा। अपनी मर्जी का मालिक हाँ।" लड़के ने गहरी साँस ली और कहने लगा–"लेकिन अब मैं क्या कर सकता हूँ! कुछ भी नहीं। मुझे जाकर एक ससुर की गुलामी करनी पड़ेगी। मैंने सोचा था कि कुबान जाकर दो सौ रूबल कमा लूँगा और फिर सब कुछ ठीक हो जायगा। मैं एक भले आदमी की तरह रह सकूँगा। परन्तु मैं कुछ भी न कमा सका। इसलिये मुझे फिर मजदूरी ही करनी पड़ेगी। अब मैं अपना निजी खेत नहीं रख सकूँगा! आह, खैर!"

यह बिल्कुल स्पष्ट था कि वह लड़का किसी भी दशा में ऐसा दामाद बन कर नहीं रहना चाहता था क्योंकि जैसे ही उसने कहना समाप्त किया उसके चेहरे पर दुख के बादल छा गये और वह व्याकुल होकर धरती पर लेट गया।

चेलकश ने उससे पूछा –"अब तुम्हारा कहाँ जाने का इरादा है?"

"घर! और कहाँ जाऊँगा!"

"मुझे क्या मालूम? तुम तुर्की भी जा सकते हो?"

"तु-र-की?" आश्चर्य में भर कर वह बड़बड़ाया— "क्या ईसाई भी तुर्की जाते हैं! यह बात कहने में कितनी अच्छी लगती है।"

"तुम बेवकूफ हो !" एक गहरी सांस लेते हुए चेलकश ने कहा और फिर अपना सिर दूसरी ओर फेर लिया। इस ढबंग लड़के ने उसके हृदय में एक हलचल सी पैदा कर दी थी।

उसने अपने पेट में हलकी परन्तु निरन्तर बढ़ती हुई भयकर पीड़ा का अनुभव किया जिसके कारण वह उस काम पर अपना ध्यान जमाने में असमर्थ रहा जिसे वह उस रात करने जा रहा था।

उस गाली से उत्तेजित होकर जो उसे अभी दी गई थी, वह लड़का धीरे से कुछ बुदबुनाया और चेलकश की ओर तिरछी निगाहों से देखने लगा। उसने गुस्से से होंठ फड़फड़ाए, गाल फुलाए और बड़े हास्यास्पद ढंग से जल्दी जल्दी आँखें मिचमिचाने लगा। इस गंवार से इतनी आत्मीयता-पूर्वक बातें कर चेलकश बहुत निराश हुआ था। परन्तु गंवार लड़के ने उसकी ओर फिर ध्यान नहीं दिया। वह अपने विचारों में खोया हुआ उस पत्थर पर बैठा रहा और धीमी आवाज में अपनी एड़ी से ताल देता हुआ गाता रहा।

लड़का उस गाली का बदला लेना चाहता था।

"ए, मछुए ! क्या तुम अक्सर शराबखाने जाते हो ?" उसने कहना प्रारम्भ किया परन्तु उस 'मछुए' ने अचानक उसकी ओर मुड़कर पूछा : "बच्चे ! सुनो, क्या तुम आजरात को मेरे साथ कुछ काम करना चाहते हो ? जल्दी बताओ।"

"कैसा काम ?" शंकित होकर लड़के ने पूछा।

क्या मतलब है तुम्हारा, कैसा काम ? कोई भी काम मैं तुम्हें बताऊँ । हम लोग मछली पकड़ने जायेंगे। तुम नाव चलाओगे।"

"ओह, ठीक है ! काम इतना बुरा तो नहीं है। मैं काम करने के लिए तैयार हूँ लेकिन ......मैं तुम्हारे साथ कहीं किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ जाऊँगा ? तुम बड़े गहरे आदमी मालूम पड़ते हो। तुम्हें समझना बड़ा मुश्किल है।"

चेलकश ने पुनः अपने सीने में तीखी जलन का अनुभव किया।

में जाकर वहाँ का घर-जमाई बन कर रहूँ। लेकिन इससे फायदा क्या? अगर ससुर अपनी लड़की को जायदाद में से एक अच्छा सा हिस्सा दे दे तो सब ठीक हो जाय और हमारी गृहस्थी जम जाय। परन्तु क्या तुम सोचते हो कि वह ऐसा करेगा। रत्ती भर भी नहीं। वह शैतान सब कुछ अपने लिए रख कर मुझ से केवल गुलामी करवाना चाहता है
वर्षों तक। तुम समझे मेरा मतलब? लेकिन यदि मैं सौ या डेढ़ सौ रूबल कमालूँ तो मैं आजाद हो जाऊँगा और अपने ससुर से कह दूँगा कि हजरत आप अपनी जायदाद अपने पास रखिए—मुझे नहीं चाहिये। अगर तुम भार्या को एक हिस्सा दे दोगे तो ठीक है लेकिन अगर तुम नहीं दोगे तो भगवान को धन्यवाद दो कि गाँव में वही एक अकेली लड़की नहीं है! फिर मैं पूर्ण स्वतंत्र हूँगा। अपनी मर्जी का मालिक हाँ।" लड़के ने गहरी साँस ली और कहने लगा—"लेकिन अब मैं क्या कर सकता हूँ! कुछ भी नहीं। मुझे जाकर एक ससुर की गुलामी करनी पड़ेगी। मैंने सोचा था कि कुबान जाकर दो सौ रूबल कमा लूँगा और फिर सब कुछ ठीक हो जायगा। मैं एक भले आदमी की तरह रह सकूँगा। परन्तु मैं कुछ भी न कमा सका। इसलिये मुझे फिर मजदूरी ही करनी पड़ेगी। अब मैं अपना निजी खेत नहीं रख सकूँगा! आह, खैर!"

यह बिल्कुल स्पष्ट था कि वह लड़का किसी भी दशा में ऐसा दामाद बन कर नहीं रहना चाहता था क्योंकि जैसे ही उसने कहना समाप्त किया उसके चेहरे पर दुख के बादल छा गये और वह व्याकुल होकर धरती पर लेट गया।

चेलकश ने उससे पूछा—"अब तुम्हारा कहाँ जाने का इरादा है?"

"घर! और कहाँ जाऊँगा!"

"मुझे क्या मालूम? तुम तुर्की भी जा सकते हो?"

"तु-र-की?" आश्चर्य में भर कर वह बड़बड़ाया—"क्या ईसाई भी तुर्की जाते हैं! यह बात कहने में कितनी अच्छी लगती है।"

"ओह ! मुझे इस बात की कोई चिन्ता नहीं," उसने कहा, "मैं किसी काम की तलाश में हूँ। मेरे लिये यह एक ही बात है कि मैं तुम्हारे लिए काम करूँ या किसी और के लिये। मैं केवल यही कहना चाहता था कि········ तुम एक मजदूर जैसे दिखाई नहीं पड़ते। तुम··· ···तुम तो एक भिखारी की तरह लगते हो। हाँ, यह सच है कि किसी भी आदमी की ऐसी हालत हो सकती है। ओह ! मैंने जीवन में बहुत से शराबी देखे हैं ···· बहुत से। और कुछ तो तुम से भी गये बीते हैं !"

"अच्छा, ठीक है, ठीक है, तो तुम तैयार हो," चेलकश ने नम्रतापूर्वक उसकी बात काटते हुए कहा।

"मैं ? क्यों मैं तैयार हूँ ! खुशी से ! लेकिन मुझे कितना पैसा मिलेगा ?"

"मैं काम के नतीजे को देखकर पैसा देता हूँ। यह नतीजे पर निर्भर करता है······जितनी भी मछली फस जाँय। समझे न ? तुम्हे पाँच रूबल भी मिल सकते हैं। इतना काफी होगा ?"

अब जब कि पैसे का मामला आ गया था यह किसान पक्की बात कर लेना चाहता था और अपने मालिक से भी पक्का वायदा चाहता था इसलिये पुनः उसके दिमाग में अविश्वास और शङ्का उत्पन्न हुई। "नहीं, यह मेरे योग्य नहीं, भाई !"

चेलकश ने फिर अपना अभिनय प्रारम्भ किया।

"बहस मत करो। ठहरो ! चलो, शराबखाने चलें ?" उसने कहा।

वे साथ साथ सड़क पर चलने लगे। चेलकश मालिक के से गर्व से अपनी मूँछें ऐंठने लगा। लड़के के चेहरे से नौकर का सा आज्ञापालन का भाव टपक रहा था और साथ ही साथ पूर्ण अविश्वास और भय भी।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" चेलकश ने उससे पूछा।

"गेव्रीला," लड़के ने जवाब दिया।

जब वे उस धुँए से काले पड़े हुए सीलनदार शराबखाने में घुसे

गुस्से से परन्तु धीमी आवाज में वह बोला—'तब जिस बात को तुम नहीं समझते उसके विषय में बातें मत करो। अगर तुम होश की बातें नहीं करोगे तो मैं तुम्हारी खोपड़ी में ऐसा डंडा जमाऊंगा जिससे तुम्हारी समझ में सब कुछ आ जायगा।"

उसकी आँखें चमकने लगीं। वह उस पत्थर पर से कूद कर खड़ा हो गया, बाँए हाथ की उंगलियों से अपनी मूंछें ऐंठी और दाहने हाथ की मुट्ठी मार कर घूंसा ताना। लड़का डर गया। उसने जल्दी से चारों ओर देखा, दीनता पूर्वक आँखें झपकाई और कूद कर खड़ा हो गया। दोनों एक दूसरे की ओर देखते हुए चुपचाप आमने सामने खड़े रहे।

"अच्छा!" चेलकश ने कठोरता से पूछा। वह उस अनुभव हीन गवार लड़के से अपमानित होने के कारण गुस्से से काँप रहा था जिससे बात करते हुए भी उसे घृणा हो रही थी। परन्तु अब वह उससे इस कारण और भी अधिक द्वेष का अनुभव कर रहा था क्योंकि उसका स्वस्थ सरल और चमकदार चेहरा, चमकीली नीली आँखें और छोटी छोटी मजबूत बाँहें उसके सुन्दर स्वास्थ्य का परिचय दे रहीं थीं। और क्योंकि वह दूर किसी गाँव में रहता था जहाँ उसका अपना घर था और कोई अमीर किसान उसे अपना दामाद बनाना चाहता था क्योंकि वह उसके बीते हुए और वर्तमान जीवन को भली प्रकार जानता था। और सबसे अधिक घृणा उसे इस बात से हो रही थी कि यह लड़का जो उसकी तुलना में एक बच्चा है आजादी को प्यार करने का साहस कर रहा था जिसके मूल्य को वह स्वीकार नहीं करता था और न जिसकी उसे आवश्यकता ही थी। यह बात हर व्यक्ति को हमेशा खटकती है कि उसकी तुलना में कोई छोटा और नीची श्रेणी का व्यक्ति उसी वस्तु को प्यार या घृणा करता है जिसे वह स्वयं प्यार या घृणा करता है और इस प्रकार अपने को उसके समान दिखाने की कोशिश करता है।

लड़के ने चेलकश की ओर घूर कर देखा और अनुभव किया कि वह उससे श्रेष्ठ है।

सब अस्त व्यस्त, शराब पिए हुए, शोर और बेचैनी का वातावरण उत्पन्न कर रही थी।

गेब्रीला को डर लगने लगा। वह बेचैनी से अपने मालिक के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। शराबखाने के सब प्रकार के शोर मिलकर एक ऊबा देने वाला कोलाहल उत्पन्न कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो कोई विशालकाय भयङ्कर जन्तु घुर्रा रहा हो। मानो सैकड़ों विभिन्न प्रकार की आवाजें उत्पन्न कर वह गुस्से में अन्धा होकर पत्थर के इस तहखाने से निकल भागने की कोशिश में हो परन्तु उसे रास्ता न मिल रहा हो। गेब्रीला ने अनुभव किया कि जैसे जन्तु के शरीर में कोई नशा सा चढ़ा आ रहा है। जिसने उसे बेहोश सा कर उसकी आँखों के आगे अँधेरा उत्पन्न कर दिया हो और जो उस शराबखाने में उत्सुकता और भय का रूप धारण कर चारों ओर बेचैनी से घूम रहा हो।

चेलकश लौट आया और उन्होंने खाना और शराब पीना शुरू कर दिया। खाने के साथ साथ वे बातें करते जा रहे थे। वोदका का तीसरा ग्लास पीने के बाद गेब्रीला पूरी तरह नशे में धुत हो गया। उसे बड़ा अच्छा लगने लगा और उसका मन हुआ कि वह अपने मालिक को खुश करने के लिये कुछ कहे जो इतना अच्छा आदमी था और जिसने उसके करने के लिये सुन्दर व्यवहार किया था। परन्तु किसी कारण से वे शब्द जिन्हें वह कहना चाहता गले में आकर रुक जाते और ज़बान से निकलने में आनाकानी करने लगते जो अचानक बहुत भारी हो उठी थी।

चेलकश ने उसकी ओर देखा और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए कहा:

"आधा रास्ता तो पार कर लिया! ए आलसी आदमी? पाँचवें ग्लास के बाद तुम्हारी क्या हालत होगी? ......तुम काम करने लायक भी रहोगे?"

"डरो ... मत . भाई" गेब्रीला हकलाया, "तुम .. पूरी...तरह . सन्तुष्ट ...हो जाओगे। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ! मुझे चुम्बन दो!"

तो चेलकश ने नियमित ग्राहक के स्वर में वोदका की एक बोतल लाने का हुक्म दिया। साथ ही थोड़ा सा भुना हुआ मसालेदार गोश्त और चाय भी मगाई। जब सब सामान आ गया तो उसने नौकर से तीखी आवाज में कहा—

"हिसाब में लिख दो!" नौकर ने चुपचाप सिर झुका कर स्वीकृति की सूचना दी। इस दृश्य ने गेब्रीला पर बहुत प्रभाव डाला और उसके मन में अपने मालिक के लिये गहरी श्रद्धा के भाव जागृत हो उठे जो इतना प्रसिद्ध था और अपनी इस गन्दी और बदनाम सजधज के बावजूद भी इतनी इज्जत पा रहा था।

"अच्छा, अब पहले कुछ खाना खाले फिर आप की बातें करेंगे। लेकिन एक मिनट ठहरो, मुझे कहीं जाना है," चेलकश ने कहा

वह बाहर चला गया। गेब्रीला ने अपने चारों ओर देखा। वह शराब खाना इमारत की सबसे नीची मंजिल में था। यहाँ सीलन और घुटन भरी हुई थी। वोदका की दम घोटने वाली बदबू, सस्ती तम्बाकू का धुँआ, राल की गन्ध और कुछ दूसरी चीजों से उठी हुई दम घोटने वाली बदबू उस स्थान को भयङ्कर और असह्य बना रही थी। गेब्रीला के सामने, एक मेज पर एक लाल डाढ़ी वाला शराबी मल्लाह की पोशाक पहने बैठा था। वह सिर से पैर तक धूल और कोलतार से भर रहा था। रह रह कर खाँसते हुए उसने विकृत और अधूरे शब्दों में एक गाना शुरू किया जो कभी तो साँप की फुमकार सा लगता और कभी घरघराती हुई आवाज सा। इससे यह स्पष्ट हो रहा था कि वह रूसी न होकर कोई विदेशी था।

उसके पीछे दो मोल्डेविया की रहने वाली औरतें बैठी थीं जिनके बाल रूखे और काले थे और जो धूप मे साँवली पड़ गई थीं। वे भी शराबियों की तरह एक गाना गा रही थीं।

वहाँ के उस धुँधले वातावरण में कुछ और शक्लें दिखाई दीं जो

लड़के के प्रति द्वेष और दया दोनों ही उत्पन्न हुए। वह इससे घृणा करता था और उसे इस बात की कल्पना कर बड़ा दुख हुआ कि यदि यह लड़का इसी प्रकार किसी दूसरे के पंजे में फंस गया तो। परन्तु अन्त में ये सब विचार एक ऐसी भावना में लुप्त हो गये जिसमें उस लड़के के प्रति प्रेम की भावना थी परन्तु साथ ही आज का काम पूरा करने का विचार भी था। वह उस लड़के के लिये बहुत दुखी था परन्तु आज उसे उसकी बहुत ज्यादा जरूरत थी। चेलकश ने गेब्रीला का हाथ पकड़ कर उठाया और फिर पीछे से घुटनों का हल्का धक्का दे उसे शराबखाने से निकाल कर बाहर अहाते में ले आया। वहाँ जाकर उसे लकड़ी के एक ढेर की छाया में लिटा दिया और उसके पास बैठकर पाइप सुलगाया। गेब्रीला कुछ देर तक तड़फड़ाया, कराहा और सो गया।

:२:

"तुम तैयार हो?" चेलकश ने धीमी आवाज में गेब्रीला से पूछा जो अनाड़ियों की तरह पतवार को पकड़ने का प्रयत्न कर रहा था।

"एक मिनट ठहरो! पतवार लगाने का यह काँटा ढीला है। क्या मैं पतवार से ठोक कर ठीक कर दूँ?"

"नहीं! आवाज मत करो। इसे अपने हाथ से दबाओ। यह ऐसा करने से अपनी जगह बैठ जायगा।"

वे दोनों चुपचाप एक नाव को ठीक कर रहे थे जो छोटी छोटी नावों के एक बेड़े के किनारे पर बंधी हुई थी। इस बेड़े में लकड़ी के लट्ठे लदे हुए थे बड़ी मुर्गी नावों में भी यही सामान भरा हुआ था।

रात अंधेरी थी। आसमान में गहरे काले बादल तैर रहे थे। समुद्र शान्त था। उस काले और तेल की तरह भारी पानी में से नमकीन गन्ध सी उठ रही थी जो जहाजों की दीवारों से और किनारे से टकराता हुआ धीमी आवाज उत्पन्न कर रहा था। चेलकश की नाव और

"अच्छा, अब इन बातों को खत्म करो ! लो और पीयो !"

गेव्रीला ने एक ग्लास और पिया। उसके बाद एक और लिया और तब तक पीता रहा जब तक कि उसे सब चीजें हवा की लहरों में तैरती हुई मालूम होने लगीं। इससे उसे चक्कर आने लगे और उसने कै करनी चाही। अब उसका चेहरा मूर्ख की तरह शान्त दिखाई देने लगा था। जब वह बातें करने की कोशिश करता तो अपने होंठ चाटने लगता और गाय की तरह रँभाता। चेलकश उड़ती निगाहों से उसकी ओर देख रहा था मानो कोई भूली हुई बात याद करने की कोशिश कर रहा हो। ऐसा करते समय वह अपनी मूँछें ऐंठता जाता और उदास मुद्रा से मुस्कराता।

शराबखाना नशे के शोरोगुल से गूँज उठा। लाल बालों वाला मल्लाह अपनी कुहनी पर सिर रखे सो रहा था।

"अच्छा, ठीक है, अब चलना चाहिये," चेलकश ने मेज से उठते हुए कहा।

गेव्रीला ने भी उठने का प्रयत्न किया परन्तु उठ न सका। वह गालियाँ बकने और बेवकूफों की तरह हँसने लगा जैसा कि शराबी करने लगते हैं।

"कैसा धुत हो रहा है !" गेव्रीला के सामने बैठते हुए चेलकश बड़बड़ाया।

गेव्रीला हँसता हुआ अपने मालिक की तरफ मूर्खता से देखता जा रहा था। चेलकश ने उसकी ओर सावधानी पूर्वक सोचते हुए देखा। उसने अपने सामने उस व्यक्ति को देखा जिसकी जिन्दगी उसके खूनी पंजों में फंस चुकी थी। उसने अनुभव किया कि इस समय वह इसकी जिन्दगी को जिधर चाहे उधर मोड़ सकता है। वह उसे इस समय ताश के पत्तों की तरह मरोड़ सकता है तथा अपनी इच्छानुसार नचा सकता है। उसने महसूस किया कि इस समय वह उसका मालिक है परन्तु उसके दिमाग में यह विचार दौड़ गया कि वह उसका भाग्य की इस कठोरता को सहन करने में असमर्थ रहेगा जो चेलकश उसके ऊपर लादने जा रहा है। उसे इस

लड़के के प्रति द्वेष और दया दोनों ही उत्पन्न हुए। वह इससे घृणा करता था और उसे इस बात की कल्पना कर बड़ा दुख हुआ कि यदि यह लड़का इसी प्रकार किसी दूसरे के पंजे में फंस गया तो। परन्तु अन्त में ये सब विचार एक प्रेमी भावना में लुप्त हो गये जिसमें उस लड़के के प्रति प्रेम की भावना थी परन्तु साथ ही आज का काम पूरा करने का विचार भी था। वह उस लड़के के लिये बहुत दुखी था परन्तु आज उसे उसकी बहुत ज्यादा जरूरत थी। चेलकश ने गेब्रीला का हाथ पकड़ कर उठाया और फिर पीछे से घुटनों का हल्का धक्का दे उसे शराबखाने से निकाल कर बाहर अहाते में ले आया। वहाँ लाकर उसे लकड़ी के एक ढेर की छाया में लिटा दिया और उसके पास बैठकर पाइप सुलगाया। गेब्रीला कुछ देर तक छटपटाया, कराहा और सो गया।

:२:

"तुम तैयार हो?" चेलकश ने धीमी आवाज में गेब्रीला से पूछा जो अनाड़ियों की तरह पतवार को पकड़ने का प्रयत्न कर रहा था।

"एक मिनट ठहरो! पतवार लगाने का यह काँटा ढीला है। क्या मैं पतवार से ठोक कर ठीक कर दूँ?"

"नहीं! आवाज मत करो। इसे अपने हाथ से दबाओ। यह ऐसा करने से अपनी जगह बैठ जायगा।"

वे दोनों चुपचाप एक नाव को ठीक कर रहे थे जो छोटी छोटी नावों के एक बेड़े के किनारे पर बंधी हुई थी। इस बेड़े में लकड़ी के लट्ठे लदे हुए थे बड़ी तुर्की नावों में भी यही सामान भरा हुआ था।

रात अंधेरी थी। आसमान में गहरे काले बादल तैर रहे थे। समुद्र शान्त था। उस काले और तेल की तरह भारी पानी में से खारे नमक की गन्ध आ रही थी जो जहाजों की दीवारों से और किनारे से टकराता हुआ धीमी आवाज उत्पन्न कर रहा था। चेलकश की नाव धीरे

धीरे हिल रही थी। किनारे से दूर जहाजों की चिमनियाँ और आकाश की ओर ऊँचे उठे हुए मस्तूल जिन पर रंग बिरंगी बत्तियाँ जल रहीं थीं, दिखाई दे रहे थे। समुद्र में, इन बत्तियों का प्रकाश पड़ने से, अनेक रंगों के छोटे छोटे धब्बे से पड़ गए थे जो उस पानी की चिकनी, काली और कोमल सतह पर नाच रहे थे। समुद्र गहरी नींद में सो रहा था जैसे कोई मजदूर दिन भर के कठोर परिश्रम के उपरान्त क्लान्त होकर सो रहा हो।

"हम लोग निकल आए।" गेव्रीला ने अपनी पतवारें पानी में डालते हुए कहा।

"हाँ, ठीक है!" चेल्कश ने अपनी पतवार को पानी में जोर से चलाते हुए कहा। वह नाव को बीच वाली पानी की धारा में लाने का प्रयत्न करने लगा। उस चिकने पानी पर नाव तेजी से आगे बढ़ी। पतवार के प्रत्येक झटके से पानी में एक नीली चमक सी उत्पन्न हो रही थी जो ऐसी मालूम होती थी मानो नाव के पीछे एक नीला रेशमी फीता लहराता आ रहा हो।

"क्या तुम्हारे सिर में अब भी दर्द है?" चेल्कश ने मधुरता से पूछा।

"कुछ अजीब सा ... कानों में जैसे घन्टी की आवाज गूँज रही हो। मैं अपने सिर पर थोड़े से पानी के छींटे दे लूँ।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं। यह लो। यह तुम्हारा पेट ठीक कर देगा तुम जल्द स्वस्थ हो जाओगे" चेल्कश ने गेव्राला को एक शीशी देते हुए कहा।

"मुझे इसमें शक है ... खैर, भगवान हमारी रक्षा करे ...!"

एक हलकी सी गरगराने की आवाज़ सुनाई दी।

"ए! ठहरो, इतना काफी है" चेल्कश ने उस लड़के को और अधिक पीने से रोकते हुए कहा।

नाव फिर चुपचाप, जहाजों के बीच से तीव्र गति से अपना रास्ता बनाती हुई आगे को बढ़ी। अचानक वह जहाजों के उस झुँड को छोड़कर बाहर निकल आई। सामने समुद्र असीम और गम्भीर दिखाई दे

रहा था। उसके सामने दूर गहरी नीलिमा पर पानी से उठते हुए बादलों के पहाड़ दिखाई पड़ रहे थे। उनमें से कुछ लाल और भूरे रङ्ग के थे जिनके किनारे हल्के पीले रङ्ग के थे, कुछ हरे से, समुद्र के पानी के से रंग के थे और दूसरे हल्के शीशे के से रंग के थे जो गहरी उदासी से भरी हुई छाया डालते हैं। वे आसमान में धीरे धीरे रेंग रहे थे। कभी आपस में एक दूसरे में मिल जाते और कभी अलग हो जाते। कभी उनके रङ्ग और आकार आपस में घुल मिल जाते और फिर थोड़ी देर बाद वे नए आकार धारण कर शान से नीचे घूरते हुए रेंगने लगते। इस सम्पूर्ण वातावरण में एक आतंक सा भरा हुआ था। ऐसा मालूम पड़ता था कि समुद्र के दूसरे किनारे पर ये बादल असंख्य संख्या में इकट्ठे हैं और वे अनादि काल तक इस आकाश पर यह द्वेष की भावना लिए हुए रेंगते रहेंगे कि यह आकाश इस शान्त, सौम्य समुद्र का सौन्दर्य अपनी असंख्य चमकीली आँखों से न देख सके। ये विभिन्न रंगों के असंख्य सितारे, जो स्वप्नों की सी दुनियाँ में रहते हैं और जिन्हें देख कर मनुष्य के हृदय में महत्वाकांक्षाएँ जागृत हो उठती हैं—परन्तु केवल उन्हीं के हृदय में जिनके लिए तारों की यह चमक अमूल्य है भी उस दृष्टिगोचर न हो सके।

"आज समुद्र शान्त है, है न ?" चेलकश ने पूछा।

"बुरा नहीं है। सिर्फ इसे देख कर मुझे डर लगता है," गेव्रीला ने सावधानी और मजबूती से पतवार चलाते हुए उत्तर दिया। पानी मुश्किल से केवल तरङ्गित दिखाई पड़ता था जब लम्बी पतवारों की चोट से उससे कुछ शब्द होता और नीली रोशनी में वह चमक उठता।

"डरता है ! मूर्ख कहीं का !" चेलकश ने गुस्से से कहा।

वह चोर समुद्र को प्यार करता था। परन्तु उस समय वह एक कठिन कार्य करने जा रहा था। इसलिए समुद्र के उस प्रशान्त सौन्दर्य का उपभोग करने में असमर्थ था। उसे दुःख हुआ जब उसने समुद्र के सौन्दर्य के विषय में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में यह सुना। नाव के पिछले भाग में बैठा हुआ वह पतवारों से पानी को काट रहा था और चुपचाप आगे का

धीरे हिल रही थी। किनारे से दूर जहाजों की चिमनियाँ और आकाश की ओर ऊँचे उठे हुए मस्तूल जिन पर रंग बिरंगी बत्तियाँ जल रहीं थीं, दिखाई दे रहे थे। समुद्र में, इन बत्तियों का प्रकाश पड़ने से, अनेक रंगों के छोटे छोटे धब्बे से पड़ गए थे जो उस पानी की चिकनी, काली और कोमल सतह पर नाच रहे थे। समुद्र गहरी नींद में सो रहा था जैसे कोई मजदूर दिन भर के कठोर परिश्रम के उपरान्त क्लान्त होकर सो रहा हो।

"हम लोग निकल आए।" गेव्रीला ने अपनी पतवारें पानी में डालते हुए कहा।

"हाँ, ठीक है!" चेलकश ने अपनी पतवार को पानी में जोर से चलाते हुए कहा। वह नाव को बीच वाली पानी की धारा में लाने का प्रयत्न करने लगा। उस चिकने पानी पर नाव तेजी से आगे बढ़ी। पतवार के प्रत्येक झटके से पानी में एक नीली चमक सी उत्पन्न हो रही थी जो ऐसी मालूम होती थी मानो नाव के पीछे एक नीला रेशमी फीता लहराता आ रहा हो।

"क्या तुम्हारे सिर में अब भी दर्द है?" चेलकश ने मधुरता से पूछा।

"कुछ अजीब सा कानों में जैसे घन्टी की आवाज़ गूँज रही हो। मैं अपने सिर पर थोड़े से पानी के छींटे दे लूँ।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं। यह लो। यह तुम्हारा पेट ठीक कर देगा तुम जल्द स्वस्थ हो जाओगे" चेलकश ने गेव्रीला को एक शीशी देते हुए कहा।

"मुझे इसमें शक है...... खैर, भगवान हमारी रक्षा करे...!"

एक हलकी सी गरगराने की आवाज़ सुनाई दी।

"ए! ठहरो, इतना काफी है" चेलकश ने उस लड़के को और अधिक पीने से रोकते हुए कहा।

नाव फिर चुपचाप, जहाजों के बीच से तीव्र गति से अपना रास्ता बनाती हुई आगे को बढ़ी। अचानक वह जहाजों के उस झुँड को छोड़कर बाहर निकल आई। सामने समुद्र असीम और गम्भीर दिखाई दे

रहा था। उसके सामने दूर गहरी नीलिमा पर पानी से उठते हुए बादलों के पहाड़ दिखाई पड़ रहे थे। उनमें से कुछ लाल और भूरे रङ्ग के थे जिनके किनारे हल्के पीले रङ्ग के थे, कुछ हरे से, समुद्र के पानी के से रंग के थे और दूसरे हल्के शीशे के से रंग के थे जो गहरी उदासी से भरी हुई छाया डालते हैं। वे आसमान में धीरे धीरे रेंग रहे थे। कभी आपस में एक दूसरे से मिल जाते और कभी अलग हो जाते। कभी उनके रङ्ग और आकार आपस में घुल मिल जाते और फिर थोड़ी देर बाद वे नए आकार धारण कर शान से नीचे घूरते हुए रेंगने लगे। इस सम्पूर्ण वातावरण में एक अतक सा भरा हुआ था। ऐसा मालूम पड़ता था कि समुद्र के दूसरे किनारे पर ये बादल असंख्य संख्या में इकट्ठे हैं और वे अनादि काल तक इस आकाश पर यह द्वेष की भावना लिए हुए रेंगते रहेंगे कि यह आकाश इस शान्त, सौम्य समुद्र का सौन्दर्य अपनी असंख्य चमकीली आँखों से न देख सके। व विभिन्न रंगों के असंख्य सितारे, जो स्वप्नों की सी दुनियाँ में रहते हैं और जिन्हें देख कर मनुष्य के हृदय में महत्त्वाकांक्षा जागृत हो उठती हैं—परन्तु केवल उन्हीं के हृदय में जिनके लिए तारों की यह चमक अमूल्य है भी उसे दृष्टिगोचर न हो सके।

"आज समुद्र शान्त है, है न ?" चेलकश ने पूछा।

"बुरा नहीं है। सिर्फ इसे देख कर मुझे डर लगता है," गैव्रीला ने सावधानी और मजबूती से पतवार चलाते हुए उत्तर दिया। पानी मुश्किल से केवल तभी दिखाई पड़ता था जब लम्बी पतवारों की चोट से उसमें कुछ हलचल होती और नीली रोशनी से वह चमक उठता।

"डरता है ! मूर्ख कहीं का।" चेलकश ने गुस्से से कहा।

यह चोर समुद्र को प्यार करता था। परन्तु उस समय वह एक कठिन कार्य करने जा रहा था इसलिए समुद्र के उस प्रशान्त सौन्दर्य का उपभोग करने में असमर्थ था। उसे दुःख हुआ जब उसने समुद्र के सौन्दर्य के विषय में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में यह सुना। नाव के पिछले भाग में बैठा हुआ वह पतवारों से पानी को काट रहा था और चुपचाप आगे था।

धीरे हिल रही थी। किनारे से दूर जहाजों की चिमनियाँ और आकाश की ओर ऊँचे उठे हुए मस्तूल जिन पर रंग बिरंगी बत्तियाँ जल रहीं थीं, दिखाई दे रहे थे। समुद्र में, इन बत्तियों का प्रकाश पड़ने से, अनेक रंगों के छोटे छोटे धब्बे से पड़ गए थे जो उस पानी की चिकनी, काली और कोमल सतह पर नाच रहे थे। समुद्र गहरी नींद में सो रहा था जैसे कोई मजदूर दिन भर के कठोर परिश्रम के उपरान्त क्लान्त होकर सो रहा हो।

"हम लोग निकल आए।" गेब्रीला ने अपनी पतवारें पानी में डालते हुए कहा।

"हाँ, ठीक है!" चेलकश ने अपनी पतवार को पानी में जोर से चलाते हुए कहा। वह नाव को बीच वाली पानी की धारा में लाने का प्रयत्न करने लगा। उस चिकने पानी पर नाव तेजी से आगे बढ़ी। पतवार के प्रत्येक झटके से पानी में एक नीली चमक सी उत्पन्न हो रही थी जो ऐसी मालूम होती थी मानो नाव के पीछे एक नीला रेशमी फीता लहराता आ रहा हो।

"क्या तुम्हारे सिर में अब भी दर्द है?" चेलकश ने मधुरता से पूछा।

"कुछ अजीब सा ... कानों में जैसे घन्टी की आवाज गूँज रही हो। मैं अपने सिर पर थोड़े से पानी के छींटे दे लूँ।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं। यह लो। यह तुम्हारा पेट ठीक कर देगा तुम जल्द स्वस्थ हो जाओगे" चेलकश ने गेब्रीला को एक शीशी देते हुए कहा।

"मुझे इसमें शक है‥ ‥ खैर, भगवान हमारी रक्षा करे‥!"

एक हलकी सी गरगलाने की आवाज़ सुनाई दी।

"ए! ठहरो, इतना काफी है" चेलकश ने उस लड़के को और अधिक पीने से रोकते हुए कहा।

नाव फिर चुपचाप, जहाजों के बीच से तीव्र गति से अपना रास्ता बनाती हुई आगे को बढ़ी। अचानक वह जहाजों के उस झुँड को छोड़कर बाहर निकल आई। सामने समुद्र असीम और गम्भीर दिखाई दे

रहा था। उसके सामने दूर गहरी नीलिमा पर पानी से उठते हुए बादलों के पहाड़ दिखाई पड़ रहे थे। उनमें से कुछ लाल और भूरे रङ्ग के थे जिनके किनारे हल्के पीले रङ्ग के थे, कुछ हरे से, समुद्र के पानी के से रंग के थे और दूसरे हल्के शीशे के से रंग के थे जो गहरी उदासी से भरी हुई छाया डालते हैं। वे आसमान में धीरे धीरे रेंग रहे थे। कभी आपस में एक दूसरे से मिल जाते और कभी अलग हो जाते। कभी उनके रङ्ग और आकार आपस में घुल मिल जाते और फिर थोड़ी देर बाद वे नए आकार धारण कर शान से नीचे घूरते हुए रेंगने लगे। इस सम्पूर्ण वातावरण में एक आतंक सा भरा हुआ था। ऐसा मालूम पड़ता था कि समुद्र के दूसरे किनारे पर ये बादल असंख्य संख्या में इकट्ठे हैं और वे अनादि काल तक इस आकाश पर यह द्वेष की भावना लिए हुए रेंगते रहेंगे कि यह आकाश इस शान्त, सौम्य समुद्र का सौन्दर्य अपनी असंख्य चमकीली आँखों से न देख सके। वे विभिन्न रंगों के असंख्य सितारे, जो स्वप्नों की सी दुनियाँ में रहते हैं और जिन्हें देख कर मनुष्य के हृदय में महत्वाकांक्षा जागृत हो उठती है—परन्तु केवल उन्हीं के हृदय में जिनके लिए तारों की यह चमक अमूल्य है भी उस दृष्टिगोचर न हो सके।

"आज समुद्र शान्त है, है न ?" चेलकश ने पूछा।

"बुरा नहीं है। सिर्फ इसे देख कर मुझे डर लगता है," गेव्रीला ने सावधानी और मजबूती से पतवार चलाते हुए उत्तर दिया। पानी मुश्किल से केवल तब दिखाई पड़ता था जब लम्बी पतवारों की चोट से उसमें झाग उत्पन्न होता और नीली रोशनी से वह चमक उठता।

"डरता है! मूर्ख कहीं का।" चेलकश ने गुस्से से कहा।

वह चोर समुद्र को प्यार करता था। परन्तु उस समय वह एक कठिन कार्य करने जा रहा था। इसलिए समुद्र के उस प्रशान्त सौन्दर्य का उपभोग करने में असमर्थ था। उसे दुख हुआ जब उसने समुद्र के सौन्दर्य के विषय में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में यह सुना। नाव के पिछले भाग में बैठा हुआ वह पतवारों से पानी को काट रहा था और चुपचाप आगे बढ़

और फिर वह गेब्रीला की ओर मुड़ा, जो अब भी प्रार्थना कर रहा था, और बोला—"अच्छा भाई भाग्यवान हो ! अगर वह शैतान हमारा पीछा करता तो तुम्हारा काम समाप्त हो जाता। तुम मेरा मतलब समझ रहे हो ? मैं तुम्हें मछलियों को खिलाने के लिये समुद्र में फेंक देता।"

चेलकश अब अधिक शान्तिपूर्वक और प्रसन्न होकर बोल रहा था परन्तु गेब्रीला ने अब भी भय से काँपते हुए उससे प्रार्थना की

"मुझे जाने दो। मैं तुमसे भगवान के नाम पर भीख माँगता हूँ, मुझे जाने दो ! मुझे कहीं किनारे पर उतार दो ! आह , मैं बर्बाद होगया ! ईश्वर की याद करो और मुझे जाने दो ! तुम मुझे किसलिए पकड़ लाए हो ! मैं इस तरह के काम के लायक नहीं। मैंने इससे पहले ऐसा काम कभी नहीं किया। यह पहला मौका है भगवान ! मैं मारा गया !! ईश्वर ! तुमने मुझे कैसा बेवकूफ बनाया भाई ? यह पाप है तुम खुद ही अपनी आत्मा की हत्या कर रहे हो कुछ काम।

"क्या काम ?" चेलकश ने कठोरता पूर्वक पूछा—"क्या काम ?"

लड़के के उस भय में उसे मजा आने लगा। वह इससे बड़ा खुश हुआ और साथ ही यह सोचकर और भी अधिक खुश हुआ कि वह चेलकश—कितना खतरनाक आदमी है।

"बुरे काम, भाई ! मुझे जाने दो ! तुम मुझे किस लिए रोक रहे हो भगवान के लिए दया करो अच्छे बनो. "

"चुप रहो ! अगर मुझे तुम्हारी जरूरत न होती तो मैं तुम्हें कभी न लाता। समझे कुछ ! अच्छा खामोश रहो !"

"भगवान !" गेब्रीला ने गहरी सास ली।

"बच्चों की तरह चीखना चिल्लाना बन्द करो वर्ना तुम्हारी गर्दन में हाथ जमा दूँगा !" चेलकश गुर्राया।

परन्तु गेब्रीला, अपने को रोकने में असमर्थ होकर चुपचाप सिसकियाँ भरने लगा, रोया, नाक साफ की, अपने स्थान पर कुलबुलाया परन्तु हताश होकर पूरी ताकत से नाव खेने लगा।

नाव तीर की तरह आगे बढ़ी। फिर जहाजों की काली चिमनियाँ सामने दीखने लगीं और शीघ्र ही वह नाव उनके बीच में छिप गई और एक फिरकी की तरह उन जहाजों के बीच वाली पानी की पट्टियों पर नाचने और घूमने लगी।

"अब सुनो! अगर तुम से कोई कुछ पूछे तो तुम गूँगे बन जाना—अगर तुम जिन्दा रहना चाहते हो तो! मेरा मतलब समझे?"

"अच्छा" इस कठोर आज्ञा के उत्तर में गेब्रीला इतना ही कह कर चुप हो गया और फिर कुछ देर बाद मस्ती से बोला—"मैं तो मारा गया—बिल्कुल समाप्त हो गया।"

"बच्चों की तरह यह रोना बन्द करो! मैं तुमसे कहे देता हूँ।" चेलकश ने गुस्से में भर कर फुसफुसाते हुए कहा। इस फुसफुसाहट ने गेब्रीला की सोचने की भी शक्ति छीन ली। उसका मस्तिष्क किसी अनिष्ट की आशंका से सुन्न हो गया। उसने यन्त्रचालित मशीन की भाँति पतवार छोड़ दिए, पीछे को झुका, फिर पतवार उठाए और फिर उन्हें छोड़ दिया और पूरे समय तक अपनी निगाहें अपने फटे जूतों के पंजों पर जमाये रहा।

लहरों की शान्त मरमराहट ऐसी मालूम हो रही थी मानो लहरें गुस्से में हों। उन्हें सुनकर भय लगने लगता था। वे बन्दरगाह में घुसे.. उसकी मजबूत पत्थर की दीवालों के उस पार से आदमियों की आवाजें लहरों की टकराहट, गाने और सीटी बजाने की ध्वनियाँ आ रही थीं।

"ठहरो!" चेलकश फुसफुसाया, "पतवार बन्द करो! दीवाल के सहारे लगाओ। धीरे धीरे, शैतान!" गेब्रीला ने दीवाल पकड़ ली और नाव को उसके सहारे लगा दिया। दीवाल पर जमी हुई नमक की मोटी तह और नाव के किनारे पर लगी हुई मोटी गद्दी ने आवाज न होने दी और नाव बिना कोई शब्द किए दीवाल से सट गई।

"ठहरो!.. पतवार मुझे दो। इस तरफ आओ! तुम्हारा पासपोर्ट कहाँ है? तुम्हारे थैले में? अपना थैला मुझे दो! ध्यान से देखो! यह तुम्हें यहाँ से भागने से रोकने के लिये काफी है मेरे दोस्त.. अब तुम भाग नहीं

सकोगे ! तुम विना पतवार के भागने की कोशिश करते परन्तु अपने पासपोर्ट के विना भागने में तुम डरोगे। सावधान ! अगर तुमने धोखा दिया तो मैं तुम्हें समुद्र की तलहटी मे से भी पकड़ लाऊँगा।"

अचानक अपने हाथों से कोई वस्तु पकड़ कर चेलकश ऊपर को उछला और दीवाल पर जाकर गायब हो गया। गेव्रीला काँप उठा। यह सब इतनी जल्दी हो गया। उसने भय के उस भयानक बोझ को, जो उस भयकर चोर की उपस्थिति में उस पर छाया हुआ था, अपने कन्धों पर से हटता हुआ अनुभव किया. यह भाग जाने का मौका हाथ आया था ! उसने मुक्ति की गहरी साँस ली और चारों ओर देखा। बाँयी तरफ एक काली बिना मस्तूल की चिमनी थी। यह एक विशाल तावूत की तरह खाली और शून्य दिखाई दे रही थी। प्रत्येक लहर से जो इसकी बगल में टकराती एक खोखली और घुटी हुई प्रतिध्वनि की आवाज आती जो एक गहरी साँस सी सुनाई देती। दाहिनी ओर उस कृत्रिम बन्दरगाह की पत्थर की दीवाल, एक भारी ठंडे अजगर की भाँति पानी की सतह पर फैली हुई थी। उसके पीछे काले ढेर खड़े थे और सामने की ओर—उस दीवाल और उस तावूत के बीच में, समुद्र दिखाई दे रहा था—शान्त और निर्जन। उसके ऊपर काले बादल तैरते चले जा रहे थे। बादल आसमान में धीरे धीरे रेंग रहे थे—विशाल और अत्यन्त भारी जो उस अन्धकार में भय का वातावरण उत्पन्न कर रहे थे, और ऐसा लगता था मानो वे किसी को अपने भारी बोझ से कुचल डालने को तैयार हों। यह सम्पूर्ण दृश्य शान्त, काला और भयकर लग रहा था। गेव्रीला फिर भयभीत हो उठा और यह भय उस भय से भयकर था जो चेलकश ने उसके मन में पैदा कर दिया था। इसने जैसे अपने शक्तिशाली खूँखार पंजों मे उसके हृदय को जकड़ लिया जिससे वह मिट्टी के एक निर्जीव लौंदे की तरह सुन्न होगया और नाव में अपनी सीट पर चिपक कर बैठ गया।

चारों ओर खामोशी छाई हुई थी। समुद्र की मरमराहट के सिवा एक भी शब्द नहीं सुनाई दे रहा था। बादल अब भी आसमान मे धीरे धीरे

रेंगते चले जारहे थे। न जाने कहाँ से वे अगणित संख्या में उठ रहे थे। आसमान भी समुद्र की तरह दिखाई दे रहा था परन्तु ऐसा जो व्याकुल हो तथा जिसे नीचे फैले शान्त, चिकने, ऊँघते हुए समुद्र पर लटका दिया गया हो। बादल भूरी लहराती लहरों की भाँति पृथ्वी पर उतरते प्रतीत हो रहे थे—उन दरारों के बीच में होकर जिन्हें हवा ने उनके टुकड़े कर पैदा कर दिया था और उन नई उठती लहरों पर जो अभी हरे झाग से विकृत नहीं हो पाई थीं।

इस निस्तब्ध शान्त और सौन्दर्य की सघनता में गॅव्रीला अत्यन्त व्याकुल हो उठा और प्रार्थना करने लगा कि उसका मालिक शीघ्र वापिस आ जाय। मान लो वह नहीं लौटता...? धीरे धीरे समय गुजरने लगा—आसमान में रेंगते हुए बादलों से भी धीरे .और जैसे जैसे समय गुजरने लगा वह निस्तब्धता और भी भयानक लगने लगी। अन्त में पानी में छपछपाहट की आवाज सुनाई दी। खसखसाहट और फुसफुसाहट जैसे शब्द उस दीवाल की दूसरी ओर से आते सुनाई पड़े। गॅव्रीला मृत्यु की कामना करने लगा।

"ए ए ए! सो रहे हो क्या? इसे पकड़ो...सावधानी से!" यह चेलकश की अस्पष्ट आवाज थी। कोई भारी और चौकोर चीज दीवाल से नीचे गिरी। गॅव्रीला ने इसे लपक कर नाव के पेंदे में रख दिया। उसी तरह की एक दूसरी चीज और आई। और उसके बाद चेलकश का लम्बा शरीर दीवाल पर दिखाई पड़ा फिर पतवार भी नीचे गिरे। गॅव्रीला का थैला भी उसके पैरों पर आ गिरा और हाँफता हुआ चेलकश नाव के पिछले हिस्से में खिसक कर आ गया।

गॅव्रीला ने प्रसन्न होकर परन्तु कातर मुस्कराहट से उसकी ओर देखा।

"क्या तुम थक गए हो?" उसने पूछा।

"हाँ, थोड़ा सा! अच्छा अब पतवार पकड़ो और चलाओ अपनी पूरी ताकत से! तुमने बड़ी बहादुरी का काम किया है मेरे बेटे! मारा

काम समाप्त हो गया। अब सिर्फ यह बाकी रह गया है कि हम लोग उन शैतानों की नजर बचा कर यहाँ से खिसक जाँय और फिर तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिल जायगा। तब तुम आनन्द से अपनी माशा के पास चले जाना। मेरा अनुमान है कि तुम्हारी कोई माशा है, है न ?"

"न—नहीं !" अपनी पूरी ताकत से पतवार चलाते हुए गेब्रीला ने उत्तर दिया। उसकी छाती धौंकनी की तरह फूल उठती थी और बाहें लोहे की स्प्रिंग की भाँति चल रही थी। नाव के नीचे से पानी तेजी से भाग रहा था। गेब्रीला पसीने से तर हो गया परन्तु अपनी पूरी ताकत से बराबर नाव चलाता रहा। उस रात दो बार वह भयंकर रूप से भयभीत हो उठा था और अब दुबारा उस भय का सामना करने को प्रस्तुत नहीं था। इस समय वह केवल यही चाह रहा था कि चाहे किसी भी तरह से इस मुसीबत से जल्दी २ अपनी जान बचा ले। किनारे पर पहुंच कर, इससे पहले कि यह आदमी उसे मार डाले, वह उससे दूर भाग जाय या उसे जेल की हवा खिला दे। उसने तय किया कि वह उससे किसी भी बात पर बहस नहीं करेगा और अगर उससे अपनी जान बचा सका तो सन्त निकोलस—जो अद्भुत कार्य करने के लिए प्रसिद्ध है—की पूजाकर प्रसाद बाँटेगा। वह इतना उत्तेजित हो रहा था कि भगवान की प्रार्थना उसके मुँह से इसी क्षण निकलने को छटपटा रही थी परन्तु उसने अपने पर काबू कर लिया। वह भाप के इंजन की तरह भाप छोड़ रहा था और रह रह कर छिपी नज़रों से चेलकश की ओर देख लेता था।

परन्तु चेलकश, लम्बा, पतला, आगे को शरीर झुकाए हुए एक चिड़िया की तरह लग रहा था जो उड़ने के लिए तैयार हो। वह अपनी बाज की सी पैनी आँखों से सामने फैले हुए अन्धकार को देख रहा था और अपनी चोंच जैसी नाक को मरोड़ता जाता था। उसने एक हाथ में मजबूती से नाव घुमाने वाला पहिया पकड़ रखा था और दूसरे हाथ से मूँछें ऐंठता जाता था। वे मूँछें कभी कभी उसके पतले होंठों पर मुस्कान फैल जाने से भी ऐंठने सी लगती थीं। वह अपनी सफलता पर स्वयं अपने ऊपर और उस

लड़के पर, जो उससे बुरी तरह भयभीत हो उठा था और जिसे उसने अपना गुलाम बना लिया था, बहुत प्रसन्न हो रहा था। उसने देखा कि गेव्रीला अपनी पूरी ताकत से पतवार चला रहा है। यह देखकर उसके मन में उस लड़के के प्रति दया की भावना उमड़ आई। वह उसे हँसाना चाहता था।

"ए!" उसने हँसते हुए कोमलता से कहा "तुम डर गए थे, क्यों है न यह बात?"

"न-नहीं! ज्यादा नहीं," हाँफते हुए गेव्रीला ने जवाब दिया।

"अब इतनी जोर से पतवार चलाने की जरूरत नहीं। काम खत्म हो गया। केवल एक जगह और बाकी रही है जहाँ से हमें सकुशल निकल जाना है ·· जरा सुस्ता लो ·· ।"

एक आज्ञाकारी सेवक की तरह गेव्रीला ने पतवार छोड़ दिए, अपनी कमीज से मुँह का पसीना पोंछा और सुस्ताने लगा।

"अच्छा अब फिर चलो," थोड़ी देर बाद चेलकश ने कहा—"लेकिन पानी का शोर न होने पाये। आगे एक फाटक है जिसे पार करना है। चुप-चाप-बिल्कुल खामोशी से! वे लोग बड़े सख्त हैं वे तुम्हारी खोपड़ी में, तुम्हारे चीखने से पहले ही, गोली से बड़ा सा छेद कर देने में तनिक भी नहीं हिचकिचाएँगे!"

अब नाव बिना किसी प्रकार का शब्द किए पानी पर फिसलती चली जा रही थी। केवल पतवारों से पानी की नीली बूँदें टपक रही थीं और जहाँ गिरतीं उस स्थान पर छोटे छोटे नीले बुदबुदे बनाती जाती थीं। रात और भी अधिक अंधेरी हो गई थी। सन्नाटा गहरा होता जा रहा था। अब आकाश तूफानी समुद्र की तरह नहीं दिखाई पड़ता था। बादल चारों ओर फैल गए थे और उन्होंने आकाश को एक चिकने भारी से कम्बल से ढक दिया था जो पानी के ऊपर नीचा और चुपचाप टंगा हुआ था। समुद्र और भी गहरा और शान्त हो गया था। उसकी ताजे नमक की गन्ध और भी दम घोटने वाली हो चली थी। अब वह उतना चौड़ा नहीं दिखाई दे रहा था जितना कि पहले था।

"भगवान करे पानी पड़ने लगे !" चेलकश फुसफुसाया—"इसमें हम लोग इस तरह निकल जाँयगे मानो पर्दे के पीछे छिपे हों।"

दाँयी और बाँयी ओर डरावनी भयानक शक्लें पानी से उठी हुई दिखाई दे रहीं थीं—बड़े २ जहाजों की जो चुपचाप खड़े हुए थे—उदास से और काले रङ्ग के। परन्तु उनमें से एक पर एक रोशनी चारों ओर घूम रही थी। कोई आदमी एक लालटेन लिए जहाज के डेक पर घूम रहा था। समुद्र की मरमराहट में शोक और करुणा की ध्वनि उठ रही थी। जब उसकी लहरें उन जहाजों की दीवालों से टकरातीं और उससे एक अस्पष्ट धीमी प्रतिध्वनि उठती तो ऐसा लगता मानो वे समुद्र से बहस कर रही हों और उसके सामने झुकने के लिये प्रस्तुत न हों।

"सन्त्री !" चेलकश एक फुसफुसाहट के स्वर में चौंक कर बोल उठा।

जिसक्षण चेलकश ने उससे और धीरे धीरे खेने के लिए कहा। गेव्रीला पर वही पहले का सा, किसी अनिष्ट की सम्भावना का, भय छा गया। वह आगे झुका और अन्धेरे में देखने लगा। उस समय उसे ऐसा लगा मानो वह किसी गहरे गर्त में गिरता चला जा रहा है, उसकी हड्डियाँ और नसें उसके शरीर से छिन्न भिन्न हो रही हैं जिससे शरीर में एक हल्का सा दर्द होने लगा है। उसके मस्तिष्क में केवल एक विचार रह गया था—उस दर्द और वेदना का। उसकी पीठ पर सनसनी सी होने लगी। और उसे ऐसा लगा जैसे कोई उसके पैरों मे छोटी छोटी ठंडी सुइयाँ चुभो रहा हो। उस सघन अंधकार में टकटकी लगा कर देखने से उसकी आँखों में भी दर्द होने लगा, जहाँ से प्रतिक्षण वह यह सुनने की आशा कर रहा था—"ठहरो, चोर !"

और अब जब चेलकश ने कहा 'सन्त्री' गेव्रीला काँप उठा। उसके दिमाग में एक तीखा, ज्वलनशील भेदक विचार उत्पन्न हुआ कि कहीं वह पकड़ा न जाय और इस विचार से उसके शरीर की तनी हुई नसें ढीली पड़ गईं। वह चीखना और मदद के लिये पुकारना चाहता था। उसने अपना मुँह खोला, अपनी जगह से थोड़ा सा उठा, छाती बाहर निकाल कर एक

गहरी साँस ली परन्तु अचानक भय से उसे लकवा सा मार गया जो उस पर हण्टर की तरह पड़ा। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और लड़खड़ा कर नाव के पेंदे में गिर पड़ा।

नाव से आगे, बहुत दूर क्षितिज के पास, काले पानी में से एक विशाल जलती हुई नीली तलवार उठी और उसने रात्रि के अन्धकार को चीर डाला। यह बादलों पर चारों ओर घूमी और फिर एक लम्बी पतली धारा की तरह समुद्र की छाती पर लेट गई। इस चमकीली धारा में वे जहाज दिखाई देने लगे जो अब तक अदृश्य, काले, निस्तब्ध और रात्रि के उस उदासी भरे वातावरण में चुपचाप खड़े थे। वे ऐसे दिखाई दिये मानो बहुत समय तक समुद्र के तल में पड़े रहे हों जिन्हें तूफान ने वहाँ पहुँचा दिया हो और अब वे उस भयङ्कर चमकीली तलवार की आज्ञा से, जो समुद्र से उत्पन्न हुई थी—आकाश और उस पानी पर फैली हुई सब चीजों को देखने के लिये बाहर निकल आये हों। उनके पाल, मस्तूलों से, समुद्र के घोंघों की बनी हुई माला की तरह चिपके हुए थे जो समुद्र के तले से उन काले दैत्यों के साथ उठा लिये गये जो उनके जाल में फँस गये थे। यह भयङ्कर नीली तलवार समुद्र की गहराई से फिर ऊपर उठी और अपनी चमक से उसने रात्रि को फिर काटना प्रारम्भ किया और फिर पानी पर सीधी लेट गई परन्तु अब की दूसरी दिशा में थी। और जहाँ यह लेटी थी वहाँ जहाजों की अब तक न दिखाई देने वाली चिमनियाँ स्पष्ट हो उठीं।

नाव रुकी और पानी पर इधर उधर हिलने लगी मानो किसी बात से परेशान हो उठी हो। गवरीला नाव की पेंदी में हाथों से मुँह ढके पड़ा हुआ था। चेलकश ने उसके बूट की ठोकर मारी और भयङ्कर रूप से फुन्कार सी मारते हुए बुदबुदाया:

"यह चुङ्गी वालों का पहरा देने वाला जहाज है...मूर्ख........यह बिजली का लैम्प है! खड़ा हो, बेवकूफ। एक मिनट में अभी ये हमारे ऊपर रोशनी फेंकेंगे और फिर हमारा तुम्हारा दोनों का काम समाप्त हो जायगा! उठ!"

अन्त में पहले से भी अधिक भारी बूट की ठोकर गेव्रीला की पीठ पर पड़ी। वह चौंक उठा और अब भी आँखें खोलने में डरते हुए अपनी जगह बैठ गया। पतवार पकड़ी और खेना शुरू कर दिया।

" खामोशी से ! धीरे धीरे ! वर्ना मैं तुम्हें मार डालूँगा ? तुम कैसे बुद्धू आदमी हो। शैतान तुझे समझे। तू किस चीज से डर गया था, गन्दे कीड़े ? एक लालटेन से, यह केवल एक लालटेन है। पतवार धीरे चला मरी सी शक्ल के शैतान ? वे लोग चोरी के माल लाने वालों को तलाश कर रहे हैं। वे हमें नहीं देख पायेंगे—वे हम से बहुत दूर हैं। डर मत, वे हमें नहीं देख सकेंगे अब हम " चेलकश ने चारों ओर विजय गर्व ने देखा। " निस्सन्देह ! हम लोग अब खतरे से बाहर निकल आये हैं। फू ! अच्छा, तुम तकदीर वाले हो, मोटी अकल के बुद्धू।"

गेव्रीला कुछ नहीं बोला। वह ताकत से पतवार खींचता रहा और हाँपने लगा। वह बार बार तिरछी निगाह से उस स्थान की ओर देख रहा था जहाँ वह भयङ्कर तरवार उठी और गिर रही थी। वह उस बात पर विश्वास नहीं कर सका जो चेलकश ने कहा थी कि यह एक लालटेन है। वह ठंडी नीली चमक की धारा जो अन्धकार को फाड़ रही थी समुद्र में एक अद्भुत रूपहली आभा उत्पन्न कर देती थी और गेव्रीला उस आत्मा को भाड़ खाने वाले भय से मूक बन गया था। वह मशीन की तरह देख रहा था। खेते समय नीचे को झुक गया था मानो उसकी पीठ पर ऊपर से घूँसा या लात पड़ने वाली हो। अब उसकी सम्पूर्ण इच्छायें गायब हो चुकी थीं। वह सज्ञाशून्य व्यक्ति की तरह निर्जीव सा बैठा था। उस रात्रि की उत्तेजना पूर्ण परिस्थितियों ने उसकी सम्पूर्ण माननीय भावनाओं की हत्या कर डाली थी।

परन्तु चेलकश खुश था। उसकी नसें उत्तेजना की आदी थीं जो अब ढीली पड़ कर मन में आनन्द उत्पन्न कर रहीं थीं। वह बराबर मूछें ऐंठ रहा था। उसकी आँखों मे एक चमक दिखाई दे रही थी। उसे बड़ा अच्छा लग रहा था। वह मुँह से सीटी बजाने लगा और अपने फेफड़ों में गहरी

साँस लेकर समुद्र की सीली हवा भर ली। उसने चारों ओर देखा और जब उसकी निगाह गेव्रीला पर पड़ी, प्रसन्नता पूर्वक मुस्कराया।

हवा चलने लगी थी। समुद्र में लहरें उत्पन्न हो रहीं थीं। बादल अब पहले से अधिक पतले और कम गहरे दिखाई दे रहे थे परन्तु फिर भी वे सारे आसमान पर छाये हुए थे। हवा जो अब भी हल्की थी, आजादी से समुद्र पर खेल रही थी परन्तु बादल चुपचाप स्थिर खड़े थे जैसे किसी गम्भीर विचार में मग्न हों।

"अच्छा लड़के अब तुम उठ खड़े हो। तुम ऐसे दिखाई दे रहे हो जैसे तुम्हारी सारी ताकत तुम्हारे शरीर से निचोड़ ली गई हो और यहाँ हड्डियों के अतिरिक्त और कुछ भी न बचा हो। अब सारा काम पूरा हो गया। सुना तुमने?"

गेव्रीला अब एक मनुष्य की बोली सुन कर संतुष्ट हुआ भले ही यह बोली चेलकश की ही क्यों न थी।

"तुम जो कुछ कह रहे हो मैं सुन रहा हूँ," उसने धीरे से कहा।

"बहुत ठीक, तो बेवकूफ आदमी . यहाँ आ और इस पहिए को सम्हाल। मैं पतवार चलाऊँगा। मेरा ख्याल है तू थक गया है।"

यंत्रचालित के समान गेव्रीला ने चेलकश से अपनी जगह बदल ली और जैसे ही वे एक दूसरे के पास से निकले चेलकश ने उस लड़के के दुख और कष्ट से पीले पड़े चेहरे को देखा और यह भी गौर किया कि उसकी टाँगें काँप रहीं थीं। उसे उसकी यह हालत देख कर दुख हुआ। उसके कंधे थप-थपाते हुए उसने कहा

"आओ लड़के! इतने निराश मत हो। आज तुमने अच्छा पैसा कमाया है मैं तुम्हें अच्छा इनाम दूँगा, मेरे बच्चे! तुम्हें एक बीस रूबल वाले नोट की खरखराहट अच्छी लगेगी?"

"मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि किसी तरह किनारे पर पहुँच जाऊँ।"

घृणा से चेलकश ने हाथ हिलाया, थूका, पतवार पकड़े और नाव खेना प्रारम्भ किया। वह अपनी लम्बी बाँहों से पतवार को बहुत पीछे तक खींच २ कर चला रहा था।

समुद्र निद्रा से जगकर अपनी छोटी २ लहरों से खेलने लगा। वह उन्हें उत्पन्न करता, झाग के टुकड़ों से सजाता, आपस में एक दूसरे से टकराता और छोटी २ फुहियों में तोड़ कर बिखरा देता। झाग पिघल रहा था जिससे फुसकार की और गहरी साँस लेने की सी ध्वनि आ रही थी। हवा में जल के उड़े हुए छींटों का सङ्गीत भर उठा था यहाँ तक कि अन्धकार में भी जीवन की चेतना उत्पन्न हो रही थी।

चेलकश ने कहना शुरू किया

" अच्छा, अब बताओ, तुम अपने गाँव वापिस जाकर शादी कर लोगे और फिर धरती जोतना और बीज बोना शुरू करोगे। तुम्हारी घरवाली बच्चे देना शुरू करेगी। तुम्हारे पास उनके लिये पूरा खाना भी नहीं जुट सकेगा। इस प्रकार तुम जीवन भर इसी तरह संघर्ष करते रहोगे क्या इसमें कोई मजा है ? "

" मजा ! मैं तो यह कहता हूँ कि यह सब बेकार है ! " गेव्रीला ने काँपते हुए जवाब दिया।

जगह २ पर हवा ने बादलों को फाड़ डाला था और आकाश के खुले हुए स्थानों से एक-आध तारा झाकने लगा था। समुद्र की लहरों में प्रतिबिम्बित होकर वे उनसे खेलने लगे। कभी गायब हो जाते और कभी फिर चमकने लगते।

" दाहिनी तरफ घुमाओ, " चेलकश ने कहा, "हम जल्दी वहाँ पहुँच जायगे हाँ-आँ ? . काम खतम हुआ। यह बहुत अच्छा काम रहा। तुम्हें मालूम है कैसे एक रात की मेहनत और बदले में पूरे पाँच सौ रूबल की आमदनी। "

" पाँ च सौ ! " अविश्वास पूर्वक गेव्रीला चीखा। परन्तु अचानक

वह भयभीत हो उठा और नाव के पेंदे में पड़ी हुई गाँठ में ठोकर मारता हुआ जल्दी से बोला—"यह क्या है ?"

"यह बहुत कीमती चीज है। अगर हम इसे इसकी असली कीमत पर बेचें तो हमें एक हजार रूबल मिल सकते हैं। लेकिन मैं इसके बदले में थोड़ा ही मांगूँगा। क्यों ठीक है न ?"

"हाँ औं-औं ?" प्रश्नसूचक मुद्रा में गेव्रीला बोला—"मैं चाहता हूँ कि मुझे भी एक ऐसी गाँठ मिल जाती।" उसने एक गहरी साँस लेते हुए आगे कहा जैसे ही अचानक उसे अपने गाँव की, छोटे से खेत की, माँ की और प्रत्येक वस्तु की याद आई जिसका उससे दूर या पास का कोई सम्बन्ध था और जिनके लिए पैसा पैदा करने की खातिर वह इतनी दूर आया था और आज रात की भयंकर परिस्थितियों में होकर उसे गुजरना पड़ा था। वह अपने उस छोटे से गाँव की याद कर विभोर हो उठा, जो विभिन्न प्रकार के वृक्षों से घिरा हुआ नदी की कगार पर बसा हुआ था… 'यह कितना अच्छा होता," उसने गहरी दुख भरी साँस लेते हुए कहा।

"हाँ-औं !" चेलकश कहता गया—"मैं सोच रहा हूँ कि कितना अच्छा हो अगर आज ही तुम अपने गाँव को जाने वाली गाड़ी से बैठ जाओ। "क्या तब सारी लड़कियाँ तुम्हारे पीछे नहीं भागती फिरेंगी। तुम जिसे चाहो उसे पसन्द कर सकते हो। तुम अपने लिए एक नया घर बना सकते हो…मैं नहीं सोचता कि एक नया घर बनाने के लिए इतना काफी होगा. ."

"यह ठीक है… यह एक नया घर बनाने के लिये काफी नहीं होगा। हमारी तरफ लकड़ी तेज है।

"खैर, तुम पुराने की मरम्मत करा सकते हो। अगर एक घोड़ा भी हो तो कैसा रहे ? तुम्हारे पास घोड़ा है ?"

"घोड़ा ! हाँ, मेरे पास एक घोड़ी है लेकिन बहुत बुड्ढी है… …"

' अच्छा, तुम एक घोड़ा खरीद सकते हो एक अच्छा सा घोड़ा ' और एक गाय भेड़ मुर्गियाँ ऊँट"

"ओह, ऐसी बातें मत करो ' भगवान ' क्या मैं तब जिन्दा रहूंगा !"

हाँ, भाई, यह सब कुछ बुरा तो नहीं है. मुझे कुछ कुछ अनुभव है कि वह जिन्दगी कैसी होती है। कभी एक समय मेरा भी अपना छोटा सा घोसला था, मेरा बाप गाँव का सबसे धनी व्यक्ति था "

चेलकश ने धीरे से पतवारों को चलाया। नाव लहरों पर नाचने लगी जो उसकी दीवाल से खेल रहीं थीं। वह बहुत धीरे धीरे समुद्र पर चल रही थी जो और भी भयकर होता जा रहा था। वे दोनों आदमी हिचकोले खाते हुए अपने सपनों में डूब गए और बैठे चारों ओर देखते रहे। उस लड़को को सांत्वना देने और खुश करने के लिये चेलकश ने उसके विचारों को उसके गाँव की ओर मोड़ दिया था और दिल्लगी करते हुए बातें प्रारम्भ की थीं। वह अपनी हँसी मूछों में छिपा रहा था। गेव्रीला से प्रश्न कर उसे किसान जीवन के आनन्द की याद दिलाई जिसमे कभी वह स्वय रहा था और अब निराश होकर उसे भूल चुका था। उसे उस जीवन की याद केवल अभी आई थी और धीरे २ वह विचारो में खो गया। इसने लड़के से गाँव और उसकी घटनाओं के विषय में प्रश्न पूछने बन्द कर दिये और इससे पहले कि वह इस बात को समझ सके, उसके विचारों का प्रवाह आगे बढ़ा.

"किसानो के जीवन में सब से महत्वपूर्ण बात आजादी है। तुम स्वय अपने मालिक हो। तुम्हारा अपना घर है। तुम्हारे पास जमीन है एक छोटा सा टुकड़ा परन्तु यह तुम्हारा तो है ' तुम अपनी जमीन पर राजा के समान हो ' तुम्हारा अपना व्यक्तित्व होता है तुम हरेक से अपने सन्मान की अपेक्षा कर सकते हो ' क्या ऐसा नहीं होता ?" उसने गम्भीर होकर उस जीवन का अनुभव सा करते हुए कहना समाप्त किया।

गेव्रीला उत्सुकता पूर्वक उसकी ओर ताकने लगा। वह भी उन्हीं

विचारों में बह गया था। इस बातचीत के दौरान में वह इस
गया था कि वह किस प्रकार के मनुष्य से व्यवहार कर रहा है,
के रूप में उसने अपनी ही तरह का एक किसान देखा जो
पसीना बहाता हुआ अपनी जमीन से चिपका रहता है। उसमें
की स्मृतियाँ भरी होती हैं। परन्तु जो उस जमीन और उसको
स्वेच्छा से त्याग कर भाग आया था और अपने उस आलस्य क
रहा था।

"हाँ, भाई, तुम ठीक कह रहे हो!" उसने कहा—"
सत्य! अपनी ओर देखो! जमीन के बिना अब तुम क्या हो।
तरह है जिसे आसानी से नहीं भुलाया जा सकता।"

चेलकश अपने विचारों से जगा। वह उस व्याकुल क
हृदय की जलन का अनुभव कर रहा था जिसका वह सदैव शिक
था जब कभी कोई उसके गर्व-दुस्साहस के काम करने का गर्व-क
विशेष रूप से वह व्यक्ति छेड़ता जिसे वह घृणा करता था।

"यह उपदेश बन्द करो!" उसने भयंकरता से कहा—
यह सोचा था कि मैं गम्भीरता पूर्वक बातें कर रहा हूँ? ...तुम
समझ रहे होगे?"

"तुम बड़े अजीब आदमी हो!" गेवीला झल्लाकर
तुम्हारे विषय में तो नहीं कह रहा था। तुम्हारी ही तरह के अ
हैं! ऊँह! इस संसार में दुखी मनुष्यों की कोई गिनती नहीं
घूमते नजर आते हैं।"

"यहाँ आओ और पतवार पकड़ो!" चेलकश ने आ

बातचीत दुबारा शुरू नहीं हुई परन्तु चेलकश को गेब्रीला की उस खामोशी में भी गाँव की स्मृति की झलक दीखी। बीते हुए दिनों की याद में डूब जाने से वह नाव को ठीक तरह से चलाना भूल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह धार में पड़ कर समुद्र की ओर चल दी। ऐसा लगता था मानो लहरों को नाव के मार्ग भ्रष्ट हो जाने का आभास मिल गया है इसीलिए वे उससे खेलती हुई उसे उछाले लिए जा रहीं हैं। पतवारों के नीचे से हलकी नीली रोशनी चमक उठती थी। चेलकश के मस्तिष्क से अतीत के चित्र घूमने लगे—उस सुदूर अतीत के जो वर्तमान से ग्यारह वर्षों की लम्बी दीवाल द्वारा पृथक कर दिया गया था। उसकी इन ग्यारह वर्षों की जिन्दगी आवारागर्दी की जिन्दगी रही थी। उसने स्मृति द्वारा अपने को एक बच्चे के रूप में देखा। उसने अपना गाँव, अपनी माँ-एक लाल गालों वाली मोटी स्त्री जिसके नेत्र भूरे और करुण पूर्ण थे, अपना बाप—लाल दाढ़ी वाला एक दैत्य जिसका चेहरा कठोर था, को देखा। इसके बाद उसके सामने वह चित्र आया जब वह दूल्हा बना था। इसके साथ ही उसकी स्त्री अनफिसा का भी चित्र आया—काली आँखें, कोमल, स्वस्थ शरीर, उन्नत स्तन, प्रसन्न मुख लड़की जिसके लम्बे २ चिकने बाल थे। उसने फिर स्वयं को एक सुन्दर सैनिक के रूप में देखा, फिर उसके पिता का चित्र आया परन्तु इस बार वृद्ध के रूप में जो कठोर परिश्रम और चिन्ताओं से झुक गया था, उसकी माँ झुर्रियोंदार शरीर और झुकी हुई स्त्री के रूप में दिखाई दी। और उसे वह दृश्य याद आया जब वह सेना से लौट कर आया था। उस समय उसका बाप अपने इस सुन्दर, बलवान सिपाही को देखकर गर्व से फूल उठा था। स्मृतियाँ दुखी मनुष्यों के लिये दंड के समान हैं। वे अतीत के पत्थरों तक को सजीव कर देती हैं और इस ज़हर से भरी हुई जिन्दगी में एक आध शहद की बूँदें टपका कर उसे मधु बना देती हैं।

चेलकश को ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसके गाँव की धीमी, शान्ति पहुँचाने वाली हवा धीरे २ उसके ऊपर पंखा झल रही हो और जिसके साथ

उसकी माँ की मृदुल वाणी, पिता का गम्भीर उपदेश तथा बहुत सी भूली हुई आवाजें उड़ती हुई उसके कानों में प्रविष्ट होने लगीं। साथ ही उसे उस मिट्टी से, जहाँ वह पैदा हुआ था, अनेक प्रकार की सुगन्ध उठती हुई अनुभव हुई। वह मिट्टी जो अभी जोती गई है और जिसमें जाड़े के गेहूँ के छोटे २ पौधों का मखमली कालीन, जिसमें मोती जड़े हों, फैला हुआ है। उसने अपने को उस जीवन से, जिसने उसकी नसों में बहने वाले खून को पैदा किया था, नितान्त दूर, एकाकी, भटका हुआ और बहिष्कृत सा अनुभव किया।

"हूँ! हम लोग कहाँ जा रहे हैं?" अचानक गेव्रीला चिल्ला उठा।

चेलकश चौंका और शिकारी बाज की सी सतर्कता से उसने चारों ओर देखा।

"हे भगवान! देखो हम किधर बहे जा रहे हैं। पतवार सम्हालो और तेजी से खींचो।"

"तुम सपना देख रहे थे, क्यों?" गेव्रीला ने मुस्कराते हुए पूछा।

"मैं थक गया हूँ......"

"अच्छा, तो, अब तो हम इनके साथ नहीं पकड़े जायगे?" गेव्रीला ने उन गांठों में ठोकर मारते हुए पूछा।

"नहीं......उस तरफ से तुम निश्चिन्त रहो...मैं इन्हें बेचकर पैसा ले आऊँगा।"

"पाँच सौ?"

"इससे कम नहीं।"

"एक अच्छी रकम है! काश यह मेरे पास होती! मैं मस्त होकर गाना गाता।"

"खेत पर?"

"हाँ, वहीं पर। मैं......।"

और गेव्रीला सपनों के पंखों पर बैठकर उड़ चला। चेलकश चुप-

चाप बैठा रहा। उसकी मूछें नीचे को झुक गई थीं। उसकी दाहिनी तरफ पानी के छींटे उछल २ कर उसे भिगो रहे थे। उसकी आँखें भीतर को धँस गई थीं। उनकी चमक जाती रही थी। उसके चेहरे का लुटेरापन इन वेदनापूर्ण विचारों से दब गया था जो उसकी सिकुड़न पड़ी हुई कमीज से भी प्रकट होता था।

उसने अचानक नाव को तेजी से घुमाया और पानी से बाहर निकली हुई किसी काली चीज की ओर चला।

आकाश फिर बादलों से ढक गया था। पानी पड़ने लगा। इस समय पानी की बौछार गर्म और अच्छी लगीं। लहरों पर पानी की बूँदें सड़कर सुन्दर शब्द उत्पन्न कर रही थीं।

"ठहरो। खामोश रहो!" चेलकश ने आज्ञा दी।

नाव का अगला सिरा एक जहाज़ की दीवाल से टकराया।

"क्या वे सो रहे हैं या कोई और बात है?" चेलकश बड़बड़ाया और उसने ऊपर के डेक से लटकते हुए रस्सों को पकड़ लिया।"सीढ़ी लटकाओ! इसका सत्यानाश हो! अभी पानी पड़ता था। अगर थोड़ी देर पहले पड़ गया होता तो कितना अच्छा रहता। ऐ शैतानो! ऐ!"

"क्या तुम हो, चेलकश!" ऊपर से एक आवाज आई जो बिल्ली की बोली जैसी थी।

"जल्दी आओ! सीढ़ी लटकाओ।"

"कालीमारा, चेलकश आया है"

"जल्दी सीढ़ी लटकाओ—नरक के शैतानो" चेलकश गरजा

"ओह! आज यह कितना गरम हो रहा है.. एलोच!"

"गेव्रील', तुम ऊपर जाओ," चेलकश ने अपने साथी से कहा।

एक क्षण में वे लोग ऊपर डेक पर पहुँच गये जहाँ तीन काली दाढ़ी वाली शक्लें खड़ी हुई किसी विदेशी भाषा में बातें कर रही थीं और नीचे चेलकश की नाव की ओर झाँक रही थीं। एक चौथा व्यक्ति, दुशाला ओढ़े हुए चेलकश के पास आया उसने चुपचाप उससे हाथ मिलाया और गेव्रीला की ओर सन्देह से देखने लगा।

"सुबह तक पैसे ले आना," चेलकश ने उससे कटुतापूर्वक कहा। "मैं अब वापिस जाऊँगा। गेव्रीला, चलो, चलें। क्या तुम कुछ खाना चाहते हो?"

"मैं केवल सोना चाहता हूं.." गेव्रीला ने जवाब दिया और पाँच मिनट बाद ही वह खर्राटे भर रहा था। चेलकश उसकी बगल में बैठा विचारों में खोया हुआ एक तरफ थूकता जाता और एक शोकपूर्ण ध्वनि में सीटी बजाकर गाना गा रहा था। फिर वह भी उसी की बगल में लम्बा पड़ गया और बांहों पर सिर रख कर मूँछें चबाता हुआ लेटा रहा। बजरा पानी पर खेलता हुआ सा धीरे धीरे हिल रहा था। किसी चीज की चरचराहट की आवाज आई। डेक पर वर्षा की बूँदों की पटपटाहट सुनाई दे रही थी। लहरें बजरे की बगल में टकराकर छींटे उछाल रही थी। और ये सब शब्द मिलकर एक शोकपूर्ण वातावरण उत्पन्न कर रहे थे। मानो कोई माँ, जिसके जीवन की सम्पूर्ण सुखमयी आशायें छिन्न भिन्न हो चुकी हों, अपने बच्चे को पालने में झुलाती हुई, कोई दुःख से भरा हुआ गाना गा रही हो।.

चेलकश ने मुँह खोला, सिर उठाकर इधर उधर देखा, कुछ बुद-बुदाया और फिर लेट गया। उसने अपनी लम्बी टाँगे फैला दीं। इस प्रकार पड़ा हुआ वह ऐसा लग रहा था जैसे एक बहुत बड़ी कैंची अपने दोनों फल खोले जमीन पर पड़ी हो।

: २ :

चेलकश पहले जगा, सतर्कतापूर्वक उसने चारों ओर देखा और शान्त होकर गेव्रीला की तरफ निगाह डाली जो अभी तक आराम से खर्राटे भरता हुआ सो रहा था। उसके स्वस्थ, धूप से सांवले पड़े हुए बच्चों के से चेहरे पर मुस्कान फैली हुई थी। चेलकश ने गहरी साँस ली और एक पतली रस्सी की सीढ़ी पर चढ़ा। भूरे आकाश का एक टुकड़ा नीचे झाँक रहा था। सुबह की सफेदी फैल रही थी परन्तु वातावरण बड़ा नीरस था जैसा कि आमतौर पर पतझड़ के दिनों में होता है।

चेलकश लगभग दो घन्टे बाद लौटा, उसका चेहरा चमक रहा था और मूँछे गर्वपूर्ण मुद्रा में ऊपर की ओर उठी हुई थीं। वह एक छोटा सिपाहियों का सा कोट, हिरन की खाल की बीचिस और लम्बे और मजबूत बूटों का जोड़ा पहने हुए था। इस पोशाक में वह एक शिकारी सा लग रहा था। यद्यपि यह पोशाक नई नहीं थी फिर भी उस पर फब रही थी। इसमें वह चौड़ा और स्वस्थ दिखाई पड़ रहा था। तथा उसका दुबलापन छिप गया था और उसकी आकृति में फौजी शान आ गई थी।

"ऐ बछड़े, उठो!" वह चिल्लाया और गेव्रीला को पैर से धक्का दिया।

गेव्रीला उछल पड़ा। अभी उसकी आँखों में नींद भरी हुई थी इस-लिये वह चेकलश को पहचान नहीं सका और उसकी ओर बेवकूफ की तरह उनींदी आँखों से ताकने लगा। चेकलश जोर से हँस पड़ा।

"तुम बहुत अच्छे लग रहे हो," अन्त में गेव्रीला की वाणी फूटी और मुस्कराते हुए वह बोला—"बिलकुल एक भले मानस की तरह।"

"ऐसा करने में हम लोगों को देर नहीं लगती। अच्छा, तुम एक डरे हुए बच्चे नहीं हो न। तुमने सोचा था कि पिछली रात तुम हजारों बार मौत के नजदीक पहुँच गये थे। है न ऐसी बात?'

"हाँ, लेकिन तुम्हीं सोचो। यह पहला मौका था कि मुझे ऐसे काम पर जाना पड़ा। मैं इसके लिए जीवन भर पछताता रहता।"

"क्या तुम मेरे साथ फिर ऐसे काम पर चलने को तैयार हो?"

"फिर? अच्छा मैं क्या कह सकता हूँ? मुझे इसमें क्या मिलेगा पहले यह बताओ।"

"अच्छा, कल्पना करो कि तुम्हें दो सतरंगे—सौ सौ रूबल के नोट मिल जाँय तो?'

"दो सौ रूबल? यह रकम इतनी बुरी तो नहीं है मैं इसके लिये जरूर चलूँगा।"

"मगर एक मिनट ठहरो! अपनी आत्मा के पतन के विषय में तुम्हारा क्या ख्याल है।"

"अच्छा...शायद...उसका पतन नहीं होगा" गेव्रीला मुस्कराता हुआ बोला—"और अगर मैं इस काम के करने मे नहीं डरूँगा तो मैं जिन्दगी भर के लिए एक बड़ा आदमी बन जाऊँगा।"

चेलकश खुशी से हँस पड़ा और बोलाः

"अच्छा, ठीक है! काफी मजाक हो चुका। अब किनारे पर चलना चाहिए।"

वे फिर नाव मे बैठ गए चेलकश नाव घुमाने के पहिए पर और गेव्रीला पतवारों पर। उनके ऊपर भूरा आसमान बादलों से ढका हुआ था। उदास हरा समुद्र नाव से खेलने लगा। कभी उसे अपनी लहरों पर ऊपर की ओर उछाल देता और कभी ऊपर आ चमकती हुई खारी बूँदों का जाल सा तान देता। बहुत दूर आगे की तरफ रेतीले किनारे की पीली रेखा दिखाई दे रही थी और इनके पीछे विशाल लम्बा समुद्र फैला हुआ था जिस पर सफेद झागों से अलंकृत लहरों की लम्बी कतारें बनी हुई थीं। वहाँ दूर बहुत से जहाज़ खड़े थे। बांयी ओर मस्तूलों का एक जङ्गल सा दिखाई दे रहा था। शहर के सफेद मकानों से एक मधुर झनझनाहट की सी आवाज आ रही थी जो लहरों की आवाज में मिल कर एक सुन्दर संगीत की सृष्टि कर देती थी। और इन सब के ऊपर कुहरे की एक पतली झीनी चादर छाई हुई थी जिससे वे सब चीजें एक दूसरे से अलग, एकाकी सी दिखाई पड़ रही थीं।

"ऊँह! ऐसा मालूम पड़ता है कि आज शाम को नरक का सा भयंकर दृश्य उपस्थित होगा।" समुद्र की ओर इशारा करते हुए चेलकश बोला।

"तूफान?" तेजी से पतवार चलाते हुए गेव्रीला ने पूछा। वह हवा द्वारा उछाले गए छींटों से सिर से लेकर पैर तक भीग चुका था।

"बिलकुल नहीं?" चेलकश बोला।

ग्रेव्रीला ने उसकी ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा।

"अच्छा उन लोगों ने कितना दिया?" अन्त में यह जानकर कि चेलकश बातें करने के लिए प्रस्तुत नहीं, उसने पूछा।

'देखो !" चेलकश ने अपनी जेव से कुछ निकाल कर गेव्रीला को दिखाते हुए कहा।

ग्रेव्रीला ने रंगीन नोटों का एक वन्डल देखा और खुशी से उसकी आखें चमक उठीं।

"ऊँह ! और मैंने सोचा था कि तुम मुझे खिला रहे हो। इसमें कितने हैं।"

"पाँच सौ और चालीस।"

"मेरे भगवान ?" गेव्रीला ने फुसफुसाते हुए कहा और उसकी लालची निगाहें बराबर उन नोटों पर जमी रहीं जिन्हें चेलकश ने पुन. अपनी जेव में रख लिया। "ओह ! अगर मेरे पास केवल इतना ही होता" और उसने एक गहरी साँस खींची।

"कहो ! क्या अब अपना समय मजे में नहीं कटेगा।" चेलकश प्रसन्नता से भर कर बोला "हम लोग शराब पीने चलेंगे। फिकर मत करो। तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिलेगा—मैं तुम्हें चालीस रूवल दूँगा। इतना तुम्हारे लिए काफी है ? अगर तुम चाहो तो मैं अभी तुम्हें दे दूँ ?"

"अगर यह तुम्हारे लिए ज्यादा न हो। मै ले लूँगा।"

गेव्रीला के सीने में इतनी वड़ी रकम पाने की आशा की खुशी से दर्द सा हो उठा।

"ओह ! शैतान के वच्चे ! मै ले लूँगा, तुम कहते हो ! अच्छा लो। महरवानी कर मेरे ऊपर एक अहसान और कर दो। मै नहीं जानता कि इस पैसे का क्या करूँ। इससे छुटकारा पाने में मेरी मदद करो। इसे ले लो। ले लो न !"

चेलकश ने कई नोट आगे वढ़ाए। गेव्रीला ने काँपते हाथों से इन्हे ले लिया, पतवार छोड़ दी और उन्हें अपनी कमीज की भीतरी जेव में ठूँस लिया। वह अपनी लालची आँखों को इधर उधर नचा रहा था और जोर जोर से साँस खींच रहा था जैसे कोई गरम चीज पीता जा रहा हो। चेलकश एक व्यंगपूर्ण मुस्कान से उसकी ओर देखता रहा। गेव्रीला ने

फिर पतवार पकड़ी और सीधी निगाह किए, काँपता हुआ, तेजी से उन्हें चलाने लगा जैसे किसी चीज से डर रहा हो। उसके कन्धे और कान फड़क रहे थे।

"तुम लालची हो !......यह बुरी बात है......परन्तु इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं......तुम एक किसान हो......" चेलकश ने सोचते हुए गम्भीर मुद्रा में कहा।

"लेकिन देखो, तुम पैसे का क्या करोगे ?" उत्तेजना से भर कर गेव्रीला बोला। और उसने इतनी तेजी से और जल्दी जल्दी कहना शुरू किया मानो वह अपने विचारों और शब्दों को पकड़ने का प्रयत्न कर रहा हो। उसने ग्रामीण जीवन में पैसे का महत्त्व बताया कि वहाँ उसकी सहायता से कैसे सम्मान मिलता है और कैसे सब तरह की चीजें और आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

चेलकश गम्भीर मुद्रा से ध्यानपूर्वक सुनता रहा और उसने ऐसे आँखें सिकोड़ीं जैसे गम्भीरतापूर्वक कुछ सोचने का प्रयत्न कर रहा हो। रह रह कर वह पूर्ण सन्तोष के साथ मुस्करा उठता।

"हमें यहाँ उतरना है।" गेव्रीला को रोकते हुए चेलकश बोल उठा।

एक लहर ने नाव को उठाया और रेतीले किनारे पर पटक दिया।

"अच्छा, अब सारा काम पूरा होगया भाई। नाव को और ऊपर खींच लो जिससे वह बह न जाय। वे इसे लेने के लिए आयेंगे। और अब हम लोगों को अलग हो जाना चाहिए। यहाँ से शहर आठ मील है। मेरा ख्याल है कि तुम शहर वापिस जाओगे ? वहाँ जा रहे हो न ?"

एक चालाकी से भरी हुई प्रसन्न मुस्कराहट चेलकश के चेहरे पर नाच उठी। उसकी सम्पूर्ण मुद्रा से यह प्रकट हो रहा था कि उसने अपने को प्रसन्न करने और गेव्रीला को आश्चर्यचकित करने का कोई

उपाय सोच रखा है। अपनी जेब में हाथ डाल कर उसने भीतर पड़े हुए नोटों को खरखराया।

"नहीं ' ' मैं नहीं जाऊँगा ' मैं '''"गेव्रीला चुप होगया जैसे उसकी दम घुट रही हो।

चेलकश ने उसकी ओर देखा और पूछा

"तुम्हें क्या तकलीफ हो रही है ?"

"कुछ नहीं'' सिर्फ" गेव्रीला का चेहरा चमक उठा और काला पड़गया। वह वहाँ खड़ा हुआ बेचैन सा इधर उधर हिल रहा था। इस इच्छा से कि अभी चेलकश पर झपट पड़े या इसलिए कि ऐसा करना उसे असम्भव लग रहा था। कहा नहीं जा सकता कि इनमें से किस बात से वह बेचैन हो रहा था।

उस लड़के की इस बेचैनी को देख कर चेलकश शकित हो उठा और यह देखने का इन्तजार करने लगा कि इसका क्या नतीजा निकलता है।

गेव्रीला बड़े अजीब ढग से हंसने लगा जो सिसकियों की तरह सुनाई दे रहा था। उसने अपना सिर नीचे लटका लिया जिससे चेलकश उसके मुख के विचारों को पढ़ने में असमर्थ रहा। सिर्फ उसके कान दिखाई दे रहे थे जो रह रह कर बारी बारी से लाल और पीले हो उठते थे।

"जहन्नुम में जाओ।" घृणा से हाथ हिलाते हुए चेलकश ने कहा—"क्या तुम मुझे प्रेम करने लगे हो या क्या मामला है ? खड़े हुए लड़की की तरह काँप रहे हो ! या यह बात है कि तुम मेरा साथ नहीं छोड़ना चाहते ? अच्छा, देखो ! बोलो वर्ना मैं चला जाऊँगा।"

"तुम चले जाओगे ?" गेव्रीला चीखा।

इस चीख से वह रेतीला किनारा काँप उठा और समुद्र की लहरों से निरन्तर धोई जाने वाली रेतीली कगारों से एक गहरी साँस लेने की सी ध्वनि उत्पन्न हुई ! चेलकश भी कांप उठा। अचानक गेव्रीला चेलकश की ओर झपटा और उसके पैरों पर गिर पड़ा। गिरकर उसने अपनी बाहों को उसके घुटनों के आगे और लपेट कर जोर से खींचा। चेलकश लड़खड़ाया

और धम से बालू पर गिर पड़ा। दाँत पीसते हुए उसने अपनी लम्बी बाँह उठाई और करीब ही था कि वह अपनी बँधी हुई मुट्ठी से गेब्रीला के सिर पर प्रहार करता कि उस लड़के के दुखी और शर्मीले स्वर ने उसे रोक लिया।

"अच्छे आदमी बनो!"'मेरे ऊपर रहम करो'''वह पैसा मुझे दे दो। भगवान के लिए मुझे दे दो! यह तुम्हारे लिये ज्यादा नहीं! तुमने इसे एक रात में कमाया है ''' केवल एक रात में ''' परन्तु मुझे इतना कमाने में वर्षों लग जायेंगे'''यह मुझे दे दो, मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करूँगा। हमेशा ''' तीन गिर्जों में'''मैं तुम्हारी आत्मा की शान्ति और उद्धार के लिये प्रार्थना करूँगा। तुम इस पैसे को केवल बर्बाद कर दोगे ''' परन्तु मैं, मैं इसे जमीन में लगाऊँगा! मुझे दे दो! यह तुम्हारे लिए ज्यादा नहीं! तुम आसानी से और पैदा कर सकते हो। एक रात ''' और तुम धनवान बन जाओगे। मेरे ऊपर इतना अहसान करदो। क्योंकि तुम तो खुद बर्बाद हो'''तुम्हारे सामने कुछ भी नहीं है '''''लेकिन'' मैं'''ओह'' मैं इस पैसे से क्या नहीं कर सकता। यह मुझे दे दो!"

चेलकश बालू पर बैठ गया भयभीत, आश्चर्यचकित और क्रुद्ध होकर। पीछे को झुक कर वह अपने हाथों का सहारा ले रहा था। वह बिना एक भी शब्द बोले, आँखें फाड़े, उस लड़के की ओर टकटकी बाँधे देख रहा था जो उसके घुटनों में सिर छिपाये, फुसफुसाते हुए गहरी साँस लेकर प्रार्थना कर रहा था। अन्त में उसने लड़के को दूर हटा दिया और उछल कर खड़ा हो गया। जेबों में हाथ ठूँसा; अनेक नोट निकाले और उन्हें गेब्रीला पर फेंक दिया।

"तुम्हारा यह मतलब है! इन्हें ले जाओ!" उत्तेजना से काँपते हुए वह बोला। उसके हृदय में इस लालची लड़के के लिये अत्यधिक दया और घृणा की भावना भर उठी थी और नोटों को फेंक कर एक महान् व्यक्ति के समान उसने सिर ऊँचा उठाया।

"मैं खुद ही तुम्हें और अधिक देना चाह रहा था" उसने कहा—"कल रात अपने गाँव की याद कर मेरा हृदय पिघल उठा था मैंने सोचा, मैं इस लड़के की मदद करूँगा। मैं केवल यह देख रहा था कि तुम मुझसे माँगते हो या नहीं। लेकिन तुम उँह! तुममें हिम्मत नहीं है। तुम एक भिखारी हो! क्या पैसे के लिए इस तरह गिड़गिड़ाना और दुःखी होना अच्छा लगता है! मूर्ख! लालची शैतान! .. इनमें आत्मसम्मान ही नहीं ये लोग पाँच पैसों के लिये भी अपने को बेच सकते हैं।"

"फरिश्ता! . क्राइस्ट हमेशा तुम्हारी रक्षा करे! अब मैं एक दूसरा आदमी बन गया हूँ एक धनवान!" गेव्रीला काँपते हाथों से उन नोटों को जेब में रखते हुए प्रसन्नता से चीख उठा। "तुम एक फरिश्ते हो! मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगा—जीवनपर्यन्त नहीं भूलूँगा! और मैं अपनी स्त्री और बच्चों से तुम्हारे लिए प्रार्थना करने के लिये कहूँगा।"

इस प्रसन्नता की चीखों को सुनकर और उस लड़के के लालच के आवेग से लाल हो रहे चेहरे को देखकर चेलकश ने अनुभव किया कि वह स्वयं एक चोर, बदमाश, अपने सगे सम्बन्धियों से बिछुड़ा हुआ होने पर भी कभी भी लालची, नीच और अपने को नीचा गिराने वाला नहीं बन सकता। नहीं! वह इतना नीचे कभी नहीं गिरेगा और इस विचार और अनुभव ने उसे अपनी स्वतन्त्रता के प्रति चैतन्य बनाकर गेव्रीला के साथ उस समुद्र के निर्जन तट पर रोक रखा।

"तुमने मुझे जिन्दगी भर के लिए सुखी बना दिया है!" गेव्रीला चेलकश के हाथों को पकड़ कर अपने चेहरे पर दबाते हुए चीख उठा।

दाँतों को भेड़िए की भाँति निकाले हुए चेलकश खामोश खड़ा रहा। गेव्रीला कहता गया

"और जरा सोचो तो! जब हम यहाँ आ रहे थे मैं अपने मन में सोच रहा था मैं उसके सिर पर—मेरा मतलब तुम से है—पतवार का एक करारा हाथ मारूँगा और पैसा छीन कर समुद्र में फेंक दूँगा। . कोई भी

उसके गायब होजाने की चिन्ता नहीं करेगा। मैंने अपने आप सोचा। और अगर वह गायब भी हो गया तो कोई भी उसके लिये परेशान नहीं होगा। वह ऐसा आदमी नहीं जिसके लिये कोई शोर मचाए। किसी के भी काम का नहीं! उसके लिये कौन खोज बीन करेगा?"

चेलकश ने गेव्रीला का गला पकड़ लिया और गरजा:
"वह पैसा वापिस करो!"

गेव्रीला ने छूटने की कोशिश की परन्तु चेलकश का दूसरा हाथ साँप की तरह उसके चारों ओर लिपट गया। कपड़े फटने की आवाज हुई और गेव्रीला लात फेंकता हुआ बालू पर गिर पड़ा। उसकी कमीज नीचे तक फट गई थी। उसकी आँखें भयंकर आश्चर्य से खुली रह गई थीं और वह अपने हाथ की उँगलियों से हवा में कुछ पकड़ने की कोशिश कर रहा था। चेलकश वहाँ खड़ा था—लम्बा सीधा तना हुआ, दुबला पतला, आँखों में लुटेरे की सी भावना भरे हुए। दाँत फाड़ते हुए वह एक तिरस्कार और घृणा से भरी हुई हँसी हँसा। उसकी मूछें उसके तीखे चौकोर चेहरे पर काँप रहीं थीं। जीवन में कभी भी उसे इतनी बुरी तरह से अपमानित नहीं होना पड़ा था और न कभी उसे इतना भयंकर गुस्सा ही आया था।

"अच्छा, तुम खुश हो?" हँसते हुए उसने गेव्रीला से पूछा। और फिर उसकी तरफ पीठ कर वह शहर की ओर चल दिया। लेकिन वह मुश्किल से छः कदम बढ़ा होगा कि गेव्रीला बिल्ली की तरह रेंगा, उछल कर अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अपना हाथ घुमा कर चेलकश को ताक कर एक बड़ा पत्थर फेंका और भयंकरता से चीखा:
"यह ले!"

चेलकश रुका, अपने हाथों को सिर पर रखा, लड़खड़ाया, गेव्रीला की ओर उसका सामना करने के लिये घूमा और मुँह के बल बालू पर गिर पड़ा। गेव्रीला घबड़ा कर उस लम्बे पड़े हुए आदमी की ओर देखने

लगा। उसने उसकी टांग को हिलते देखा और यह भी कि उसने अपने सिर को उठाने की कोशिश की और फिर लेट कर एक रस्सी की तरह ऐंठने लगा। और फिर गेव्रीला भागा, जितनी तेजी से उसकी टांगें उसे ले जा सकती थीं—इस तरफ, जहाँ दूर एक काला बादल कुहरे से भरे हुए मैदान पर लटका हुआ था और जहाँ घोर अन्धकार था। लहरें रेतीले तट पर आतीं उसके साथ मिल जातीं लहरों से साँप के फुसकारने की सी आवाज उठती और हवा पानी के छींटों से भर जाती।

पानी बरसने लगा, पहले धीरे २ लेकिन शीघ्र ही आकाश से मूसलाधार वर्षा होने लगी। पानी की धाराओं ने चारों ओर पानी का एक जाल सा बुन दिया। एक ऐसा जाल जिसने तुरन्त ही घास के मैदान और समुद्र को ढक लिया। गेव्रीला इस जाल में गायब हो गया। कुछ समय तक पानी के और उस लेटे हुए आदमी के लम्बे शरीर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दिखाई दिया। परन्तु वर्षा की उस झड़ी में गेव्रीला फिर नजर पड़ा—पूरी तेजी से दौडता हुआ जैसे एक चिड़िया अपने पंखों पर उडी आ रही हो। वह दौड़ता हुआ चेलकश के पास आया, घुटनों के बल उसके सामने बैठा और पलट कर उसका मुँह ऊपर की ओर कर दिया। उसके हाथ में कुछ गर्म लाल और चिपचिपी सी चीज लगी। वह काँप उठा। भय से उसका चेहरा पीला पड गया।

"भाई, उठो!" बूँदों की उस पटपटाहट के बीच में उसने चेलकश के कानों में फुसफुसाया।

चेलकश होश में आया और गेव्रीला को एक ओर हटा कर घरघराती आवाज मे बोला

"भाग जाओ!"

"भाई! मुझे माफ कर दो! शैतान ने मुझे ललचा लिया था।" चेलकश के हाथों को चूमते हुए कांपती आवाज में गेव्रीला ने कहा।

"जाओ...भाग जाओ..." चेलकश हांफता हुआ चिल्लाया।

"मेरी आत्मा पर से इस पाप के बोझ को उतार दो?...... दया करो! माफ कर दो!"

"माफ. .भाग जाओ! ..जहन्नुम में जाओ!" अचानक चेलकश चीख उठा और उठ कर बैठ गया। उसका चेहरा पीला और गुस्से से भरा था। आँखें भारी हो रही थीं और पलकें इस प्रकार झुकी जा रही थीं जैसे उसे बहुत जोर की नींद लग रही हो। "अब तुम और क्या चाहते हो? तुमने अपना काम पूरा कर दिया...अब जाओ! दूर हो जाओ?" और उसने दुख से निर्जीव बने हुए गेव्रीला को अपने पैर से धक्का दिया परन्तु इतना ही उसके लिये बहुत अधिक कष्टदायक प्रमाणित हुआ। इस झटके से वह फिर बालू पर गिर पड़ा होता यदि गेव्रीला अपनी बाहों से उसे न सम्हालता। अब चेलकश का चेहरा गेव्रीला के चेहरे के बिल्कुल सामने था। दोनों ही पीले और भयानक दिखाई दे रहे थे।

"थू" और चेलकश ने अपने नौकर को पूरी खुली हुई आँखों में थूक दिया। गेव्रीला ने अपनी बाँह से आँखें पोंछी और धीरे से कहा:

"जो तुम्हें अच्छा लगे सो करो...मैं एक शब्द भी नहीं कहूंगा। मुझे माफ करो, ईश्वर के लिए माफ कर दो।"

"कीड़ा...तुम में कुछ भी करने का साहस नहीं है...।" घृणापूर्वक चेलकश चिल्लाया और फिर अपने कोट के नीचे से कमीज फाड़ कर अपने सिर पर पट्टी बाँधने लगा। वह रह रह कर दर्द और गुस्से से दाँत पीस उठता। अन्त में दाँतों की भिंची मारे हुए बोला—"क्या तुमने वह पैसा निकाल लिया?"

"नहीं, मैंने नहीं लिया, भाई? मुझे नहीं चाहिए? मैं हर जगह पर बस मुसीबत ही खड़ा करता हूँ!" चेलकश ने अपने कोट की जेब में हाथ डालकर नोटों का बन्डल बाहर निकाला और उसमें से एक सतरंगा नोट

निकाल कर जेब में रख लिया और बाकी पैसा गेब्रीला की ओर फेंकता हुआ बोला.

"यह लो और चले जाओ !"

"मैं इसे नहीं लूंगा, भाई !......मैं नहीं ले सकता ? मुझे माफ कर दो।"

"इसे ले लो, मैं तुम से कहे देता हू !" अपनी आँखों को भयकर रूप से चलाते हुए चेलकश गरजा।

"मुझे माफ कर दो.. —और तब मैं इसे ले लूँगा..." गेब्रीला ने सहम कर कहा और वर्षा से भीगी हुई उस बालू पर चेलकश के चरणों में गिर पड़ा।

"झूठा ! तुम इसे ले लोगे ! मैं जानता हू तुम ले लोगे, कीड़े कहीं के !" चेलकश ने पूर्ण विश्वास के स्वर में कहा। गेब्रीला के बाल पकड़ कर उसने उसका मुँह ऊपर किया और उसमें वे नोट ठूँसते हुए बोला।

"इसे ले लो ! लो ! तुमने यह पैदा किया है ! लो ! डरो मत ! इसके लिये शर्मिन्दा मत हो कि तुमने एक आदमी को लगभग मार ही डाला था ! मुझ जैसे व्यक्ति से अपना पीछा छुड़ा लेने के लिए कोई भी तुम्हें सजा नहीं देगा। अगर उन्हें यह मालूम पड़ जाय तो वे इसके लिए उल्टा तुम्हें धन्यवाद देंगे ! इसे ले लो !"

यह देखकर कि चेलकश मजाक कर रहा है गेब्रीला ने चैन की साँस ली। उसने नोटों को मजबूती से हाथ में पकड़ कर रोती हुई आवाज में पूछा

"परन्तु तुम मुझे माफ कर दोगे, भाई, कर दोगे न ?"

"फरिश्ता ! " मजाक के उसी स्वर में चेलकश ने जवाब दिया।

पैरों पर खड़े होते हुए और काँपते हुए वह बोलाः "माफ कर दूं ?

माफ करने की कोई बात नहीं है ! तुमने आज मेरे साथ ऐसी हरकत की है और मैं भी कल तुम्हारे साथ ऐसा ही कर सकता हूं।"

"ओह, भाई, भाई ?" दुख से सिर हिलाते हुए गेव्रीला ने आह भरी।

चेलकश अपने चेहरे पर एक विचित्र मुस्कान लिये उसके सामने खड़ा था। उसके सिर पर बँधा हुआ कपड़ा धीरे २ लाल होता जा रहा था और तुर्की टोपी की तरह दिखाई देने लगा था।

अब मूसलाधार वर्षा हो रही थी। समुद्र गम्भीर गर्जन कर रहा था। लहरें क्रुद्ध होकर भयंकर रूप से तट पर टकरा रही थीं।

वे दोनों आदमी खामोश थे।

"अच्छा, विदा !" चलते हुए चेलकश ने कठोरता से कहा।

वह लड़खड़ाया, उसके पैर काँपे और उसने अपना सिर विचित्र रूप से ऊपर उठाया जैसे उसे डर लग रहा हो कि कहीं यह गिर न जाय।

"मुझे माफ कर दो, भाई !" गेव्रीला ने एक बार फिर प्रार्थना की।

"कोई बात नहीं !" चलते हुए खामोशी से चेलकश ने उत्तर दिया।

वह लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा। बायें हाथ से अपना सिर पकड़े तथा दाहिने हाथ से धीरे २ मूछें ऐंठता चल रहा था।

गेव्रीला उसकी तरफ देखता रहा जब तक कि वह पानी के पर्दे में ग़ायब न हो गया, जो अब पहले से भी अधिक तेजी से पड़ रहा था—पतली, निरन्तर पड़ने वाली धाराओं में और जिसने उस मैदान को एक अभेद्य धुँध में, जिसका रङ्ग लोहे का सा था, ढक लिया था।

तब उसने अपनी भीगी टोपी उतारी, मुँह पोछा, अपने हाथों में मजबूती से पकड़े हुए नोटों की ओर देखा और छुटकारे की गहरी साँस ली। फिर उन नोटों को कमीज की जेब में रखकर दृढ़तापूर्वक कदम रखता हुआ किनारे पर चल दिया...उसकी बिल्कुल दूसरी दिशा में जिधर चेलकश गया था।

समुद्र भयंकर रूप से गरजता हुआ बड़ी बड़ी विशालकाय भयंकर लहरों को किनारे पर फेंक रहा था। तट से टकरा कर लहरें टूट जातीं और झाग उगलने लगतीं। वर्षा जमीन और समुद्र पर निरन्तर गम्भीर आघात कर रही थी ..हवा चीत्कार भर रही थी . हवा में चारों ओर भयभनाहट, गर्जन और गड़गड़ाहट का शोर भर उठा था। वर्षा ने आकाश और पृथ्वी दोनों को ढक लिया था।

शीघ्र ही वर्षा की बौछारों और लहरों के पानी ने उस लाल धब्बे को धो डाला जहाँ चेलकश पड़ा रहा था और उन निशानों को भी नष्ट कर दिया जिन्हें चेलकश और उसके लड़के ने बालू के तट पर बना दिया था ...और उस निर्जन समुद्र तट पर जहाँ वह छोटा सा नाटक खेला गया था, जिसमें यही दो व्यक्ति पात्र थे, उसकी याद दिलाने वाला एक भी निशान बाकी न बचा।



मकार चूद्र

समुद्र से ठंडी नम हवा का एक झोंका उठा और उसने घास के लम्बे चौड़े विस्तृत मैदान के ऊपर बहते हुए चारों ओर, तट पर टकराती हुई लहरों का मर्मर संगीत और झाड़ियों की सनसनाहट का स्वर भर दिया।

जब तब हवा के तेज झोंके सूखे, सिकुड़े हुए पीले पत्तों को समेट कर उन्हें पड़ाव की अग्नि में झोंक देते जिससे वह प्रज्वलित हो उठती। शारदीय रात्रि का हमारे चारों ओर फैला हुआ उदास वातावरण रह रह कर काँपता और पीछे हट जाता। अग्नि की लपटें क्षण भर के लिये, हमारी बाँयी ओर फैले हुए विस्तृत मैदान को, दाहिनी ओर स्थित अनंत सागर को तथा मेरे सामने बैठे हुए बुड्ढे जिप्सी मकारचूद्र का, जो हमसे लगभग पचास कदम पर गड़े जिप्सी कैम्प में बँधे हुए घोड़ों को सतर्क होकर देख रहा था, अपने तीव्र प्रकाश से दृष्टिगोचर बना देती थीं।

ठंडी तीखी वायु के तीव्र झोंकों के प्रति पूर्ण उपेक्षा का भाव धारण किए, जो उसके काकेशिया के बने चमड़े के कोट तथा उसकी खुली हुई छाती पर बेरहमी से घूंसा सा मार रहे थे, वह एक गर्वपूर्ण मुद्रा में मेरी ओर मुँह किए बैठा हुआ था। वह अपने भारी पाइप से बराबर तम्बाकू पीता हुआ अपनी नाक और मुँह से धुँए के घने अम्बार उगल रहा था। मेरे सिर के ऊपर से देखता हुआ वह अपनी निगाहें उस मृत्यु के समान शीतल एवं भयंकर सघन अन्धकार पर जमाए हुए था और बिना रुके निरन्तर बातें करता जाता था। ठंडी हवा के उन हड्डियों तक को कपा देने वाले निर्दय झोंकों से अपने को बचाने का उसने कोई प्रयत्न नहीं किया।

"तो तुम दुनियाँ में इधर-उधर घूमते फिरते हो। बहुत सुन्दर! मेरे बच्चे, तुमने बहुत अच्छी जिन्दगी अपनाई है। जिन्दगी बिताने का केवल यही एक तरीका है—घूमो फिरो और दुनियाँ देखो और जब अपनी इच्छानुसार सब कुछ देख चुको तो चुपचाप एक स्थान पर बैठ जाओ और समाप्त हो जाओ। यही जिन्दगी का सार है।

"जिन्दगी? दूसरे लोग? 'यही सब कुछ है' के प्रति मेरे द्वारा उठाए हुए विरोध को शंका की दृष्टि से देखते हुए वह आगे बोला "ऊँह! इसकी तुम्हें क्या चिंता? क्या तुम अपने आप में खुद ही जिन्दगी नहीं हो? दूसरे लोग तुम्हारे बिना भी जिन्दा रहते हैं और तुम्हारे बिना ही अपनी जिन्दगी बिता देंगे। क्या तुम समझते हो कि इस दुनियाँ में किसी को तुम्हारी जरूरत है? तुम न तो किसी के लिए रोटी बन सकते हो और न सहारे की लकड़ी हो। फिर किसी को तुम्हारी क्या जरूरत हो सकती है!"

"तुम कहते हो—सीखने और सिखाने के लिए? परन्तु क्या तुम कभी दूसरों को खुश करना सीख सकते हो? नहीं, यह नामुमकिन है और दूसरों को सिखाने की कोशिश करने से पहले ही तुम्हारे बाल सफेद हो जायगे। और तुम उन्हें सिखाओगे ही क्या? हरेक आदमी यह जानता है कि उसे क्या चाहिए। जो अक्लमन्द हैं वे लेने लायक सब कुछ खुद ही ले लेते हैं। बेवकूफ कुछ भी नहीं ले पाते। फिर भी हर आदमी सब कुछ अपने आप ही सीखता है।"

"मनुष्यों की जाति बड़ी विचित्र है। दुनियाँ इतनी बड़ी है, इतनी लम्बी चौड़ी फिर भी वे एक जगह पर इकट्ठे होकर एक दूसरे को कुचल कर खुद आगे बढ़ना चाहते हैं" उसने अज्ञात भाव से मैदान की ओर हाथ का इशारा करते हुए कहा "और वे हमेशा काम में लगे रहेंगे। किसलिए? किसके लिए? यह कोई नहीं जानता। तुम एक किसान को हल चलाते देखकर सोचते हो—वह उस धरती पर अपने पसीने की एक एक बूंद बहाकर अपनी सारी ताकत को खतम कर डालेगा और

फिर एक दिन उसी में लेटकर सड़ जायगा। मरने के बाद वह अपने पीछे कुछ भी नहीं छोड़ जाता। अपनी जिन्दगी में उस खेत के अलावा और कुछ भी नहीं देख पाता। वह जिस तरह मूर्ख पैदा हुआ था उसी प्रकार जीवनपर्यन्त मूर्ख ही बना रहकर मर जाता है।"

"क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि वह केवल धरती खोदने के लिए ही पैदा हुआ था और खुद अपने लिए एक छोटी सी कब्र भी न खोद सका और मर गया। क्या वह यह जानता है कि आजादी क्या है? क्या उसे इन अनन्त और सुन्दर घास के मैदानों का भी कुछ ज्ञान है? क्या इन मैदानों का सुन्दर सङ्गीत उसके हृदय की कली को खिला पाता है? वह एक गुलाम है! पैदा होकर और उसके बाद मरने के समय तक वह हमेशा गुलाम ही रहता है। बस यही उसकी जिन्दगी है? वह अपने लिए क्या कर सकता है? वह अपने लिए केवल यही कर सकता है कि गले में फाँसी लगाकर मर जाय—अगर उसमें थोड़ी सी भी बुद्धि है तो!"

"अब मुझे देखो। इस अट्ठावन साल की जिन्दगी में मैंने इतना अधिक देखा है कि अगर तुम उसका हाल लिखने बैठो तो तुम्हारे इस बोरे के समान एक हजार बोरे उन लिखे हुए कागजों से भर जायँगे। तुम केवल मुझसे यह पूछो कि मैंने दुनियाँ में कौनसी जगह नहीं देखी है? ऐसी कोई जगह बाकी नहीं बची है। तुमने उन जगहों का नाम भी न सुना होगा जहाँ मैं हो आया हूं। जिन्दगी बिताने का यही तरीका है—दुनियाँ में खूब घूमो। लेकिन एक जगह पर कभी भी देर तक मत रुको—यह ठीक नहीं। जिस तरह दिन और रात बराबर एक दूसरे का पीछा करते रहते हैं उसी तरह तुम भी जीवन की चिन्ताओं से दूर रह कर बराबर घूमते रहो जिससे तुम्हारी जिन्दगी में ऊब न पैदा होने पावे। यदि एक बार भी तुमने जिन्दगी के बारे में गहराई से सोचा तुम अपनी जिन्दगी से ऊब उठोगे। हमेशा ऐसा ही होता आया है। मेरे साथ भी यही हुआ है।"

"एकबार मैं गेलोशिया में सजा काट रहा था। मैंने जेल के उस नीरस वातावरण में सोचना प्रारम्भ किया कि मैं इस संसार में क्यों जी रहा

हूँ ? और जब मैं जेल की खिड़की से बाहर फैले हुए आजाद खेतों को देखता तो मेरा हृदय वेदना से भर उठता और ऐसा लगता जैसे कोई उसे कचोट रहा हो। कौन कह सकता है कि वह किसलिए जी रहा है ? मेरे बच्चे, कोई भी निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता। अपने से पूछना भी व्यर्थ है। दुनियाँ में जिन्दा रहो बस इतना ही काफी है, घूमो फिरो और चारों ओर देखो। ऐसा करने से तुम्हारी जिन्दगी में कभी भी ऊब न पैदा होगी। एक बार तो जेल में मैंने लगभग अपने को फाँसी ही लगा ली होती। मैंने सब भुगता है, मेरे बच्चे।"

"हुं, एकबार मैंने एक आदमी से बातें कीं। वह गम्भीर स्वभाव का तुम्हारी ही तरह एक रूसी था। उसने कहा—तुम्हें अपनी इच्छानुसार नहीं रहना है वरन् जैसे भगवान् रखे वैसे ही रहना है। तुम उसकी आज्ञा का पालन करो वह तुम्हें जो कुछ तुम चाहते हो सब देगा। और ये हजरत खुद चिथड़े लटकाए हुए थे। मैंने उससे कहा कि भगवान से अपने लिए एक नया सूट माँग लो न। इस पर वह बिगड़ खड़ा हुआ और मुझे दुत्कार कर भगा दिया। और अभी तक यह आदमी मुझे उपदेश दे रहा था कि मनुष्य को क्षमाशील और दयालु होना चाहिए। अगर मेरी बातें उसे बुरी लगी थीं तो उसे मुझको माफ कर देना चाहिए था। इस दुनियाँ में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो तुमसे तो यह कहेंगे कि कम खाओ और खुद दिन में दस बार खायेंगे।"

उसने आग में थूका और चुप होकर अपना पाइप भरने लगा। हवा से सरसराहने की सी धीमी आवाज आ रही थी। अँधेरे में घोड़े हिनहिना रहे थे। उन खानाबदोशों के तम्बुओं से कोमल, मधुर, उदास, शोकपूर्ण संगीत का स्वर आ रहा था। मकर की सुन्दर लड़की नोनका गा रही थी। मैं उसके उस गम्भीर मीठे स्वर को पहचानता था जिसमें सदैव एक करुण अतृप्त अभिलाषाओं से भरी कसक का भाव भरा रहता था। उस स्वर में चाहे वह गाना गा रही हो या आपसे 'शुभ प्रभात' की कामना प्रकट कर रही हो, यही भाव भरा रहता था। उसके उस पीले साँवले मुख पर एक साम्राज्ञी का सा गर्व

का भाव झलकता रहता था और उसकी उन भूरी आँखों की गहराई में अपने अनिन्द्य,आकर्षक,सशक्त सौन्दर्यकी असीम शक्ति को पहचानने का तथा अपने से भिन्न प्रत्येक दूसरे के लिए असीम घृणा का भाव भरा रहता था।

मकर ने मेरे हाथ मे पाइप पकड़ा दिया।

"पियो! यह लड़की अच्छा गाती है। क्या तुम चाहोगे कि ऐसी लड़की तुम्हे प्यार करे? नहीं? ठीक है। लड़कियों का कभी विश्वास मत करो। उनसे हमेशा दूर रहो। जितना मुझे तम्बाकू पीना अच्छा लगता है लड़कियाँ उससे चुम्बन को अधिक अच्छा और आनन्ददायक समझती हैं। लेकिन अगर एक बार भी तुमने किसी लड़की का चुम्बन ले लिया तो समझ लो तुम्हारी आजादी खत्म हो गई। उसके बाद तुम कभी भी उस जञ्जीर को नहीं तोड़ सकोगे। और तुम्हें उसके चरणों में पूर्ण आत्म समर्पण कर देना पड़ेगा। यह बिलकुल सत्य है। इसलिए लड़कियों से हमेशा सावधान रहना। वे सब एक नम्बर की मक्कार और झूठी हैं। लड़की तुम से कहेगी कि मैं तुम्हे दुनियाँ में सब से ज्यादा प्यार करती हूं लेकिन अगर तुमने कभी भूल से उसके एक पिन भी चुभो दी तो वह तुम्हें खाने को दौड़ेगी। मैं उनके विषय में बहुत कुछ जानता हूं। अगर तुम सुनना चाहो तो मैं तुम्हे एक कहानी सुना सकता हूं—बिलकुल सच्ची कहानी। अगर याद रख सको तो मेरी बात याद रखना और फिर तुम जीवन भर एक स्वतन्त्र पक्षी की भांति इस संसार में आजादी से विचरण कर सकोगे।"

"एक समय लोइको जोबार नाम का एक जिप्सी नौजवान था। समुद्र के आस पास के सारे देशों—हँगरी, बोहेमिया और स्लावोनिया आदि का प्रत्येक व्यक्ति उसे जानता था। वह एक अच्छा आदमी था। उस समय उस प्रदेश का कोई भी गाँव ऐसा न था जहाँ के चार छः आदमी उसके खून के प्यासे न हों। परन्तु लोइको फिर भी जिन्दा रहा। अगर उसे कोई घोड़ा पसन्द आ जाता, तो चाहे उसकी हिफाजत के लिए पूरी फौज ही क्यों न लगा दी जाती, वह उसे उड़ा ले जाता।

भय जैसी चीज तो कभी उसके पास फटकी तक न थी। वह इतना बहादुर था कि अगर शैतान भी अपनी पूरी फौज के साथ उससे लड़ने आता तो वह उसके छुरा भौंक देता। साथ ही उसको और उसकी फौज को इतनी बुरी तरह मारता कि उसके सारे साथी सिर पर पैर रख भाग खड़े होते।"

"खानाबदोशों का एक एक दल, एक एक कैम्प उसे पहचानता था। उसे केवल घोड़ों से प्रेम था, और वह भी क्षणिक। वह कुछ समय तक उन पर चढ़ता और फिर बेच देता। बेचने से जो रुपया मिलता उसे कोई भी उससे माँग सकता था। उसके पास कोई भी ऐसी वस्तु नहीं थी जिसके प्रति उसके मन में कोई विशेष आकर्षण होता। अगर तुम उसका हृदय भी उससे माँगते तो वह अपना सीना चीर कर उसे तुम्हें दे देता, केवल इस सन्तोष के लिए कि वह किसी के काम तो आया। वह ऐसा ही अनोखा युवक था।"

"उस समय हमारा दल बुकेविना में भ्रमण कर रहा था। यह लगभग दस वर्ष पहले की बात है। एक बार वसन्त के दिनों में, रात को हम लोग बैठे हुए थे—मैं, पुराना सिपाही दानीला, जो कोस्सूथ की सेना में रहकर लड़ चुका था, बुड्ढा नूर, और कुछ अन्य लोग भी थे। दानीला की लड़की राद्दा भी हमारे साथ थी।"

"तुम मेरी लड़की नोनका को जानते ही हो ? वह एक सुन्दर लड़की है। परन्तु तुम किसी भी दशा में राद्दा से उसकी तुलना नहीं कर सकते। राद्दा अद्भुत सुन्दरी थी। राद्दा का सौन्दर्य अनिर्वचनीय था। केवल किसी कुशल गायक द्वारा बजाये हुए वायलिन की सुन्दर झंकार ही उसके सौन्दर्य का चित्रण करने में सफल हो सकती थी, यदि वह गायक अपनी आत्मा के संगीत से पूर्ण विभोर होकर वायलिन बजा सकता।"

"पता नहीं कितने युवकों को उसने निराश कर पागल बना दियाथा। मोरावा में एक बार एक बूढ़े अमीर ने उसे देखा और उसके पीछे पागल हो गया। अपने घोड़े पर बैठा हुआ वह पागल की तरह उसे घूरता रहा। वह

वह बार बार काँप उठता था जैसे बुखार चढ़ा हो। उसकी शानोशौकत ऐसी अद्भुत थी मानों शैतान सज धज कर छुट्टी मनाने निकला हो। वह यूक्रेन का बना हुआ सुनहरी जरी का कामदार कोट पहने हुए था। रत्नों से जड़ी हुई बगल में लटकती हुई उसकी तलवार, घोड़े के हिलने पर, बिजली की तरह चमक उठती थी। उसकी मखमली नीली टोपी, आकाश की उज्वल नीलिमा को लज्जित कर रही थी। वह बहुत बड़ा अमीर था। वह कुछ देर तक राद्दा को घूरता रहा और बोला—ए लड़की मुझे एक चुम्बन दो और बदले में मेरा यह बटुआ ले लो। राद्दा ने बिना कुछ उत्तर दिए अपना मुंह फेर लिया। वह बुड्ढा बोला—अगर मैंने तुम्हारे दिल को चोट पहुँचाई हो तो मुझे माफ कर दो। क्या तुम मेरे प्रति दयालु नहीं हो सकतीं। इतना कह वह तुरन्त ही घोड़े से उतरा और राद्दा के चरणों पर अपना बटुआ डाल दिया। बटुआ बहुत भारी था। किन्तु राद्दा ने ठुकरा कर उसे धूल में फेंक दिया। यही उसका उत्तर था।"

"आह! कैसी लड़की हो तुम!" उसने भारी आवाज में कहा और घोड़े को हन्टर मार कर धूल का गुब्बार उड़ाता हुआ चला गया।

- "दूसरे दिन वह फिर आया। उसने तेज आवाज में पुकार कर पूछा—इसका बाप कौन है? दानीला बाहर आया। अमीर बोला - मुझे किसी भी कीमत पर अपनी लड़की बेच दो। दानीला ने उत्तर दिया—चीजें तो अमीर बेचा करते हैं—सूअर के बच्चे से लेकर अपनी आत्मा तक। मैं कोस्सूथ का सिपाही रह चुका हूं। मैं कुछ नहीं बेचूंगा। गुस्से से लाल होकर अमीर ने अपनी तलवार पर हाथ डाला। परन्तु इससे पहले कि वह तलवार निकाल पाता एक जिप्सी लड़के ने उसके घोड़े के कान में एक जलती हुई लकड़ी लगादी। घोड़ा बिदक कर सवार को लेकर हवा हो गया। हम लोगों ने अपने तम्बू उखाड़े और वहाँ से चल दिए। दो दिन तक हम चलते रहे कि अचानक वह फिर आ गया। उसने कहा—सुनो! मैं ईश्वर को और तुम लोगों को साक्षी कर कहता हूं कि मेरी आत्मा पवित्र है। मैं धोखे की बात नहीं करता। तुम इस लड़की को मुझे पत्नी के रूप में दे दो। मैं बहुत धनी

हूं। मेरी हर चीज में तुम्हारा हिस्सा होगा। वह आवेश से ऐसे काँप रहा था जैसे हवा में घास का पत्ता। उसकी इस दशा ने हमें सोचने को मजबूर कर दिया।"

"बोल बेटी, तू क्या कहती है।" दानीला ने अपनी मूँछों को हिलाते हुए कहा।

"अगर सिंह की बच्ची अपनी खुशी से गीदड़ की माँद में उसके साथ रहने के लिए चली जाय तो उसकी क्या दशा होगी?" राद्दा ने पूछा।

दानीला और हम सब लोग हसने लगे।

"शाबाश मेरी बेटी! सुना जनाब? यह बात नहीं हो सकती। तुम अपने लिये कोई बकरी ढूंढ लो। वह ज्यादा सीधी होती है।" इतना कह कर हम लोग आगे चल दिए। उस अमीर ने गुस्से में भर कर अपनी टोपी उतारी और जमीन पर फेंक कर इतनी तेजी से चला गया कि उसके घोड़े की टापों से पृथ्वी काँपने लगी। ऐसी विचित्र लड़की थी वह, राद्दा।"

"इसके बाद एक रात को हम लोग अलाव के चारों ओर बैठे हुए थे, कि हमने मैदान की ओर से आता हुआ संगीत सुना। स्वर्गिक संगीत था वह। वह इतना सुन्दर था कि उसे सुन कर तुम्हारा हृदय उत्तेजित हो उठता और तुम तन्मयता के गहन लोक में खो जाते। हमारे ऊपर एक नशा सा चढ़ता आ रहा था। हृदय में किसी अज्ञात भावना की आँधी सी उमड़ रही थी कि यदि वह भावना साकार हो सके तो उसे प्राप्त करने के लिए सब कुछ छोड़ा जा सकता है। या यह भावना जग रही थी कि सम्राट बन कर जीवन का पूर्ण उपभोग कर सकें। वह संगीत इतना मादक और प्रभावशाली था।"

"उस घन अन्धकार में से हमें एक घोड़ा आता हुआ दिखाई दिया [illegible] मनुष्य वायलिन बजा रहा था। धीरे धीरे वह [illegible] आया। उसने वायलिन बजाना बन्द कर दिया और हमें देख [illegible]।"

"ओह ! जोवार तुम हो। दानीला ने प्रसन्नता से चीख कर कहा। हां वह लोकियो जोवार ही था।"

"उसकी मूंछें उसके सिर के लम्बे बालों में मिल कर कन्धों पर लहरा रही थीं। उसके नेत्र दो उज्ज्वल तारों की तरह चमक रहे थे। उसकी मुस्कराहट सूर्य के प्रकाश की तरह उज्ज्वल थी ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह और उसका घोड़ा लोहे के एक ही टुकड़े को तराश कर बनाए गए हों। आग की चमक में वह रक्त की तरह लाल दिखाई दे रहा था। हंसने पर उसके दाँत बिजली की तरह चमक उठते थे। शैतान मुझे उठाले यदि मैं झूठ बोलूं। उस समय मैं उसे अपने से भी अधिक प्यार करने लगा था। यद्यपि उस समय तक वह न तो मुझसे बोला था और न उसने मेरी ओर ध्यान ही दिया था।

"हाँ भाई ! वह ऐसा ही आदमी था। उसमें इतनी प्रबल सम्मोहनी शक्ति थी कि यदि एक बार वह तुम्हारी आंखों में अपनी आँखें डाल कर देख ले तो तुम्हारी तो क्या चलाई तुम्हारी आत्मा भी उसकी गुलाम बन जाती। और तुम अपनी इस दशा पर लज्जित न होकर गर्व से फूल उठते। ऐसे आदमी का साथ पाकर तुम अपने को महान् समझने लगते। मेरे दोस्त ! संसार में ऐसे आदमी विरले ही होते हैं। और ऐसा होना भी चाहिए। अगर संसार में सभी अच्छे होने लगें तो फिर अच्छाई में आकर्षण ही क्या रहेगा। खैर, आगे की कहानी सुनो।"

"राद्दा ने कहा—'लोइको तुम बहुत सुन्दर बजाते हो। ऐसे मधुर स्वर उत्पन्न करने वाला वायलिन तुम्हें किसने बनाकर दिया।' वह हंसा—'यह मैंने खुद बनाया है। इसे मैंने लकड़ी से न बनाकर उस लड़की की सुन्दर आत्मा से बनाया है जिसे मैं बहुत प्यार करता था। इसके तार उसकी हृत्तन्त्री के तारों से बने हुए हैं। यद्यपि यह कभी २ गलत स्वर देने लगता है परन्तु मैं अपनी कमान से उसे ठीक कर लेता हूँ।'

हू। मेरी हर चीज में तुम्हारा हिस्सा होगा। वह आवेश से ऐसे काँप रहा था जैसे हवा में घास का पत्ता। उसकी इस दशा ने हमें सोचने को मजबूर कर दिया।"

"बोल बेटी, तू क्या कहती है।" दानीला ने अपनी मूँछों को हिलाते हुए कहा।

"अगर सिंह की बच्ची अपनी खुशी से गीदड़ की माँद में उसके साथ रहने के लिए चली जाय तो उसकी क्या दशा होगी?" राद्दा ने पूछा।

दानीला और हम सब लोग हंसने लगे।

"शाबाश मेरी बेटी! सुना जनाब? यह बात नहीं हो सकती। तुम अपने लिये कोई बकरी ढूंढ लो। वह ज्यादा सीधी होती है।" इतना कह कर हम लोग आगे चल दिए। उस अमीर ने गुस्से में भर कर अपनी टोपी उतारी और जमीन पर फेंक कर इतनी तेजी से चला गया कि उसके घोड़े की टापों से पृथ्वी काँपने लगी। ऐसी विचित्र लड़की थी वह, राद्दा।"

"इसके बाद एक रात को हम लोग अलाव के चारों ओर बैठे हुए थे, कि हमने मैदान की ओर से आता हुआ संगीत सुना। स्वर्गिक संगीत था वह। वह इतना सुन्दर था कि उसे सुन कर तुम्हारा हृदय उत्तेजित हो उठता और तुम तन्मयता के गहन लोक में खो जाते। हमारे ऊपर एक नशा सा चढ़ता आ रहा था। हृदय में किसी अज्ञात भावना की आँधी सी उमड़ रही थी कि यदि वह भावना साकार हो सके तो उसे प्राप्त करने के लिए सब कुछ खोया जा सकता है। या यह भावना जग रही थी कि सम्राट बन कर जीवन का पूर्ण उपभोग कर सके। वह संगीत इतना मादक और प्रभावशाली था।"

"इस घन अन्धकार में से हमें एक घोड़ा आता हुआ दिखाई दिया [illegible] मधुर वायलिन बजा रहा था। धीरे धीरे वह [illegible]। उसने वायलिन बजाना बन्द कर दिया और हमें उस

"ओह! जोवार तुम हो। दानीला ने प्रसन्नता से चीख कर कहा। हां वह लोकियो जोवार ही था।"

"उसकी मूंछें उसके सिर के लम्बे बालों में मिल कर कन्धों पर लहरा रहीं थीं। उसके नेत्र दो उज्ज्वल तारों की तरह चमक रहे थे। उसकी मुस्कराहट सूर्य के प्रकाश की तरह उज्ज्वल थी ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह और उसका घोड़ा लोहे के एक ही टुकडे को तराश कर बनाए गए हों। आग की चमक में वह रक्त की तरह लाल दिखाई दे रहा था। हंसने पर उसके दाँत बिजली की तरह चमक उठते थे। शैतान मुझे उठाले यदि मैं झूठ बोलूं। उस समय मैं उसे अपने से भी अधिक प्यार करने लगा था। यद्यपि उस समय तक वह न तो मुझसे बोला था और न उसने मेरी ओर ध्यान ही दिया था।

"हाँ भाई! वह ऐसा ही आदमी था। उसमें इतनी प्रबल सम्मोहनी शक्ति थी कि यदि एक बार वह तुम्हारी आंखों मे अपनी आँखें डाल कर देख ले तो तुम्हारी तो क्या चलाई तुम्हारी आत्मा भी उसकी गुलाम बन जाती। और तुम अपनी इस दशा पर लज्जित न होकर गर्व से फूल उठते। ऐसे आदमी का साथ पाकर तुम अपने को महान् समझने लगते। मेरे दोस्त! संसार में ऐसे आदमी विरले ही होते हैं। और ऐसा होना भी चाहिए। अगर संसार में सभी अच्छे होने लगे तो फिर अच्छाई मे आकर्षण ही क्या रहेगा। खैर, आगे की कहानी सुनो।"

"राद्दा ने कहा—'लोकियो तुम बहुत सुन्दर बजाते हो। ऐसे मधुर स्वर उत्पन्न करने वाला वायलिन तुम्हें किसने बनाकर दिया।' वह हंसा—'यह मैंने खुद बनाया है। इसे मैंने लकडी से न बनाकर उस लड़की की सुन्दर आत्मा से बनाया हैं जिसे मैं बहुत प्यार करता था। इसके तार उसकी हृत्तन्त्री के तारों से बने हुए हैं। यद्यपि यह कभी २ गलत स्वर देने लगता है परन्तु मैं अपनी कमान से उसे ठीक कर लेता हूँ।'

"तुम तो जानते ही हो कि हम जिप्सी लोग लड़कियों की आँखों पर आकर्षण का एक ऐसा जाल सा डाल देते हैं जिससे वे किसी पुरुष के लिए तड़प उठें परन्तु उस पुरुष के हृदय पर उनका कोई प्रभाव न पड़े। यही लोकियो ने किया। परन्तु राद्दा इस प्रकार पकड़ाई में आने वाली नहीं थी। उसने जम्हाई लेते हुए मुँह फेर कर कहा—'सब लोग कहते थे कि लोकियो बुद्धिमान और चतुर हैं। कैसे झूठे है ये लोग।' यह कह कर वह चली गई।"

"'ओहो! सुन्दरी तुम्हारे दांत बड़े तेज हैं।' नेत्रों से एक भयानक प्रकाश की प्रखर धारा फेंकते हुए लोकियो घोड़े से उतर कर—'कहो भाइयो, कैसे हो? मैं भी आगया,' कहते हुए हमारे पास आया।"

"दानीला ने उत्तर दिया-'आओ भाई! स्वागत है।' हम लोग उससे मिले, बातें कीं और फिर सोने चले गए। रात को हम गहरी नींद सोए। सुबह उठने पर हमने देखा कि लोवार के सिर पर एक पट्टी बंधी हुई है, यह क्या? अच्छा, रात को जब वह सो रहा था तब धोखे से उसके घोड़े की लात उसके सिर में लग गई।"

"ऊँह, हम लोग समझ गए कि घोड़े ने कैसे लात मारी थी। सब लोग अपनी मूछों में रहस्यपूर्ण हंसी हंस रहे थे। दानीला भी मुस्करा रहा था। क्या लोकियो राद्दा के योग्य नहीं था? मैं सोच रहा था कि चाहे कोई लड़की कितनी ही सुन्दर क्यों न हो परन्तु उसकी आत्मा बड़ी सकुचित और छोटी होती है। चाहे तुम उसे सोने से मढ़ दो परन्तु वह कभी भी अच्छी नहीं बन सकती। खैर!"

"उस स्थान पर हम लोग बहुत दिनों तक ठहरे। हम लोगों का काम ठीक चल रहा था। लोवार भी हमारे साथ था। वह बिलकुल हमारे भाई की तरह बन गया था। वह बुड्ढे मनुष्य की तरह चतुर और सब बातों का ज्ञान रखने वाला था तथा रूसी और मगयार भाषाएँ लिख पढ़ सकता था। जब वह बातें करने लगता तो हम लोग नींद और भूख प्यास भूलकर बराबर उस की बातें सुनते रहते और यह मन करता कि युगों तक वह इसी प्रकार बोलता

जाय और हम सुनते रहें। वायलिन बजाने में वह संसार में अद्वितीय था। जब वह वायलिन के तारों पर कमान फेरता तो सुनने वालों के हृदय नाच उठने, हृदय की धड़कन बढ़ जाती परन्तु वह स्वयं बिना प्रभावित हुए बजाए जाता और मुस्कराता रहता। उसके उस स्वर्गीय संगीत को सुनकर एक साथ ही हंसने और रोने की इच्छा होती। कभी तुम्हें सुनाई देता कि कोई अपनी वेदना से व्याकुल होकर कराह रहा है और उसकी वह याचना भरी हुई करुण पुकार तुम्हारे हृदय को चीरे डालती है। फिर लगता कि घास का वह विस्तृत मैदान स्वर्ग की परियों की कहानियां सुना रहा है—दुख और करुणा से पूर्ण कहानियाँ। कभी भान होता मानो कोई सुन्दरी सिसकती हुई अपने प्रेमी को अन्तिम विदा दे रही है। और इसके तुरन्त बाद ही सुनाई पड़ता कि एक बहादुर नौजवान अपनी हृदयेश्वरी को उन मैदानों की ओर बुला रहा है। और तब अचानक ही समस्त वातावरण जल-प्रपात के समान गम्भीर और उत्साहपूर्ण स्वर लहरी से गूंज उठता। ऐसा प्रतीत होने लगता मानो सूर्य आकाश में नाच उठेगा। हां भाई, उसका संगीत ऐसा ही विलक्षण था।"

उस सङ्गीत से शरीर का रोम रोम खिल उठता था। सुनने वाले मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। उसका प्रभाव इतना मादक और संज्ञा-शून्य कर देने वाला था कि यदि उस समय लोकियो आज्ञा देता—'भाइयो! हथियार उठाओ' तो हम सामूहिक रूप से उसकी आज्ञा का अन्धानुसरण करते। वह जिस आदमी से जो चाहता वही करा सकता था। फिर भी सब लोग उसे हृदय से प्यार करते थे—अत्यधिक प्यार। केवल राद्दा ही उसकी ओर कभी आँख उठाकर भी नहीं देखती थी। बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी, वह उसका मजाक भी बनाती थी। वह उसके हृदय पर निर्दय होकर प्रहार करती। लोकियो दाँत पीस कर मूछों पर ताव देकर रह जाता। कभी उसके नेत्रों में घाटी की सी गहन गम्भीरता की चमक देखकर हम लोग काँप उठते। रात होने पर वह दूर मैदानों में चला जाता और रात भर उसका वायलिन लोकियो की छिनी हुई स्वतन्त्रता पर रोता रहता और हम लेटे हुए उसे सुनते और सोचते कि क्या किया जाय। यह हम अच्छी तरह जानते थे कि दो

चट्टानों के बीच में पड़ना अच्छा नहीं है, वे पीस डालेंगी, उस समय ऐसी ही स्थिति थी।"

"एक दिन हम लोग बैठे हुए काम की बातें कर रहे थे। वातावरण नीरस था। उसे दूर करने के लिए दानीला ने लोकियो से कहा 'लोकियो एक गाना गाओ जिससे हमारा दिल बहल सके।' लोकियो ने राद्दा की ओर देखा, जो कुछ दूर पर लेटी हुई आकाश की ओर देख रही थी और वायलिन के तारों को छेड़ा। वायलिन किसी युवती के हृदय के समान गा उठा।

"देखो! मैं विस्तृत लम्बे चौड़े मैदान में उड़ा चला जा रहा हूं। मेरा हृदय उत्साह से भरा हुआ है। मेरा बहादुर घोड़ा वायु-वेग से सनसनाता हुआ चला जा रहा है क्योंकि उसके सवार की भुजाओं में अद्भुत शक्ति भरी हुई है।"

राद्दा ने अपना सिर घुमाया, कुहनी के बल थोड़ी उठी और गायक की आँखों में आँखें डाल कर उपेक्षा से हँस पड़ी। अपमान से जोबार का मुख तमतमा उठा। परन्तु वह गाता गया—

"शाबाश, साथियो उठो। आओ हम आगे बढ़ें। जहां विस्तृत घास के मैदान अन्धकारमें पड़े हुए प्रभात की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आओ, हम प्रकाश से भेंट करने के लिये इन मैदानों पर उड़ते हुए चलें। परन्तु सावधान! मार्ग में चन्द्रमा के सुन्दर रूप के प्रति आकर्षित मत होना।"

उसका सङ्गीत कितना सुन्दर था। उससे अच्छा कोई भी नहीं गा सकता। परन्तु राद्दा ने अनुत्साहपूर्ण शब्दों में कहा—"लोकियो, तुम्हें इतनी ऊँची उड़ान नहीं भरनी चाहिए। अगर तुम नाक के बल नीचे पृथ्वी पर गिर पड़े तो तुम्हारी ये मूछें कीचड़ में सन जायगी। इसलिए सावधान!" लोकियो ने भयंकर दृष्टि से उसकी ओर देखा और चुप रह गया। इस अपमान को पीकर उसने गाया—

"शाबाश! कहीं ऐसा न हो कि प्रकाश की किरणें हमें ऊंघते देख लें। इसलिए बढ़े चलो, पूर्व इसके कि हमें पराजित होकर लज्जित

होना पड़े। बढ़े चलो, जिससे मनुष्य हमारी सफलता पर आश्चर्य प्रकट करें।"

"वाह कितना सुन्दर संगीत है।" दानीला बोला—ऐसा पहले कभी नहीं सुना। अगर मैं झूंठ बोलूँ तो शैतान मेरी हड्डियों की बँशी बनाकर बजाए। "बुड्ढे नूर ने अपनी मूँछें चबाते हुए कन्धे हिलाए और चुप रह गया। प्रत्येक व्यक्ति जाबार के इस उत्साहपूर्ण संगीत से प्रभावित हो रहा था। केवल राद्दा पर ही कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

"इसी प्रकार एक बार एक मक्खी भी बाज की तीखी आवाज की नकल करती हुई भिनभिना उठी थी।" वह बोली, "और जैसे हम पर बड़ा पानी पड़ गया।"

दानीला ने उठते हुए कहा—"क्या तू कोड़े खाना चाहता है, राद्दा ?" परन्तु जोबार ने अपनी टोपी फेंक दी। उसका चेहरा मिट्टी की तरह स्याह पड़ गया था। वह बोला—

"रुको दानीला ! बदमाश और तेज घोड़े को लोहे की लगाम की जरूरत होती है। तुम अपनी लड़की की शादी मुझसे कर दो।"

"अब तुमने एक गहरी और मतलब की बात कही है," दानीला ने मुस्कराते हुए कहा—"ले लो, अगर तुम सफल हो सको तो।"

"बहुत ठीक," लोकियों ने उत्तर दिया और राद्दा की ओर मुड़कर बोला—

"अच्छा ! सुन्दरी ! अपने घमन्ड को छोड़कर मेरी बात सुनो। मैंने तुम्हारी जैसी सैकड़ों लड़कियाँ देखी हैं, सैकड़ों। लेकिन तुम्हारी तरह किसी ने भी मेरे हृदय को इतना प्रभावित नहीं किया। आह ! राद्दा, तुमने मेरी आत्मा को बन्दी बना लिया है। खैर जो होना होगा, होगा। इस संसार में ऐसा कोई साधन नहीं जिसके द्वारा कोई आदमी अपनी आत्मा की अवहेलना करने में समर्थ हो सके। मैं ईश्वर, अपनी आत्मा और इन लोगों के सम्मुख तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता हूं। लेकिन साथ ही सावधान

लिए देता हूं कि तुम मेरी आज्ञा का उल्लघन नहीं कर सकोगी। मैं स्वतन्त्र प्रकृति का मनुष्य हूं। जैसे चाहूंगा रहूँगा।" और वह अपने नेत्रों से प्रकाश की धार बरसाता हुआ, दाँत भींचे उसके पास गया। हमने उसे राद्दा की ओर हाथ बढ़ाते देखा और सोचा कि राद्दा ने इस बनैले घोड़े को आखिर वश में कर ही लिया। किन्तु एकाएक हमने देखा कि जोवार के हाथ हवा में ऊपर उठे और वह एक कटे वृक्ष के समान पीठ के बल जमीन पर गिर पड़ा। उसका सिर जोर से जमीन पर टकराया।

'हे भगवान! ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसके सीने में गोली लगी हो। यह राद्दा की करतूत थी। उसने अपने कोड़े को जोवार के पैरों में लपेट कर खींच लिया था जिससे वह धड़ाम से गिर पड़ा था।"

"और वह पुन. चुपचाप लेटकर उसकी ओर उपेक्षा से मुस्कराने लगी। हम शङ्कित हृदय से आगे होने वाली घटना की प्रतीक्षा करने लगे। लोकिया उठकर बैठ गया और असह्य यंत्रणा से व्याकुल होकर उसने अपने सिर को हाथों में दबा लिया कि कहीं वह फट न जाय। तब वह चुपचाप उठा और बिना किसी की ओर देखे मैदान की तरफ चला गया। नूर ने चुपचाप मुझसे कहा—'इस पर निगरानी रखना' और मैं उस अन्धकार में चुपचाप उसके पीछे चल दिया।"

मकर ने अपने पाइप की राख झाड़ी और दुबारा भरने लगा। मैंने अपना लबादा और अच्छी तरह से ओढ़ा और लेटकर उसके मुख की ओर देखने लगा जो धूप और हवा से सांवला पड़ गया था। वह अपने सिर को कठोरतापूर्वक हिलाता हुआ बड़बड़ा रहा था। उसकी भूरी घनी मूछें और बाल हवा से कांप रहे थे, वह वज्राहत परन्तु विशाल एव प्राचीन ओक वृक्ष के समान प्रतीत हो रहा था जो अब भी अपनी शक्ति और गर्व के बल सिर ऊँचा किए खड़ा हो। सागर अब भी तट के कानों में कुछ गुनगुना रहा था और वायु उस गुनगुनाहट को मैदान के ऊपर उड़ाए लिए जा रही थी। नोनका ने गाना बन्द कर दिया था और आकाश में हुए बादल जाड़ों की उस रात को और रमय बना रहे थे।

"'लोकियो लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा। उसका सिर झुका हुआ था और दोनों हाथ दोनों तरफ शिथिल मुद्रा में लटक रहे थे। नदी के पास घाटी में आकर वह एक चट्टान पर बैठ गया और कराहने लगा। उस करुण रुदन को सुनकर मेरा हृदय दया से द्रवित हो उठा परन्तु मैं उसके पास नहीं गया। शब्द सान्त्वना देने में सदैव असमर्थ रहते हैं। है न ऐसी बात ? वह एक घण्टे, दो घण्टे और फिर पूरे तीन घण्टों तक उस चट्टान पर वैसा ही स्थिर बैठा रहा।''

"मैं पास ही जमीन पर लेटा था। चाँदनी छिटक रही थी। सम्पूर्ण मैदान स्निग्ध धवल रजत चन्द्रिका में स्नान कर रहा था। दूर दूर तक का दृश्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अचानक मैंने राद्दा को कैम्प से निकलकर शीघ्रतापूर्वक अपनी ओर आते देखा।"

"आह! मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। शाबाश सुन्दरी! वह पास आगई परन्तु जैसे लोकियो ने उसका आना न सुना हो। राद्दा ने अपना हाथ लोकियो के कन्धे पर रखा। लोकियो ने चौंककर अपने हाथ आँखों पर से उठाकर सिर ऊँचा किया और उछल कर खंजर की मूठ पर हाथ रखा। 'अरे यह लड़की को मार डालेगा' मैंने मनमें कहा और मैं भागकर कैम्प से मदद लाने को जाने ही वाला था कि मेरे कानों में यह शब्द पड़े—'फेंक दो अपना खंजर नहीं तो तुम्हारा सिर उड़ा दूँगी।' मैंने देखा राद्दा जोबार के सिर का निशाना बांधे पिस्तौल हाथ में लिए खड़ी थी। कर्कशा स्त्री से पाला पड़ा था। मैंने सोचा—अब बराबर का जोड़ मिला है। देखें आगे क्या होता है ?"

'मेरी बात सुनो', राद्दा ने पिस्तौल को पेटी में डालते हुए कहा—'मैं यहाँ तुम्हें मारने नहीं आई बल्कि सुलह करना चाहती हूँ। खंजर फेंक दो।' उसने खंज़र फेंक दिया और उदास होकर उसकी ओर देखने लगा। वह बड़ा अद्भुत दृश्य था। भाई! दो व्यक्ति हिंसक पशुओं के समान एक दूसरे की ओर घूर रहे थे। दोनों ही वीर और अच्छे थे। वहाँ दर्शकों में केवल एक मैं और दूसरा चमकता हुआ चाँद, दो ही थे।"

"सुनो लोकियो ! मैं तुमसे प्रेम करती हूँ'—राद्दा ने कहा। लोकियो ने केवल कन्धे हिला दिए जैसे उसके हाथ पैर बधे हों।"

"मैंने बहादुर जवान देखे हैं किन्तु तुम उन सबसे बहादुर और सुन्दर हो—रूप और आत्मा दोनों में। उनमें से कोई भी मेरे एक सकेत मात्र पर अपनी मूछें मुड़ा देता। अगर मैं चाहती तो वे सब मेरे चरणों में लोटने लगते। लेकिन इसका फायदा ? वे बहादुर नहीं हैं। उन सबको मैं औरत की तरह भीगी बिल्ली बना सकती हूँ। ससार में वीर जिप्सी कम हैं—बहुत ही कम। मैंने आज तक किसी को भी प्यार नहीं किया था, लोकियो। परन्तु मैं तुम्हे प्यार करती हू। लेकिन मैं अपनी स्वतत्रता को भी प्यार करती हूँ, तुमसे भी अधिक। फिर भी मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। और तुम भी मेरे बिना नहीं रह सकते। इसलिए मैं तुम्हे अपना बनाना चाहती हूँ—शरीर और आत्मा दोनों से तुम सुन रहे हो।' राद्दा के मुख पर एक कुटिल मुस्कान खेल गई।

"मैं सुन रहा हूँ। तुम्हारी बातें सुनकर मेरे मनको खुशी हुई। कुछ और कहो।'

'मैं केवल यह और कहना चाहती हू, लोकियो, कि तुम चाहे जितना ऐंठो मैं तुम्हें अपने अनुकूल बना लूंगी। तुम मेरे बन जाओगे। इसलिए व्यर्थ समय न नष्ट करो। मेरे चुम्बन और आलिंगन तुम्हारी राह देख रहे है। मेरे चुम्बन अत्यन्त मधुर होंगे लोकियो। मेरे चुम्बनों को पाकर तुम अपने घुमक्कड़ जीवन को भूल जाओगे। और तुम्हारे स्फूर्ति उत्पन्न करने वाले गीत जो जिप्सी युवकों के हृदय को प्रसन्नता से भर देते हैं, घास के इन मैदानों में फिर कभी न सुनाई देंगे। तुम दूसरी तरह के गीत गाओगे—अपनी राद्दा के लिए कोमल प्रणय-गीत। इसलिए समय नष्ट मत करो, कल तुम मेरा अधिकार मानकर उस तरह मेरी आज्ञा पालन करो जैसे छोटे बच्चे की आज्ञा मानते हैं। कल जब तुम सारे जिप्सी केम्प के सम्मुख मेरे सामने घुटनों के बल बैठकर मेरे दाहिने हाथ का चुम्बन लोगे तब मैं तुम्हारी पत्नी बनूंगी।"

"अच्छा तो वह पागल लड़की यह चाहती थी। मैं दङ्ग रह गया। ऐसी घटना कभी नहीं सुनी थी। पुराने युग में मोन्टेनीग्रो के निवासियों में यह प्रथा थी, ऐसा पुराने आदमी कहते हैं। परन्तु जिप्सियों में यह प्रथा कभी नहीं रही। मेरे दोस्त, क्या तुम इससे भी अधिक हास्यास्पद और कोई प्रथा बता सकोगे। नहीं, कभी नहीं, सौ वर्ष तक सिर खपाने पर भी नहीं।"

लोकियो पीछे हटा और उसकी चीख उस आदमी की चीख के समान, जिसके सीने में चोट लगी हो, उस मैदान में गूंज उठी। राद्दा कॉप गई परन्तु विचलित नहीं हुई।

"अच्छा तो कल तक के लिए विदा। कल तुम वही करो जो मैंने तुमसे कहा है। सुना लोकियो ?"

"सुन लिया। मैं ऐसा ही करूँगा" कराहते हुए जोबार ने उत्तर दिया और अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया परन्तु राद्दा बिना पीछे मुड़े चली गई और लोकियो आंधी से उखड़े हुए वृक्ष के समान थोड़ा सा कांपा और जमीन पर गिर कर, पागल की तरह रोने और हंसने लगा।

उस दुष्टिनी राद्दा ने इस प्रकार उस बेचारे के साथ व्यवहार किया। मैं बड़ी मुश्किल से उसे होश में ला सका।

"आह! समझ में नहीं आता कि शैतान मनुष्यों को इस प्रकार दुखी कर क्यों आनन्दित होता है? दुख और वेदना से कराहते हुए मानव की कौन चिन्ता करता है? सोचो, यदि तुम इसका कोई समाधानकारक उत्तर सोच सको तो सोचो।"

"मैंने डेरों पर वापस लौटकर बुजुर्गों को सारी घटना सुना दी। उन्होंने इस पर विचार किया और तय किया कि ठहर कर देखा जाय कि कल क्या होता है। दूसरे दिन यह घटना घटी। दूसरी शाम को जब हम सब अलाव के चारों ओर इकट्ठे हुए, लोइको हमारे पास आकर बैठ गया। वह बड़ा उदास था। एक ही रात की वेदना ने उसे निष्प्रभ बना दिया था, उसके नेत्र गड्ढों में घुस से गए थे। उसने नीची निगाह किए हम लोगों से कहा—

"साथियो ! मैं तुम लोगों से कुछ कहना चाहता हूँ । आज मैंने अपने हृदय को भली भाँति टटोलकर देख लिया है कि उसमें अब उस स्वतन्त्र, निश्चित जीवन के लिए कोई स्थान नहीं रहा है । अब उसमें केवल मात्र राद्दा का एकछत्र राज्य है—इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं । अनिन्द्य सुन्दरी राद्दा वहाँ सदैव मुस्कराती रहती है । वह अपनी स्वतन्त्रता को मुझसे भी अधिक प्यार करती है । और जैसा कि उसने मुझसे करने के लिए कहा है, मैंने उसके सम्मुख घुटने टेकने का निश्चय कर लिया है, जिससे सब देख सकें कि उसके अद्भुत सौन्दर्य ने उस बहादुर लोकियो जोबार को किस प्रकार पराजित कर दिया है, जो राद्दा से मुलाकात होने के पहले लड़कियों से उसी प्रकार खेलता था जैसे बिल्ली चूहे से खेलती है । उसके पश्चात् वह मेरी पत्नी बन जायगी और अपने चुम्बनों और दुलार से मुझे इतना अभिभूत कर देगी कि मुझे तुम लोगों को गीत सुनाने की कभी इच्छा भी न होगी और न अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता के लिए कोई दुख ही होगा, क्यों राद्दा यह ठीक है न ।" आँख उठाकर उसने राद्दा की ओर गहराई से देखा । राद्दा ने खामोशी और कठोरतापूर्वक अपना सिर हिलाकर अपने पैरों की ओर संकेत किया । और हम लोग मूर्ख की तरह, बिना कुछ समझे देखते रह गए । हम इस दृश्य को देखने की अपेक्षा वहाँ से हट जाना चाहते थे कि लोकियो जोबार जैसा बहादुर व्यक्ति एक सुन्दरी के चरणों पर अपना आत्म समर्पण कर अपना पतन कर ले, चाहे वह सुन्दरी राद्दा ही क्यों न हो । हम लोग लज्जा दुख और शोक से भर उठे ।

"अच्छा, तो जल्दी करो !" राद्दा ने चिल्लाकर जोबार से कहा ।

"आह ! इतनी शीघ्रता मत करो । अभी बहुत समय है । तुम्हें आज बहुत कुछ मिल जायगा"—जोबार ने व्यंग्यपूर्वक हँसते हुए कहा । इस हँसी में फौलाद की भयंकर कठोरता थी ।

"हाँ भाइयो ! मैं केवल इतना ही आप लोगों को बताना चाहता था कि अब क्या हो । अब मेरे लिए केवल यही जानना बाकी रह गया है कि क्या वास्तव में राद्दा का हृदय इतना ही शक्तिशाली और कठोर

है जितना कि वह मुझे दिखाती आई है। मैं इसकी परीक्षा लूँगा प्यारे भाइयो मुझे माफ करना।"

और इससे पहले कि हम लोग परिस्थिति की गम्भीरता को समझ सकें, हमने देखा कि राद्दा जमीन पर पड़ी हुई थी और जोवार का टेढ़ा खंजर उसकी छाती में मूंठ तक धंसा हुआ था। हम लोगों को तो जैसे काठ मार गया।

"और राद्दा ने अपनी छाती में से उस खंजर को निकाला और एक तरफ फेंक दिया। फिर उसने अपने सुनहले बालों का एक गुच्छा उस घाव में दबाया और स्पष्ट तेज आवाज में मुस्कराते हुए कहा—

"विदा, प्यारे लोकियो! मैं जानती थी कि तुम यही करोगे" और उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

मेरे भाई अब तुम अनुमान कर सकते हो कि वह किस प्रकार की लड़की थी। वह एक भयंकर स्त्री थी—अगर मैं झूँठ बोलूँ तो अनन्त काल तक मुझे नरक की यन्त्रणा भोगनी पड़े।

"ओह! गर्वीली रानी, अब मैं तुम्हारे चरणों पर अपना आत्म-समर्पण करता हूँ,,—लोकियो की करुणापूर्ण तीखी आवाज उस मैदान में चारों ओर गूँज उठी। वह जमीन पर पड़ी हुई राद्दा के चरणों पर गिर पड़ा और अपने होंठ उसके तलवों पर लगा दिए। कुछ समय तक वह उसी दशा में निस्पन्द पड़ा रहा। हम लोगों ने अपनी टोपियाँ उतार लीं और चुपचाप खड़े रहे।

"मेरे भाई! तुम उसके विषय में क्या कहते हो? बिलकुल यही दृश्य था। नूर ने कहा-'हमें लोकियो को बांध लेना चाहिए। परन्तु उसे बांधने के लिए एक भी हाथ आगे नहीं बढ़ा और नूर यह जानता था कि उसे बांधने का साहस किसी में नहीं है। उसने निराशा से अपने हाथ हिलाए और पीछे हट गया। दानीला ने उस खंजर को चुपचाप उठा लिया जिसे राद्दा ने एक तरफ फेंक दिया था और अपनी मूँछों को चबाता हुआ एकटक उसे देखता रहा। राद्दा का गर्म खून उस पर चमक रहा था। कितना तेज़ और टेढ़ा था वह खंजर। और तब दानीला स्थिर पगों से

जोवार के पास गया और पूरे वेग से उसकी पीठ में, सीने के ऊपर वह खंजर घुसेड़ दिया। क्योंकि वह राद्दा का पिता था और फिर एक सिपाही भी।"

"शाबाश' "लोकियो ने दानीला की ओर मुड़कर साफ आवाज में कहा और गिर कर राद्दा को ढूँढ़ने चल दिया।

"हम सब खड़े हुए देख रहे थे। वहाँ अपने घाव में बालों का गुच्छा दबाए राद्दा लेटी हुई थी और उसके खुले नेत्र मानों आकाश को ताक रहे थे। उसके पैरों के पास जोवार सीधा पड़ा हुआ था। उसका चेहरा उसके बालों से ढक गया था जिससे उसका मुख दिखाई नहीं देता था।"

"हम विचारों में खोए हुए चुपचाप खड़े थे। बुड्ढे दानीला की मूँछे कांपीं और उसकी घनी भौंहों में गाठ पड़ गई। वह आकाश की ओर ताकता हुआ चुपचाप खड़ा था। बुड्ढा दुर्बल नूर मुँह ढांपे जमीन पर पड़ा हुआ बच्चो की तरह सिसक रहा था।"

"मेरे भाई वह सब के लिए रोने का समय था।"

"अच्छा तो तुम पैदल यात्रा पर जा रहे हो। जाओ, अपने मार्ग से भटकना मत। सीधे चलते जाना, कहीं मुड़ना मत। अगर भटक गए तो तुम्हारी बड़ी दुर्गति होगी। बस, मुझे इतना ही कहना था मेरे भाई! अलविदा। भगवान् तुम्हें सुखी रखें।"

"मकर चुप हो, गया उसने पाइप को थैले में रख कर कोट को अपने चारो ओर कस कर लपेट लिया। वर्षा की हल्की फुहारें पड़ने लगी थीं। हवा तेज होती जा रही थी। समुद्र क्रुद्ध होकर भयकर गर्जन करने लगा था। घोड़े एक एक कर उस बुझते हुए अलाव की ओर आते गए और अपनी उज्वल बड़ी २ आँखों से हमें देखते हुए चुपचाप खड़े होगए मानो उस विषादपूर्ण गम्भीर वातावरण का कारण जानने को इच्छुक हों।

"हे, हे, हो" की स्नेहपूर्ण आवाज में मकर ने उन्हे पुकारा और अपने प्यारे घोडे के अयालों को थपथपाते हुए मेरी ओर मुड़ कर कहा— "अब सोने का समय हो गया।" लबादे से अपना सिर ढक कर, पैर फैला

वह वहीं जमीन पर लेट गया। मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं मैदान के उस गहन अन्धकार में आँखें गड़ा कर देखने लगा और मेरी आँखों के आगे राजसी सौन्दर्यशालिनी गर्वीली राद्दा का चित्र आ खड़ा हुआ। वह अपने छाती के घाव में बालों का गुच्छा दबाए खड़ी थी और उसकी उन कोमल नाजुक उंगलियों की सन्धि में से लाल खून, बूंद बूंद कर, छोटे छोटे चमकते हुए लाल तारों की तरह टपक रहा था।

और उसके बिल्कुल पीछे उस बहादुर जिप्सी युवक लोकियो जोबार की मूर्ति दिखाई दे रही थी। उसका चेहरा घने काले बालों से ढका हुआ था जिसके पीछे से ठन्डे आँसुओं की धार उमड़ रही थी।

पानी जोर से पड़ने लगा। लोकियो जोबार और राद्दा के उस बहादुर जिप्सी जोड़े के लिए समुद्र शोक-गीत गा रहा था।

उस धुंधले अन्धकार में वे प्रेत-छायायें वहाँ मंडरा रही थीं। ऐसा मालूम होता था जैसे लोकियो राद्दा को पकड़ने का प्रयत्न कर रहा हो और वह हाथ न आती हो।

घुमाने जैसे मुश्किल काम पर लगा दिया है तथा स्वयं सारी नदी पर चीखते फिरते हो। बड़े कजूस हो। एक और मजदूर नहीं रख सकता खून चूसने वाला लोभी कहीं का। और खुद अपने बेटे की बहू से इश्क लड़ाया करता है। अच्छा, और जोर से चीखो ... ।" सरजी अब जोर से बड़बड़ाने लगा। उसे इस बात का भय नहीं था कि कहीं उसका मालिक सुन न ले। वास्तव में वह तो उसे सुनाना चाहता था। •

वह स्टीम-बोट अपने पीछे झाग उड़ाती हुई बेड़ों के बगल से निकल गई। पानी में हलचल होने से लकड़ी के बहते हुए लट्ठे आपस में टकरा उठे और डालों को बटकर बाँधे हुए बन्धन एक धीमी आवाज करते हुए चटकने लगे।

स्टीमर की खिड़कियों से प्रकाश की किरणें पानी पर पड़ रही थीं और बेड़े बड़ी बड़ी आखों की एक कतार से प्रतीत हो रहे थे जिनका प्रकाश उस आन्दोलित जल पर धब्बों के रूप में चमकता और गायब हो जाता था।

तेज हवा लहरों को बेड़े पर चढ़ा देती, लट्ठे ऊपर नीचे टकराने लगते। मित्या काँपता हुआ जहाज को मोड़ने वाले बाँस को मजबूती से पकड़े खड़ा था कि कहीं गिर न जाय।

"अच्छा, अच्छा!" सरजी ने मजाक करते हुए कहा "नाच दिखा रहे हो। सावधान रहना कहीं तुम्हारा बाप तुम्हें फिर न डाँटे। वर्ना वह तुम्हारी पसली में ऐसा घूँसा मारेगा कि तुम खूब अच्छी तरह नाचने लगोगे। दाहिनी ओर घुमाओ " जरा ताकत से। हाँ.. हाँ...ओ ..हाँ ..ओ!"

और सरजी ने अपनी मासल भुजाओं से पतवार को पानी में गहरा डाल कर जोर से चलाया।

लम्बा, तगड़ा और स्फूर्तिवान, कुछ रूखा और चिड़चिड़ा सा वह वहाँ इस प्रकार खड़ा था मानो उसके नगे पैर उन लट्ठों से चिपका दिए गए हों। वह दूर आँख गड़ाए किसी भी क्षण उस बेड़े को मोड़ देने के लिए तत्पर खड़ा था।

"हे भगवान ! देखो तो तुम्हारा बाप माश्का को किस तरह अलिंगन कर रहा है। शैतान कहीं का ! हया शरम तो जैसे उसमें है ही नहीं—तुम कहीं भाग क्यों नहीं जाते ? इन शैतानों से दूर...ओह !... .....तुमने सुना मैंने क्या कहा ?"

" मैं सुन रहा हूँ !" मित्या ने धीमी आवाज में, अन्धकार में दूर देखते हुए कहा। सरजी उसके बाप को बैठे हुए देख रहा था।

"मैं सुन रहा हूँ। उँह...भीगी बिल्ली !" सरजी मजाक उड़ाता हुआ जोर से हंस पड़ा।

"""वहाँ कुछ हो रहा है, मैं तुम्हें निश्चयपूर्वक बता सकता हूँ।" मित्या की खामोशी से उत्तेजित होकर उसने कहा—"उस शैतान को देखो ! पहले अपने बेटे की शादी रचाता है और फिर पुत्रवधू को अपने लिए छीन लेता है और बेटे को कुछ भी नहीं देता। शैतान, दगाबाज़ कहीं का।"

मित्या कुछ नहीं बोला और उस ओर देखने लगा जहाँ नदी पर बादलों ने एक दूसरी दीवाल खड़ी कर दी थी।

अब बादल चारों ओर छा गए थे। ऐसा मालूम हो रहा था कि बेड़े नदी में चुपचाप खड़े होगए है। मानो इन गहरे भरे बादलों के भयानक बोझ के नीचे दब गए हों जिन्होंने आकाश से गिर कर इन्हें दाब लिया हो और जिससे उनकी प्रगति रुक गई हो।

नदी एक अथाह झील के समान दिखाई दे रही थी जिसके दोनों किनारों पर गगनचुम्बी पर्वत खड़े हों और घने कुहरे ने उसे पूर्ण रूप से आवृत्त कर लिया हो।

चारों ओर एक भयानक शान्ति छा गई थी। नदी का जल बेड़े के किनारों से धीरे धीरे टकरा रहा था जैसे उसका हृदय किसी आशा से भरा हुआ हो। वहाँ एक अनन्त उदासीनता छा रही थी। उस धीमी आवाज से किसी प्रश्न की झनकार सी उत्पन्न हो रही थी—उस रात्रि के गहन

अन्धकार में केवल एक ध्वनि—जिससे उसकी निस्तब्धता और सघन हो उठी थी।

"अब अगर थोड़ी सी हवा चलने लगे तो अच्छा हो. .,,सरजी बड़बड़ाया "अच्छा तो नहीं . हवा पानी ले आएगी.. . . " जैसे अपने से बहस कर रहा हो इस तरह वह बोला और अपना पाइप भरने लगा।

दियासलाई जलने की चमक दिखाई दी। पाइप से कस खींचने की सीली सी आवाज आने लगी। और उस प्रकाश में सरजी का चेहरा चमक उठा।

"मित्या!" उसकी आवाज आई। अब उस आवाज में कुछ स्निग्धता आ गई थी।

"क्या है?" मित्या ने बुझी सी आवाज में उत्तर दिया। वह अब भी दूर अन्धकार में अपनी उदास बड़ी बड़ी आँखों से कुछ देखने का प्रयत्न कर रहा था।

"यह हुआ कैसे?"

"क्या कैसे हुआ?" मित्या ने चिढ़ कर गुस्से से पूछा।

"तुम्हारी शादी कैसे हुई? कैसा चीख रहा है! यह हुआ कैसे? अच्छा, तो तुम अपनी पत्नी के साथ शय्या पर गए? और उसके बाद क्या हुआ, क्यों?"

"ऐ, शैतानो! सावधान रहो!" एक तेज आवाज नदी पर चारों ओर फैल गई।

"वह चीखता खूब है! नीच गन्दा आदमी!" सरजी ने आवाज के तीखेपन की प्रशंसा करते हुए कहा और पुन. मुख्य विषय पर लौट आया।

"अच्छा, ठीक है। पूरा किस्सा सुनाओ मित्या! बताओ यह कैसे हुआ?"

"ओह! मुझे तंग मत करो, सरजी! मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है।" मित्या ने दीनता-पूर्वक धीरे से कहा और यह अनुभव करते हुए कि वह इतनी आसानी से सरजी से पीछा नहीं छुड़ा सकेगा, उसने जल्दी जल्दी

कहना शुरू किया।

"हम दोनों शय्या पर गए और मैंने उससे कहा—मेरिया, मैं तुम्हारा पति नहीं बन सकता। तुम एक स्वस्थ सुन्दर लड़की हो और मैं एक दुबला पतला बीमार आदमी। मैं शादी के लिए बिलकुल तैयार नहीं था परन्तु पिता ने मुझे मजबूर कर दिया। उन्होंने कहा कि तुम्हे शादी करनी ही पडेगी और शादी होगई। मेरे मनमें स्त्रियों के लिए कोई आकर्षण नहीं और तुम्हारे लिए तो और भी कम है। तुम यौवन से उन्मत्त हो। मैं तुम्हारा आधा भी नहीं हूँ ..हाँ. .और मैं तुम्हारे साथ वैसा कुछ भी नहीं कर सकता " तुम तो जानती हो 'यह कितना गन्दा और बुरा काम है "बच्चे भी ' तुम्हे उनके लिए ईश्वर को जवाब देना पडेगा ....."

"गन्दा !" उच्च अट्टहास करता हुआ सरजी बोला—"अच्छा, खैर, उसके—माशा के क्या हाल थे ? उसने क्या कहा, क्या ?"

"वह अच्छा, तो अब मुझे क्या करना चाहिए, वह बोली और बैठकर रोने लगी। 'तुम मुझे पसन्द क्यों नहीं करते ?' उसने सिसकते हुए पूछा—ऐसा तो नहीं कि तुम मुझे कुरूप समझते हो। वह एक निर्लज्ज दुष्ट स्त्री है, सरजी !"' उसने पूछा—मैं अब क्या करूँ ? अपने इस सुन्दर स्वस्थ शरीर को लेकर अपने ससुर के पास जाऊँ ? मैंने कहा—जो तुम्हें अच्छा लगे सो करो। तुम जहाँ भी जाना चाहती हो जाओ। मैं अपनी आत्मा की अवहेलना नहीं कर सकता। बाबा इवान कहा करते थे कि वह काम प्राणघातक पाप है। हम लोग पशु नहीं है—तुम और मैं—क्यों ठीक है न ? और वह रोने लगी तुमने मुझ गरीब लड़की की जवानी, जिन्दगी सब कुछ बर्बाद कर दिया है। मैं उसके लिए बहुत दुखी था। कोई चिन्ता की बात नहीं। किसी न किसी प्रकार सब ठीक हो जायगा। और हो सकता है कि तुम्हे पादरियों के मठ में चला जाना पडे। मैंने कहा। यह सुनकर वह गालियाँ देने और कोसने लगी—"तुम मूर्ख हो मित्या,

"शैतान।"

"ओह, मेरे भगवान मेरी रक्षा कर" आश्चर्यचकित होकर सरजी चिल्ला उठा—"क्या तुम सच कह रहे हो कि तुमने उसे ऐसी सलाह दी थी, उससे कान्वेन्ट में जाने के लिए कहा था?"

"बिल्कुल यही मैंने उससे कहा था।" मित्या ने सीधा सा उत्तर दिया।

"और उसने तुम्हें मूर्ख कहा"—सरजी ने जरा तेज आवाज में पूछा।

"हाँ ' उसने मुझे गालियाँ दीं।"

"हाँ, और होना भी ऐसा ही चाहिए था। और बिल्कुल ठीक है। अगर मैं उसकी जगह होता तो घूँसों के मारे तुम्हारा मुँह तोड़ देता"—उसने अचानक आवाज को कठोर करते हुए कहा। अब वह तेजी से और गम्भीरता-पूर्वक बोल रहा था।

"क्या तुम सोच सकते हो कि कोई प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध जा सकता है? और तुमने ऐसा ही करने का प्रयत्न किया है। यह दुनियाँ का कायदा है और इससे सम्बन्धित बातें ही सत्य हैं। इसमें बहस की कोई गुँजाइश ही नहीं? और तुम क्या हो? मूर्ख, यह कोई कहने की बात थी! कान्वेन्ट में चली जाओ! बेवकूफ गधे! तुम जानते हो वह लड़की क्या चाहती है? और तुम उससे कान्वेन्ट की बातें करते हो? हे भगवान! कुछ आदमी कैसी बेवकूफी की बाते करते हैं। क्या तुम अनुभव कर सकते हो कि तुमने कितना भयंकर काम किया है—गन्दे आदमी! तुम खुद तो इतने अच्छे हो ही नहीं और तुमने उस लड़की की जिन्दगी भी बर्बाद कर दी। उसे उस बुड्ढे खूसट की स्त्री बना दिया है और उस बुड्ढे की वासना की कीचड़ में डुबो दिया है। अब देखो, तुमने उस ईश्वरी नियम को भंग कर कितना बड़ा पाप किया है—मूर्ख, गधा!"

"नियम तो मनुष्य की आत्मा में रहते हैं, सरजी! यह नियम सबके लिये एक सा है—अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम मत करो और ऐसा करके तुम संसार में पाप से बचे रहोगे" मित्या ने धीरे से शान्त वाणी में कहा और अपना सिर हिलाया।

"लेकिन बिल्कुल यही तो तुमने किया है।" सरजी उत्तेजित होकर बोला – मनुष्य कि आत्मा ! वाह !······आत्मा से और इससे क्या सम्बन्ध ! तुम हर चीज पर बन्धन नहीं लगा सकते, ऐसा नहीं हो सकता। आत्मा ···· पहले तुम आत्मा को समझने का प्रयत्न तो करो भाई, तब बात करना ··"

"नहीं सरजी, ऐसी बात नहीं है" मित्या ने तेजी से कहा। ऐसा मालूम हुआ मानो वह उत्तेजित हो उठा हो—"आत्मा सदैव पवित्र रहती है जैसे ओस की बूँद। वह आवरण से आच्छादित है, बहुत गहरी। और यदि तुम इसकी आवाज को सुन सको तो कभी पाप नहीं करोगे। आत्मा की आज्ञा का पालन ईश्वर की आज्ञा का पालन है ! क्या ईश्वर का आत्मा में निवास नहीं है ? यदि है तो वही नियम है। केवल तुम्हें अपने को इसे समझने योग्य बनाना है। अपने 'स्व' को विस्तृत कर देने पर ही मनुष्य..."

"ए ऊँघते हुए शैतानो ! सावधान रहो।" एक गरजती हुई आवाज नदी पर प्रतिध्वनित हो उठी।

उस ध्वनि की गम्भीरता और भारीपन से यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि वह एक स्वस्थ और बलवान व्यक्ति की आवाज है है जो अपनी साँसारिक स्थिति से पूर्ण सन्तुष्ट है, ऐसे व्यक्ति की जो अपनी शक्ति से पूर्ण परिचित है। वह इसलिए नहीं चीखता था कि उसे उन आदमियों को सचेत करना है वरन् उसका हृदय मन के उल्लास, गर्व और शक्ति से भर उठता था। उस ध्वनि में एक संतुष्ट और प्रसन्न जीवन की चमक थी जिसका परिचय उसके भारीपन और तीखेपन से हो रहा था।

"उसे भौंकने दो—शैतान !" सरजी ने प्रसन्नता से भरकर, सतर्कतापूर्वक सामने की ओर देखते हुए कहा—"वे कबूतरों के जोड़े की तरह प्रेम कर रहे हैं। मित्या, क्या तुम्हें यह देखकर जलन नही होती ?"

मित्या ने लापरवाही से सामने वाली पतवारों की ओर देखा जहाँ दो मूर्तियाँ बेड़े पर इधर से उधर भागती हुई दिखाई दे रही थीं—कभी

एक दूसरे से सट कर खड़ी हो जातीं और कभी एक काले धब्बे की तरह आपस में मिल जातीं।

"तुम्हें उन लोगों को देख कर जलन नहीं होती ?" सरजी ने फिर दुहराया।

"मुझे क्यों हो! यह उनका पाप है और वे ही उसका उत्तर देंगे।" मित्या ने खामोशी से जवाब दिया।

"अच्छा यह बात है", सरजी व्यंगपूर्वक बड़बड़ाया और अपने पाइप को भरने लगा। एक बार पुन उस अन्धकार में एक लाल रोशनी से चमक पैदा होगई।

रात्रि गहरी हो गई थी और भूरे काले बादल नदी की शान्त सतह पर और नीचे झुक आए थे। "तुमने यह सब अक्ल की बातें कहाँ से सीखीं मित्या, क्यों ? क्या तुम पेट से ही सीख कर आए थे ? तुममें अपने बाप का एक भी लक्षण नहीं है। तुम्हारा बाप जोशीला है। जरा सोचो तो – उसकी अवस्था पचास वर्ष की हो चकी है और उस आड़ू जैसी गुदकारी लड़की को देखो जिससे वह खेलता है। वह पूर्ण सुन्दरी है और देखो, क्या वह उस पर रीझ नहीं उठी है ? तुम इस बात को एक झलक में समझ जाओगे। हाँ, वह उसे प्यार करती है — मेरे प्यारे भाई। वह उसके पीछे पागल हो रही हे। ऐसे अच्छे व्यक्ति को कौन नहीं चहेगा ? तुम्हारा बाप तो आदमियों में सरदार है, एक बहुत उच्चकोटि का सरदार। तुम देखते हो वह अपने कार्य को कितनी अच्छी तरह करता है। उसने कुछ पैसा भी इकट्टा कर लिया है और अधिक इकट्ठा करने की इच्छा करता है। उसकी गरदन गर्व से सदैव तनी रहती है। तुम में न तो अपने बाप का ही कोई गुण आ सका है और न माँ का ही, मित्या। मुझे ताज्जुब होता है कि यदि तुम्हारी माँ अनफिसा जीवित होती तो तुम्हारा बाप क्या करता। मैं स्पष्ट देख रहा हूँ वह भी इतनी सुन्दर और स्वस्थ नहीं थी। तुम्हारी माँ ' ' मिलान से उसका ठीक जोड़ बैठता है ।"

मित्या पतवार पर झुका हुआ चुपचाप पानी की ओर ताक रहा था। सरजी भी चुप हो गया। बेडे के अगले हिस्से से एक स्त्री की हँसी बहरा उठी जिसके उत्तर में मनुष्य कंठ का गम्भीर हास्य सुनाई पड़ा। अन्धकार में लिपटी हुई उनकी शक्लें सरजी मुश्किल से देख पा रहा था। वह उत्सुकता वश नेत्र गड़ा कर उन्हें देखने में प्रयत्नशील था। कोई भी उन मूर्तियों को देखकर स्पष्ट रूप सेबता देता कि उनमें से एक आदमी लम्बा था जो पतवार के पास टांगें चौड़ी किए खड़ा था। उसका मुँह एक भरे हुए गुदगुदे शरीर वाली छोटी स्त्री की ओर था जो उससे दस कदम पर दूसरी पतवार पर अपनी छाती का भार दिए खड़ी थी। उसने उस पुरुष की ओर उङ्गली से संकेत किया और जोर से खिलखिला उठी। सरजी ने पश्चाताप से मुँह फेर लिया और बहुत देर की चुप्पी के बाद पुनः कहना प्रारम्भ किया :

"आह! ठीक है। उनका अच्छा समय कट रहा है। बहुत सुन्दर! मुझ जैसे एकाकी अवारा के भाग्य मे यह सब कहाँ लिखा है। अगर मुझे ऐसी औरत मिल जाती तो मैं उसे जिन्दगी भर नहीं छोड़ता। अगर वह मेरे हाथ में पड़ जाती तो मैं उसका सारा रस निचोड़ लेता। ऐसे ... मैं उसे बता देता कि मैं तुम्हें इस तरह प्यार करता हूँ। उसे मालूम तो पड़ता कि मर्द का प्यार कैसा होता है। भाड में जाय यह सब। मेरी तकदीर में औरतें कहाँ हैं? ऐसा लगता है कि वे रूखे और तेज मिजाज के आदमी को नहीं चाहतीं। यह कुछ चंचल मालूम पड़ती है। एक ढीठ लड़की। इसके साथ अच्छा समय कट सकता है, मित्या! ए, सो गए क्या?"

"नहीं," मित्या ने धीरे से उत्तर दिया।

"तुम्हारे लिए यह अच्छा है। तुम अपनी जिन्दगी कैसे बिताना चाहते हो, भाई। इस पर कुछ सोचो। तुम इस भरे पूरे संसार में बिलकुल अकेले हो। यह आनन्द का जीवन नहीं है। तुम क्या करना चाहते हो? तुम आदमियों के साथ तो रहने लायक हो नहीं। तुम एक निरीह मछली के समान हो। उस आदमी का क्या मूल्य जो अपने पैरों पर आप खड़ा न हो सके। भाई, तुम्हें इस जीवन मे सबसे ज्यादा जरूरत पैने दाँत और पंजों की है। नहीं

वां हर व्यक्ति तुम्हें नीचा दिखाने की कोशिश करेगा। अच्छा, अब बताओ क्या तुम अपने पैरों पर अपने आप खड़े हो सकते हो? मैं तुम्हें ऐसा देखना चाहता हूँ। तुम बड़े-निरीह प्राणी हो।"

"क्या तुम्हारा मतलब मुझ से है?" मित्या ने अपनी तन्द्रा से चौंक कर कहा—"मैं चला जाऊँगा, इसी वर्ष पतझड़ के दिनों में—काकेशस पर्वत की ओर और फिर सब ठीक हो जायगा। केवल तुम लोगों से दूर रहने के लिए। जड़ मनुष्यो! तुम लोग श्रद्धाहीन हो। तुम लोगों से दूर हो जाने में ही मुक्ति है। आखिर तुम लोगों के जीवन का उद्देश्य ही क्या है? तुम लोगों का ईश्वर कहाँ है? यह तुम्हारे लिये एक चेतावनी है। क्या तुम ईसा मसीह के उपदेशों के अनुसार चलते हो? तुम-तुम लोग भूखे भेड़िए हो! वहाँ के आदमी तुम लोगों से नितान्त भिन्न हैं। वे ईसा मसीह के सिद्धान्तों पर चलते हैं। उनकी आत्मा मानव-प्रेम से आप्लावित है और वे संसार की मुक्ति की कामना करते रहते हैं। और तुम-ओह! तुम लोग—पशु हो, पाप में आकंठ निमग्न! वहाँ दूसरे प्रकार के आदमी रहते हैं। मैंने उन्हें देखा है। उन्होंने मुझे बुलाया है। मैं उनके पास जाऊँगा। वे मेरे लिए पवित्र बाइबिल लाए थे। 'ईश्वर के प्यारे, इसे पढ़ो, प्यारे भाई सत्य वचनों का अध्ययन करो', उन लोगों ने कहा था और मैंने उसे पढ़ा था और ईश्वर के उन वचनों को पढ़कर मेरी आत्मा को एक नया जन्म-नया प्रकाश-मिला था। मैं यहाँ से चला जाऊँगा। मैं तुम जैसे भूखे पागल भेड़ियों से दूर भाग जाऊँगा। जो एक दूसरे के रक्त पर जीवित रहते हैं। ईश्वर तुम्हें गारत करे।"

मित्या ने यह सब अत्यन्त उत्तेजित होकर कहा। क्रोध से उसका गला काँप रहा था और इन भूखे पागल भेड़ियों के लिए उसके मनमें भयानक घृणा एवं उपेक्षा का भाव भर रहा था। अचानक उसके मनमें उन आदमियों से मिलने की उत्कट लालसा उत्पन्न हो उठी जिनकी आत्मा विश्व कल्याण के लिए छटपटा रही थी।

सरजो भयभीत हो उठा। वह कुछ देर तक मुँह फाड़े और पाइप

हाथ में पकडे स्तब्ध और शान्त खड़ा रह गया। फिर, कुछ देर सोचने के बाद उसने इधर उधर देखा और भारी खरखराती आवाज में बोला—

"तुम्हें इस प्रकार गहराई मे डूबना अच्छा लगता है! ...तुम बहुत भयकर भी हो। तुम्हे वह पुस्तक नही पढनी चाहिए थी। कौन जानता है कि वह कैसी पुस्तक है? ओह, अच्छा ...आगे बढ़ो...यहाँ से दूर हो जाओ वर्ना तुम पूरी तरह विगड़ जाओगे। यहाँ से शीघ्र ही भाग जाओ इससे पूर्व कि तुम असली भयानक आदमियों के सम्पर्क में आओ... वहाँ काकेशस में रहने वाले आदमी कैसे है? पादरी? या वे पुराने अन्ध-विश्वासी? वे कौन हैं—मोलोकन, शायद? क्यों?"

परन्तु मित्या जितनी शीघ्रता से उत्तेजित हो उठा था उतनी ही तेजी से उसका उत्साह समाप्त हो गया। वह गहरी साँसें लेता हुआ पतवार चला रहा था तथा जल्दी जल्दी धीमी आवाज मे कुछ वडबड़ाता जाता था।

सरजी उत्तर के लिए बहुत देर तक व्यर्थ प्रतीक्षा करता रहा। रात्रि की मृत्यु की सी निस्तब्धता ने उसके सरल परन्तु अक्खड स्वभाव को उत्तेजित कर दिया था। वह जीवन को खुले रूप मे जानना चाहता था, वह अपनी ध्वनि से इस सोयी हुई निस्तब्धता को जगा देना चाहता था। उसके मन में इस शान्त धीमी गति से बहने वाले नदी के जल में, जो समुद्र की ओर बढ़ा चला जा रहा था, हलचल उत्पन्न कर देने की इच्छा जागृत हो उठी। इस वेडे के दूसरे सिरे पर सच्चा जीवन जी रहा था और इसने उसके हृदय मे भी ऐसे ही जीवन की उत्कट लालसा उत्पन्न करदी थी।

वहाँ से, वेड़े के उस हिस्से से, रह रह कर एक मधुर हँसी की लहराती आवाज और चिल्लाने की ध्वनि उठ रही थी जो वासन्ती सुगन्धित वायु से भरी हुई उस शान्त अँधेरी रात में, मन मे एक उत्तेजनापूर्ण सनसनी उत्पन्न कर देती थी कि देखो जीवन ऐसे जिया जाता है

"बन्द करो, मित्या, तुम बेड़े को किधर लिए जा रहे हो। वह बुड्ढा अभी फिर गालियाँ देने लगेगा। ध्यान से काम करो," उसने उस निस्तब्धता को और अधिक सहन करने में अपने को असमर्थ पाकर कहा और देखा कि मित्या लापरवाही से अपनी पतवार चलाकर पानी को काट रहा है। मित्या रुक गया। अपने माथे के पसीने को पोंछा और गहरी सांसें लेता हुआ अपनी पतवार पर झुका खड़ा रह गया। वह बहुत थक गया था।

"आज बहुत कम नावें दिखाई दे रही हैं। इतनी देर तक खेते रहे और केवल एक ही मिली," और यह देखकर कि मित्या अब भी चुप है वह बहस सी करता हुआ कहने लगा—

"मेरा ख्याल है कि नदी में अभी नावों का चलना शुरू नहीं हुआ है। यह तो अभी आरम्भ ही है। हम लोग कज़ान आसानी से पहुँच जाँयगे। वहाँ शाही गति से वोल्गा बह रही होगी। वह कितनी चौड़ी है जैसे कि दैत्य की पीठ हो जो संसार की भारी से भारी वस्तु को आसानी से उठा सकती है। तुम्हें क्या हुआ? हवा लग गई क्या मित्या, क्या मामला है? क्यों?"

"तुम क्या चाहते हो?" चिड़चिड़ा कर मित्या ने पूछा।

"कुछ नहीं। तुम भी मजेदार आदमी हो · तुम कुछ बोलते क्यों नहीं? हर वक्त सोचना ··गोली मारो ऐसी आदतों को। आदमी के लिए यह बातें अच्छी नहीं। ओह, मूर्ख—तुम समझते हो कि तुम अक्लमन्द हो परन्तु तुम में तो अक्ल का नाम भी नहीं है—यह तुम नहीं जानते! हा, हा, हा, हा!"

स्वयं को मित्या से अकलमन्द मान कर सरजी उपेक्षापूर्वक हँसने लगा और अन्त में घुर्रा कर कुछ देर के लिए चुप हो गया। उसने अचानक सींटी बजाना भी बन्द कर दिया जो उसने शुरू कर दी थी और पुन: अपने विचारों की लड़ी को आगे बढ़ाया।

"विचार करना! यह साधारण व्यक्ति के लिए समय बिताने का अच्छा साधन नहीं। अपने बाप को देखो! वह कभी नहीं सोचता फिर भी

वह जीवित है। तुम्हारी स्त्री से रंगरेलियाँ मनाता है और दोनों तुम्हारी मजाक उड़ाते हैं और तुम अपने को अकलमन्द समझते हो। हाँ, यही बात है। मैं तुमसे शर्त लगा सकता हूँ कि माशा गर्भवती है। क्या? चौंको मत, बच्चा तुम्हें नहीं पड़ेगा। वह सिलान पेत्रोव की भाँति खूब मोटा ताजा होगा, यह तुम मुझसे पूछलो। परन्तु वह कहलायेगा तुम्हारा ही बेटा। कैसा अच्छा काम है। हा, हा हा तुम्हें पिता कहेगा। और तुम उसके बाप न होकर उसके भाई लगोगे क्योंकि उसका चेहरा बिल्कुल तुम्हारा जैसा ही होगा। उसका बाप उसका बाबा होगा। कहो तुम्हे कैसा लगेगा। बदमाश कहीं के—सब के सब कैसे पापी हैं परन्तु हैं कितने साहसी। इन्हें दुनियाँ की कोई परवाह नहीं। है न ऐसी बात, मित्या?"

"सरजी" व्याकुल उत्तेजित और हिचकी सी लेती हुई आवाज में मित्या बोला—"ईश्वर के लिए मेरे दिल को मत चीरो, मुझे मत सताओ, अकेला छोड़ दो। खामोश रहो! ईश्वर के नाम पर मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मुझसे मत बोलो, मुझे सताना बन्द करदो, मेरा खून चूसना छोड़ दो। मैं अपने को इस नदी में फेंक दूंगा और इसका भयंकर पाप तुम्हें लगेगा। मैं अपनी आत्मा की हत्या कर लूँगा, मुझे अकेला छोड़ दो। मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ। मुझ पर दया करो... ।

रात्रि की उस निस्तब्धता में वेदनापूर्ण एक तीखी काँपती ध्वनि गूँज उठी और मित्या इस प्रकार लट्ठों पर गिर पड़ा मानो उस काली नदी के ऊपर छाए हुए घने बादलों में से कोई भारी चीज आकर उस पर गिरी हो।

"ठहरो, ठहरो।" भयभीत सरजी चिल्लाया। वह सामने लट्ठों पर अपने साथी को छटपटाते देख रहा था जैसे कि वह आग में पड़ा हुआ छटपटा रहा हो "तुम भी अजीब आदमी हो। अगर तुम्हें मेरी बातें इतनी बुरी लग रही थीं तो तुमने पहले क्यों नहीं कहा, तुमने कहा क्यों नहीं, बेवकूफ?"

"तुम मुझे रास्ते भर सताते आए हो। आखिर क्यों ? क्या तुम्हारा दुश्मन हूँ ?" मित्या तेजी से बोला।

"तुम भी अजीब आदमी हो। सचमुच !" सरजी ने अपने क अपमानित सा अनुभव कर हकलाती आवाज में कहा—"मुझे कैसे मालूम होता ? मुझे क्या पता कि तुम्हारे हृदय में क्या वेदना उठ रही है ?"

"मैं इस सब को भूल जाना चाहता हूँ। क्या तुम यह नहीं समझते इसे सदैव के लिए भूलना चाहता हूं ! मेरा अपमान ओह इसकी भयक पीड़ा '' ""तुम सब राक्षस हो ! मैं चला जाऊँगा, मैं हमेशा के लिए चल जाऊँगा, मैं इसे अब सहन नहीं कर सकता।"

"हाँ, चले जाओ"" ।" सरजी ने चीख कर कहा और उसकी आवाज नदी पर चारों ओर गूँज उठी। इसके बाद उसके मुँह से गरजती हुई आवाज में कुछ गालियाँ निकलीं परन्तु अचानक वे शब्द उसके होठों पर ही मुरझा गए और जैसे ही वह शिथिल होकर नीचे बैठा उसे ऐसा लगा जैसे कि उसका हृदय डूबता जा रहा है क्योंकि आज उसने मानव जीवन का खुला हुआ रूप देखा था और जिसकी उपेक्षा करना उसकी शक्ति से बाहर की बात थी।

'हैं, तुम लोग क्या कर रहे हो ?" नदी पर तैरती हुई सिलान पेत्रोव की आवाज आई। "क्या हो रहा है वहाँ ? तुम लोग किसलिए चीख रहे थे ? एह ''हो ओ ?"

ऐसा लगा कि सिलान पेत्रोव को शोर मचाना अच्छा लगता है जिससे वह अपनी तेज भारी आवाज से नदी की उस गहरी शान्ति को भंग कर देता है। वह बराबर चीखता रहा। उसकी आवाज उस गर्म सीली हवा में जीवन का सचार कर मानो मित्या के दुबले पतले शरीर को कुचले डाल रही थी जो पतवार का सहारा लिए खड़ा था। सरजी ने अपनी पूरी ताकत से चिल्ला कर मालिक को उत्तर दिया और फिर धीमी आवाज में विचित्र रूसी गालियाँ देने लगा। इन दोनों की तेज आवाज ने रात्रि की शान्ति को भग कर उसे टुकडे टुकडे कर ऐसे शब्दों से भर दिया

था जो किसी गम्भीर बजते हुए नगाड़े की ध्वनि की तरह उठकर वायु में फैलते और विलीन हो जाते। और फिर चारों ओर खामोशी छा गई।

चाँदनी के पीले धब्बे नदी के ऊपर छाए हुए बादलो की सन्धि में से नीचे पानी पर झांकते और तुरन्त ही चारों ओर फैले हुए अन्धकार मे विलीन हो जाते।

बेड़े रात्रि के उस अन्धकार और निस्तब्धता में चुपचाप आगे बढ़ रहे थे।

२.

आगे की पतवारो मे से एक पर सिलान पेत्रोव खडा था। वह गले पर खुली हुई लाल रंग की कमीज पहने हुए था जिसमें से उसकी मजबूत गर्दन और बालो से ढका हुआ चौडा सीना, जो फौलाद की तरह कठोर था, दिखाई दे रहा था। उसकी भौंहों के बाल काले घने गुच्छों से लगते थे जिसके नीचे दो चमकीली आँखें हंसती रहती थीं। कमीज की बाहें कुहनियों तक मुड़ी हुई थीं जिससे उसकी वह मांसल शक्तिशाली भुजाएँ दिखाई दे रही थीं जिनमें वह पतवार पकडे खडा था। थोडा सा आगे को झुका हुआ वह दूर अन्धकार में देखने का प्रयत्न कर रहा था।

माशा नदी की धार की ओर हट कर उससे तीन क़दम दूर खडी थी, और अपने उस चौडे सीने वाले मर्द को मुस्कराती हुई देख रही थी। अपने-अपने विचारों में डूबे हुए दोनों ही चुप थे। वह दूर क्षितिज पर नेत्र गढ़ाए देख रहा था और माशा उसके सुन्दर दाढ़ी वाले चेहरे की ओर टकटकी लगाए खडी थी।

"मेरा ख्याल है वह किसी मछुए के अलाव की चमक है", अन्त में उसने कहा और उसकी ओर मुड़ा "यह ठीक है, तब। हम सीधे चल रहे है ओह।" उसने मुँह से गर्म हवा का एक गुब्बारा छोडा और अपनी पतवार को पानी मे डाल कर पूरी ताकत से खींचा।

"और ज्यादा ताकत लगाओ माशा प्यारी!" उसने माशा को भी अपनी पतवार से वैसा ही करते देख कर कहा।

मोटी, गुदगुदी और गोल, काले ढीठ नेत्र, गुलाबी गाल, नगे पैर वाली माशा ने जो केवल एक हल्का सा गीला वस्त्र पहने हुए थी तथा जो उसके शरीर से चिपक गया था, सिलान की ओर मुँह कर हलकी मुस्कराहट से देखकर कहा

"तुम मेरी बहुत फिकर रखते हो। मैं खूब तगड़ी हूँ। ईश्वर को धन्यवाद है।"

"जब मैं तुम्हारा चुम्बन करता हूँ तब नहीं।" सिलान ने कन्धे उचकाते हुए कहा।

"तुम्हे ऐसा नहीं करना चाहिए।" माशा ने उसे उत्साहित करते हुए कहा।

कुछ देर तक वे चुप रहे और एक दूसरे को भूखी आँखों से निगलने का सा प्रयत्न करते हुए देखते रहे। बेड़ों के नीचे होकर पानी मधुर ध्वनि करता हुआ वह रहा था। कहीं दूर, किनारे पर मुर्गा बाग दे उठा। बेड़े उस पतले, घुलते हुए अन्धेरे की ओर धीरे २ मन्थर गति से बढ़े जा रहे थे जहाँ बादलों का रग अधिक स्पष्ट और रङ्गीला हो उठा था।

"सिलान! तुम जानते हो वे लोग वहाँ किसलिए चीख रहे थे? मैं जानती हूँ। सच मानो मैं खूब अच्छी तरह जानती हूँ। मित्या वहाँ सरजी से हम दोनों का रोना रो रहा होगा और दुखी होकर सुबकने लगा होगा और इस पर सरजी ने हमे गालियाँ दी होंगी।"

माशा ने उसके चेहरे को पढ़ने का प्रयत्न किया जो इन शब्दों को सुन कर गम्भीर, शान्त और कठोर हो उठा था।

"फिर, इससे क्या?" उसने रुखाई से पूछा।

"ओह, कुछ नहीं।"

"अगर इसका कोई महत्त्व नहीं तो इसके विषय में बातें करने की भी कोई जरूरत नहीं थी।"

"नाराज मत हो।"

"क्या, तुमसे ? मैं कभी कभी चाहता हूँ परन्तु हो नहीं पाता।"

"क्या तुम अपनी माशा को प्यार करते हो !" उसने उसकी ओर झुककर, हंसते हुए पूछा।

"ओह !" उसने घुरति हुए से कहा और अपनी शक्तिशाली भुजाओं को उसकी ओर बढ़ा, दाँतों की भिच्ची सी मारे हुए बोला .

"यहाँ पास आओ .....मुझे परेशान मत करो ......"

माशा ने बिल्ली की तरह अपने लचीले शरीर को मोड़ा और उसकी फैली हुई भुजाओं में समा गई।

"ये बेड़े फिर मार्ग से भटक जायंगे !" उसने फुसफुसाते हुए कहा और अपने होठों के नीचे उसके उत्तेजना से चमकते हुए चेहरे को चूस लिया।

"बस, इतना बहुत है। उजेला हो रहा है.........वे हमें दूसरे सिरे से देख लेंगे।"

माशा ने अपने को छुड़ाने का प्रयत्न किया परन्तु उसने अपनी भुजाएँ और कस लीं।

"वे देख लेंगे ? देख लेने दो ! हर एक आदमी को देख लेने दो ! वे सब जहन्नुम में जांय। मैं पाप कर रहा हूँ—यह सत्य है। मैं यह जानता हूँ। फिर इस से क्या ? ईश्वर के सामने मैं ही तो इसका जवाब दूगा। तुम किसी प्रकार उसकी स्त्री नहीं रहीं। इसका यह स्पष्ट अर्थ है कि तुम जो चाहो वह करने के लिए स्वतन्त्र हो। यह उसके साथ अन्याय है। मैं जानता हूँ। परन्तु मैं क्या करूँ ? क्या करूँ ? क्या तुम सोचती हो कि अपने बेटे की स्त्री से प्यार करना अच्छी बात है ? हालाँकि यह सत्य है कि तुम उसकी स्त्री नहीं हो... फिर भी अपनी सामाजिक स्थिति को देखते हुए मेरी कैसी दशा है ! और क्या ईश्वर के सम्मुख यह पाप नहीं है। है ! मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ। और फिर भी मैंने पाप किया है। परन्तु यह इतना आकर्षक है कि करना ही पड़ा। हम इस संसार में कुछ समय तक रह कर किसी भी दिन मर सकते हैं। आह, मेरिया। अगर मैं मित्या की शादी को एक महीने के लिए और रोक

देता तो आज दूसरी ही स्थिति होती। जैसे ही अनफिसा मरी थी मैं शादी कराने वाले किसी दलाल को तुम्हारे पास भेज देता और काम पूरा हो जाता, नियमपूर्वक और अच्छी तरह। फिर उसमें पाप न होता और न लज्जा। यह मेरी गलती थी। यह बहुत समय तक मेरे हृदय को कोंचती रहेगी। और तुम्हें भी मरने से पूर्व ही एक प्रकार से मार डालेगी ' "

"ओह, छोड़ो इन बातों को। इनके लिए परेशान मत हो। हम लोग इस विषय पर बहुत बातें कर चुके हैं", माशा ने कहा और धीरे से उसके हाथों को हटा कर अपनी पतवार पर लौट आई। वह तेजी से झटके देता हुआ पतवार चलाने लगा मानो अपने हृदय पर छाए बोझ को झटक कर फेंक देना चाहता हो और उसके चेहरे पर अचानक एक उदासीनता सी छा गई।

दिन निकल रहा था।

बादल झीने होकर आकाश मे इधर उधर मडरा रहे थे जैसे कि उगते हुए सूर्य को रोकने का प्रयत्न कर रहे हों। पानी का रग ठडे फौलाद का सा हो गया था।

"उस दिन उसने इस विषय पर फिर कहा था, बोला 'पिता क्या तुम दोनों के लिए यह शर्म और अपमान की बात नहीं है। उसे छोड़ दो—उसका मतलब तुमसे था" सिलान पेत्रोव ने सूखी हँसी हंसते हुए कहा—"उसे छोड़ दो और होश मे आओ। मैंने कहा 'बेटे, मेरे प्यारे बेटे, रास्ते से हट जाओ अगर तुम अपनी जान की खैरियत चाहते हो। मैं सड़े हुए चिथड़े की तरह तुम्हारे टुकडे कर दूंगा। तुम्हारा एक भी गुण बाकी नहीं बचेगा। वह कैसा मनहूस दिन था जिस दिन मैंने तुम जैसे नपुसक को इस ससार मे जन्म दिया था। वह खड़ा हुआ काप रहा था— 'पिता क्या यह मेरा अपराध है'—उसने कहा 'यह तुम्हारा अपराध है दोगले कुत्ते, क्योंकि तुम मेरे रास्ते के रोड़े हो। यह तुम्हारा अपराध है क्योंकि तुम अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकते। तुम बिल्कुल सड़े हुए गोश्त की

भाँति निर्जीव हो—सड़ी हुई बदबूदार कीचड़ की तरह। अगर तुम कुछ भी ताकतवर होते तो तुम्हे कोई मार भी सकता था लेकिन ऐसी भी तो कोई नहीं कर सकता। अभागे निर्जीव पुतले।' उसने चीखना चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया। आह मेरिया, आजकल मनुष्यों में ताकत ही नहीं रही है। मेरे स्थान पर दूसरा आदमी ''उफ। हम इस फन्दे को जल्दी ही तोड़ डालेंगे। और अभी तो हमने इसमें अपनी केवल गर्दन ही डाली है। कौन जानता है कि कही यह हम दोनों की गर्दन में कस न जाय।"

"तुम्हारा क्या मतलब है ?" माशा ने उस आदमी के गम्भीर चेहरे की ओर देखा और सहम कर धीमी आवाज में पूछा। उस आदमी के शरीर से शक्ति की धारा सी वह रही थी।

"मेरा मतलब है कि अगर वह मर गया — यही मेरा मतलब है। अगर केवल वह मर जाय' ''''तो यह कितना अच्छा होगा। सब काम ठीक हो जांयगे। मैं तुम्हारे सम्बन्धियों को जमीन दे दूँगा जिससे उनका मुँह बन्द हो जायगा और हम और तुम साइबेरिया चले चलेंगे या क्वान चले जांयगे। यह कौन है ? यह मेरी पत्नी है। तुम मेरा मतलब समझी ? हम लोग जरूरी कागज पत्र इकट्ठे कर लेंगे। मैं किसी गाँव मे एक दूकान खोल दूँगा और हम दोनों साथ साथ वहाँ अपना जीवन बिताएँगे और ईश्वर से अपने पापो की क्षमा मांगने के लिए प्रार्थना किया करेंगे। हमें इससे अधिक नहीं चाहिए। हम दूसरे मनुष्यों की सहायता करेंगे और वे हमारी आत्मा को सन्तोष देने के लिए हमारी सहायता करेंगे।' तुम्हें यह सब कैसा लगेगा ? क्यों माशा ?"

"हाँ" आँ ! ठीक है" उसने गहरी सांस लेकर कहा और अपनी आँखों को एकाग्र कर विचारों में खो गई।

वे कुछ देर तक खामोश रहे ''' वहाँ पानी की कलकल ध्वनि के अतिरिक्त और कोई भी शब्द नहीं सुनाई दे रहा था।

"वह एक बीमार सा आदमी है'''''' हो सकता है कि वह शीघ्र मर जाय'''''''''" सिलान पेत्रोव ने घुटी सी आवाज में कहा।

"मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि यह शीघ्र हो जाय।" माशा ने तीखी आवाज में कहा और हवा में क्रॉस का निशान बनाया।

बसन्त ऋतु के सूर्य की किरणें चमकती हुई सुनहली और इन्द्र-धनुषी रंगों की धारा के समान पानी पर पड़ रही थीं। एक हवा का झोंका आया। प्रत्येक वस्तु में जीवन का संचार हो उठा। बादलों के बीच नीला आकाश भी सूर्य किरण-चुम्बित जल को देखकर मुस्करा उठा। अब बेड़े बादलों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ आए थे।

वहाँ, पीछे, बादल एक घने रूप में एकत्रित होकर उस चपल और शान्त नदी के ऊपर छा गए थे। ऐसा लग रहा था मानो बसन्त ऋतु के उस तीव्र जीवन-दायक प्रकाश से ओत प्रोत सूर्य की किरणों से भाग निकलने का कोई मार्ग सोच रहे हों—जिन किरणों में प्रसन्नता और जीवन का सन्देश भरा हुआ था और जो शीतकाल में चलने वाले भयंकर बर्फीले तूफानों की भयंकर शत्रु थीं परन्तु जो सुहावने बसन्त के आगमन से पूर्व संसार को मस्त कर रही थी।

बेड़ों के सामने स्वच्छ नीला आकाश चमक रहा था और सूर्य, जो अभी उग ही रहा था परन्तु जिसमें सुहावनी बसन्ती गरमी थी नदी की स्वर्णिम लहरों से निकल कर आकाश की गहरी नीलिमा में सम्राट के समान गर्वोन्मत्त मस्तक किये बढ़ा चला जा रहा था।

दाहिनी ओर पथरीले तट की भूरी पर्वत श्रेणियाँ हरे जङ्गलों की करधनी पहने खड़ी थीं और बायीं ओर चरागाहों का हरा कालीन फैला हुआ था जिसमें ओस की बूँदें हीरे की तरह चमक रही थीं।

धरती की सोंधी सुगन्ध, ताजी नई घास की भीनी भीनी महक और चीड़ के वृक्षों से आती हुई राल की गन्ध हवा में भर रही थी।

सिलान पेत्रोव ने पिछले भाग में खड़े हुए पतवार चलाने वालों की ओर मुड़ कर देखा। सरजी और मित्या अपनी अपनी पतवार पकड़े शान्त खड़े थे परन्तु इतनी दूर से उनके चेहरे के भावों को पढ़ना बहुत कठिन था।

उसने माशा की ओर देखा।

वह सर्दी से काँप रही थी। अपने पतवार के सहारे खड़ी हुई वह

एक गोल गेंद सी दिखाई दे रही थी। सूर्य की किरणों से पूर्ण रूप से नहाते हुए उसने चमकती आँखों से, आगे की ओर देखा और उसके होठ इतने आकर्षक ढंग से मुस्करा उठे कि जिसके द्वारा कुरूप स्त्रियाँ भी आकर्षक और सुन्दर लगने लगती हैं।

"सावधान रहो, लड़को! ओहो' .... ओ ... . ओ।" सिलान पेत्रोव अपनी पूरी शक्ति से गरजा। उसने अपने चौड़े सीने में एक विचित्र गर्व का अनुभव करते हुए ललकारा।

ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी आवाज से सब थर्रा उठे हों। बहुत देर तक उसकी प्रतिध्वनि पहाड़ी तट पर गूँजती रही।

दरार

नगर के ठीक सामने, नदी के दूसरे किनारे पर सात बढ़ई, बर्फ से ढकी हुई नदी पर जाने से रोकने के लिए बनाई गई लकड़ी की चहार-दीवारी की, जल्दी जल्दी मरम्मत कर रहे थे। जाड़े के मौसम में नगर के आदमियों ने इसमें से जलाने के लिए लकड़ियाँ निकाल ली थीं।

उस वर्ष बसन्त ऋतु देर से आई थी। मार्च का शिशु के समान कोमल मास अक्टूबर की तरह कठोर मालूम हो रहा था। केवल दोपहर के लगभग और वह भी कभी कभी, पीला, जाड़ों का सूरज आकाश के एक कोने में से अपनी किरणें फेंकता। ये किरणें बादलों की नीली तहों में से होकर पृथ्वी पर तिरछी होकर झाँकतीं मानो बीमार हों।

यह 'प्रेम-सप्ताह' का शुक्रवार का दिन था और अब भी रात के समय टपकती हुई नालियों का पानी लम्बी लम्बी बर्फ की लड़ियों में जम जाता था। नदी पर जमी हुई बर्फ का रंग भी जाड़ों के बादलों जैसी ही नीली झलक लिए हुए था।

जब वे बढ़ई काम कर रहे थे उसी समय नगर के गिरजाघरों में घन्टों की शोकपूर्ण ध्वनि गूँज उठी। काम करने वालों ने अपने सिर उठाए और उस धुन्ध की ओर देखने लगे जो नगर को ढके हुए थी। कभी कभी चोट करने के लिए उठी हुई कुल्हाड़ी एक क्षण के लिए हवा में उठी ही रह जाती जैसे इस कोमल ध्वनि को खंडित करने में आना कानी कर रही हो।

नदी की चौड़ी सतह पर, जगह जगह, पेड़ की टहनियाँ बर्फ में गड़ी हुई थीं जो रास्तों, दरारों और छोटे छोटे खाली स्थानों की सूचना

देती थीं। वे टहनियाँ आकाश की ओर ऊपर उठी हुईं ऐसी लग रही थीं मानों किसी डूबते हुए आदमी के ऊपर को उठे हुए हाथ हों जो दर्द से ऐंठ गए हैं।

नदी का दृश्य बड़ा नीरस था—निर्जन और सूना। उसकी सतह एक लम्बे चौड़े खुरदरे मैदान की तरह थी। वह दूर तक अन्धकार में फैली हुई थी जहाँ से नम और ठण्डी हवा धीरे धीरे उदासी की सी सांस भरती हुई चली आ रही थी।

फोरमैन ओसिप, एक स्वच्छ गठे हुए शरीर का छोटा सा आदमी था जिसकी चाँदी जैसी सफेद घनी दाढ़ी छोटे छोटे घुंघराले बालों द्वारा उसके गुलाबी गालों और चंचल गर्दन से चिपकी हुई थी। ओसिप, जो हमेशा सब से आगे रहता था, चिल्ला रहा था।

"जल्दी काम करो, मुर्गी के बच्चो!"

और मेरी तरफ मुड़कर मज़ाक करते हुए बोला—

"अच्छा ओवरसियर! तुम वहाँ खड़े खड़े क्या सोच रहे हो? तुम क्या सोचते हो कि तुम क्या कर रहे हो? क्या वासिल सरजी–ठेकेदार–ने तुम्हे यहाँ तैनात नहीं किया है? अच्छा, तो यह तुम्हारा काम है कि हम सब को बराबर काम पर लगाए रखो—'ऐ, फलाने, जल्दी काम करो।' तुम्हे हम लोगों पर इस प्रकार चीखना चाहिए। यही काम है जिसके लिए तुम्हे यहाँ रखा गया है और तुम्हें यहाँ खड़े हुए, मछली की तरह आखें खोल कर देखते हुए कुछ न कुछ चिल्लाते रहना चाहिए। तुम तो इस समय यहाँ, एक प्रकार से, मालिक की तरह हो। अच्छा, तो फिर आगे बढ़ो और आज्ञा दो—मुर्गी के बच्चो।"

"जल्दी काम करो, ओ शैतानो!" वह उन आदमियो पर चिल्लाया "हमे यह काम आज ही समाप्त कर देना है।"

वह खुद उन सब आदमियों में सब से अधिक आलसी था। अपना काम खूब अच्छी तरह समझता था और जब मन होता तो बड़े उत्साह

और निपुणता से उसे सम्पन्न करता था। परन्तु वह ये सब काम करने की मुसीबतों के स्थान पर काम करने वाले अपने साथियों को सुन्दर कहानियाँ सुनाना अधिक पसन्द करता था। और जब काम अपनी पूरी रफ्तार से चालू रहता और आदमी चुपचाप तन्मय होकर उसमें डूबे रहते तो अचानक प्रत्येक काम को भली प्रकार करने की तीव्र इच्छा से पीड़ित होकर ओसिप हल्की घुरघुराहट की सी आवाज में कहना शुरू करता.

"क्या मैंने तुम लोगों से कभी उस बात के विषय में कहा था ?"

दो या तीन मिनट तक वे लोग उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं देते थे। वे आरी चलाने और लकड़ी छीलने में डूबे रहते और उसका कोमल ऊँचा स्वर, स्वप्न की तरह, उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए वहाँ मडराता रहता। अपनी हल्की नीली आँखों को आधा खोले हुए वह अपनी घुँघराली दाढ़ी में उँगली फेरता और आनन्द से होठ चाटता हुआ प्रत्येक शब्द को रस लेकर कहता चलता :

"इसलिए वह मछली को पकड़ता है और अपनी टोकरी में रख कर जंगल की ओर चल देता है और चलते चलते उस मछली के बनने वाले रसीले शोरबे के विषय में सोचता जाता है और अचानक वह एक औरत की घशी की सी आवाज सुनता है। वह नहीं बता सकता कि वह आवाज कहाँ से आ रही है "यलेसि-आ-आ, यलेसि-आ-आ !"

क्योंकि एक दुबला पतला, टेढ़ा सा मोरदोवियन जिसका घरेलू नाम

गहरी शिकायत चली आ रही थी, भारी स्वर में कुड़कुड़ाया . "मछली जमीन पर कैसे चल सकती है ?"

"क्या तुमने कभी ऐसी मछली सुनी है जो बात करती है ?" ओसिप ने मधुरता से जवाब दिया ।

मोकी बुदरिन, एक मन्द-बुद्धि वाला व्यक्ति जिसकी उठी हुई गाल की हड्डियाँ, बढ़ी हुई ठोढ़ी और पीछे की ओर झुका हुआ माथा उसकी शकल को कुत्ते का सा रूप दे रहे थे और जो एक खामोश निष्पक्ष व्यक्ति था, ने नाक के स्वर में गिनगिनाते हुए अपने चार प्रिय शब्दों का उच्चारण, उन पर विशेष बल देते हुए, किया . "यह बिल्कुल सत्य है ..."

वह प्रत्येक कहानी का समर्थन सदैव अपने इन्हीं चार शब्दों को पूर्ण विश्वास के साथ धीरे से उच्चारण कर दिया करता था चाहे वह कहानी अविश्वसनीय, भयकर, गन्दी अथवा द्वेषपूर्ण क्यों न हो :

"यह बिल्कुल सत्य है ।"

हर बार जब मैं उन्हें सुनता तो ऐसा लगता मानो किसी ने चार बार मेरी छाती में जोर से घूँसा मारा हो ।

काम रुक गया क्योंकि लंगड़ा और हकला याकोव वोऐव भी मछली वाली कहानी कहना चाह रहा था । वास्तव में उसने अपनी कहानी शुरू करदी थी परन्तु किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया बल्कि सुनने के स्थान पर सब लोग उसके अत्यन्त कष्ट के साथ बोलने के प्रयत्न पर हँस उठे । उसने सबको कोसा और गालियाँ दीं । अपनी छैनी पत्थर पर पैनी की और मुँह से झाग उड़ाते हुए चीखा जिससे सबका और भी अधिक मनोरंजन हुआ । "जब एक आदमी पेशेवर झूँठे की तरह झूँठ बोलता है तब तुम उसे धार्मिक कथा की तरह सुनते हो परन्तु मैं तुम्हें एक सच्ची कहानी सुना रहा हूँ और इस पर तुम लोग घोंघे की तरह दाँत फाड़ रहे हो । भगवान् तुम्हें गारत करे ..."

अब तक उन लोगों ने अपने औजार पटक दिए थे और विभिन्न प्रकार के मुँह बनाते हुए चीख रहे थे । इस पर ओसिप ने टोपी उतार कर अपनी सुन्दर चाँदी जैसी गंजी खोपड़ी खुजाई और कठोरतापूर्वक झिड़कते हुए बोला—

और निपुणता से उसे सम्पन्न करता था। परन्तु वह ये सब काम करने की मुसीबतों के स्थान पर काम करने वाले अपने साथियों को सुन्दर कहानियाँ सुनाना अधिक पसन्द करता था। और जब काम अपनी पूरी रफ्तार से चालू रहता और आदमी चुपचाप तन्मय होकर उसमें डूबे रहते तो अचानक प्रत्येक काम को भली प्रकार करने की तीव्र इच्छा से पीड़ित होकर ओसिप हल्की घुरघुराहट की सी आवाज में कहना शुरू करता :

"क्या मैंने तुम लोगों से कभी उस बात के विषय में कहा था ?"

दो या तीन मिनट तक वे लोग उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं देते थे। वे आरी चलाने और लकड़ी छीलने में डूबे रहते और उसका कोमल ऊँचा स्वर, स्वप्न की तरह, उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए वहाँ मँडराता रहता। अपनी हल्की नीली आँखों को आधा खोले हुए वह अपनी घुँघराली दाढ़ी में उँगली फेरता और आनन्द से होठ चाटता हुआ प्रत्येक शब्द को रस लेकर कहता चलता :

"इसलिए वह मछली को पकड़ता है और अपनी टोकरी में रख कर जंगल की ओर चल देता है और चलते चलते उस मछली के बनने वाले रसीले शोरबे के विषय में सोचता जाता है और अचानक वह एक औरत की बंशी की सी आवाज सुनता है। वह नहीं बता सकता कि वह आवाज कहाँ से आ रही है "यलेसि–आ–आ, यलेसि–आ–आ !"

ल्योन्का एक दुबला पतला, टेढ़ा सा मोरदीवियन जिसका घरेलू नाम नरोदत्स था और जिसकी आँखें आश्चर्य प्रकट कर रही थीं, ने अपनी कुल्हाड़ी नीची की और मुँह फाड़ कर खड़ा हो गया।

"और उस टोकरी में से एक भारी धीमी आवाज जवाब देती है—'मै यहाँ हूँ ?' और उसी क्षण टोकरी का ढक्कन अपने आप झटके से खुल जाता है और मछली बाहर कूद कर सीधे तालाब की ओर दौड़ लगाती है "

सन्याविन एक फौज से निकाला हुआ पुराना सिपाही और पक्का शराबी जो दमे का रोगी था और जिसे जिन्दगी के प्रति बहुत अरसे से एक

गहरी शिकायत चली आ रही थी, भारी स्वर में कुड़कुड़ाया : "मछली जमीन पर कैसे चल सकती है ?"

"क्या तुमने कभी ऐसी मछली सुनी है जो बात करती है ?" ओसिप ने मधुरता से जवाब दिया।

मोकी बुदरिन, एक मन्द-बुद्धि वाला व्यक्ति जिसकी उठी हुई गाल की हड्डियाँ, बढ़ी हुई ठोढ़ी और पीछे की ओर झुका हुआ माथा उसकी शकल को कुत्ते का सा रूप दे रहे थे और जो एक खामोश निष्पक्ष व्यक्ति था, ने नाक के स्वर मे गिनगिनाते हुए अपने चार प्रिय शब्दों का उच्चारण, उन पर विशेष बल देते हुए, किया : "यह बिल्कुल सत्य है…"

वह प्रत्येक कहानी का समर्थन सदैव अपने इन्हीं चार शब्दों को पूर्ण विश्वास के साथ धीरे से उच्चारण कर दिया करता था चाहे वह कहानी अविश्वसनीय, भयकर, गन्दी अथवा द्वेषपूर्ण क्यों न हो :

"यह बिल्कुल सत्य है।"

हर बार जब मैं उन्हे सुनता तो ऐसा लगता मानो किसी ने चार बार मेरी छाती में जोर से घूँसा मारा हो।

काम रुक गया क्योंकि लंगड़ा और हकला याकोव वोण्ेव भी मछली वाली कहानी कहना चाह रहा था। वास्तव में उसने अपनी कहानी शुरू करदी थी परन्तु किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया बल्कि सुनने के स्थान पर सब लोग उसके अत्यन्त कष्ट के साथ बोलने के प्रयत्न पर हँस उठे। उसने सबको कोसा और गालियाँ दीं। अपनी छैनी पत्थर पर पैनी की और मुँह से झाग उड़ाते हुए चीखा जिससे सबका और भी अधिक मनोरंजन हुआ। "जब एक आदमी पेशेवर झूठे की तरह झूठ बोलता है तब तुम उसे धार्मिक कथा की तरह सुनते हो परन्तु मैं तुम्हें एक सच्ची कहानी सुना रहा हूं और इस पर तुम लोग घोंघे की तरह दाँत फाड़ रहे हो। भगवान् तुम्हें गारत करे…"

अब तक उन लोगों ने अपने औजार पटक दिए थे और विभिन्न प्रकार के मुँह बनाते हुए चीख रहे थे। इस पर ओसिप ने टोपी उतार कर अपनी सुन्दर चाँदी जैसी गंजी खोपड़ी खुजाई और कठोरतापूर्वक झिड़कते हुए बोला—

धाले 'स्लेवोनिक' अक्षर बड़ी मुश्किल से लिख पाता था। साधारण लिखावट उसकी समझ से बाहर की चीज थी।

"यह अजीब सा दीखने वाला गोल गोल सा अक्षर क्या है?"

"यह 'डी' (D) अक्षर है।"

"आह, डी! कैसा सुन्दर फन्दा सा बनाया है और उस लाइन पर तुमने क्या लिखा है?"

"तख्ते नौ, चौखट पाँच।"

"छः तुम्हारा मतलब है।"

"नहीं पाँच।"

"क्या मतलब है तुम्हारा—पाँच? देखो, सिपाही ने एक काटी"

"उसे काटना नहीं चाहिए था ..."

"कौन कहता है कि उसे नहीं करना चाहिए? वह आधा बाहर ले गया .. "

उसने अलसी के फूलों जैसी अपनी नीली आँखों को सीधे मेरी आँखों में डालकर देखा और प्रसन्नता से उन्हें चमकाते हुए तथा दाढ़ी में उङ्गली फेर कर निहायत बेशरमाई से कहा।

"अच्छा, सुनो, यहाँ छः' लिख दो! देखो, आज मौसम ठंडा और नम है और काम बहुत सख्त है। आदमी को शरीर में गर्मी लाने के लिए कभी-कभी थोड़ी सी शराब पीनी ही पड़ती है। इतने सख्त और ईमानदार मत बनो। इस तरह तुम ईश्वर को रिश्वत देकर खुश नहीं कर सकोगे!"

वह बड़ी देर तक और आग्रहपूर्वक बात करता रहा। उसके नम्र और दुलराने वाले शब्दों ने मुझे बुरादे की वर्षा की तरह से इस प्रकार ढक लिया कि अन्त में मैंने अन्धे की भाँति बिना किसी प्रकार का विरोध किए वहाँ छः लिख दिए।

"अब देखो अच्छा लगता है! देखो न यह अक्षर अब पहले से ज्यादा सुन्दर दिखाई दे रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे उस लाइन पर कोई मोटी, दयालु, सुन्दर स्त्री बैठी हो "

मैंने उसे गर्वपूर्वक अपनी इस विजय का समाचार बढ़ई लोगों को सुनाते देखा। मैं अच्छी तरह जानता था कि वे मेरी इस कमजोरी के कारण मुझसे घृणा करते हैं। यह सोचकर मेरा पन्द्रह वर्ष का नन्हा सा हृदय दुःख से रो उठा और मेरे दिमाग़ में भद्दे और नीरस विचार उठने लगे।

"यह सब कितना अजीब और बेवकूफी से भरा हुआ है। उसे इस बात का पूरा विश्वास क्यों है कि मैं उस छः को काट कर दुवारा पाँच नहीं लिख दूंगा और यह कि मैं उस ठेकेदार से इस बात की शिकायत नहीं करूँगा कि उन्होंने तख्ता बेच कर शराब पी है।"

"एक बार उन लोगों ने एक सेर आठ इँची कीलें और कोनिया चुराए।

"सुनो," मैंने ओसिप को चेतावनी दी—"मैं इन्हें रजिस्टर में लिख रहा हूँ।"

"ठीक है, लिख दो" अपनी भूरी भौंहों को सिकोड़ते हुए उसने लापरवाही से जवाब दिया—"अब समय आ गया है कि इस प्रकार की हरकतों को बन्द किया जाय। आगे बढ़ो, इसे लिख दो। इससे इन कुत्तों को एक सबक तो मिलेगा।"

और वह उन आदमियों की ओर चिल्ला कर बोला।

"ए, बदमाशो, तुम्हें इन कीलों और कोनियों की कीमत अदा करनी पड़ेगी।"

"किसलिए?" उस पुराने सिपाही ने गम्भीरतापूर्वक पूछा।

"तुम हमेशा इन चीजों को चुरा कर बेच नहीं सकते," ओसिप ने खामोशी से समझाया।

बढ़ई बड़बड़ाए और मेरी ओर तिरछी निगाहों से देखने लगे। मुझे यह विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं अपनी इस धमकी को पूरा भी कर सकूँगा या नहीं और यदि करूँगा तो वह ठीक भी होगा या नहीं।

"मैं इस नौकरी को छोड़ रहा हूँ" मैंने ओसिप से कहा—"तुम जहन्नुम में जाओ! अगर मैं तुम लोगों के साथ ज्यादा दिन तक रहा तो मैं खुद चोरी करने लगूँगा।"

ओसिप कुछ देर तक सोचता रहा और विचारमग्न होकर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता रहा। फिर वह पालथी मार कर मेरी बगल में बैठ गया और धीरे से बोला—

"तुम जानते हो, बच्चे, तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो।"

"क्यों ?"

"तुम्हें यह काम छोड़ना पड़ेगा। तुम न मालूम कैसे ओवरसियर या फोरमैन हो ? इस तरह के काम में तो आदमी को सम्पत्ति के प्रति आदर दिखाना ही पड़ता है। उसे एक पहरा देने वाले कुत्ते की तरह सतर्क रहना पड़ता है जो अपने मालिक की चीजों की रखवाली अपने शरीर की चमड़ी की तरह करता है। तुम्हारा जैसा पिल्ला इस काम के लिए उपयुक्त नहीं। तुम सम्पत्ति का आदर करना नहीं जानते। अगर वासिल सरजी को यह मालूम पड़ जाय कि तुमने हम लोगों को किस तरह चोरी करने दी तो वह तुम्हारी गरदन पकड़कर फौरन निकाल बाहर करेगा। क्योंकि तुम उसके लिए उपयोगी नहीं हो। तुम्हारे ऊपर जिम्मेदारी है। एक नौकर को हमेशा अपने मालिक का मददगार बनना चाहिए। समझे, मेरा क्या मतलब है ?"

उसने एक सिगरेट बनाई और मुझे दी।

"पियो, कलम घिसने वाले तुम्हारे दिमाग को यह ठीक कर देगी। अगर तुम इतने फुर्तीले और सुन्दर लड़के न होते तो मेरी तुम्हारे लिए यह सलाह होती कि पादरी बन जाओ। परन्तु उसके लिए तुम उपयुक्त नहीं हो। तुम एक अक्खड़ व्यक्ति हो। तुम बड़े पादरी के सामने भी नहीं झुकोगे। अपने इस प्रकार के स्वभाव से तुम संसार में कभी भी सफलता नहीं पा सकोगे और पादरी तो काले कौवे के समान होता है जो इस बात की चिन्ता नहीं करता कि वह किस चीज पर चोंच मार रहा है। जब तक उसे बीज के दाने मिलते रहते हैं वह इस बात को नहीं सोचता कि वे कहाँ से आए हैं। मैं यह सब बातें पूर्ण सहानुभूति और आत्मीयता के कारण कह रहा हूँ क्योंकि मैं देखता हूँ कि तुम यहाँ गलत जगह पर आगए हो—कोयल का अन्डा गलत घौंसले में रख दिया गया है।"

उसने टोपी उतारी, जैसा कि वह हमेशा किया करता था,, विशेष रूप से उस समय जब कभी उसे कोई बात–विशेषकर कोई महत्वपूर्ण बात कहनी होती और खुले हुए आसमान की ओर देखा और पादरी की तरह बोला—

"भगवान जानता है कि हम सब चोर हैं और इसके लिए वह हमें कभी माफ नहीं करेगा .. .. ।"

"यह बिल्कुल सत्य है !" मोकी बुदरिन ने स्वर में स्वर मिलाया ।

उस समय से सफेद बाल, चमकीली आँखों और मलिन आत्मा वाले ओसिप के प्रति मेरे मन में एक आकर्षण उत्पन्न हो गया । हम लोगों में एक प्रकार की मित्रता हो गई हालाँकि मैंने यह अनुभव किया कि मेरे साथ अपने अच्छे सम्बन्धों के कारण उसे परेशानी होती थी । दूसरों के सामने वह मेरी ओर सूनी आँखों से देखा करता । उसकी अलसी के फूल जैसी नीली आँखें इधर उधर नाचती रहतीं और होठों पर एक कृत्रिम और कुरूप सी मरोड़ उत्पन्न हो उठती जब वह मुझ से कहता :

"अच्छा, अब आँखें खोलकर देखो और अपनी रोजी कमाओ । क्या तुम नहीं देखते कि वह सिपाही बराबर कीलें उड़ाता जा रहा है, जितनी कि उसकी खुद की भी कीमत नहीं हो सकती ।

लेकिन जब हम लोग अकेले होते वह बुद्धिमानी की बातें करता । जब वह मेरी ओर देखता तो उसकी चमकीली नीली आँखों में एक चालाकी की चमक दौड़ जाती । मैं उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनता क्योंकि उसकी बातें ठीक और ईमानदारी की होतीं यद्यपि कभी कभी वह बड़ी अजीब बातें करने लगता ।

"आदमी को अच्छा होना ही चाहिए", एक बार मैंने कहा ।

"हाँ सचमुच !" उसने अपनी सहमति प्रकट की । फिर उसने प्रसन्नता-पूर्वक नीची आँखें किए कोमलतापूर्वक कहना शुरू किया :

"परन्तु इस 'अच्छा' शब्द से तुम्हारा क्या अर्थ है ? जैसा कि मैं देखता हूं—आदमी तुम्हारी इस अच्छाई और ईमानदारी की तब तक कोई चिन्ता नहीं करते जब तक कि उससे उन्हें फायदा न हो । नहीं, अच्छा बनने से उन्हें

फायदा होता है, उनका मनोरंजन होता है, उन्हें आनन्द प्राप्त होता है और किसी दिन उसका अच्छा परिणाम मिलता है। दर असल, मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि शीशे में अपनी शकल देखना अच्छा लगता है और तुम यह जानते हो कि तुम अच्छे आदमी हो। परन्तु जहाँ तक मैंने अनुभव किया है वहाँ तक तो यही पाया है कि जब तक दूसरे आदमियों के लिए तुम अच्छे हो तब तक वे इस बात की चिन्ता नहीं करते कि तुम गुन्डे हो या सन्त।"

"यह दूसरों के प्रति तुम्हारी अच्छाई की मात्रा पर निर्भर करता है।"

"मेरी आदत है कि मैं दूसरे मनुष्यों का सूक्ष्म निरीक्षण करता हूँ। क्योंकि मैं यह अनुभव करता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जिसके सम्पर्क में मैं आता हूँ इस बात में मेरी सहायता कर सके कि यह रहस्यमय, उलझन से परिपूर्ण, दुख से भरा हुआ कार्य जिसे जीवन कहते हैं इसकी असलियत क्या है? उसके साथ ही एक दूसरा प्रश्न भी मुझे सदैव व्यथित करता रहता है।

मानव की आत्मा क्या है?

मुझे ऐसा लगता है कि कुछ आत्माएँ तो पीतल के चमकीले गोले की तरह होंगी जो सीने में जड़ दी गई होंगी, जिस पर पड़ने वाला प्रतिबिम्ब विकृत, कुरुप और घृणास्पद रूप में दिखाई पड़ता होगा। और ऐसी आत्माएँ भी हैं जो शीशे की तरह बिल्कुल चपटी हैं। सम्भव है ऐसी आत्मायें न भी हों। परन्तु अधिकाँश मानव आत्माएँ मेरी कल्पना में आकार हीन हैं जैसे भूरे रंग के बादल जिनका कोई निश्चित आकार नहीं होता और न कोई रंग। उनका रंग और आकार इतना अस्थिर होता है कि वे जिसके सम्पर्क में आती हैं उसी की छाया उनमें दिखाई पड़ने लगती है और वे वैसा ही रंग और आकार धारण कर लेती हैं।"

मैं नहीं जानता था और न कल्पना ही कर सकता था कि ओसिप की आत्मा किस प्रकार की थी। यह एक ऐसी चीज थी जिसकी थाह पाने में मैं असमर्थ था।

मैं यह बातें सोचता हुआ नदी की ओर देख रहा था जहाँ शहर पहाड़की तलहटी से चिपका हुआ पड़ा था और जहाँ घन्टाघरों के घन्टों से उत्पन्न शब्द

हवा में लहरा रहे थे, जो पोलिश चर्च में बजने वाले सफेद पाइप की आवाज की तरह आकाश में ऊँचे उठते जा रहे थे। गिरजाघरों की चोटियों पर लगे हुए क्रॉस के निशान धुँधले तारों की तरह चमक रहे थे मानो उन्हें मटमैले आकाश ने पकड़ लिया हो। वे चमकते और काँपते हुए ऐसे लगते थे मानो हवा से छिन्न भिन्न किए हुए बादलों के पर्दे को फाड़ कर वे ऊपर निर्मल आकाश की ओर बढ़ने का प्रयत्न कर रहे हों। परन्तु बादल तेजी से दौड़ रहे थे और अपनी काली छायाओं से नीचे के सुन्दर रंगों को पोंछते जा रहे थे। और प्रत्येक बार जब सूर्य की किरणें उस असीम नीली घाटी से निकल कर नगर को चमकीले रङ्गों से सुशोभित करतीं तो वे उन्हें नष्ट करने को पुनः दौड़ पड़ते। वे नम छायाएं गहरी हो उठतीं और क्षण भर की प्रसन्नता के उपरान्त चारों ओर अवसाद और नीरसता का वातावरण छा जाता।

शहर की इमारतें बर्फ के ठोस ढेर सी लग रही थीं। उनके नीचे की जमीन अन्धेरी और निर्जन थी। बागों के पेड़ मिट्टी के ढेले से दिखाई दे रहे थे। भूरे मकानों की खिड़कियों के धुंधले शीशों की चमक शरद ऋतु की याद दिला रही थी और मुर्झाए हुए उत्तरी वसन्त की तीखी उदासी उस सम्पूर्ण दृश्य पर धीरे धीरे छाती जा रही थी।

मिशक ड्याटलोव एक लम्बे सिर, चौड़े कन्धों और खरगोश जैसे पतले होठों वाले भद्दे लड़के ने एक गाना गाया।

"वह प्रभात होने पर उसके पास आई परन्तु वह रात को ही मर चुका था।"

"चुप रह दोगली औलाद!" वह पुराना सिपाही चिल्ला पड़ा— "क्या तुम भूल गए कि आज कौन सा दिन है?"

चोयेव भी नाराज था। उसने ड्याटलोव की तरफ घूँसा दिखाते हुए फुफकार सी छोड़ी—"सूअर।"

"हम सब मेहनती और कष्टपूर्ण जीवन बिताने वाले प्राणी हैं," ओसिप ने त्रुदरिन से कहा जो बर्फ में पड़ी हुई एक दरार के पास बैठा हुआ उसकी ढाल को अपनी संकुचित आँखों से नाप रहा था। "इसको एक इंच

लोहे की पत्तियाँ काटली थीं परन्तु अब यह मालूम पड़ा कि वे कम चौड़ी हैं।

"तुम अन्धे घमगादड़! बेवकूफ!" ओसिप ने मोरवेडियन को डाटा और हताश होकर दोनों हाथों में अपना सिर थाम लिया—"तुम इसे काम करना कहते हो?"

अचानक प्रसन्नता से भरी हुई एक आवाज़ किनारे से आती हुई सुनाई दी।

"वह खिसक रही है! हुर्रा!"

जैसे मानो इस आवाज का साथ देने के लिए नदी में नीचे एक हलकी सी खमखसाहट की सी आवाज आई। वर्फ में निशान बनाने के लिए गाड़ी हुई ऐंठनदार टहनियाँ काँपीं और गिरने लगीं। गिरते समय वे ऐसी लगीं जैसे सहारा लेने के लिए हवा को पकड़ने की कोशिश कर रही हों। अपनी नावों के काँटों को हिलाते हुए नाव वाले मल्लाह और आवारा लोग रस्सी की सीढ़ियों पर चढ़ गए जिससे वे सही सलामत ऊपर नाव पर पहुंच जाँय।

उस जनशून्य नदी का एकाएक आदमियों से भर जाना बड़ा अद्भुत लगा। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे वर्फ के नीचे से निकल आए हों और अब इस प्रकार इधर से उधर भाग रहे हो जैसे कौए बन्दूक की आवाज सुनकर भागते हैं। वे लोग भाग दौड़ करते हुए तख्ते और लट्ठे पटकते और फिर उठा लेते।

"अपने औजार एक जगह समेट लो!" ओसिप गरजा—हम लोग किनारे पर जा रहे हैं!"

"वहाँ ईस्टर का रविवार मनाया जा रहा है।" माशोक कटुता से बोला।

हम लोगों को ऐसा लगा जैसे नदी तो स्थिर और शान्त हो और शहर काँपता और हिलता हुआ अपने नीचे पहाड़ों को लिए, नदी में धीरे-धीरे ऊपर को चढ़ा चला आ रहा हो। हम लोगों से लगभग सत्तर फीट आगे वाला रेतीली जमीन का टुकड़ा काँपा और बह गया।

"आगे बढ़ो !" मुझे धक्का देता हुआ ओसिप चिल्लाया—"मुँह फाड़े क्या देख रहे हो ?"

मुझे भय की भयानक सम्भावना ने जकड़ लिया और मेरे पैर, अपने नीचे की बर्फ को खिसकता हुआ अनुभव कर शरीर को बालू के उस भाग की ओर अपने आप ले चले जहाँ लकड़ी के डन्डे टूट गए थे और जाड़ों की तेज हवा से झुक कर नंगे से खड़े थे। वोयेव, सिपाही, ज़ुदरिन और दोनों ड्याटलोव भाई मुझसे पहले ही वहाँ पहुँच गए थे। मोरडीवियन गुस्से से गालियाँ देता हुआ मेरे साथ दौड़ रहा था। ओसिप बाकी लोगों के साथ पीछे आया।

"चीखना बन्द करो, नरोदेस्स···" मैंने ओसिप को चिल्लाते सुना।

"लेकिन हम कथा कहने जा रहे हैं, चचा ओसिप·· ···"

"तुम देखोगे कि सब ठीक है।"

"हम लोगों को यहाँ दो दिन तक रुकना पड़ेगा।"

"तो तुम यहीं बैठो·· "

"छुट्टी का क्या होगा ?"

"वे इस साल तुम्हारे बिना ही उसे मना लेंगे।"

"सब कायर हैं," बालू पर बैठते और अपना पाइप पीते हुए सिपाही झल्लाया। "यह केवल कूदने के खेल की तरह आसान है। एक छलाँग में हम लोग किनारे पर पहुंच जाँयगे और तुम लोग डर कर पागलों की तरह भागने को तैयार हो।"

"भागने वालों में तुम्हीं सबसे पहले थे," मोकी बोला।

"तुम्हें' डर किस बात का है ?" सिपाही कहता गया, "क्राइस्ट जो सब का रक्षक और उद्धार करने वाला था फिर भी उसे मरना पड़ा।"

"परन्तु वह तो फिर जीवित हो गया था, क्यों ठीक बात है न ?" दूसरों की बातों से दुःखी होकर मोरडीवियन बोला।

"चुप रह, पिल्ला कहीं का" वोयेव उस पर चिल्ला पड़ा—"यह सत्य है कि वह पुनर्जीवित हो गया था। आज शुक्रवार है, रविवार नहीं !"

बादलों की नीली घाटी में से मार्च का सूरज चमक उठा और बर्फ

"हम लोग डूब जायेंगे !" उसने अपनी राय जाहिर की।

"तो तुम यहीं ठहरो।"

अपने चारों ओर आदमियों पर निगाह डालता हुआ ओसिप चीखा :

"आओ, चलें !"

अब हरेक व्यक्ति खुश हो रहा था और एक झुंड बना कर चलने की तैयारी करने लगा।

वोयेव, जो अपनी टोकरी में औजारों को लगा रहा था, शिकायत के स्वर में बोला

"एक बार जब तुम लोगों से चलने के लिए कह दिया गया है तो तुम लोग जा सकते हो परन्तु इसकी सारी जिम्मेदारी आज्ञा देने वाले पर होगी "

ओसिप अधिक ताकतवर और जवान लग रहा था। उसके गुलाबी चेहरे पर से चालाकी और नम्रता के भाव गायब हो गए थे। उसकी आँखें अधिक गहरी, गम्भीर और कार्यशील हो उठी थीं। उसका आलसीपन भी दूर हो गया था और अब वह दृढ़ता और पूर्ण विश्वास के साथ कदम उठाता हुआ चल रहा था।

"तुम लोगों में से हरेक एक एक तख्ता ले लो और उसे अपने सामने तिरछा करके पकड़ो। अगर बर्फ टूटे, भगवान ऐसा न करे, तो तख्ते के दोनों किनारे जमी हुई बर्फ पर टकरायेंगे और तुम उसके नीचे डूबने से बच जाओगे! वे लम्बी दरारों को पार करने में भी मदद करेंगे। किसी के पास रस्सी है? अच्छा, मुझे छोर पकड़ा दो' सावधान? मैं सब से आगे चलूँगा और मेरे पीछे तुम लोगो में सबसे भारी कौन है? मेरा ख्याल है तुम हो, सिपाही! उसके पीछे मोकी, मोरडोवियन, वोयेव, भिक्षुक, साशोक, मेक्सीमिच, जो सब से हल्का है, सब से बाद में रहेगा । अपनी टोपियाँ उतार लो और कुमारी मेरी से प्रार्थना करो। देखो सूरज हमें विदा देने के लिए बादलों से बाहर निकल रहा है "

एक साथ भूरे और ठलके बालों वाले सिर नंगे हो गए और एक पतले

सफेद बादल में से सूरज ने उन पर एक निगाह फेंकी केवल इसलिए कि पुनः अपना मुंह छिपाले। मानो इस असम्भव आशा को और अधिक तीव्र करने के लिए अनिच्छुक हो।

"अब हमें चलना चाहिये!" ओसिप नीरस और अजीब स्वर में बोला "भगवान हमारे साथ है। अपनी निगाह नीचे पैरों पर रखो। धक्का मुक्की मत करना। कम से कम दो कदम एक दूसरे से दूर रहो। अधिक फासला रख सको तो और अच्छा है। आओ लड़को, चलो!"

टोपी को कोट में ठूंस कर और रस्सी का छोर पकड़ कर ओसिप ने बर्फ पर पैर रखा और सावधानीपूर्वक आगे को खिसकाया। जैसे ही वह आगे बढ़ा नदी के पहले किनारे से एक भयंकर कोलाहल उठा।

"तुम लोग कहाँ जा रहे हो, भेड़ों की तरह!"

"बढ़े चलो। पीछे मत देखो!" नायक ने कठोरता से आज्ञा दी।

"पीछे लौटो, शैतानो!"

"चले आओ लड़को और भगवान का ध्यान करो। वह हमें छुट्टी के लिए निमन्त्रण नहीं भेजेगा।" एक पुलिस के सिपाही की सीटी सुनाई दी।

"अब हम मुसीबत में फँस गए।" सिपाही जोर से बड़बड़ाया "वे उस किनारे वाली सड़क को सूचना दे देंगे—और उस पार जीवित पहुँच जाने पर भी हम लोगों को हवालात में बन्द होना पड़ेगा···मैं इसकी कोई जिम्मेदारी लेने के लिये तैयार नहीं हूँ।"

मनुष्यों की उस कतार ने ओसिप की गूंजती हुई आवाज का अनुकरण किया मानो वह अत्यन्त आकर्षक हो जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

"अपने पैरों के सामने बर्फ का ध्यान रखो!"

हम लोग नदी की धार को तिरछे चलते हुए पार कर रहे थे। मैं सबसे पीछे था इसलिये ओसिप को स्पष्ट देख रहा था जो दूर से देखने में छोटा और तेज मालूम पड़ता था। सफेद सिर वाला ओसिप बड़ी सावधानी से बरफ पर खिसक रहा था। खिसकते समय वह अपने पैरों को बहुत कम ऊपर उठाता था। उसके पीछे, मानो किसी अदृश्य धागे से बँधी हुई छः काली आकृतियाँ अपने पैरों पर लड़खड़ाती हुई चली जा रही थीं। रह

रह कर नकी छायाएँ उनके पीछे दिखाई देतीं, फिर गायब हो जातीं और फिर उस बर्फ पर फैल जातीं। उनके सिर नीचे को झुके हुए थे मानो वे किसी पहाड़ पर से उतर रहे हों और उन्हें अपने लुढ़कने का भय हो।

हमारे पीछे आदमियों की एक भीड़ इकट्ठी हो गई थी क्योंकि उनकी चीख चिल्लाहट ने एक भयंकर कोलाहल का रूप धारण कर लिया था। उस समय यह बताना कठिन था कि वे क्या कर रहे थे?

हमारे उस सतर्क जुलूस ने अपना कठिन कार्य यन्त्रवत जारी रखा। तेज चलने का अभ्यस्त होने के कारण मैंने अब अपने को नींद की उस खुमारी में डूबता हुआ अनुभव किया जो उस समय आती है जब मस्तिष्क सुन्न हो जाता है और आत्मा निष्प्राण सी प्रतीत होने लगती है। उस समय मनुष्य अपने को बिलकुल भूल सा जाता है और उसकी स्वप्न देखने तथा सुनने की शक्ति तीव्र हो उठती है। हमारे पैरों के नीचे नीलिमा लिये हुए भूरी, जस्ते के से रंग की बरफ थी जिसे नदी के नीचे बहने वाली धार ने पतला बना दिया था। उसकी चारों ओर फैली हुई चमक आँखों को अन्धा बना रही थी। जगह जगह पर फट कर उसने छोटी छोटी बरफ की पहाड़ियों का रूप धारण कर लिया था। नदी की धार से कट कट कर बरफ के छेदों से भरे हुए पूर्ण टुकड़े झावा पत्थर और आड़े तिरछे टूटे हुए काँच की तरह दिखाई दे रहे थे। नीली दरारें चुपचाप मुँह फाड़े जम्हाई ले रही थीं—असावधानी से बढ़ाए हुए कदम को अपने में समा लेने के लिए। चौड़े तलों वाले बूट घिसटते हुए चल रहे थे। बांयेव और सिपाही की बराबर और एकसी आवाजों ने मुझे परेशान कर रखा था।

"मैं इसकी जवाबदेही करने को तैयार नहीं हूँ ··"

"और न मैं "

"सिर्फ इसलिये कि एक आदमी को तुम्हें आज्ञा देने का अधिकार है परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि कोई दूसरा उससे बहुत ज्यादा फुर्तीला नहीं हो सकता"

"तुम सोचते हो कि फुर्तीला होना ही सब कुछ है—यहाँ तो ज्यादा बकवास करने वाले का ही अधिक सम्मान होता है।"

ओसिप ने अपनी भेड़ की खाल की बनी हुई जाकट का नीचे का हिस्सा कमर की पेटी से कस लिया था। फौजी खाकी कपड़े की पतलून में ढकी हुई उसकी दोनों टांगें बसन्त की सी लचक और आराम से आगे बढ़ी जा रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो उसके सामने एक जानवर, जो केवल उसे ही दिखाई दे रहा है, नाच रहा हो और उसे सीधा चलने से रोक रहा हो और ओसिप उसे झांसा देकर, इधर उधर कन्नी काटकर, आगे निकल जाना चाहता हो। ऐसा करने में वह कभी तेज चलने लगता और कभी उचक कर, कभी उछल कर, जैसे नाच रहा हो आगे बढ़ता चला जा रहा था। उसकी आवाज स्पष्ट और प्रतिध्वनित हो रही थी। जब वह आवाज गिरजाघर के घन्टों की आवाज के साथ मिलकर गूँज उठती तो बड़ी आकर्षक और मधुर लगती।

हम लोगों ने वह चार सौ गज लम्बी बर्फ की चादर लगभग आधी पार कर ली थी कि अचानक आगे की ओर से एक मनहूस कोलाहल सुनाई दिया और इसी समय मेरे पैरों के नीचे से बर्फ खिसकी। उसके अचानक खिसकते ही मेरा सन्तुलन बिगड़ा और मैं घुटने के बल गिर पड़ा। मैंने नदी की ओर देखा और भय से मेरा गला घुटने लगा। ऐसा लगा कि कोई मेरा गला दबा रहा हो और मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। बर्फ की भूरी चादर में जैसे प्राणों का संचार हो रहा हो। वह टूट रही थी। उसके नोकीले टुकड़े ऊपर सतह पर निकल आये थे। और हवा में कड़कड़ाहट का ऐसा शोर गूंज उठा जैसे कोई भारी बूट पहने टूटे हुए काँच के ढेर पर चल रहा हो।

पूरे वेग से, बिल्कुल मेरे नजदीक स्वच्छ निर्मल पानी निकल आया। पासही कहीं टूटने वाली लकड़ियों की आवाज गूँजो जैसे कोई कराह रहा हो। मनुष्य एक दूसरे को धक्का देते हुए चीखने लगे और इस सब में ओसिप की आवाज लहराई।

"अलग अलग हो जाओ, वहाँ—एक दूसरे से दूर हट जाओ, तुम लोग एक जगह भीड़ क्यों लगा रहे हो। वह तो अब ठीक तरह से वह रही है। आगे बढ़ो!"

अचानक वह उछला जैसे वर्रों ने उस पर हमला कर दिया हो और रस्सी के छोर को हवा में ऐसे घुमाने लगा जैसे वह बन्दूक हो और उस बन्दूक की मदद से वह किसी न दीखने वाले दुश्मन को दूर हटाने की कोशिश कर रहा हो। मेरे पैरों के नीचे बरफ लम्बे लम्बे सुन्दर टुकड़ों में टूटने लगी। पानी मेरे पैरों में टकराने लगा और उछल कर मैं बेतहाशा श्रोसिप की तरफ दौड़ा।

"तुम कहाँ जा रहे हो!" रस्सी को घुमाते हुए वह चीखा "रुको, बेवकूफ, गधा।"

हमारे सामने वाला मनुष्य वह पुराना श्रोसिप नहीं था। उसका चेहरा बिल्कुल जवानों का सा चमक रहा था। उसकी सम्पूर्ण पुरानी परिचित रेखाएँ गायब हो चुकी थीं। उसकी नीली आँखें अब भूरी लग रही थीं और वह छः अँगुल अधिक ऊँचा लम्बा दिखाई दे रहा था। बिल्कुल नई कील की तरह, अपने पैरों को सीधा रोके हुए वह मुँह फाड़कर चिल्ला रहा था

"अगर तुम इधर उधर भागना और शोर मचाना बन्द नहीं करोगे तो मैं तुम्हारी खोपड़ी तोड़ दूँगा।"

और उसने मेरी तरफ रस्सी घुमाई।

"तुम कहाँ जा रहे हो?"

"हम लोग डूब जाँयगे।" मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

"हुश!" और फिर मेरा भयभीत चेहरा देखकर कोमल स्वर में बोला।

"कोई मूर्ख तो डूब सकता है, परन्तु तुम तो यहाँ से बाहर निकलने की कोशिश करो।"

फिर उसने चिल्लाकर दूसरों को उत्साहित करना प्रारम्भ कर दिया। उसका सीना आगे को तना हुआ था और सिर पीछे की ओर उठा हुआ था।

बर्फ के धीरे धीरे टूटने की कड़कड़ाहट सुनाई पड़ रही थी। हम लोग धीरे धीरे शहर की ओर बढ़ रहे थे। किनारे पर ऐसा लग रहा था मानो कोई सोया हुआ विशालकाय दैत्य जग कर अपनी आवाज से पृथ्वी

को कपा रहा हो। हमसे बहुत नीचे नदी का किनारा स्थिर दिखाई दे रहा था और हमारे सामने वाला तट धीरे धीरे ऊपर की तरफ बढ़ता आ रहा था। कुछ ही क्षणों में यह फूट कर अलग हो जाने वाला था।

"ऐसा लग रहा था कि उस मनहूस धीरे धीरे रेंगने वाली चाल से यदि हम लोग चलते रहे तो जमीन से हमारा आखिरी सम्बन्ध भी टूट जायगा। चिर परिचित संसार विस्मृति के गर्भ में विलीन होता जा रहा था। मेरा हृदय दुख के बोझ से दब रहा था और घुटनों में दर्द होने लगा था। आकाश में लाल बादल धीरे धीरे तैर रहे थे और जब बर्फ के टुकड़ों पर उनकी छाया पड़ती तो वे भी लाल हो उठते और ऐसा लगता जैसे मुझ तक पहुंचने प्रयत्न करने में उनका मुख लाल हो उठा हो। सम्पूर्ण पृथ्वी जैसे वसन्त ऋतु को जन्म देते समय प्रसव की पीडा से कराह रही हो। इस वेदना से उसकी उठी हुई नम छाती गहरी साँसों से फूल रही हो और जोड़ों में दर्द हो रहा हो। और पृथ्वी के उस विशाल शरीर मे वह नदी एक नस के समान हो जिसमें गाढ़ा और गर्म खून दौड़ रहा हो।

जब मनुष्य को इस बात का अनुभव होता है कि एक समय की शान्त और अदम्य गति के बीच में उसकी स्थिति कितनी नगण्य और असहाय है तब वह वेदना से भर उठता है। दुख के इस बोझिल, सनसनी से परिपूर्ण वातावरण में हृदय में एक उत्कट अभिलाषा स्वप्न के समान आई कि अगर मैं किसी भी प्रकार किनारे पर पहुंच कर पहाड़ी से हाथ लगा कर कह सकूँ।

'रुको जब तक कि मैं तुम्हारे पास पहुंच जाऊँ।"

घन्टों की गूंजती हुई आवाज अब उदासी की गहरी साँस में डूबती जा रही थी परन्तु मुझे याद आया कि कल रात फिर वे खुशी से गूंज के क्राइस्ट के पुनर्जीवित होने की घोषणा करेंगे।

काश कि मैं केवल उन्हें सुनने के लिए जीवित रहता।

सात काली मूर्तियाँ मेरी आँखों के आगे नाच रहीं थीं जब वे एक पैर से दूसरे पैर पर उछलतीं और अपने हाथों मे पकड़े हुए तख्तों से हवा को काटने का सा प्रयत्न करतीं। इन सब के आगे वह बूढ़ा मनुष्य हँसता

और बल खाता हुआ निकोलस—अद्भुत चमत्कार करने वाला—की छोटी सी प्रतिमूर्ति के समान चल रहा था। उसकी तीखी आवाज बराबर गूँज रही थी।

'अपनी आँखें खुली रखो !"

वर्फ टूटती और नदी की सतह पैरों के नीचे 'कुबड़े पीठ वाले घोड़े की कहानी' की हेल मछली की तरह कापती और ऊपर को उठती सी दिखाई पड़ रही थी। धारा का तरल शरीर बरफ के नीचे से निरन्तर तेजी से निकल रहा था। ठंडा और पारे की तरह निर्मल जल लालची कुत्ते की तरह मनुष्यों के पैरों को चाट रहा था।

हम लोग साढ़े पाँच गज लम्बे वर्फ के टुकड़े पर चल रहे थे जो नीले जल की गहरी घाटी के उपर लटक रहा था। जल का शान्त और लुभाने वाला शब्द मेरे हृदय को मन्त्रमुग्ध सा बना रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरा शरीर धीरे धीरे उस बर्फ के ढेर में नीचे घुसता जा रहा हो। मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा रहा था और दिल की धड़कन बन्द सी होती जा रही थी। मुझे उन डूबे हुए मरे मनुष्यो के शरीरों का ध्यान आ गया जिन्हें मैंने देखा था--गीली मिट्टी से सना हुआ सिर, सूजा हुआ चेहरा, चिकनी बाहर को निकलती हुई आँखें, उँगलियाँ जिन्हें सूजे हुए हाथों में जड़ दिया गया हो और फूली हुई गीली खाल जो हथेलियों पर चिथड़े की तरह लटक रही थीं।

सबसे पहले मोकी बुदरिन ने गोता खाया। वह मोरडोवियन के आगे चुपचाप चल रहा था। वह दूसरों से अधिक शान्त था परन्तु फिर भी वह अचानक ऐसे गायब हो गया जैसे किसी ने उसकी टाँग पकड़ कर घसीट लिया हो। केवल उसका सिर और तख्ते को पकड़े हुए हाथ वर्फ से ऊपर थे।

"हाथ का सहारा दो।" ओसिप चीखा—"सब नहीं केवल एक या दो आदमी काफी होंगे।"

"कोई बात नहीं लड़को," मोकी ने मुँह से पानी फेंकते हुए मुझसे और मोरडोवियन से कहा —

'मैं खुद निकल आऊँगा।"

वह वर्फ के ऊपर चढ़ आया और अपने कपड़े झाडे।

"सत्यानाश हो इसका, ऐसा लगा जैसे तुम वास्तव में डूब गये हो।"

सर्दी से उसके दाँत वज रहे थे। उसने अपनी लम्बी जीभ से अपनी गीली मूछें चाटीं। ऐसा करते समय वह एक वड़े कुत्ते की तरह लगा जो प्रसन्न होकर जीभ मुँह पर फेर रहा हो।

मेरे सामने एक धुँधला सा चित्र घूम गया। मुझे याद आया कि कैसे एक महीने पहले उसके वाँये हाथ का अँगूठा जड से कट कर गिर पड़ा था। उसने वह नीले नाखून वाला टुकड़ा हाथ में उठा लिया था और वड़े आश्चर्य से उसे वहुत देर तक देखता रहा था और धीमे स्वर में क्षमा सी माँगते हुए वोला था।

"मुझे नहीं मालूम कि मैंने कितनी वार इस वेचारे पर चोटें मारी थीं। यह पहले से ही जोड पर से टूटा हुआ था। ठीक तरह से काम भी नहीं करता था। इसलिए मैं सोचता हूं कि इसे दफना दूं।" उसने वड़ी सावधानी पूर्वक चिथड़ों में उस कटे हुए अँगूठे को लपेट कर अपनी जेव में रख लिया था। तव इसके वाद उसने अपने घाव पर पट्टी वाँधी।

दूसरा गोता खाने वाला वोयेव था। ऐसा मालूम हुआ जैसे उसने जानवूझ कर वर्फ के नीचे डुवकी लगाई हो। वह एक दम जोर से चीखा।

"ओ ओ, वचाओ! मैं डूव रहा हूँ। मुझे वचाओ, भाइयो मुझे डूवने मत दो।"

वह भयभीत होकर वड़ी वुरी तरह हाथ पैर फेंक रहा था जिसके कारण हम लोग वड़ी मुश्किल से उसे निकाल पाए। इस खींचतान में हम लोगों ने मोरद्दीवियन को तो एक प्रकार से खो ही दिया था—वह पूरा का पूरा सिर सहित वर्फ के नीचे चला गया था।

"यह नरक जाने की एक छोटी सी सुन्दर यात्रा थी।" उसने झेंपती मुस्कराहट से कहा जव वह ऊपर चढ़ आया। अव वह अधिक दुवला पतला और अजीव सा लग रहा था।

एक मिनट वाद वोयेव फिर चीखता हुआ नीचे चला गया।

"चुप रहो, याश्का, बकरी की सी निर्बल आत्मा वाला।" ओसिप गुस्से से उसे धमकाते हुए चीखा, "तुम हर एक आदमी के हाथ पैर क्यों फुला देते हो ! मैं तुम्हें एक सबक दूँगा। लड़को, अपनी पेटियाँ ढीली कर लो और अपनी जेबों को बाहर निकाल लो। इस तरह आसानी रहेगी।"

हर बार दस बारह कदम चलने के बाद बरफ चटकती और हमारे पैरों को निगलने के लिए मुँह फाड़ देती। नदी हमें इस तरह निगल जाने को उत्सुक होरही थी जैसे साँप मेढ़क को निगल जाता है।

भारी बूट और कपड़े हमारी चाल का कम कर रहे थे और हमें नीचे खींचते थे। हम सब इस तरह तर हो रहे थे मानो हमें पानी ने चाटा हो। चुपचाप, गम्भीर बने हुए धीरे धीरे भयभीत से आगे बढ़े जा रहे थे।

ओसिप जो दूसरों की तरह ही पूरा भीग गया था, अनुमान से ही खतरनाक स्थलों को भाप लेता और खरगोश की तरह बरफ के तैरते हुए टुकड़ों पर उछलता हुआ चल रहा था। हर छलाँग के बाद हम लोग क्षण भर के लिए रुकते, चारों ओर देखते और जोर से सिंहनाद करते।

"देखो इस, तरह पार किया जाता है!"

वह नदी के साथ खेल रहा था। नदी चुपचाप उसका पीछा कर रही थी परन्तु उसके पैर इतने फुर्तीले थे कि वह आसानी से दरारों और गढ़ों को बचा जाता। उसे देख कर ऐसा लगता मानो वह बर्फ की गति का सचालन कर रहा हो और उसके बड़े और जमे हुए टुकड़ों को हमारे चलने के लिए हाँक कर इकट्ठा करने की कोशिश में लगा हो।

"अपना मुँह ऊपर रखो, ईश्वर के बच्चो। हो. हो!"

"चचा ओसिप का कल्याण हो? मोरदीवियन ने प्रशसात्मक स्वर में कहा—"देखो यह आदमी है ! साहसी, जैसा होना चाहिए।"

अचानक, जैसे ईश्वर हमारे ऊपर दयालु हो उठा हो, एक विशाल बर्फ के टुकडे का दूसरा छोर किनारे से टकराया, ऊपर चढ़ा, काँपा और स्थिर हो गया।

"दौड़ो!" ओसिप पागल की तरह चीखा—"अपनी पूरी ताकत से उस तक पहुँचने की कोशिश करो।"

वह उस टुकडे की तरफ टहला, फिसला और गिर पड़ा और उसके किनारे पर बैठ कर, जहाँ पानी उसे छू रहा था, उसने दूसरों को निकल जाने दिया। हम में से पाँच एक दूसरे को धक्का देते हुए किनारे की तरफ लपके जिससे कि पहले पहुँच जाँय। मैं और मोरदीवियन श्रोसिप की सहायता के लिए रुक गये।

"दौडो, सूअर के बेटो, सुन रहे हो?"

उसका चेहरा नीला पड़ गया था और काँप रहा था उसकी आँखों की चमक नष्ट हो गई थी और जबडा नीचे की ओर लटक गया था।

"चलो चाचा......।"

उसका सिर नीचे झुक गया।

"शायद मेरा पैर टूट गया है...उठा नहीं जाता......"

हमने उसे उठाया और ले चले। वह हमारी गर्दनों से चिपका हुआ दाँत कटकटाता हुआ बड़बड़ा रहा था।

"तुम अपने को भी डुबा दोगे—मूर्खो . हमें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने हमें यहाँ तक पहुँचा दिया......देखो, यह तीन का बोझ नही सँम्भाल सकेगा, यहाँ धीरे से पैर रखो! उन स्थानों पर पैर रखो! उन स्थानों पर पैर रखो जहाँ ताजी पडी हुई बरफ नहीं है उस जगह यह ज्यादा ठोस है..."बहतर हो कि तुम मुझे छोड़ दो, यद्यपि?"

श्रोसिप ने एक आँख सिकोड कर मेरे चेहरे की ओर देखा।

"तुम्हारा वह रजिस्टर जिसमें हमारे सब पापों का खाता दर्ज है, भीग गया होगा या खो गया?" उसने कहा जैसे ही हम बर्फ के उस टुकडे के अन्तिम छोर पर से उतरे, जो तट पर लग गया था और लगते समय जिसने एक नाव को चूर चूर कर दिया था, तो उसका दूसरा सिरा टूटा और धार में बहता हुआ चला गया।

"अच्छा, अच्छा" मोरदीवियन ने प्रसन्न होकर कहा, "वह अपना काम जानता था।"

भीगे हुए और भयंकर शीत से काँपते परन्तु उत्साह से परिपूर्ण अब हम लोग किनारे पर पहुँच गए थे जहाँ शहर के आदमियों की भीड़

ने हमें घेर लिया था। वोयेव और सिपाही उनसे बहस कर रहे थे।

" बहुत अच्छा लड़को, ' ओसिप खुशी से चिल्ला उठा जैसे ही हमने उसे एक लकड़ी के ढेर पर उतारा–' वह रजिस्टर तो बिल्कुल भीग गया है। वह रजिस्टर मेरे कोट की जेब में रखा हुआ, ईंट जैसा भारी लग रहा था। जब कोई नहीं देख रहा था तब मैंने उसे निकाला और दूर नदी की धार में फेंक दिया जहाँ वह काले पानी में मेंढक की तरह डूबने तैरने लगा। ह्याटलोव बन्धु पहाड़ी की तरफ बने हुये सैलून में वोदका पीने के लिए भागे जा रहे थे। और भागते समय एक दूसरे को घूँसों से मारते जाते और चिल्लाते। "र—र—रह"।

एक लम्बा बुड्ढा आदमी' जिसकी फरिश्ते की सी दाढ़ी और चोर की सी आँखें थीं, मेरे कानों पर उत्साहपूर्वक कह रहा था·

"शान्तिप्रिय जनता को इस प्रकार परेशान करने के लिये तुम्हें कोड़े लगाने चाहिए—" वह कह रहा था।

"हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? " वोयेव चीखा जो अपना बूट चढ़ाने की कोशिश कर रहा था।

"ईसाई लोग डूब रहे थे। उन्हें बचाने के लिए तुमने क्या किया ?" सिपाही ने भारी आवाज में शिकायत की।

" पूरा भीग गया-ओ मेरी मा," वह कराहा—"ये कपड़े तो बर्बाद हो गए और मैंने इन्हें साल भर से पहना तक न था।"

वह पस्त हो गया था। उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं और वह जमीन पर लेटा हुआ बहुत छोटा होता चला जा रहा था।

अचानक वह उठकर बैठ गया, कराहा और गुस्से से चीखता हुआ बोला—

"तो अब तुम लोगों को स्नानघर और गिरजे में जाना है, मूर्खो ! शैतान के बच्चो ! तुम सीधे जहन्नुम में जा सकते हो ! जैसे कि भगवान तुम्हारे बिना आज अपना त्योहार ही न मना सकेगा लगभग मर ही चुके हैं . और सब कपड़े मिट्टी में सन गए हैं उम्मीद है तुम टर्रा रहे हो ।"

हरेक अपने जूतों और कपड़ों का पानी निकाल कर निचोड़ रहा था, थकान से कराहता जाता और कभी कभी उस भीड़ से बहस कर लेता परन्तु ओसिप और भी तेजी से कहता गया .

"सब कामों से ज्यादा जरूरी काम उन्हें अपनी चमड़ी धोने का है। स्नान घर नहाने जाना चाहते हैं। पुलिस का थाना ही उनके लिये उपयुक्त स्थान है। वहीं उनकी पीठ साफ की जायगी।"

" उन्होंने पुलिस को बुलाया है " एक आदमी ने सान्त्वना के स्वर में कहा।

"तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो ?" वांयेव ओसिप की ओर मुड़ा —"अब कानून क्यों बघार रहे हो ?"

" मैं ? "

" हाँ, तुम ! "

" एक मिनट ठहरो ! तुम्हारा मतलब क्या है ? "

" यह पार आने का काम किसने शुरू किया था ?"

" अच्छा, किसने ?"

" तुमने ? "

" मैंने ? "

ओसिप चौंक उठा मानो उसके शरीर में ऐंठन हो रही हो।

" मैं–ने–ए ? " उसने टूटती आवाज में दुहराया।

" यह बिल्कुल सत्य है, " बुदिरन ने स्पष्ट और शान्त आवाज मे कहा।

" ईमानदार बनो, यह तुम थे, चचा ओसिप," मोरदोवियन ने कहा परन्तु धीरे से मांफी सी मांगते हुए आगे बोला—'तुम शायद भूल गए होगे ·······?'

"दरअसल, यह तुमने ही शुरू किया था " सिपाही ने अचानक जोर देते हुए कहा।

उठीं। कड़कने और चपचपाने की आवाजें ऐसी लग रही थीं मानो कोई विशाल जन्तु अपना खाना खा रहा हो और मास के टुकड़ों को अपनी राक्षस की सी लम्बी जीभ से चाट रहा हो।

शहर की ओर से घन्टों का मधुर और गम्भीर सङ्गीत, जो अब दूरी के कारण हल्का पड़ गया था, हवा में तैरता आ रहा था।

आपस में खेलते हुए दो पिल्लों की तरह ड्याटलोव-बन्धु हाथ में बोतल लिए हुए पहाड़ी के नीचे भागते चले आ रहे थे और हमारी दाहिनी ओर, नदी के सामने से खाकी कोट पहने एक पुलिस का अफसर और काली पोशाक पहने दो पुलिस वाले आए।

"सर्व शक्तिमान ईश्वर!" धीरे से अपने घुटने को मलते हुए ओसिप कराहा। जैसे ही पुलिस नजदीक आई, भीड़ के आदमियों ने उनके लिए रास्ता बनाया और वहाँ निस्तब्धता छा गई जैसे कुछ होने वाला हो। पुलिस का अफसर एक दुबला पतला छोटा आदमी जिसका चेहरा छोटा सा था और लाल मूँछें मोम लगाकर ऐंठी हुई थीं—हमारे पास आया।

"अच्छा तो तुम वे शैतान हो।" उसने कठोरतापूर्वक खरखराती आवाज में कहा। ओसिप ने जमीन पर लेटकर जल्दी से कहना प्रारम्भ किया

"यह मैं था, हुजूर, जिसने यह काम शुरू किया था सरकार मुझे क्षमा करें। हुजूर यह केवल छुट्टियों के कारण करना पड़ा"

"ओ शैतान" पुलिस अफसर चीखा परन्तु चीख नम्र निवेदनों में दब गई।

"हम लोग यहाँ शहर में रहते हैं। दूसरे किनारे पर हमारा कुछ भी नहीं है। वहाँ इतना पैसा भी नहीं था कि रोटी खरीद लेते और सरकार, परसों ईस्टर का त्योहार है—उसके लिए नहा धोकर भले ईसाइयों की भाँति चर्च भी जाना था। इसलिए मैंने कहा—हमें चलना चाहिए और त्यौहार मनाने की कोशिश करनी चाहिए। हम लोग कुछ बुरा काम नहीं कर रहे थे। मुझे अपने इस मूर्खतापूर्ण विचार के लिए दण्ड मिल चुका है—टाग टूट गई, देखिए।"

"यह सब बहुत अच्छा और ठीक है !" पुलिस अफसर कठोरता पूर्वक चिल्लाया—"परन्तु अगर तुम डूब जाते तो क्या होता ?"

ओसिप ने एक गहरी सांस ली जैसे थक गया हो।

"तो क्या हो जाता, सरकार ? माफ करें, शायद कुछ नहीं होता"

पुलिस वाले ने गालियां दीं और वहाँ खड़ा प्रत्येक व्यक्ति चुपचाप कान लगाकर उन्हें सुनता रहा मानो वह आदमी गन्दी, अश्लील और अपमानजनक गालियों के बजाय सुनने योग्य और सुनकर याद कर लेने योग्य बुद्धिमानी के शब्दों का उच्चारण कर रहा था।

हमारे नाम लिखकर वह चला गया। हम लोगों ने तीखी वोदका शराब पी ली थी और उससे गर्म और उत्साहित होकर घर:-जाने को तैयार हो रहे थे कि ओसिप ने चटकारी भरते हुए उस दूर जाते हुए पुलिस वाले की ओर देखा और धीरे से कूद कर पैरों पर खड़ा हो गया। खड़े होकर उसने उत्सुकतापूर्वक कपनी ओर देखा :

"भगवान को धन्यवाद है कि इसकी इस प्रकार समाप्ति हुई"

"क्यों ऐसा दिखाई पड़ता है कि तुम्हारी टांग ठीक हो गई !"

वांयेव ने आश्चर्य और निराश होकर अपने नाक के स्वर में कहा— "क्या यह टूटी नहीं थी ?"

"तुम मना कर रहे थे कि टूट जाती, उँह ?"

"ओह, तुम तो पुराने मसखरे हो !"

"चलो लड़को !" ओसिप ने अपनी भीगी टोपी सिर पर पहनते हुए आज्ञा दी।

मैं दूसरों के पीछे उसके साथ साथ चल रहा था। चलते हुए उसने मुझसे बहुत धीमी और कोमल आवाज में कहा जैसे वह कोई ऐसे रहस्य की बात बता रहा हो जिसे केवल वही अकेला जानता है।

"इसका कोई महत्व नहीं कि तुम क्या करते हो या कैसे करते हो परन्तु तुम इस ससार में उस समय तक अच्छी तरह जीवन नहीं बिता सकते जब तक कि तुम चालाक और चतुर न बनो। वही तुम्हारे लिए असली जीवन होगा। किसी तरह इसे करो तुम पहाड़ की चोटी पर चढ़ना पसन्द

करोगे परन्तु हमेशा तुम्हें कोई न कोई लालच तुम्हें धीरे २ चढ़ने को ललचाता रहेगा।"

अब अँधेरा हो गया था और इस अन्धकार में लाल और पीली रोशनियाँ चमक उठी थीं मानो यह सन्देश दे रही हों कि "इधर आओ!"

हम पहाड़ी पर चढ़ने लगे जिधर घन्टे बज रहे थे। हमारे पैरों के नीचे छोटे छोटे झरने बह रहे थे और उनकी कलकल ध्वनि में ओसिप की आत्मीयता से भरी हुई आवाज डूब रही थी।

"पुलिस को मैंने कितनी अच्छी तरह सम्हाला? सम्हाला था न? इस दुनिया में इसी तरह काम निकाला जाता है जिससे कोई यह न समझ सके कि असली मामला क्या है और हरेक यही समझे कि वही सबसे महत्व-पूर्ण व्यक्ति है। हाँ यह सबसे अच्छा तरीका है कि दूसरे को यह समझा दो कि केवल उसी ने यह काम किया है"

मैं उसकी बातें सुनता रहा, परन्तु यह समझने में असमर्थ रहा कि वह कह क्या रहा था।

और न मैं उसकी बात समझना ही चाहता था क्योंकि उस समय मेरा हृदय आनन्द से भरा हुआ था। मैं नहीं जानता था कि मैं ओसिप को पसन्द करता हू या नहीं। परन्तु मै उसके साथ पृथ्वी के अन्तिम छोर तक जाने को तैयार था। यहाँ तक कि पुन उस नदी को पार करने के लिए तैयार हो जाता जिस पर चलते समय बर्फ निरन्तर मेरे पैरों के नीचे से फिसलती रहती।

घंटे बजने लगे और मेरे मन में यह सुखद विचार आया कि मैं इस जीवन में कितनी बार और बसन्त का स्वागत कर सकूगा।

"मनुष्य की आत्मा के पंख हैं," ओसिप ने गहरी साँस ली, "यह हमारे सपनों में ऊँची उड़ान भरती है . " एक पंख वाली आत्मा?

छब्बीस आदमी और एक लड़की

हम छब्बीस आदमी थे, हम लोग छब्बीस जीती जागती मशीनों की भांति एक इमारत के सब से नीचे के गुफा जैसे अँधेरे हिस्से में सुबह से लेकर बहुत रात गए तक आटा सान कर रोटियाँ और बिस्कुट बनाया करते थे। उस हिस्से की खिड़कियाँ बाहर की ओर एक नीचे हिस्से की ओर खुलती थीं जो काई जमी हुई ईंटों का बना हुआ था। खिड़कियों में बाहर की तरफ लोहे की जालियाँ लगी हुई थीं। उनके शीशों पर उड़े हुए आटे की तह जम गई थी जिससे वहाँ सूर्य की किरणें आने में असमर्थ थीं। उस भाग में सदैव अन्धकार-सा छाया रहता था। हमारे मालिक ने उन खिड़कियों को मजबूती से बन्द कर रखा था जिससे कि हम लोग कहीं भिखारियों और बाहर रहने वाले बेकार और भूखे साथियों को रोटियाँ न दे दें। वह हमें बदमाश समझता था और खाने के लिये गोश्त की जगह रूखी सूखी रोटियाँ देता था।

पत्थर के उस अँधेरे तहखाने में हम लोगों का घुटा हुआ जीवन बीत रहा था। उसकी नीची छत धुएं और मकड़ी के जालों से भरी हुई थी। धूल और गर्द से भरे हुए उस स्थान में हमारा जीवन बड़े कष्ट से व्यतीत हो रहा था। वहाँ हमारी दम घुटती थी। अधूरी नींद से भारी पलकें लिए हम सुबह पाँच बजे उठते और छः बजे तक थके हुए शरीर और मन से, अपने साथियों द्वारा उस समय साने हुए आटे से जब हम सो रहे थे, रोटियाँ और बिस्कुट बनाना प्रारम्भ कर देते। और सारे दिन सुबह से लेकर रात के दस बजे तक हम में से कुछ लोग सख्त आटे को गूंदते और सर्दी कम करने के लिए अपने शरीर को इधर उधर हिलाते। दूसरे साथी आटा और पानी मिलाते रहते। दिन भर कड़ाह में गर्म पानी खौलता रहता और बिस्कुट

पकाने वाले का कलछा भट्टी के पत्थरों से टकराता सुनाई देता। वह पकी हुई रोटियों को एक ओर फेंकता जाता। सुबहसे लेकर रात तक एक ओर बनी भट्टी में आग जलती रहती। और उस आग की लाल रोशनी दीवालों पर पड़कर चमकती मानो हमारी ओर देखकर दाँत पीस रही हो। वह बड़ी भट्टी एक भयानक दैत्य के समान दिखाई देती थी, जो अपने विकराल जबड़े, जिसमें अग्नि जल रही हो फाड़े हुए हमारी ओर आग की गर्म लपटें फेंक रहा हो। और अपने ऊपर बने हुए दो छेदों से हमारे उस भयानक परिश्रम को देख रहा हो। ये दो छेद आँख से मालूम पड़ते थे, एक दैत्य के दो निर्दय और क्रूर नेत्र। उन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो हम गुलामों को देखते देखते उस„दानव की वह दृष्टि भी उकता गई है और हमें अपने मनुष्योचित स्वाभिमान से वंचित देखकर हमारी मूर्खता पर घृणापूर्वक मुस्करा रही है।

प्रति दिन हम लोग उस आटे की धूल और अपने पैरों के साथ बाहर से लाई हुई कीचड़ में और उस दुर्गन्धपूर्ण वातावरण में उस आटे से जिसमें हमारा पसीना टपक टपक कर मिलता जाता बिस्कुट बनाते और अपने इस घृणित कार्य के प्रति तीव्र घृणा प्रगट करते रहते थे। अपने खाने के लिये हम इन रोटियों की अपेक्षा काले जौ की रोटी खाना अच्छा समझते। एक लम्बी मेज पर आमने सामने बैठे हुए हमारे हाथ।और उँगलियाँ निरन्तर मशीनों के समान चलती रहतीं। हम लोग इस काम को करने के इतने आदी हो गये थे कि बिना देखे बराबर काम किये जाते और आपस में एक दूसरे की रूप रेखा से इतने परिचित हो गये थे कि दूसरे के चेहरे की प्रत्येक रेखा को बता सकते थे। हम लोग चुपचाप बिना बात किए निरन्तर अपने कार्य में लगे रहते। बोलते उसी समय जब हमें दूसरों को गाली देनी होती क्योंकि आदमी हमेशा दूसरों को गाली देता है विशेषकर अपने साथी को। परन्तु हम आपस में बहुत कम लड़ते थे। अर्द्ध मृत, पत्थर की मूर्ति के समान निर्जीव, जिसकी चेतना अनवरत परिश्रम से कुंठित हो गई है ऐसे व्यक्ति को भी कभी दोष दिया जा सकता है। वह लड़े भी तो कैसे! मौन उन लोगों के लिए भयावह और कष्ट प्रद होता है

जो अपना जीवन लगभग व्यतीत सा कर चुके हैं, जिन्हें जीवन में जो कुछ कहना था सब कह चुके हैं। परन्तु इन लोगों के लिए, जिन्हें जीवन में कभी भी अपनी कहने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है, मौन सुखद और सुन्दर है। कभी कभी हम गाते भी थे। काम करते करते हमारा कोई साथी थके हुए घोड़े की तरह साँस लेता और फिर उन गीतों में से किसी एक गीत को कोमल धीमी आवाज में गाने लगता जिनकी वेदना से बोझिल मधुर स्वर-लहरियाँ गायक की थकी हुई आत्मा के बोझ को सहल बना देती हैं। एक आदमी गाता और हम सब निस्तब्ध भाव से उस एकाकी संगीत को सुनते रहते। उस काल कोठरी में उस गीत की स्वर लहरी धीरे धीरे मन्द होती हुई विलीन हो जाती जैसे घास के मैदानों में शरद रात्रि के बादलों से भरे हुए आकाश के नीचे जलते हुए अलाव की लपटें धीरे धीरे बुझ जाती हैं। तब दूसरा साथी पहले के साथ गाने लगता और उन दोनों की आवाज उस गर्म तहखाने में चारों ओर नीरसतापूर्वक गूंज उठती। और तब अचानक अनेक गलों से वही स्वर निकलने लगते। उस गीत की स्वर लहरियाँ समुद्र की लहर के समान गम्भीर, सशक्त और तीव्र हो उठतीं। ऐसा प्रतीत होता जैसे वे इन पत्थर की सीली दीवालों को तोड़कर हमें मुक्त कर देंगी।

छब्बीस आवाजें एक-साथ गा रही हैं, स्वर तीव्र होते जा रहे हैं परन्तु बहुत दिनों का अभ्यास होने के कारण लय में अन्तर नहीं आने पाता। सब एक स्वर, एक गति, एक लय से गा रहे हैं। उस स्वर से वह कारखाना भर उठा है, स्थानाभाव से स्वर एंठने लगे हैं। वे रोते सिसकते हुए से उस पत्थर की दीवाल को तोड़कर बाहर निकलना चाहते हैं। हमारे हृदय में एक मधुर वेदना जागृत हो रही है। पुरानी स्मृतियों के घाव हरे हो रहे हैं। आत्मा पीड़ा से कराह उठी है। गाने वाले गहरी उदास सांस लेते हैं। अचानक एक गाने वाला गाते गाते चुप होकर अपने साथियों को गाते हुए सुनने लगता है और कुछ समय बाद पुनः उसका स्वर दूसरों के साथ मिल उठता है। कभी कोई साथी दुखी होकर आह भर कर आंखें बन्द कर जोर जोर से गाने लगता है। मानो सङ्गीत की वह स्वर धारा उसके लिए एक

ऐसे विस्तृत और अनन्त पथ के समान है जहाँ सूर्य का उन्मुक्त प्रकाश फैला हो और वह चुपचाप उस पर चला जा रहा हो।

भट्टी से लपटें अब भी निकल रही हैं, पकाने वालों का कलछा ईंटों पर बज रहा है, कड़ाह में खौलते हुए पानी में बुलबुले उठ रहे हैं, आग की चमक दीवालों पर पड़कर चुपचाप हँस रही है। और हम गा रहे हैं अपनी आन्तरिक वेदना के द्वारा, शुद्ध वायु और प्रकाश से वंचित दुखी गुलामों की तरह। इस प्रकार जीवन बिता रहे थे—हम छब्बीस प्राणी एक पत्थर की बनी इमारत के निचले अँधेरे हिस्से में। हमारा जीवन इतना बोझिल हो उठा था मानो उस इमारत की तीनों मंजिलें हमारे कन्धों पर रखी हों।

हमारे गीतों के अतिरिक्त वहाँ एक चीज और थी जिसे हम प्यार करते थे और प्रसन्न होते थे! ऐसी चीज जो हमारे मन में सूर्य के प्रकाश की तरह ताजगी और जीवन भर देती थी। उस इमारत की दूसरी मंजिल पर जरी के काम का कारखाना था। उसमें काम करने वाली अनेक लड़कियों में तानया नाम की सोलह वर्ष की एक नौकरानी लड़की थी। हर सुबह एक छोटा सा प्रसन्नता से खिली हुई आँखों वाला गुलाबी चेहरा, गैलरी की ओर खुलने वाली खिड़की के काँच से आकर सट जाता और एक सुरीली मीठी आवाज हमें बुलाती—

"जेल के पछियो! मुझे कुछ रोटी दे दो।"

हम सब लोगों के मुख उस सुरीली आवाज की ओर घूम जाते और उस सुन्दर प्रसन्नता से खिले हुए लड़की के चेहरे की ओर देखने लगते जो हमारी ओर देखकर मन्द मन्द मुस्कराती रहती थी। खिड़की के काँच से दबकर चपटी हुई उस सुन्दर नासिका और गुलाबी होठों के बीच से झाँकते हुए सुन्दर चमकीले दाँतों को देखना हमें बहुत अच्छा लगता था। हम उसके लिए दरवाजा खोलने को दौड़ पड़ते, एक साथ, एक दूसरे को धक्का देते हुए। द्वार खुलते ही हास्य और आनन्द से खिला हुआ उसका शरीर वहाँ खड़ा दिखाई देता। हंसती हुई, अपने सिर को गर्वपूर्वक कुछ ऊंचा कर वह अपना वस्त्र फैलाए हमारे सामने खड़ी हो जाती। उसके लम्बे घुंघराले

बाल दोनों कन्धों पर होते हुए उसके वक्षस्थल पर आकर खेलते रहते। हम दीन, दुखी, दरिद्र अरूप पशु जैसे प्राणी उसकी ओर देखते। हमारे कमरे का फर्श उस दहलीज से चार कदम नीचा था। हम सिर उठा कर उसकी ओर देखते और 'सुप्रभात' का उच्चारण करते। अभिवादन के ये शब्द केवल उसी के लिए सुरक्षित थे। जब हम उससे बातें करते तो हमारी आवाज में शालीनता आ जाती और मजाकों में शिष्टता। उसके आगे हमारी प्रत्येक चेष्टा में एक नवीनता और विशेषता होती। पकाने वाला एक कलछा भरकर लाल लाल, भली प्रकार पके हुए बिस्कुट उठाकर उसकी झोली में फेंक देता।

"सावधान! कहीं मालिक पकड़ न ले।" हम उसे चेतावनी देते। वह शैतानी से हँसती और प्रसन्नता से चीखती।

"जेल के पंछियो, विदा!" कहकर क्षण मात्र में चूहे की तरह गायब हो जाती।

केवल इतना ही। उसके जाने के काफी देर बाद हम उसके विषय में बातें करने लगते। हम प्रतिदिन पहले की कही हुई बातों को दुहराते क्योंकि हम, वह और हमारे चारों ओर फैला हुआ वातावरण वैसा ही रहता जैसा कि यह पहले था। मनुष्य के लिए अपरिवर्तनशील वातावरण में समय काटना बड़ा कष्टप्रद हो उठता है। इससे यदि उसकी आत्मा जड़ नहीं बन जाती तो उसके लिए उस वातावरण की स्थिरता और भी भयानक एवं कष्टप्रद हो उठती है। जब कभी हम स्त्रियों की बातें करते तो अपने उन शब्दों की अश्लीलता और निर्लज्जता से स्वयं सिहर उठते। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि जिन स्त्रियों की हम चर्चा करते थे उन्हें हम शिष्ट शब्दों में नहीं याद कर सकते थे। वे ऐसी ही स्त्रियाँ थी। मगर तानया के लिए हम लोगों ने कभी एक भी बुरा शब्द नहीं कहा। हममें से किसी का भी साहस उसे छूने का नहीं होता था और उसने भी हम लोगों से कभी एक भी गन्दा शब्द नहीं सुना। शायद इसका कारण यह हो कि वह हमारे पास अधिक देर तक नहीं ठहरती थी। वह आकाश से टूटते हुए तारे के समान हमारे सामने आती और गायब हो जाती। और शायद इसलिए भी कि वह बहुत

छोटी और सुन्दर थी। प्रत्येक सुन्दर वस्तु हृदय में सम्मान की भावना उत्पन्न कर देती है यहाँ तक कि उजड्ड आदमी भी उससे प्रभावित हो जाते हैं। एक बात और थी यद्यपि उस कठोर परिश्रम ने हमें कोल्हू के बैल के समान जड़ बना दिया था तो भी हम मनुष्य थे और दूसरे मनुष्यों के ही समान विना किसी को पूजा किए जीवित नहीं रह सकते थे। हमें एक आराध्य की आवश्यकता थी। तान्या से सुन्दर उस स्थान पर हमारे लिए और कोई नहीं था। साथ ही हम जैसे अभागे प्राणियों की तरफ और कोई ध्यान भी नहीं देता था। यद्यपि इस इमारत में दर्जनों किरायेदार रहते थे, परन्तु इस आकर्षण का सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण कारण यह था कि हम उसे अपनी वस्तु समझते थे। भला हो हमारे बिस्कुटों का जिन्होंने उसे हमारे पास ला दिया था। हमने उसे गर्म बिस्कुट देना अपना कर्तव्य सा बना लिया था। प्रतिदिन अपने आराध्य को गर्म बिस्कुटों का भोग लगाना हमारा धार्मिक कृत्य सा बन गया था। इससे वह दिन प्रतिदिन हमारे लिए और अधिक प्रिय बनती जा रही थी। बिस्कुटों के अतिरिक्त हम तानया को अच्छी सलाह भी दिया करते थे—गर्म कपड़े पहना करो, दौड़ कर सीढ़ियों पर मत चढ़ा करो, लकड़ी के भारी गट्ठे मत उठाया करो आदि। वह मुस्कराती हुई हमारी सलाह सुनती, व्यंगपूर्वक हसती और कभी उनका पालन नहीं करती थी। लेकिन हम इसका बुरा नहीं मानते थे। हमें केवल इतना ही सन्तोष था कि हम उसके प्रति अपनी सहानुभूति प्रदर्शित कर लेते थे।

बहुधा वह हमसे अपने लिए कुछ काम करने के लिये कहती थी। जैसे, कभी गोदाम का भारी दरवाजा खुलवाने का आग्रह करती, कभी लकड़ियाँ तोड़ने के लिए कहती और हम प्रसन्नता से गर्वपूर्वक जो कुछ भी वह कहती उसे करते।

लेकिन एक बार हमारे एक साथी ने उससे फटी कमीज सीं देने के लिए कहा तो उसने नाक भौं चढ़ाकर अवज्ञापूर्वक कहा—"क्या खूब, तुम मुझे फँसाना चाहते हो। यह सम्भव नहीं है।"

अपने उस साथी की मूर्खता पर हम लोग खूब हंसे और फिर तान्या से किसी काम के लिए नहीं कहा। हम उसे प्यार करते थे। बस इतना ही काफी था। मनुष्य हमेशा किसी न किसी को प्यार करना चाहता है चाहे भले ही इससे दूसरे पर भार ही पड़े, वह झुंझला उठे और यह प्यार उसके जीवन में अशान्ति पैदा कर दे क्योंकि जिसे हम प्यार करते हैं उसके प्रति मन में श्रद्धा की भावना नहीं होती। हम तानया को प्यार करते थे क्योंकि वहाँ कोई और ऐसा न था जिसे हम प्यार कर सकते।

कभी कभी हमारा कोई साथी तर्क करने लगता "इस लड़की के पीछे इस कदर पागल बनने में क्या अक्लमन्दी है ? उसमें ऐसा क्या विशेष आकर्षण है ?"

हम ऐसी बातें करने वाले साथी को झिड़क कर चुप कर देते। आखिरकार हम किसी को तो प्यार करते। हमने उसे पाया और प्यार किया और जिसे हम छब्बीस प्राणी प्यार करते थे वह हमारे लिए सब से अधिक पवित्र और निर्दोष थी और जो भी उसका विरोध करता वह एक प्रकार से हमारा शत्रु था। हम जिसे प्यार करते हैं, सम्भव है वह वास्तव में अच्छा न हो परन्तु जब हम सभी छब्बीस प्राणी एक साथ मिल कर किसी को प्यार करते थे तो यह हमारी आन्तरिक अभिलाषा थी कि हमारे प्रेमास्पद के प्रति दूसरों के मन में भी पूज्य भाव हो।

हमारा प्रेम घृणा से अधिक दुःसह होता है और शायद यही कारण है कि बड़े आदमी हमारी घृणा को हमारे प्यार से अधिक अच्छा समझते हैं। अगर ऐसा ही है तो वे हमारी अवहेलना क्यों नहीं करते।

सादे बिस्कुटों के इस कारखाने के साथ ही हमारे मालिक के छोटी मीठी रोटियाँ बनाने का एक और कारखाना था। वह भी उसी इमारत में था। हमारे कारखाने और इसमें केवल दीवाल का-ही अन्तर था। मीठी रोटियाँ पकाने वाले, जो संख्या में चार थे, अपने को हमसे सदैव अलग रखते थे। वे अपने काम को हमारे काम से अधिक श्रेष्ठ समझते थे। इसी लिये शायद वे अपने को भी हम से श्रेष्ठ समझते थे। वे कभी हमारे पास नहीं आते और जब कभी अहाते में उनसे मुलाकात हो जाती तो वे हमें बोली

निगाह से देखते। हम भी कभी उनसे मिलने का प्रयत्न नहीं करते थे क्योंकि उनका काम हमसे आसान था इसलिए हमें उनसे ईर्षा थी। दूसरा कारण यह भी था कि हमारा मालिक भी चोरी के भय से हम लोगों को नहीं मिलने देता था। उन लोगों को अच्छा वेतन, अच्छा भोजन मिलता था। उनका कारखाना भी लम्बा चौड़ा और हवादार था। वे हमसे अधिक साफ और स्वस्थ थे। इसी कारण हम उनसे और घृणा करते थे। इसके विपरीत हम लोग पीले चेहरों वाले, गन्दे लोग थे। हम में से तीन गर्मी से पीड़ित थे, कुछ को चर्मरोग था और एक गठिया का मरीज था। त्यौहारों और छुट्टियों के दिन वे सुन्दर सूट और चरमराते हुए जूते पहनते। उनमें से दो के पास मुँह से बजाने के सुन्दर छोटे बाजे थे। वे सब पार्क में टहलने जाते। हम लोग फटे चीथड़े पहने रहते। पैरों में फटे जूते होते। पुलिस हमें पार्क में घूमने की इजाजत नहीं देती थी। फिर हम उनको कैसे प्यार कर सकते थे।

एक दिन हमको ज्ञात हुआ कि उनका सरदार शराब पीकर आया था, इसलिए मालिक ने उसे हटाकर एक दूसरा नया आदमी रख लिया है। यह नया आदमी एक अवकाश प्राप्त सैनिक था जो साटन की वास्कट और सुनहरी चेन वाली घड़ी पहने रहता था। हम इस छैले को देखने को इच्छुक थे और कभी कभी उसकी एक झलक पाने के लिए आँगन में दौड़ दौड़ कर जाते।

परन्तु एक दिन वह स्वयं हमारे कारखाने में आया। लात की ठोकर से दरवाजा खोलकर हसता हुआ वह बीच दरवाजे में खड़ा हो गया और हम लोगों से बोला—"कहो भाइयो! कैसे मिजाज हैं।"

कारखाने से निकलते हुए धुंए और धूल के बीच में खड़ा हुआ वह हमें उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा था। उसकी लहराती हुई बड़ी बड़ी मूँछों के नीचे उसके बड़े बड़े पीले दाँत चमक रहे थे। उसकी वास्कट बहुत सुन्दर थी—नीली मखमल के ऊपर चमकदार सुनहली जरी का काम वाली जिसमें लाल पत्थर के चमकीले बटन लगे हुए थे। उसमें वह सुनहली चेन भी लटक रही थी।

वह एक सुन्दर व्यक्ति था—लम्बा, चौड़ा, ताकतवर और लाल गालों वाला। उसकी बड़ी चमकीली आँखों में एक अद्भुत स्पष्टता और स्वच्छता थी। सिर पर एक कलफदार नोकीली टोपी थी। उसके काम करने के सफेद कपड़े के नीचे से उसके] सुन्दर चमकीले बूटों का पंजा चमक रहा था।

हमारे सरदार ने नम्रतापूर्वक उससे दरवाजा बन्द करने के लिए कहा। इत्मीनान से दरवाजा बन्द कर वह हमसे मालिक के विषय में बातें करने लगा। एक दूसरे से अधिक बताने की प्रतिस्पर्धा करते हुए हमने उसे बताया कि हमारा मालिक एक रक्तशोषक कुकर्मी, नर-पिशाच है। हमने कहनी अन-कहनी, जो कुछ भी हम मालिक के विषय में कह सकते थे, कहीं जिन्हें लिखा नहीं जा सकता। वह सिपाही मूँछें चबाता और सहानुभूतिपूर्वक हमारी ओर देखता हुआ इन बातों को सुनता रहा।

"यहाँ पर बहुत सी लड़कियाँ भी तो हैं ?" अचानक उसने पूछा।

हममें से कुछ धीरे से हँसे, कुछ के मुँह में जैसे पानी भर आया और दूसरों ने उसे बताया कि यहाँ नौ लड़कियाँ हैं।

"क्या तुम भी उनका स्तैमाल करते हो ?" उसने आँखें मारते हुए दुष्टतापूर्वक पूछा।

हम फिर हँसे जैसे पराजित हो गए हों। हमारी उस हसी में एक बेचैनी थी। हम में कुछ उसे यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि वे भी उसी के समान रङ्गीले हैं परन्तु वे ऐसा कर नहीं पाते, हम में से कोई भी इस योग्य नहीं। हाँ एक ने इतना सा इशारा जरूर किया कि "अपनी ऐसी हालत में हम लोग कैसे……!"

"हाँ, हाँ ठीक है! तुम इन चीजों से बहुत दूर हो" हमारी ओर खोजपूर्ण दृष्टि से ताकते हुए विश्वस्त होकर उसने कहा—"तुम इस योग्य नहीं हो। तुम में इतना साहस ही नहीं है और न तुम्हारी शकल ही इस योग्य है। रूप! तुम जानते हो औरत आदमी के रूप रङ्ग और रहन सहन से प्रभावित होती है। उसे केवल सुन्दर शरीर चाहिए। साथ ही वह मौसल पुट्ठों, सशक्त भुजाओं को भी पसन्द करती है। देखो जैसे ये हैं..."

सिपाही ने अपना दाहिना हाथ जेब से निकाला, आस्तीन को कुहनी तक ऊपर चढ़ाया और हमारे सामने फैला दिया। उसका वह हाथ मजबूत और गोरा था जिस पर सुनहले बाल चमक रहे थे।

"पैर, सीना सब कुछ मजबूत होना चाहिए। और फिर मनुष्य की पोशाक ठीक और सुन्दर हो — बिल्कुल चुस्त। अब, देखो औरतें मेरे पीछे फिरती रहती हैं। न तो मैं किसी को बुलाता हूँ और न किसी को रिझाने का ही प्रयत्न करता हूँ। वे एक साथ पाँच पाँच मेरे गले से लटकती रहती हैं।"

वह एक आटे के बोरे पर बैठ गया और बहुत देर तक बताता रहा कि औरतों ने उसे किस प्रकार प्यार किया और उसने उनके साथ कितना क्रूर व्यवहार किया। फिर वह चला गया और जब दरवाजा एक तीखी आवाज के साथ बन्द हो गया तो हम लोग बहुत देर तक निस्तब्ध से बैठे हुए उसके विषय में और उसकी कहानियों के विषय में सोचते रहे। तब अचानक सब एक साथ बोल उठे। उन बातों से स्पष्ट हो गया कि हम सब उसके प्रति आकर्षित हो उठे हैं। वह कितना अच्छा, सीधा आदमी है। बिना किसी संकोच के वह हम लोगों में हिलमिल गया और गप्पें लड़ाता रहा। इससे पहले तो कभी कोई भी हमसे इतनी अच्छी तरह नहीं मिला था और न किसी ने इतनी आत्मीयतापूर्वक हमसे बातें ही की थीं। हम लोग उसके विषय में बातें करते रहे और सोचते रहे कि किस प्रकार वह उन दर्जिनों पर विजय प्राप्त करेगा जो हमसे आँगन में मुलाकात हो जाने पर घृणापूर्वक होठ सिकोड़तीं या हमारी पूर्ण उपेक्षा कर इस प्रकार सीधी निकल जातीं मानो हमारा वहाँ अस्तित्व ही न हो। और हम उनकी इज्जत करते थे। जब वे जाड़ों में आँगन में होकर या हमारी उस खिड़की के सामने होकर छोटी छोटी सुन्दर टोपियाँ और फर के बने कोट पहने और गर्मियों में फूलोंदार हैट और रङ्गीन रेशमी पेटीकोट पहने हुए निकलतीं तो हम उन्हें देखकर मुग्ध हो जाते। परन्तु जब हम लोग आपस में उनके विषय में बातें करते तो वे इतनी गन्दी होती थीं कि यदि वे उन्हें सुन पातीं तो लज्जा और अपमान से पागल हो उठतीं।

"मुझे उम्मीद है कि यह दुष्ट हमारी छोटी सी तान्या को खराब नहीं कर सकेगा।" चिन्तित होकर अचानक हमारे सरदार ने कहा।

यह सुन कर हम सब स्तब्ध रह गए। हम लोग तो तान्या की बात भूल ही से गए थे। उस सिपाही की भव्य प्रभावशाली मूर्ति ने एक तरह से तान्या को हमारे स्मृति पटल से मिटा दिया था। अब हम लोगों में एक विवाद उठ खड़ा हुआ। किसी एक ने कहा तान्या अपने को भ्रष्ट न होने देगी। दूसरे ने अपनी बात पर जोर देते हुए मत प्रकट किया कि तान्या इस सिपाही के आकर्षण के सम्मुख टिक नहीं सकेगी। दूसरों ने कहा कि यदि यह व्यक्ति तान्याको भ्रष्ट करनेका प्रयत्न करेगा तो हम उसकी हड्डी पसली एक कर देंगे। अन्त में सब ने तय किया कि इन दोनों पर निगाह रखी जाय और उस सिपाही को चेतावनी दे दी जाय। इस पर विवाद समाप्त हो गया।

एक महीना बीत गया। वह सिपाही मीठी रोटियाँ पकाता, दर्जिनों के साथ घूमने जाता और कभी कभी हम लोगों से मिलने के लिए चला आता परन्तु उसने अपनी प्रेम गाथाओं की चर्चा फिर कभी न की। वह केवल अपनी मूँछें ऐंठता और होंठ चाटता रहता।

तान्या रोज सुबह रोटी लेने आती। वह उसी प्रकार हँसमुख, मधुर और सीधी थी। हमने उससे सिपाही के विषय में बातें करने की कोशिश की। वह उसे 'शीशे की आँखों वाला गुड्डा' कहती तथा उसके और भी नाम धरती। इससे हमारे मन को बड़ी शान्ति प्राप्त होती। हमें अपनी इस छोटी सी लड़की पर बड़ा गर्व होता जब हम देखते कि वे दर्जिनें किस प्रकार उस सिपाही के चारों ओर मंडराती रहती हैं। उसके प्रति तान्या के व्यवहार से हम लोग उत्साहित हुए और उससे प्रभावित होकर हम लोग भी उस सिपाही को नीची निगाह से देखने लगे। हम तान्या को और भी अधिक प्यार करने लगे थे। सुबह उसके आने पर हम बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उसका स्वागत करते।

एक दिन वह सिपाही हमारे पास आया—नशे में चूर, ऐंठा और

हसने लगा। और जब हमने उसकी हँसी का कारण पूछा तो उसने बताया—

"इनमें से दो—लिडा और अ्यूशा मेरे ऊपर आपस में लड़ मरीं। जो कुछ उन्होंने किया उसे तुम देखते तो बड़ा मजा आता। वे बराबर चीखे जा रही थीं। एक ने दूसरे के बाल पकड़ लिए और उसे गलियारे के फर्श पर खींचे खींचे फिरी और फिर उसके ऊपर चढ़ बैठी। हा, हा, हा, दोनों ने एक दूसरे को खूब नोंचा खसोटा, एक दूसरे के कपड़ों की धज्जियाँ उड़ा दीं। हा, हा, हा, कैसा अद्भुत दृश्य था। समझ में नहीं आता कि ये औरतें आपस में नोंचा खसोटी क्यों करती हैं? इनसे भले आदमियों की तरह नहीं लड़ा जाता।"

वह एक बेंच पर बैठ गया। वह बहुत साफ और तन्दरुस्त दिखाई पड़ रहा था और खुशी से बराबर हँसते हँसते उसके पेट में बल पड़ने लगे थे। हम लोग चुप रहे। कुछ भी हो, इस समय वह हमें बहुत अखर रहा था।

"न मालूम इन लड़कियों के मामले में मैं इतना भाग्यशाली क्यों हूं? केवल मुझे सीटी बजाकर आँख मारने की आवश्यकता होती है और बस समझ लो काम पूरा।"

उसने सुनहली बालों वाला सफेद हाथ उठाया और घुटने पर जोर से मारा और फिर हमारी ओर देखा। उसकी उस निगाह में गर्व मिश्रित आश्चर्य था। मानो औरतों के प्रति अपनी इस सफलता पर उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा हो। उसका भरा हुआ लाल चेहरा खुशी से दमक रहा था और वह बराबर जीभ से अपने होंठ चाटता जाता था।

हमारे सरदार ने गुस्से से कलछा भट्टी पर दे मारा और अचानक व्यङ्गपूर्वक कहा—"देवदार के छोटे पौधे को उखाड़ फेंकने में क्या बहादुरी है। चीड़ का बड़ा सा पेड़ उखाड़ो तो जानें।"

"क्या? क्या मुझसे कुछ कह रहे थे?" सिपाही ने पूछा।

"हाँ तुमसे ‥‥।"

"तुमने क्या कहा था?"

"कुछ भी नहीं'' खैर, जाने दो।"

"नहीं, रुको, तुम यह सब क्या कह रहे हो? यह चीड़ के पेड़ की क्या बात थी?"

हमारे सरदार ने जवाब नहीं दिया। उसका कलछा तेजी से भट्टी के भीतर चलने लगा। पकते हुए बिस्कुटों को उलटते पलटते हुए और पके हुओं को बाहर फर्श पर फेंकते हुए जहाँ बैठे हुए लड़के उन्हें क्रम से रखते जा रहे थे, वह अपने काम में लगा था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह सिपाही की उपस्थिति को भूल गया हो। परन्तु सिपाही अचानक उत्तेजित हो उठा। वह उठा और भट्टी के पास पहुँचा। वह सरदार के बिल्कुल पास पहुंच गया था। हम लोगों को भय हो रहा था कि वह तेजी से चलता हुआ कलछा कहीं उसके सीने में न लग जाय।

"अच्छा, इधर देखो, बताओ तुम्हारा क्या मतलब है? यह मेरा अपमान है। ऐसी कौन लड़की है जो मेरा सामना कर सके। तुम्हें बिल्कुल भय नहीं? तुम्हें इस प्रकार मुझ पर व्यङ्ग कसने का साहस कैसे हुआ?" सचमुच ऐसा मालूम पड़ा कि उसे बहुत बुरा लगा है। औरतों पर विजय प्राप्त कर लेने की कला का उसे बहुत अभिमान था। केवल वह अपने इसी गुण की डींग हांक सकता था, केवल एक गुण जिसे वह मनुष्योचित समझता था।

इस संसार में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके लिए आत्मा या शरीर की किसी व्याधि से अधिक अच्छी और श्रेष्ठ दूसरी कोई वस्तु नहीं होती। वे आजन्म उसी को पालते पोसते रहते हैं और यही सदैव उन्हें जीवित रहने की प्रेरणा देती रहती है। वे इससे कष्ट उठाते हैं परन्तु उनके जीवन की एकमात्र वही पोषक शक्ति होती है। वे दूसरों से इसका रोना रोते रहते हैं और इस प्रकार पड़ोसियों की सहानुभूति को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। लोगों की सहानुभूति उन्हें प्राप्त होती है वे अपने जीवन में केवल यही वस्तु प्राप्त कर पाते हैं। उनका यह रोग उनसे छीन कर उन्हें भला चङ्गा बना दीजिए तो उनका जीवन दुखमय हो उठेगा क्योंकि यही तो उनके जीवन का आधार था। इसके बिना उनका

हसने लगा। और जब हमने उसकी हँसी का कारण पूछा तो उसने बताया—

"उनमें से दो—लिडा और ग्रूशा मेरे ऊपर आपस में लड़ मरीं। जो कुछ उन्होंने किया उसे तुम देखते तो बड़ा मजा आता। वे बराबर चीखे जा रही थीं। एक ने दूसरे के बाल पकड़ लिए और उसे गलियारे के फर्श पर खींचे खींचे फिरी और फिर उसके ऊपर चढ़ बैठी। हा, हा, हा, दोनों ने एक दूसरे को खूब नोंचा खसोटा, एक दूसरे के कपड़ों की धज्जियाँ उड़ा दीं। हा, हा, हा, कैसा अद्भुत दृश्य था। समझ में नहीं आता कि ये औरतें आपस में नोंचा खसोटी क्यों करती हैं? इनसे भले आदमियों की तरह नहीं लड़ा जाता।"

वह एक बैंच पर बैठ गया। वह बहुत साफ और तन्दरुस्त दिखाई पड़ रहा था और खुशी से बराबर हँसते हँसते उसके पेट में बल पड़ने लगे थे। हम लोग चुप रहे। कुछ भी हो, इस समय वह हमें बहुत अखर रहा था।

"न मालूम इन लड़कियों के मामले में मैं इतना भाग्यशाली क्यों हू? केवल मुझे सीटी बजाकर आँख मारने की आवश्यकता होती है और बस समझ लो काम पूरा।"

उसने सुनहली बालों वाला सफेद हाथ उठाया और घुटने पर जोर से मारा और फिर हमारी ओर देखा। उसकी उस निगाह में गर्व मिश्रित आश्चर्य था। मानो औरतों के प्रति अपनी इस सफलता पर उसे स्वय आश्चर्य हो रहा हो। उसका भरा हुआ लाल चेहरा खुशी से दमक रहा था और वह बराबर जीभ से अपने होंठ चाटता जाता था।

हमारे सरदार ने गुस्से से कलछा भट्टी पर दे मारा और अचानक व्यङ्गपूर्वक कहा—"देवदार के छोटे पौधे को उखाड़ फेंकने में क्या बहादुरी है। चीड़ का बड़ा सा पेड़ उखाड़ो तो जानें।"

"क्या? क्या मुझसे कुछ कह रहे थे?" सिपाही ने पूछा।

"हाँ तुमसे ····।"

"तुमने क्या कहा था?"

"कुछ भी नहीं" खैर, जाने दो।"

"नहीं, रुको, तुम यह सब क्या कह रहे हो ? यह चीड़ के पेड़ की क्या बात थी ?"

हमारे सरदार ने जवाब नहीं दिया। उसका कलछा तेजी से भट्टी के भीतर चलने लगा। पकते हुए बिस्कुटों को उलटते पलटते हुए और पके हुओं को बाहर फर्श पर फेंकते हुए जहाँ बैठे हुए लड़के उन्हें क्रम से रखते जा रहे थे, वह अपने काम में लगा था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह सिपाही की उपस्थिति को भूल गया हो। परन्तु सिपाही अचानक उत्तेजित हो उठा। वह उठा और भट्टी के पास पहुँचा। वह सरदार के बिलकुल पास पहुच गया था। हम लोगों को भय हो रहा था कि वह तेजी से चलता हुआ कलछा कहीं उसके सीने में न लग जाय।

"अच्छा, इधर देखो, बताओ तुम्हारा क्या मतलब है ? यह मेरा अपमान है। ऐसी कौन लड़की है जो मेरा सामना कर सके। तुम्हें बिल्कुल भय नहीं ? तुम्हें इस प्रकार मुझ पर व्यङ्ग कसने का साहस कैसे हुआ ?" सचमुच ऐसा मालूम पड़ा कि उसे बहुत बुरा लगा है। औरतों पर विजय प्राप्त कर लेने की कला का उसे बहुत अभिमान था। केवल वह अपने इसी गुण की डींग हांक सकता था, केवल एक गुण जिसे वह मनुष्योचित समझता था।

इस संसार में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके लिए आत्मा या शरीर की किसी व्याधि से अधिक अच्छी और श्रेष्ठ दूसरी कोई वस्तु नहीं होती। वे आजन्म उसी को पालते पोसते रहते हैं और यही सदैव उन्हें जीवित रहने की प्रेरणा देती रहती है। वे इससे कष्ट उठाते हैं परन्तु उनके जीवन की एकमात्र वही पोषक शक्ति होती है। वे दूसरों से इसका रोना रोते रहते हैं और इस प्रकार पड़ोसियों की सहानुभूति को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। लोगों की सहानुभूति उन्हें प्राप्त होती है वे अपने जीवन में केवल यही वस्तु प्राप्त कर पाते हैं। उनका यह रोग उनसे छीन कर उन्हें भला चङ्गा बना दीजिए तो उनका जीवन दुखमय हो उठेगा क्योंकि यही तो उनके जीवन का आधार था। इसके बिना उनका

जीवन नीरस और खोखला हो जायगा। कभी कभी किसी मनुष्य का जीवन गरीबी से इतना दुखमय हो उठता है कि वह मजबूर होकर किसी बुरे काम में फँस जाता है और उसी पर जीवित रहता है। हम यह भी कह सकते हैं कि कभी कभी मनुष्य निठल्ले होने के कारण भी बुराइयों में फँस जाते हैं।

सैनिक इस चोट से उत्तेजित हो उठा। उसने क्रोध और दुख से काँपती आवाज में हमारे सरदार से पूछा—

"मुझे बताओ। वह ऐसी कौन है ?"

"क्या तुम जानना ही चाहते हो ?" अचानक सरदार ने उसकी ओर मुड़कर कहा।

"हाँ।"

"तुम तान्या को जानते हो ?"

"फिर ?"

"फिर क्या ? तो आजमाओ अपनी ताकत उस पर, देखूं तो सही ?"

"मैं ?"

'हाँ, तुम।'

"उसे ? इतनी छोटी सी बात। यह तो थूकने से भी अधिक आसान है ?"

"हम देखेंगे !"

"तुम देखोगे। हा, हा,।"

"क्यों, वह तो·····।"

"एक महीने से अधिक नहीं लगेगा।"

"सिपाही, तुम बहुत शेखीखोर हो। हो न ?"

"केवल पन्द्रह दिन। और मैं तुम्हें दिखा दूँगा। तुमने किसके विषय में कहा था ? तान्या के ? क्यों ?"

"अच्छा, निकलो यहाँ से। रास्ता तुम्हारे सामने खुला पड़ा है। कोशिश कर देखो।'

"केवल पन्द्रह दिन और काम पूरा। ओह,"..."।"

"निकल जाओ यहाँ से।"

अचानक हमारा सरदार गुस्से से पागल हो उठा और उसने कलछे को तेजी से घुमाया। सिपाही चकित होकर पीछे हट गया और कुछ देर तक चुपचाप हम लोगों की ओर देखकर "ठीक है। देखा जायगा," कहता हुआ बाहर चला गया।

इस विवाद के समय हम सब चुप थे क्योंकि हम पूर्ण एकाग्र होकर सुन रहे थे। लेकिन जब सिपाही चला गया तो हम सब जोर जोर से बातें करने लगे।

एक ने चीखकर सरदार से कहा—

"यह तुमने बहुत बुरा किया, पावेल।"

"अपना काम करो।" झिड़क कर सरदार ने कहा।

हम लोगों ने अनुभव किया कि सिपाही को जोश दिला दिया गया है और अब तान्या खतरे में है। इस बात को जानते हुए भी हम में एक अद्‌भुत उत्तेजना पैदा हो गई थी कि इस सब का क्या परिणाम निकलता है। क्या तान्या सिपाही से अपने को बचा सकेगी? हम लोग इसी दृढ़ विश्वास से एकमत होकर चिल्ला उठे—

"तान्या? वह उसका बाल भी बाँका न कर सकेगा। वह इतनी आसानी से चंगुल में फँसने वाली चिड़िया नहीं है"

हम लोग अपनी उस नन्ही सी देवी की भयङ्कर परीक्षा देखने को उत्सुक थे। साथ ही उत्साहपूर्वक एक ने दूसरे को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि हमारी आराध्या देवी उस द्वन्द्व में अवश्य ही विजयिनी बनेगी। हमने शंकित हृदय से यह सोचते हुए कि हमने सिपाही को पूरी तरह से उत्तेजित कर पाया है या नहीं, इस विवाद को समाप्त किया। हमें भय था कि कहीं वह इस चुनौती को भूल न जाय और हमें फिर उसे उकसाना न पड़े। इस प्रकार हमारे जीवन में एक अद्‌भुत स्फूर्ति और उत्तेजना भर गई जिसका हमने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था। हम बहुत देर तक

आपस में बहस करते रहे। साथ ही न जाने कैसे हम लोग अधिक बुद्धि-मान भी बन गए थे, अधिक अच्छी अच्छी बातें करने लगे थे। ऐसा ज्ञात होता था मानो हम शैतान के साथ कोई खेल खेल रहे हों जिसमें हमारी ओर से तान्या दाँव पर लगा दी गई हो। जब हम लोगों को मीठी रोटियाँ बनाने वाले दूसरे साथियों से पता चला कि उस सिपाही ने तान्या को जीतने के लिये जिन्दगी और मौत की बाजी लगा रखी है, तो हमारी व्यग्रता बहुत अधिक बढ़ गई और जीवन रोमाँच और सनसनी से भर उठा। इस व्यग्रता में हम यह भी न जान सके कि कब मालिक ने हमारी उस मानसिक स्थिति से लाभ उठाकर, नियत परिमाण से पाँच मन से अधिक आटा और मिला दिया। हम इस अतिरिक्त आटे को भी बिना थके पूरा कर डालते। दिन भर हमारी जबान पर तान्या का ही नाम रहता। हम रोज सवेरे धड़कते हृदय से उसकी प्रतीक्षा करते। कभी कभी हम कल्पना करते कि सम्भव है वह किसी दिन जब हमें देखने आए तो एक पूर्णत भिन्न तान्या हो—वह नहीं जिसे हम हमेशा से जानते थे।

हमने तान्या से उस चुनौती के विषय में कुछ भी नहीं कहा। और न हमने उससे ही कुछ पूछा। हमारा उसके साथ वही प्रेमपूर्ण व्यवहार रहा। तो भी, उसके प्रति हमारे व्यवहार में एक अनोखापन सा आ गया था जो हमारे पिछले व्यवहार से एकदम भिन्न था। हमारे व्यवहार की यह नवी-नता उस कौतूहल के कारण थी जो तलवार की धार के समान पैना और ठंडा था।

"साथियो! आज वह अवधि समाप्त होती है।" एक सुबह हमारे सरदार ने काम शुरू करते हुए कहा।

बिना उसके याद दिलाए ही हमें इसका पता था। फिर भी यह सुन कर हम सब काँप उठे।

"तुम उसे ध्यान से देखना ... वह जल्दी ही भीतर आएगी।" सरदार ने एक करुण स्वर में कहा—"यह ऐसी चीज नहीं जिसे आँखों से देखा जा सके।"

और पुनः एक कोलाहलपूर्ण विवाद प्रारम्भ हो गया। आखिरकार आज हमें ज्ञात हो ही जायगा कि वह पात्र जिसे हमने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था कितना पवित्र और निर्मल है। उस सुबह अकस्मात हमें प्रथम बार यह ज्ञान हुआ कि हम वस्तुतः ऊँचा खेल खेल रहे थे। हमें भय हुआ कि यह परीक्षा हमारी ममता की उस मूर्ति को कहीं भङ्ग न कर दे। इन दिनों लगातार हम यह सुनते रहे कि वह सिपाही किस प्रकार बुरी तरह हाथ धोकर तानूया के पीछे पड़ा हुआ है परन्तु किसी अज्ञात करण से हम में से किसी ने भी तानया से यह नहीं पूछा कि उस सिपाही के प्रति उसका क्या विचार है। वह प्रतिदिन बिस्कुट लेने हमारे पास आती रही। उसमें कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दिया।

उस दिन भी हमने उसकी आवाज सुनी—

"जेले के पंछियो! मैं आ गई......।"

हम उसे भीतर लेने के लिए जल्दी से लपके और जब वह भीतर आ गई तो हमने प्रतिदिन के नियम के विरुद्ध उसका स्वागत किया। हम उसे घूर रहे थे। हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि उससे क्या बात करें या क्या पूछें। केवल उसके सम्मुख मौन और उदास भाव से खड़े थे। इस अप्रत्याशित स्वागत से वह अचकचा उठी। अकस्मात हमने देखा कि उसका मुख पीला पड़ गया, आँखों में चिन्ता झलक उठी। तब घुटती सी आवाज में उसने पूछा—"आज तुम सबको क्या हो गया है?"

"तुम्हारे क्या हाल चाल है?" उसके चेहरे पर अपनी आँखें जमाए हुए सरदार ने भयानक स्वर में पूछा।

"मैं समझी नहीं, तुम क्या कह रहे हो?"

"कुछनहीं..."

"अच्छा, मुझे बिस्कुट दे दो, जल्दी से ''।"

"बहुत समय है" सरदार ने बिना हिले कठोर उत्तर दिया। उसकी निगाहें अब भी तानूया के मुख पर जमी हुई थीं।

वह अचानक मुड़ी और दरवाजे से ग़ायब हो गई।

सरदार ने अपना कलछा उठाया और भट्टी की ओर मुड़ते हुए शांत भाव से कहा—

"अच्छा—काम समाप्त हो गया · वह सिपाही जीत गया बदमाश, नीच कहीं का "

हम सब भेड़ों के झुंड के समान परस्पर टकराते हुए मेज पर जाकर चुपचाप बैठ गए और हताश होकर अपना काम करने लगे। थोड़ी देर में किसी ने कहा—

"सम्भव है ऐसा न हो · "

"चुप रहो। बहुत हो चुका," सरदार चीखकर बोला।

हम जानते थे कि वह एक चतुर आदमी है, हम सब से अधिक चतुर। उसकी वह चीख बता रही थी कि उसे उस सिपाही की विजय का पूर्ण विश्वास हो गया था। हम सब दुखी और व्यग्र हो उठे।

दोपहर में, खाने की छुट्टी के समय वह सिपाही अन्दर आया। वह सदा की भाँति साफ सुथरा और बना ठना हुआ था। उसने हमेशा की तरह हमारी ओर गहरी निगाह से देखा। हम उससे आँखें मिलाने में घबड़ा रहे थे।

"अच्छा—मेरे प्यारे साथियो-क्या तुम यह देखना चाहते हो कि एक सिपाही क्या कर सकता है?" उसने गर्वपूर्वक व्यंग की हंसी हंसते हुए हम से कहा। "तुम लोग बाहर गलियारे में चले जाओ और सन्ध में से देखना कि क्या होता है समझ गए न?"

हम सब एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते, एक साथ गलियारे में पहुँचे और अहाते की ओर वाली काठ की दीवाल में बनी हुई संधों में अपनी आँखें लगा दीं। हमें ज्यादा देर इन्तजार नहीं करना पड़ा। जल्दी से तान्या तेज कदम उठाती हुई अहाते की ओर से आई। वह चौकन्नी होकर चारों ओर देख रही थी और बर्फ के गलने से उत्पन्न हुई कीचड़ पर सम्हल कर पैर रखती हुई चल रही थी। वह गोदाम के दरवाजे में जाकर गायब हो गई। उसके पीछे मस्ती से कदम उठाता तथा सीटी बजाता हुआ वह सिपाही

आया। उसके हाथ जेबों में पड़े हुए थे और वह अपनी मूछें चबाता जा रहा था। अन्त में वह भी वहीं जाकर गायब हो गया।

बूँदा बाँदी होने लगी थी। बूँदें कीचड़ में पड़ रही थीं जो और भी बढ़ती जा रही थी। यह एक सीला और मनहूस दिन था, बहुत मनहूस मकान की छतों पर अब भी बर्फ दिखाई दे रही थी। जमीन पर इधर उधर कीचड़ के काले धब्बे पड़े थे। छत की बर्फ भी धूल के कारण मटमैली सी हो गई थी। ऐसे मौसम में उस गलियारे में खड़े होकर प्रतीक्षा करना बहुत अखर रहा था। सर्दी भी महसूस हो रही थी।

उस गोदाम में से पहिले सिपाही बाहर निकला। अपनी हमेशा की आदत के अनुसार वह जेबों में हाथ डाले, मूँछें चबाता हुआ आराम से झूमता चला जा रहा था।

उसके बाद तान्या आई। उसके नेत्र प्रसन्नता से चमक रहे थे। होठों पर मुस्कहाट थी। वह ऐसे चल रही थी मानो सपने में इधर उधर झूमती हुई चली जा रही हो।

हमारे लिए यह सब कुछ असह्य हो उठा था। हम सब एक साथ तेजी से द्वार की ओर दौड़े और अहाते में आकर एक भयंकर आवाज में उसकी ओर चीखने चिल्लाने और सीटियाँ बजाने लगे।

वह हमें देखकर चौंक उठी और अपना एक पैर कीचड़ में डाले मूर्ति के समान स्तब्ध हो गई। हमने उसे घेर लिया और पाशविक क्रूरता से उस पर अपमान और गालियों की बौछार करने लगे।

यह देखकर कि वह चारों ओर से घिरी हुई है और भाग नहीं सकती, हमने इत्मीनान से, निश्चिन्त होकर उसे मन भर कर गालियाँ दीं और अपमान किया। यह ताज्जुब की बात थी कि इतने पर भी हमने उस पर हाथ नहीं उठाया था। वह हमारे बीच में खड़ी थी और भयभीत सी होकर इधर उधर देखती हुई हमारी गालियों को सुन रही थी। हम और भी अधिक निर्दयतापूर्वक, भयानक वेग से उस पर अपने क्रोध का विष और गन्दगी उछाले जा रहे थे।

सरदार ने अपना कलछा उठाया और भट्टी की ओर मुड़ते हुए शांत भाव से कहा—

"अच्छा—काम समाप्त हो गया वह सिपाही जीत गया बदमाश, नीच कहीं का "

हम सब भेड़ों के झुंड के समान परस्पर टकराते हुए मेज पर जाकर चुपचाप बैठ गए और हताश होकर अपना काम करने लगे। थोड़ी देर में किसी ने कहा—

"सम्भव है ऐसा न हो "

"चुप रहो। बहुत हो चुका," सरदार चीखकर बोला।

हम जानते थे कि वह एक चतुर आदमी है, हम सब से अधिक चतुर। उसकी वह चीख बता रही थी कि उसे उस सिपाही की विजय का पूर्ण विश्वास हो गया था। हम सब दुखी और व्यग्र हो उठे।

दोपहर में, खाने की छुट्टी के समय वह सिपाही अन्दर आया। वह सदा की भाँति साफ सुथरा और बना ठना हुआ था। उसने हमेशा की तरह हमारी ओर गहरी निगाह से देखा। हम उससे आँखें मिलाने में घबड़ा रहे थे।

"अच्छा—मेरे प्यारे साथियो-क्या तुम यह देखना चाहते हो कि एक सिपाही क्या कर सकता है?" उसने गर्वपूर्वक व्यंग की हसी हसते हुए हम से कहा। "तुम लोग बाहर गलियारे में चले जाओ और सन्ध में से देखना कि क्या होता है समझ गए न?"

हम सब एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते, एक साथ गलियारे में पहुँचे और अहाते की ओर वाली काठ की दीवाल में बनी हुई सधों में अपनी आँखे लगा दीं। हमें ज्यादा देर इन्तजार नहीं करना पड़ा। जल्दी से तान्या तेज कदम उठाती हुई अहाते की ओर से आई। वह चौकन्नी होकर चारों ओर देख रही थी और बर्फ के गलने से उत्पन्न हुई कीचड़ पर सम्हल कर पैर रखती हुई चल रही थी। वह गोदाम के दरवाजे में जाकर गायब हो गई। उसके पीछे मस्ती से कदम उठाता तथा सीटी बजाता हुआ वह सिपाही

आया। उसके हाथ जेबों में पड़े हुए थे और वह अपनी मूछें चबाता जा रहा था। अन्त में वह भी वहीं जाकर गायब हो गया।

बूँदा बाँदी होने लगी थी। बूँदें कीचड़ में पड़ रही थीं जो और भी बढ़ती जा रही थी। यह एक सीला और मनहूस दिन था, बहुत मनहूस मकान की छतों पर अब भी बर्फ दिखाई दे रही थी। जमीन पर इधर उधर कीचड़ के काले धब्बे पड़े थे। छत की बर्फ भी धूल के कारण मटमैली सी हो गई थी। ऐसे मौसम में उस गलियारे में खड़े होकर प्रतीक्षा करना बहुत अखर रहा था। सर्दी भी महसूस हो रही थी।

उस गोदाम में से पहिले सिपाही बाहर निकला। अपनी हमेशा की आदत के अनुसार वह जेबों में हाथ डाले, मूँछें चबाता हुआ आराम से झूमता चला जा रहा था।

उसके बाद तान्या आई। उसके नेत्र प्रसन्नता से चमक रहे थे। होंठों पर मुस्कराहट थी। वह ऐसे चल रही थी मानो सपने में इधर उधर झूमती हुई चली जा रही हो।

हमारे लिए यह सब कुछ असह्य हो उठा था। हम सब एक साथ तेजी से द्वार की ओर दौड़े और अहाते में आकर एक भयंकर आवाज में उसकी ओर चीखने चिल्लाने और सीटियाँ बजाने लगे।

वह हमें देखकर चौंक उठी और अपना एक पैर कीचड़ में डाले मूर्ति के समान स्तब्ध हो गई। हमने उसे घेर लिया और पाशविक क्रूरता से उस पर अपमान और गालियों की बौछार करने लगे।

यह देखकर कि वह चारों ओर से घिरी हुई है और भाग नहीं सकती, हमने इत्मीनान से, निश्चिन्त होकर उसे मन भर कर गालियाँ दी और अपमान किया। यह ताज्जुब की बात थी कि इतने पर भी हमने उस पर हाथ नहीं उठाया था। वह हमारे बीच में खड़ी थी और भयभीत सी होकर इधर उधर देखती हुई हमारी गालियों को सुन रही थी। हम और भी अधिक निर्दयतापूर्वक, भयानक वेग से उस पर अपने क्रोध का विष और गन्दगी उछाले जा रहे थे।

उसका चेहरा मुर्दे के समान पीला पड़ गया। उसकी सुन्दर नीली आँखें, जो एक क्षण पूर्व खुशी से चमक रही थीं, फटी सी रह गईं। उसकी छाती धड़कने लगी तथा होंठ काँप रहे थे।

और हम उसे चारों ओर से घेरे हुए उस पर अपने मन का गुब्बार निकाले जा रहे थे क्योंकि उसने हमें लूट लिया था। वह हमारी थी। हमने अपना सर्वस्व उस पर निछावर कर रखा था। चाहे हमारी वे भावनाएँ जो हमारा सर्वस्व थीं, भले ही गरीबों के धन के समान नगण्य थीं, परन्तु हम छब्बीस थे और वह एक। ऐसा कोई भी त्रासदायक दण्ड नहीं था जो उसके उस भयंकर अपराध के लिए पूर्ण रूप से उचित ठहरता। ओह! हम उसे बुरी तरह से लथेड़ रहे थे। . उसने एक भी शब्द नहीं कहा। वह चुपचाप भयभीत घिरी हुई हरिणी के समान भय से हमारी ओर देख कर काप उठती थी।

हमने उसे झिड़का, उस पर घुर्राये और जोर जोर से चीखे। दूसरे आदमी भी हमारे साथ आ मिले। हममें से एक ने तान्या के ब्लाउज की बाँहें खींचीं... ..

अचानक उसकी आँखें गुस्से से चमक उठीं। हाथ ऊपर उठाकर अपने बाल संवारते हुए उसने तेज परन्तु शान्त स्वर में हमारे मुंह की ओर देख कर कहा—

"ओह! तुम जलील जेल के कीड़ो...।"

और वह हम लोगों के बीच में से तीर की तरह तेजी से निकल कर चली गई, मानो वहाँ हमारा अस्तित्व ही न हो। वास्तव में यही कारण था कि हम में से कोई भी उसके योग्य नहीं बन सका था।

जब वह हमारे घेरे से बाहर निकल गई तो उसने बिना मुड़े गर्वपूर्वक घृणा के स्वर में कहा—

"ओह। तुम गन्दे कीड़ो, शैतान जानवरो.. " और वह गर्वीली सुन्दरी सिर उठाए सीधी चली गई।

हम लोग उस अहाते की कीचड़ में खड़े रह गए। ऊपर से पानी पड़ रहा था और हमारे ऊपर ऐसे धुँधले आसमान की छाया थी जिसमें सूर्य की किरणों का कहीं पता न था।

तब हम सब चुपचाप अपने उस सील से भरे हुए काल कोठरी जैसे पत्थर के तहखाने में लौट आए। पहले की ही तरह, सूर्य की किरणों ने खिड़की से हमारे उस तहखाने में कभी भी प्रवेश नहीं किया और न फिर तान्या ही कभी आई।

अनोखी कहानी

जब लम्बी नाक और लाल बालों वाले डक्टर ने, एगोर वायकोव के शरीर को अपनी ठन्डी उँगलियों से थपथपा कर जोर देते हुए, अपनी धीमी आवाज में कहा कि बीमारी की उपेक्षा की गई है और अब वह खतरनाक हो उठी है, तो वायकोव ने अनुभव किया कि किसी ने उसके साथ अन्याय किया है—जैसे कि उसने उस समय अनुभव किया था जब अपनी जवानी के दिनों में, एक गहरी अन्धेरी रात में, तुर्की की लड़ाई के दौरान में उसने एक नए कच्चे रंगरूप को देखा था जो येनिजआ के पास एक टूटी हुई टाँग लिए कंटीली झाड़ियों में पड़ा हुआ था। पानी से वह तरवतर हो रहा था और घाव की पीड़ा जैसे उसके गोश्त को हड्डियों से धीरे धीरे काट कर अलग कर रही थी।

"क्या इसका यह मतलब है कि शीघ्र ही मेरी मृत्यु हो जायगी?" उसने पूछा।

डाक्टर ने मेज के पास बैठ कर दवाई की पर्ची लिखने का प्रयत्न करते हुए जंग खाए हुए कलम को चलाया और धीरे से कुछ बड़बड़ाया। परन्तु वायकोव ने जो व्याकुलतापूर्वक खिड़की की ओर देख रहा था उसकी बात नहीं सुनी। सड़क पर चिड़ियों के पंख, कतरनें और धूल उड़ रही थी।

"तुम बहुत अधिक शराब पीते रहे हो।" डाक्टर ने कहा।

उस बीमार आदमी ने मन ही मन डाक्टर को गालियाँ दीं और गुस्से से बोला।

"यह कारण नहीं है। बहुत से आदमी शराब पीते हैं परन्तु वे सब समय से पहले कभी नहीं मरते।" उसने अपने भीतर एक धीमी सी आवाज़ सुनी जो उस पर हँसती हुई सी कह रही थी—

"जैसे एक मुर्गी—वह जिन्दा रहेगी, अन्डे देगी और बच्चों को सेयेगी। परन्तु तुम-तुम मर जाओगे, और तुम्हारे इस कठोर जीवन का सारा परिश्रम व्यर्थ हो जायगा।"

चुपचाप डाक्टर को दरवाजे तक पहुँचा कर, वायकोव ने अपने को नंगे पैरों में चप्पल और शरीर पर एक ड्रेसिङ्ग गाउन पहने हुए शीशे में देखा। शीशे में उसका दुबला पतला चेहरा, दुख से भरी हुई आँखें और एक लम्बी सीधी दाढ़ी जो उसके गालों से ठोढ़ी पर होती हुई सीने पर पड़ी हुई थी, अप्रत्याशित रूप से स्पष्ट दिखाई देने लगी।

वायकोव गहरी सांस ले धीरे से कराहा, और खिड़की के पास पड़ी हुई एक चमड़े की आराम कुर्सी पर बैठकर नाक से गहरी साँस लेने लगा। उसने अपनी दाहिनी तरफ भयंकर पीड़ा का अनुभव किया जो निरन्तर उसके जिगर को कुरेदती हुई और सारे शरीर में एक थकावट की सी बेहोशी की लहर और अपने प्रति किए हुए अन्याय से उत्पन्न बेचैनी की भावना उत्पन्न कर रही थी।

"मैं बहुत ज्यादा शराब पीता रहा हूँ। परन्तु फिर मनुष्य अपने मन को कैसे सान्त्वना दे, मूर्ख?" वह डाक्टर की ओर देख कर घुर्राया जो अपनी गाड़ी पर चढ़ रहा था।

"क्या मैं खिड़की बन्द कर दूँ?"

मोटी, बेवकूफ खाना बनाने वाली अगाफिया दरवाजे पर खड़ी थी।

'मैंने तुमसे कितनी बार कहा है, लाल खटमल, कि आराम कुर्सी को खिड़की के पास धूप में मत रखा करो। देखो उसका रङ्ग कितना फीका पड़ गया है। तुम समझती हो कि सूरज केवल फर्नीचर को खराब करने के के लिए चमकता है?"

"आपने यह खुद वहाँ रखी थी" अगाफिया ने खामोशी से जवाब दिया।

वायकोव को याद आया कि इस आराम कुर्सी को खिड़की के पास तक सरकाने में उसे कितनी तकलीफ हुई थी, इस स्मृति ने और उस औरत की शान्त प्रकृति ने उसे और चिड़चिड़ा बना दिया।

"भाड़ में जा, कम्बख्त" उसने कहा।

अगाफिया गायब हो गई। वायकोव उसे जाते हुए देखकर सोचने लगा।

"वह अभी चालीस वर्ष और जीवेगी परन्तु मुझे मरना पड़ेगा। इस सारी जायदाद का क्या होगा। मुझे इतना भी अवकाश नहीं मिला कि शादी कर लेता, मैं सदैव इतना व्यस्त रहा। मुझे युद्ध समाप्त होने के बाद ही शादी कर लेनी चाहिए थी। अब तक मेरे बच्चे हो जाते। परन्तु मेरी दूरदर्शिता ने मुझे रोक दिया। और मैंने अपना इलाज भी तो बहुत देर में शुरू किया। कौन जानता था कि मेरे भाग्य में एक छोटा सा जीवन ही बदा था।

उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया और उसने शिकायत के स्वर में जोर से कहा।

"हे मेरे भगवान......"

जो बात उसे बहुत परेशान कर रही थी और जो सबसे अधिक मूर्खता की बात सी लग रही थी, वह यह थी कि उसके बाद उसकी जायदाद का मालिक कौन होगा जो उसने बीस वर्ष की मेहनत और चालाकियों से इकट्ठी की थी। इसे किसी मठ को दान कर दिया जाय या किसी पवित्र कार्य के लिए छोड़ दिया जाय? उसकी आत्मा ने इसे स्वीकार नहीं किया। वह खूब अच्छी तरह जानता था कि ये पादरी और पुजारी और वे सभी दूसरे आदमी जो भगवान के नाम पर मिली हुई जायदाद को सम्हालते हैं, विश्वास के योग्य नहीं और यह कि वे उनसे कम पापी नहीं हैं जिन्होंने अनजाने अनेकों पाप किए हैं। ईश्वर के विषय में भी उसे पूर्ण विश्वास नहीं था। ईश्वर के विषय में उसके विचार बड़े सतर्क और अविश्वास से भरे हुए थे। उसने हमेशा अनुभव किया था कि ईश्वर उसके प्रत्येक कार्य और विचारों को जानता है, और यह कि वह उसके हर कार्य को बड़े गौर से देखता रहा

है, और यह कि ईश्वर के अतिरिक्त और कोई दूसरा नहीं था जो उसे सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा है, उसे उसके लालच के लिए फटकारता रहा है, जो पूर्ण रूप से स्वाभाविक था और जो जीवन की एक मात्र संचालिका शक्ति है। अनेक ऐसे अवसर आए जब वायकोव ने सब काम पूरी तरह से ठीक ठाक कर लिया था कि अकस्मात उसकी आत्मा में अग्नि शिखा की तरह एक भावना उत्पन्न हुई जिसने अस्पष्ट, नीहारिका के समान धुँधले विचारों को जाग्रत कर दिया, हृदय में पाप और उसके दण्ड की भावना उत्पन्न कर दी और कभी २ एक ऐसी भावना उत्पन्न की जिसमें मनुष्यों के प्रति दया की भावना थी परन्तु किसी प्रकार वह उसे दबाने में सफल हो सका था।

उसने पूरी तरह अनुभव किया कि उसके साथ खिलवाड़ करने वाला शैतान नहीं था बल्कि स्वयं ईश्वर था जो अपनी मर्जी के खिलाफ उसे दूसरे लोगों के सम्मुख झुकने के लिए मजबूर करता रहा है और वह ज्यादा मजाक और आधे गुस्से के स्वर में अपने नौकर और विश्वस्त अनुचर किकिन से, जो कुबड़ा था और जिसकी आँखें चिड़ियों की तरह छोटी थीं, कहा करता था।

"मैं आदमियों पर रहम क्यों करूँ? किसी ने भी मुझ पर रहम नहीं किया। किसी ने भी मेरे साथ सहृदयता का व्यवहार नहीं किया।"

"बहुत बुरी बात है, सचमुच," किकिन अपनी सहमति प्रकट करता।

अचानक किकिन का ध्यान आ जाने पर उसने झाड़ू वाले बाँस को उठा कर छत को ठुकठुकाया। थोड़ी देर बाद एक कुबड़ा चुपचाप अन्दर आया। उसके पैर टेढ़े थे और जब वह चलता तो एक पैर दूसरे पैर पर पड़ता था। उसकी चाल बतख की तरह डगमगाती हुई थी।

"कहिए?" बीमार मुर्गी की सी आँखें झपकते हुए उसने नम्रतापूर्वक पूछा।

"मैं मर रहा हूं, तुम सुनते हो।"

किकिन ने अपने दाढ़ी विहीन चेहरे पर हाथ फेरा।

"शायद वह झूँठ बोलता है ?" उसने कहा। उसका मतलब डाक्टर से था।

"नहीं, मैं खुद जानता हूं।"

"हुह ! यह बहुत जल्दी है।"

"यही तो सब से बड़ी बात है। वाह ! इससे क्या होता है। अगर मुझे मरना है तो मरना पड़ेगा। तुम मौत से नहीं बच सकते। मैं एक सिपाही हूं। लेकिन मैं अपनी जायदाद का क्या करूँ"

कुबड़े ने फर्श पर पैर रगड़ते हुए चाय बनाई जैसी कि उसकी आदत थी और गहरी साँस लेकर बोला—

"कानून के अनुसार आपकी जायदाद आपके भतीजे याकोव सोमोव को मिलेगी।"

"हाँ वह मेरा भतीजा है जिसे मैं एक बार हटा चुका हूं।" वायकोव ने गुस्से से कहा और इस गुस्से ने उसके दर्द को और बढ़ा दिया। "मैं यह भी नहीं जानता कि वह कैसा है, उसका स्वभाव कैसा है। मैंने उसे जीवन में पाँच बार से अधिक नहीं देखा है।"

"फिर भी कानून के अनुसार ....."

"कानून ! .. " वायकोव कसम खाते हुए चिल्लाया।

"ऐसी हालत में इसे दान कर दीजिए," किकिन ने हिचकिचाते हुए सलाह दी।

"नहीं, मैं अपने बीजों को पत्थर पर नहीं बोऊँगा। यह ठीक नहीं लगता।"

वायकोव कुछ देर तक सोचता रहा और थोड़ी देर में अपने गुस्से को कुछ शान्त कर कुबड़े से उस भतीजे को कल भोजन पर बुलाने के लिए कहा।

"मैं देखूंगा कि वह किस तरह का प्राणी है।"

याकोव सोमोव शाम को आया, आदरपूर्वक चाचा के सम्मुख झुका और मिलाने के लिए हाथ बढ़ाए बिना बोला, "आपके कैसे मिजाज हैं ?"

उसकी आवाज भारी नहीं थी परन्तु उसमें एक स्पष्टता और तेजी थी। उन शब्दों की ध्वनि में एक विशेषता थी, वे केवल दिखावे के खोखले शब्द नहीं थे। उनमें शुभकामना की भावना ओत प्रोत थी। वह लम्बा नहीं था परन्तु खूब हृष्ट पुष्ट और नम्र था। उसके रूखे चेहरे पर नीली आँखें शान्त भाव से चमक रही थीं। सुन्दर बालों का एक गुच्छा कज्जाक की लटों की भाँति उसके बाँए कान पर होकर लटक रहा था। लम्बी नाक के नीचे छोटी सुन्दर घुँघराली मूछें चमक रही थीं। उसमें शक्ति, निर्मलता और एक विशेष प्रकार का आकर्षण था। वायकोब ने एक झलक में ही इन सब बातों को देख लिया लेकिन जैसा कि वह स्वभाव से ही दूसरे आदमियों के प्रति शक्की था, उसने अपने आप कहा—

'चेहरा मूर्खों का सा है। यह जरूर लड़कियों के पीछे भागता होगा।"

इस युवक का नजदीक से सूक्ष्म निरीक्षण कर, जो एक साधारण नीली कमीज, छोटी सी जाकट और उसी कपड़े की पतलून ऊँचे लम्बे जूतों के ऊपर पहने हुए था, वायकोब ने कष्ट से आँखें मींचते हुए, उस भतीजे से एक पक्के दुनियाँदार आदमी की तरह पूछा कि उसकी अवस्था क्या है, वह क्या काम करता है, अपने अवकाश का समय कैसे व्यतीत करता है आदि। यह मालूम हुआ कि याकोब की अवस्था उन्तीस वर्ष की है, वह एक लकड़ी के गोदाम मे लकड़ी बेचने वाले क्लर्क का काम करता है, वर्ष में होने वाली प्रार्थना में सबसे पहले आता है और उसे शिकार का शौक है और किताबें पढ़ने का भी! उस लड़के द्वारा बताए गए इस विवरण को शान्तिपूर्वक सुनते हुए वायकोब ने गुस्से से अपने आप सोचा—

"वह ऐसे बात करता है मानो पादरी के सम्मुख अपने पापों को स्वीकार कर रहा हो। वह जरूर झूठ बोल रहा है। उसने भाँप लिया है कि मैंने उसे किसलिए बुलाया है और इसीलिए अच्छा बनने का प्रयत्न कर रहा है।"

अनिच्छापूर्वक अपने पीले चेहरे पर एक फीकी हसी लाकर उसने कहा—

"मैं मर रहा हूँ।"

और उसने लड़के को जवाब देते हुए सुना—

"आप ऐसा क्यों कहते हैं ?"

"तुम्हारा क्या मतलब है, क्यों ?" वायकोव ने आश्चर्य और गुस्से से पूछा, "मैं बहुत बीमार हू।" और फिर जोर देते हुए अपने आपसे कहा—"यह लड़का मूर्ख है।"

परन्तु याकोव सान्त्वना देने वाले शब्दों में कहता गया जो वायकोव को बड़ा विचित्र लगा।

"हर मर्ज का इलाज है," उसने कहा, "जैसे उदाहरण के लिए गाजर का रस। लगभग एक वर्ष पूर्व मुझे अजीर्ण की शिकायत थी और हमारी प्रार्थना करने वाले की माँ ने जो एक बहुत नेक और बुद्धिमान स्त्री है, सलाह दी कि मैं रोज सुबह, खाली पेट एक ग्लास भरकर गाजर का रस पिया करू। मैंने ऐसा ही किया और अच्छा हो गया।"

सुन्दर ढङ्ग से मुस्कराते हुए सोमोव ने अपने गले और सीने पर हाथ फेरा चौर वायकोव ने अनुभव किया कि उसके भतीजे के इन शब्दों ने उसके दर्द को कम कर दिया है।

"तुम्हें तो अजीर्ण था परन्तु यह दूसरी बीमारी है।" उसने कहा।

"परन्तु बदहजमी भी तो एक बीमारी है। आपको गाजर का रस अथवा सिरके में भीगी हुई मूली का व्यवहार करना चाहिए क्योंकि इनमें शोरा की मात्रा अधिक होती है और शोरा कमजोरी दूर करने के लिए सबसे अच्छी चीज है। जब मछली को नमक लगाकर रख दिया जाता है तो उसमें शोरा की मात्रा बढ़ जाती है जो कमजोरी को दूर करती है। हरेक बीमारी कमजोरी से ही पैदा होती है, आप जानते हैं।"

वायकोव को सोमोव की इन बातों का सुनना बड़ा अच्छा लग रहा था। शब्द उसके मुँह से सुन्दर बालू की अजस्र धारा की भाँति निकल रहे

थे जिनके नीचे वायकोव के मन का वह अविश्वास ढक्ता जा रहा था जो उस भतीजे के यौवन को देखकर उसके मन में उत्पन्न हो उठा था।

"तुम यह सब कैसे जानते हो ?" वायकोव ने उससे पूछा।

याकोव ने उत्सुकतापूर्वक मानो अपने किसी पुराने मित्र से बातें कर रहा हो, वायकोव को अपने एक मित्र के विषय में बताया जो एक शिक्षित और अच्छा मछली पकड़ने वाला व्यक्ति था, और जिसने पिछली शरद ऋतु में आत्महत्या करली थी।

"उसने ऐसा क्यों किया ?"

"असफल और एकाँगी प्रेम के कारण।"

"आत्महत्या करली ! यह मूर्खता है।"

"वह बड़ा सरल प्रकृति का व्यक्ति था।"

"तो इससे क्या ?"

"वह अपनी भावनाओं का अपमान नहीं सह सकता था।"

"आह !" वायकोव ने अपने मनमें कहा—"यह एक विचित्र लड़का है—बातूनी। परन्तु है जवान-तन्दुरुस्त !"

और इस प्रकार इधर उधर की बातों में बहुत समय बीत गया। फिर सोमोव ने घड़ी की धीमी चलती हुई सुइयों की ओर देखकर कहा कि अब उसका रिहर्सल के लिए जाने का समय होगया और चाचा से अत्यन्त विनयपूर्वक आज्ञा लेकर चला गया।

येगोर वायकोव एक सोफे पर लेट गया और विचारों में डूब गया। लम्बी बातचीत उसे हमेशा थका देती थी ? इतनी बातें करने की क्या जरूरत थी ? तुम फौरन जान सकते हो कि आने वाला तुम्हारे पास किसलिए आया है और यह भी कि तुम उससे क्या चाहते हो। लेकिन यह व्यक्ति इन सब से भिन्न था यद्यपि है अभी लड़का ही। वह अत्यन्त नम्र था और उसने वायकोव के साथ अपनी रिश्तेदारी होने की बात एक बार भी नहीं कही। उसने एक बार भी उसे 'चाचा' नहीं कहा हालाँकि वह निश्चयपूर्वक इस बात को जानता था कि उसका चाचा बिलकुल अकेला है।

शायद यह उसकी चालाकी हो? लेकिन उसकी बातों से तो ऐसा नहीं मालूम पड़ा।

किकिन गोदाम से लौट आया जहाँ वह आए हुए माल को रखवा रहा था। वह बहुत थका हुआ और पसीने से डूब रहा था। वह मेज पर बैठ गया और बोला:

"क्या वह यहाँ आया था?

"हाँ"

'फिर क्या हुआ?"

"तुम पहली ही मुलाकात में किसी के विषय में कुछ नहीं कह सकते। उसका व्यवहार आत्मीयतापूर्ण था।"

किकिन ने प्याले में चाय डाली और एक भूखे और लालची आदमी की तरह जल्दी जल्दी रोटी और गोश्त चबाता हुआ मालिक की बातें सुनने लगा:

"वह उन आदमियों में से है जो सान्त्वना देते हैं। वे धोखेबाज होते हैं। मैं उनका विश्वास नहीं करता। न मुझे दोस्ती का दम भरने वाले ही पसन्द हैं क्योंकि उनकी मुझसे नहीं पट सकती। मनुष्य इस प्रकारकी जिंदगी बिताने के आदी हो गए हैं मानो ईश्वर ने उन्हें ससार में एक दूसरे का मज़ाक बनाने के लिए ही भेजा है।"

"यह सत्य है!" कुबड़े ने कहा जैसे उसे स्वय इसका अनुभव हो। अपनी कुरूपता के कारण उसे जिन्दगी भर क्रूर उपहास सहन करना पड़ा है।

"यही तो खास बात है! और शैतान हम लोगों को आपस में मुर्गों की तरह लड़ा देता है। आदमी पाप करता है और शैतान प्रसन्न होता है परन्तु ईश्वर की इच्छाओं का किसी को ज्ञान नहीं है। ईश्वर थिएटर में उपस्थित पुलिस अफसर की तरह देखता रहता है और बोलता कुछ नहीं • •।"

वायकोव कुछ देर तक इसी तरह गुस्से की सी आवाज में बोलता रहा और फिर थककर उसने आँखे बन्दकर लीं और बोला•

"तुमने उसके विषय में क्या सुना है।''''''''''मेरा मतलब याकोव से है।"

किकिन ने रोटी के एक टुकड़े पर शहद लगाया और उसकी ओर कुर्सी घुमाकर बोला :

"उसका मालिक टिटोव बता रहा था कि वह एक मेहनती लड़का है परन्तु कभी कभी वह ऊटपटाँग से काम कर बैठता है।"

"इसका क्या मतलब हुआ ?"

"टिटोव इस बात को ठीक तरह से नहीं समझा सका लेकिन जहाँ तक मैं समझ सका हूं कभी कभी याकोव ऐसे काम कर बैठता है जो उसे नहीं करने चाहिए। मैंने चर्च के पादरी से उसके विषय में पूछा परन्तु उसने सोमोव की ज्यादा प्रशंसा नहीं की। परन्तु, वास्तव में, तुम्हें, जो कुछ उसने कहा है, उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि वे दोनों मित्र हैं और एक साथ मछली मारने जाते हैं। उसकी मकान-मालकिन ने बताया कि वह केवल मित्रों में बैठकर शराब पीता है और उसके वे साथी जिनके साथ वह रहता है गरीब हैं—कोनोनोव के यहाँ ढलाई का काम करने वाले मजदूर, मिस्त्री और नाई आदि।

"तुम क्या यह चाहते हो कि वह शहर के गवर्नर के साथ मित्रता रखे ?"

"वह कभी किसी बुरी स्त्री को घर नहीं लाता। वह सफाई और नियमबद्धता पसन्द करता है और रहमदिल है।"

"रहमदिल ?"

"हाँ"

"इसलिए कि वह युवक है। अच्छा, अच्छा ठीक है''''' उसे यह मालूम होगया होगा कि तुम उसके विषय में जाँच करते फिर रहे थे और यह भाँप गया होगा कि मैंने उसे किसलिए बुलाया है। क्यों, तुम ऐसा नहीं सोचते ?"

"नहीं ऐसी बात नही है। मैं बहुत सावधान था।"

वायकोव चुप हो गया और थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर बोला "अच्छा, अब आगे क्या किया जाय ? मेरा ख्याल है कि कुछ तो करना ही पड़ेगा। फिर भी उसके विषय में और बातों का पता चलाओ। और उससे फिर यहाँ आने के लिए कहना। कह देना कि मैं उसे निमन्त्रित करना भूल गया था।"

और फिर उसने पीड़ा के स्वर में कहा,

"परन्तु सोचो तो मुझे क्या हुआ ? मैंने निरन्तर जी तोड़ मेहनत की और अपनी आत्मा पर इतने पापों का बोझ लाद लिया, लेकिन किसके लिए ? एक अजनबी के लिए, एक कायर व्यक्ति के लिए। इस बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है, क्यों ?"

"यह तकदीर का बुरा खेल है।" कुबड़े ने अपने शब्दों पर बल देकर अपनी गोल आँखों को झपकाते हुए कहा।

वायकोव की बीमारी मानो डाक्टर के अनुमोदन की प्रतीक्षा कर रही थी क्योंकि डाक्टर के आने के बाद ही उसने भयकर रूप धारण कर लिया। उसकी बगल का धीमा सा दर्द बढ़ गया। उसका दिमाग परेशान हो गया और उसे ऐसा लगने लगा मानो दुख और क्रोध के कीड़े उसके शरीर के प्रत्येक भाग को निरन्तर खोखला बनाते जा रहे हों।

"अब कैसी हालत है ?" किकिन ने पूछा।

वायकोव अपने कर्कश स्वभाव के अनुसार घुर्राया :

"बहुत बुरी। यह पहला अवसर है जब कि मैं मर रहा हूँ। अभी मैं इसका आदी नहीं हो पाया हू।"

वह मजाक करने का शौकीन था और कभी कभी कठोर व्यङ्ग करता था। उसका यह गुण उसके लिए उस समय बड़ा लाभदायक होता जब वे आदमी जो उससे सताए गए थे उसे गालियाँ देते और बुरा भला कहते।

"यह ईश्वर की इच्छा थी कि मैं तुमसे, जो कुछ अच्छा है सब ले लूं।" ऐसे मौकों पर वह कहा करता।

परन्तु इस समय वह मजाक करने के मूड में नहीं था। यह तो उसकी आदत थीजैसे कि वह हमेशा किया करताथा। इसीसे इस समय उसने किकिन

से मजाक किया जिस पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह दिन भर सोफे पर, मूर्ति के नीचे, कोने में सिर नीचा किए पड़ा रहता और यह अनुभव करता रहता कि वह ढोल की तरह खोखला और केवल एक इस विचार को छोड़ कर रिक्त सा होता जा रहा है :

"मैं मर रहा हूँ। क्यों ?"

रह रह कर इस विचार को दूर करने के लिए वह आधे भूले हुए प्रार्थना के शब्द दुहराने लगता :

"मालिक, सर्व शक्तिमान......मुझे हर प्रकार के कष्ट से उबार ले... बुराइयों से मेरी रक्षा कर···बुरी आत्माओं से, रात और दिन को···"

परन्तु उसे अनुभव हुआ कि स्वयं को ईश्वर के भरोसे छोड़ देने की भावना दृढ़ करने तथा इस बात को स्पष्ट करने के बजाय कि उसकी अकाल मृत्यु निश्चित है, इन शब्दों ने उसके पापों और दुखों की भावना को और गहरा बना दिया।

वह उठा और कन्धों पर एक लबादा डालकर शीशे के सामने होता हुआ खिड़की के नीचे अतलान्त गट्ठर पर आ खड़ा हुआ। शीशे में, जैसे ही वह सामने से गुजरा, एक लम्बा पतला शरीर प्रतिबिम्बित हो उठा जिसका चेहरा राख की तरह काला, नेत्र निष्प्रभ और दाढ़ी उलझी हुई थी जैसी कि जेल के कैदियों की होती है। श्रृङ्गार की मेज से उसने कंघा उठाया, आराम कुर्सी पर बैठ कर अपने बाल और दाढ़ी सुलझाई और फिर बैठा हुआ सड़क की ओर बने हुए, घरों को देखने लगा जो घने बगीचों से एक दूसरे से पृथक किए हुए, मजबूत और ठोस बने थे और जिनका शताब्दियों तक खड़े रहने का अनुमान किया गया था।

सड़क गर्म, निस्तब्ध और सूनी हो रही थी। सब पड़ोसी देहात में अपने ग्रीष्म निवासों में चले गए थे और चौकीदार दरवाजों पर गपशप लड़ा रहे थे। बागों में चहचहाने वाली चिड़ियों की ध्वनि के अतिरिक्त चारों ओर पूर्ण शान्ति थी परन्तु इसने भी ईश्वर द्वारा किए गए अन्याय के प्रति उसके विचारों में कोई भी बाधा नहीं डाली।

"वे मकान, उदाहरण के लिए मानलें," उसने सोचा, "वे ईंटोंके बने हुए मनुष्यों के घोंसले, गहरी नींव पर बने हुए हैं और अनिश्चित लम्बे काल तक खड़े रहेंगे परन्तु इन मकानों का निर्माता मानव जो अपने हाथ के परिश्रम से इस पृथ्वी को सजाता है, बहुत थोड़े समय में ही मर जाने के लिए उत्पन्न हुआ है। क्यों ? क्यों, येगोर इवानोव वायकोव, साम्राज्य का उच्चाधिकारी, सम्मानित नागरिक और एक धनी व्यापारी जो अभी आधी शताब्दी भी नहीं जी सका है, इतने शीघ्र अकाल मृत्यु को प्राप्त होगा ? क्या वह दूसरों से अधिक पापी है ? और क्या एक व्यक्ति को पापी होने के कारण मर जाना चाहिए ?"

वह बीमार आदमी उस संध्या को अपने स्वास्थ्य में एक अच्छा परिवर्तन पाता जब सोमोव वहाँ आता। उसके भतीजे की बातें उसके ध्यान को उस बीमारी के भयकर विचार से थोड़ी देर को हटा देतीं और वह इस युवक में अधिक रुचि लेने लगता और उसे समझना चाहता। यह उसके हृदय में एक तीखी जलन की भावना भी उत्पन्न कर देता क्योंकि वह बहुत समय तक जिन्दा रहेगा, शान्त जीवन बिताएगा और धनवान बन जायगा और यह सब उसे दूसरे के परिश्रम से प्राप्त होगा। वह बिना पाप किए ही जीवन व्यतीत कर सकेगा। क्या यह अन्याय नहीं था ? और क्या यह उपहासास्पद और मूर्खता की बात नहीं थी ?

याकोव की बातचीत वास्तव में बहुत रोचक होती थी, और कभी कभी वायकोव उसकी अच्छाई और सुन्दर विचारों को देख कर एक मधुर आश्चर्य से भर उठता। परन्तु उसे अपने भतीजे द्वारा व्यक्त विचारों में बुद्धिमत्ता और मूर्खता का एक अद्भुत मिश्रण दिखाई देता। यह उसे अपने भतीजे के प्रति कोई अन्तिम और निश्चित धारणा बनाने से रोक देता, यद्यपि वह शीघ्रातिशीघ्र उसके विषय में अपनी अन्तिम धारणा बना लेना चाहता था।

"क्या वह अपने स्वभाव से ही मूर्ख है अथवा अपने यौवन के कारण है ?" याकोव की बातें सुनते हुए वह स्वयं से प्रश्न करता। भतीजा उदासीनता पूर्वक मुस्कराता और कहता

"जैसे दूसरे आदमी जीवन बिताते हैं उस तरह जीवन बिताना तो बड़ा नीरस है और दूसरी तरह से रहना तो और भी कठिन है।"

"बिलकुल यही बात है," वायकोव ने अपनी सहमति प्रकट की, "सब मनुष्य भी तो एक ही तरह के नहीं होते।"

और वह बहुत उत्तेजित हो उठा जब इस दर्शनीय सुन्दर युवक ने उसकी इस अन्तिम बात को न काटते हुए फिर भी बलपूर्वक अपनी बात कही :

"अगर तुम ध्यानपूर्वक देखो तो वे सब मुख्य रूप से एक से ही हैं।"

"वह मुख्य बात क्या है ?"

"दूसरे व्यक्तियों द्वारा किए गए परिश्रम के फल पर जीवित रहने की इच्छा करना।"

वायकोव ने धीरे से अपनी दाढ़ी सहलाई और इस बात पर विचार किया। हाँ, उसके भतीजे का कहना ही सत्य है परन्तु वह स्वयं भी तो दूसरों के परिश्रम के फल पर जीवन बिताएगा—वायकोव के परिश्रम के फल पर। क्या वह इसे समझता है ? अगर वह इसे समझ गया है तो वह अपने स्वार्थ के खिलाफ ही बहस कर रहा था और इसलिए मूर्ख है। और यदि वह उसे नहीं समझ सका है तो भी वह मूर्ख है। दोनों में कोई फरक नहीं पड़ता। दोनों एक ही बात हैं।"

याकोव के चरित्र के वास्तविक रूप को समझने का प्रयत्न करते हुए उसने कहा।

"प्यारे भाई, जीवन एक युद्ध के समान है। इसका नियम बहुत साधारण सा है—अवसर को कभी मत खोओ।"

"यह बिलकुल ठीक है। और यही सब मुसीबतों का कारण है।"

"परन्तु मुसीबतों से कोई नहीं बच सकता !"

वायकोव मुस्कराया परन्तु बोला कुछ नहीं। उसने सोचा कि उसके भतीजे के निर्मल मुख पर आई हुई मुस्कान असमयोचित,

पूर्ण तथा व्यर्थ और उसमें दूसरे की भावनाओं को चोट पहुचाने की इच्छा थी।

"वह सोचता है कि वह चतुर है।" याकोव की ओर आधी बन्द आँखों से देखते हुए उसने सोचा।

इससे भी अधिक बात उसे उस समय खटकी जब याकोव बात करते२ अचानक बीच में ही चुप हो गया और नीची आँखें किए चाय के चम्मच पर उँगलियाँ घुमाने लगा और अपने कोट के बटन से खेलने सा लगा। वह उस आदमी की भाँति चुप रहा जिसके पास कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात कहने को हो परन्तु वह उसे कहना न चाहता हो।

एक बार इस चुप्पी ने वायकोव को इतना क्रुद्ध कर दिया कि वह बुरी तरह चीख उठा .

"तुम समझ रहे हो कि मैं तुमसे क्या कह रहा हूं ?"

याकोव ने नम्रतापूर्वक और अपराधी की सी मुद्रा में कहा .

"मैं समझ रहा हूँ परन्तु आपसे सहमत नहीं।"

"क्यों ?"

"मेरी भिन्न राय है।"

"कौन सी राय ? गोली मारो इसे ! बात करो और बहस करो। तुम चुप क्यों हो जाते हो ?"

याकोव ने उसी तरह नम्रतापूर्वक कहा।

"मैं बहस करना पसन्द नहीं करता। और दूसरी बात यह है कि मैं बहस नहीं कर सकता। मेरा अपना मत यह है कि बहस मनुष्यों में केवल मतभेद उत्पन्न कर देती है।"

"इसलिए मनुष्यों को चुप रहना चाहिए। यही तुम्हारा मतलब है ?"

याकोव इस प्रश्न को टहलाते हुए आगे कहता गया :

"मनुष्य बहस करके सत्य को छिपाना चाहते हैं," उसने कहा "सत्य बड़ी सीधी सी बात है। बच्चों की तरह छोटे बन जाओ। पड़ोसियों को अपनी ही तरह प्यार करो। इसके खिलाफ बहस करना बड़ा अशोभनीय है।"

"वह तो एक सन्त की तरह बात करता है।" वायकोव ने चिढ़कर सोचा और व्यङ्गपूर्वक हँस पड़ा यद्यपि इस हँसी ने उसकी पीड़ा को और बढ़ा दिया।

"अच्छा, क्या तुम बच्चे की तरह सरल बन सकते हो? अपने पड़ोसियों को प्रेम कर सकते हो! अभी तुम यह बात स्वीकार कर चुके हो कि जीवन एक संग्राम है, और अब...उससे काम नहीं चलेगा, भाई। यह बहुत निर्बल तर्क है।"

इस व्यङ्ग से अप्रतिभ न होते हुए याकोव ने पूर्ण दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया:

"आखिरकार दुख को भुलानेका और कोई साधन भी तो नहींहै। इस लिए मनुष्यों को इस विचारधारा को अपनाना ही पड़ेगा।"

"किस विचारधारा को?"

"सादा और सरल जीवन व्यतीत करने वाली—बिल्कुल बच्चों के समान।"

"तुम मूर्ख हो, युवक! बच्चे इस पृथ्वी पर सबसे अधिक दुष्ट प्राणी हैं यह तुम जानते हो? उन्हें गौर से देखो और तुम्हें मालूम होगा कि वे जङ्गलियों की तरह एक दूसरे को कितनी बुरी तरह से पीटते हैं।"

भतीजा मुस्कराया और चुप होगया।

वायकोव उसे डाँटना चाह रहा था परन्तु उसने अपने को सम्हाल लिया। पीड़ा से कराहते हुए से स्वर में वह बोला:

"अच्छा ठीक है। जाओ। मैं थक गया हूं।"

वह खिड़की के पास बैठ गया और संध्या के लाल बादलों को, जिनकी चमक बग़ीचों पर पड़ रही थी, देखता हुआ विचारों में डूब गया।

"एक विचित्र लड़का है।" वह गम्भीरतापूर्वक बोला—"उसके मस्तिष्क में कितने सुन्दर और मधुर विचार भरे हुए हैं। वह एक छाया की तरह अस्पष्ट है। उसे समझना बड़ा कठिन है—किसी प्रकार भी नहीं।"

"हे भगवान! पहेलियाँ, चारों ओर पहेलियाँ..."

"वह धीरे धीरे खाता है। यह बुरा लक्षण है। आलसी आदमी धीरे खाते हैं। और उसकी खुराक भी कम है। एक सभ्य व्यक्ति के समान धीरे धीरे छोटे छोटे गस्सों में घन्टों तक उसे चबाता रहता है जैसे कि बुड्ढे आदमी चबाते हैं हालाँकि उसके दाँत खूब मजबूत हैं। और वह गम्भीर भी है। इस अवस्था में उसे इतना सोचने की क्या आवश्यकता आ पड़ी है। और वह धीरे धीरे चलता भी है जैसे कि वह किसी अनजान प्रदेश में चल रहा हो। उसके चेहरे पर सुन्दर छोकरियों की सी झलक है और अगर उसके माथे पर बालों का गुच्छा न पड़ा रहता तो वह बिल्कुल लड़की की तरह दिखाई देता।"

"बच्चों के समान छोटे बन जाओ .... मूर्ख! उनकी तरह जीवन बिताने का प्रयत्न करो। शायद वह मूर्ख नहीं है परन्तु कोमल हृदय का है। उसने कभी कारखानों में मजदूरी नहीं की है और इसी कारण उसका हृदय कठोर नहीं बन पाया है। और वह जवान है इसलिए सोचता है कि अपने जीवन में न तो कोई उसके साथ अन्याय कर सकेगा और न वह स्वय ही दूसरों के साथ अन्याय करेगा। यह बुरी बात तो नहीं है परन्तु है असम्भव ..."

वायकोव ने अपने संघर्ष और कष्टों से भरे हुए जीवन के विषय में सोचा और स्वयं अपने प्रति उसके मन में ऐसी दया की भावना उत्पन्न हुई जिससे उसने अनुभव किया कि वह इस दया में से थोड़ा सा अंश अपने भतीजे को भी दे दे।

"वह जानता है कि जिस तरह से दूसरे आदमी रहते हैं उससे भिन्न प्रकार का जीवन बिताना बड़ा कठिन है और उसे यह मालूम हो जाना चाहिए कि पाप रहित जीवन बिताना वैसा ही है जैसे कि बिना घी के हलुवा बनाना बिल्कुल नीरस रहेगा। एक आदमी मुलायम बिस्तरों पर सोना चाहता है। फिर भी याकोव है अच्छा आदमी, खुश मिजाज है और उसकी नसों में भी अपने वंश—वायकोव वंश—का रक्त प्रवाहित हो रहा होगा।"

परन्तु जब किकिन आया तो वायकोव ने व्यङ्गपूर्वक कहा

च्छा, भाई, मेरा उत्तराधिकारी घमण्डी नहीं है। नहीं! वह वह कहता है, हमें छोटे बच्चों की तरह रहना चाहिए, तुमने

"यह तो बाइबिल का उपदेश है" कुबड़े ने अविश्वास पूर्वक कहा।

"क्या?"

"बाइबिल में है। ईसा मसीह वहाँ ..."

वायकोव गुस्से से घुर्राया और अपनी दुखती हुई पसलियों पर हाथ कर उसने पीड़ा से दांत भींच लिए।

"ईसा मसीह ईश्वर का बेटा है परन्तु मैं तो इवान वायकोव का पुत्र —एक किसान का। इससे बहुत बड़ा अन्तर पड़ जाता है। क्राइस्ट सन का पापार नहीं करता था और वह हम लोगों के साथ भी नहीं रहा।"

उसका गुस्सा बढ़ गया और अपनी चमड़े की कुर्सी के हत्थे पर घूंसा मारता हुआ वह बोला:

"अगर तुम क्राइस्ट की तरह जीवन बिताना चाहते हो तो अपना कोट और बूट उतार कर टाट के कपड़े पहनो और नंगे पैर चलो। और अपने यह लच्छेदार बाल भी कटा दो?"

इस उत्तेजना ने उसे अशक्त बना दिया। वह पीड़ा से कराहने लगा और चुप हो गया। कुछ देर बाद वह फिर किकिन पर घुर्राया:

"और तुम भी बातें बनाते हो! क्राइस्ट, क्राइस्ट! क्राइस्ट का और एक कुबड़े का क्या साथ? नहीं! सुन रहे हो? चिड़ियाँ जो किसी के काम नहीं आतीं मस्त होकर गा सकती हैं परन्तु एक आदमी को मरना ही पड़ेगा। क्राइस्ट को इस बात का ध्यान नहीं था?"

किकिन ने सावधानी पूर्वक वायकोव को उत्साहित करते हुए कहा:

"गेथेस्मान के बाग में क्राइस्ट ने भी अपने भाग्य की शिका की थी।"

वायकोव यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और फिर शीघ्रतापूर्वक ने लगा:

"यह बिलकुल सत्य है ! मुझे भी वह घटना याद है । तुमने बिलकुल ठीक कहा है । वह समय से पूर्व मरना नहीं चाहता था । और मैं तो फिर भी केवल इन्सान ही हूं ।"

वह पीड़ा से कराहा, अपनी कुर्सी में और भी नीचे धंस गया और अपनी टाँगों को फैलाते हुए विलाप सा करता हुआ बोला :

"अच्छा तो अब क्या करना चाहिए, किकिन ? मेरी जायदाद किसको सौंपी जाय । यह अच्छा मजाक है । मैंने इसे बचाया, बढ़ाया और इसके लिए पाप किए और अब एकाएक इस सबको कूड़े के गड्ढे में फेंक देना पड़ेगा ?"

वह इसी प्रकार बहुत देर तक गुस्से में बड़बड़ाता रहा । कभी एक बाँह को फैला देता और कभी दूसरी से खिड़की पर रखे हुए गुलदस्ते को थपथपाने लगता । किकिन नीची गर्दन किए सुनता रहा और अपने टेढ़े पैरों के चौकोर घुटनों पर उंगलियों से बाजा बजाता रहा । कुछ देर बाद उसने कहा :

"दूसरी बात यह है कि अगर याकोव को जायदाद नहीं मिलती है और अगर दान से चलने वाली संस्थाओं को भी इसे नहीं दिया जाता है तो उत्तराधिकारी के अभाव में सरकार इस पर कब्जा कर लेगी ।"

वायकोव ने दाँत कटकटाए और भयकर हँसी हसते हुए बोला :

"यह तो ऐसा लगता है कि मुझसे मेरे सम्पूर्ण अधिकार छीन कर मुझे आजन्म कैद की सजा दे दी गई हो ।"

"बिलकुल ऐसा ही ! यही तो मजाक है ।"

"विचित्र है, है न ?"

"और कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं ..."

दोनों बहुत देर तक चुप रहे । दोनों ही कोई दूसरा रास्ता खोज निकालने के लिए अपने अपने दिमाग पर जोर देते रहे । अन्त में उस कुबड़े ने वायकोव को सलाह दी कि वह सोमोव को अपने साथ लाकर रहने के लिए बुलाए और जब वह हर समय पास रहेगा तो उसकी गतिविधि को और अच्छी तरह से देखा जा सकेगा और उसे यह भी बताना आसान रहेगा

कि जीवन किस प्रकार बिताना चाहिए। "शायद" उसने कहा, "वह लड़का इस जायदाद का भार ऊपर आ जाने से, अपने को जिम्मेदार अनुभव कर, ढङ्ग से रहने लगे।"

उन्होंने ऐसा ही करना निश्चित किया।

खिड़की के शीशों पर वर्षा की बौछारें पड़ रही थीं और जब सड़क पर छाए हुए धुंधलके में बिजली की चमक से प्रकाश छा जाता और उसकी नीली सी रोशनी इस अन्धेरे कमरे में घुस जाती तो ऐसा मालूम होने लगता कि खिड़की पर रखे हुए गुलदस्ते नीचे गिर रहे हैं और मानो कमरे की सब चीजें काँप उठी हैं और दरवाजे की सफेद रोशनी की ओर भागी चली जा रही हैं।

अंगीठी में लकड़ी के कुन्दे तेजी से जल रहे थे। येगोर वायकोव उसके सामने बैठा हुआ अपने पैरों को गर्मा रहा था। गर्म लाल प्रकाश के धब्बे उसके गाठन, छाती, घुटनों और दाढ़ी के निचले भाग पर पड़ कर उन्हें धमका देते, परन्तु उसका चेहरा आँखें बन्द किए, छाया में ही रह जाता।

किकिन एक छोटे से स्टूल पर सिकुड़ा हुआ बैठा था। बाँहें उसकी कबूतर की सी, छाती पर बंधी हुई थीं और वह अपने नेत्रों में एक अजीब भाव भरे हुए याकोव के चेहरे की ओर देख रहा था। याकोव अंगीठी के सहारे बैठा हुआ बहुत धीमे स्वर में बोल रहा था मानो कोई कहानी कह रहा हो।

"सम्पत्ति का जितना ही अधिक संचय किया जाता है, मनुष्यों में उतनी ही धिक घृणा और द्वेष की भावना उत्पन्न होती है। गरीब इस अगाध संचित धन को देखते हैं•••"

"ऊँह!" अपनी आँखें खोलते हुए वायकोव ने कहा। किकिन ने एक गहरी साँस ली और लोहे की छड़ उठाकर अंगीठी की आग को कुरेदा। लकड़ियाँ चटपटाईं और इनमें से आग की चिनगारियाँ निकल कर अंगीठी के सामने लगी हुई ताँबे की चद्दर पर गिरने लगीं। वायकोव ने उन्हें बुझाने के लिए अपना पैर उठाया और तिरछी निगाह से देखने

लगा। उसे यह सब बड़ा कुरूप और वीभत्स सा प्रतीत हुआ। किकिन का चेहरा चमड़े की एक सिकुड़ी हुई झुर्रीदार गेंद की तरह लग रहा था। उसके कंकालवत् मुख पर बालों के गुच्छे झाँक रहे थे। उसका मेंढक का सा मुख आश्चर्य से खुला हुआ था और कान जंगली जानवर के कानों की तरह खड़े हुए थे—बिल्कुल शैतान के से। याकोव संगमरमर पर बने हुए चित्र की तरह दिखाई दे रहा था। यद्यपि आज उसकी पोशाक बिल्कुल नई और साफ सुथरी थी परन्तु इसने उसके आकर्षण में कोई वृद्धि नहीं कर पाई थी।

"अच्छा ?" वायकोव ने व्यङ्गपूर्वक कहा,—"तो तुम्हारा ख्याल है कि गरीब अमीरों को लूटने का साहस करेंगे, यही बात है न ?"

"सम्पत्ति का समान विभाजन होना ही चाहिए . . ."

"ऐसी बात है ?" वायकोव बोला—"यह तुम्हारे दिमाग में बड़े विचित्र विचार भरे हुए हैं, भाई।"

"लाखों आदमी यही सोचते हैं।"

"तुमने उन्हें गिन लिया है ?"

"यह सच है। जनता असन्तुष्ट है।" किकिन ने आग की ओर देखते हुए सावधानीपूर्वक कहा—"वे सब बहुत असन्तुष्ट हैं।"

वायकोव ने बड़ी विचित्र रीति से भौंहें चढ़ाई और घुर्राया।

"चुप रहो। मैं कुछ भी नहीं कह रहा हूँ।"

अभी याकोव को इस मकान में आए दो महीने भी नहीं हुए थे परन्तु वायकोव ने यह लक्ष्य किया था कि यह कुबड़ा बड़ी सावधानी से याकोव के विचारों का समर्थन करने लगा था। यह स्पष्ट था कि यह कुत्ता अपने होने वाले नये मालिक को पहचान कर उसके आगे दुम हिलाने का अवसर ताका करता था।

"कौन से मनुष्य, क्यों ?" अत्यन्त घृणा से भर कर वायकोव चीखा।

उसका भतीजा या तो जड़ मूर्ख था या अत्यन्त चतुर। उसके उद्देश्य का पता लगाना बड़ा कठिन था। वह अत्यन्त नम्रता और मधुरता पूर्वक बात करता और स्पष्ट रूप से यह प्रयत्न करता कि अप्रत्यक्ष रूप से सुनने वाले

उसकी इस बात से सहमत हो जांय कि जीवन के सम्पूर्ण दुखों और सब पापों का मूल कारण सम्पत्ति ही है। यह अत्यन्त विकृत विचारधारा थी—एक अपरिपक्व सिद्धान्त और याकोव के मुख से तो यह बिल्कुल ही शोभा नहीं देता था। स्पष्ट रूप से वह एक पाखण्डी व्यक्ति का अभिनय कर रहा था। परन्तु क्यों? वह जानता था कि उसके चाचा के मर जाने पर वह स्वयं एक धनी व्यक्ति बन जायगा और वह मनुष्य मात्र को प्रेम करने वाला भी नहीं प्रतीत होता था जो अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को गरीबों में बाँट दे। उसकी आदतें व्यापारियों की सी थीं। सम्पत्ति के प्रति वह उचित सम्मान दिखाता था और स्वच्छता तथा नियमबद्धता का उपासक था। उसने आने के उपरान्त शीघ्र ही नौकरानी की मदद से कूड़े करकट से भरे हुए अहाते को साफ कर डाला था। गोदाम के सामान की एक फेहरिस्त बना ली थी और यह पता लगा लिया था कि बेचने वाले नौकर सामान चुरा ले जाते हैं। वह स्पष्ट रूप से भिखारियों से घृणा करता था।

परन्तु फिर भी, वह एक रहस्यमय व्यक्ति था। तुम उसका भेद नहीं पा सकते थे! यह पता चलाना बड़ा कठिन था कि आखिर उसकी असलियत क्या थी। और उसके माथे पर पड़ा हुआ वह बालों का गुच्छा? उसका वह बालों का गुच्छा ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके मस्तिष्क के पिछले भाग में दृढ़तापूर्वक जड़ा हो। इससे क्या, वह इस प्रकार की अद्भुत घृणित और पाखण्ड से भरी हुई बातें करता था, केवल इसलिए कि जिससे यह बीमार आदमी चिड़चिड़ा बनकर और परेशान होकर जल्दी से अपनी कब्र की राह पकड़े। इस विचार ने वायकोव को चौंका दिया और एक दिन उसने स्पष्ट शब्दों में याकोव से पूछा—

"तुम ये सब बेवकूफी की बातें क्यों करते हो?"

"समस्याओं को स्पष्ट करने के लिए," भतीजे ने अपनी भेड़ जैसी आँखों को फैला कर कहा। उसके नेत्रों के भी दो रूप थे। कभी तो वे अत्यन्त करुणापूर्ण और कोमल दिखाई देते परन्तु अधिकतर वे निष्प्रभ और स्थिर से दिखाई देते—जैसे कि वे प्रकाशहीन हों—अन्धे और

यह रूप उस समय दिखाई पड़ता जब वह इसी प्रकार की पाखंडपूर्ण बातें करता।

"हम लोगों के बीच स्पष्टता होनी चाहिये, "उसने कहा, "सब मनुष्यों को पारस्परिक सहयोग के लिए पूर्ण रूपसे संगठित होजाना चाहिए।"

"संगठित ? किसके खिलाफ ?" वायकोव ने भारी और गुस्से से खरखराती हुई आवाज में कहा "दुश्मन कहाँ है ? जनता का दुश्मन तो स्वयं जनता में ही छिपा हुआ है। क्या तुम इतना भी नहीं समझते ?"

"सदैव कलहपूर्ण वातावरण में रहना ग़लत है," लड़के ने बदतमीजी से जवाब देते हुए कहा—"क्या यह कहावत नहीं कही गई है कि यदि तुम हवा बोओगे तो परिणाम में तुम्हें तूफान ही मिलेगा। जनता की भावना को सन्तुष्ट करना पड़ेगा, यदि नहीं किया गया तो राष्ट्र में एक भयङ्कर विप्लव उठ खड़ा होगा।"

' यह बिलकुल झूठ है।" वायकोव गुस्से से चीखा!

रात और दिन वह अपने से यह प्रश्न पूछा करता कि याकोव उसका उत्तराधिकारी बनने योग्य है अथवा नहीं। इन विचारों ने उसके दिमाग से मृत्यु के विचार को हटा दिया। और कभी-कभी तो उसे ऐसा प्रतीत होता कि इन विचारों के सामने उसका दर्द कम हो जाता है।

"वह एक रहस्यमय व्यक्ति है—बहुत रहस्यमय। प्रत्येक भिखारी यह जानता है कि इस जीवन में मनुष्य का सबसे बड़ा सम्बल और रक्षा का साधन धन और सम्पत्ति ही है। जमीन खोदने वाला कीड़ा तक भी इस बात को जानता है कि ।"

रात को, जब ससार की प्रत्येक वस्तु शात होती मानो बीते हुए दिन की याद कर रही हो, जब मनुष्यों के विचार थके हुए प्रत्यक्ष दिखाई पड रहे थे और मस्तिष्क में छाई हुई विचारों की जटिल गुत्थियाँ धीरे धीरे सुलझती नज़र आ रही थीं, रात्रि के काले धागे चारों ओर फैलने जा रहे थे तब वायकोव ने कान लगा कर ध्यान से सुना और उसे ज्ञात हुआ कि ऊपर की मंजिल पर वे दोनों जग रहे थे। उसे लगा कि वह वहाँ बैठा हुआ ही, याकोव की आग्रहपूर्ण वाणी और उसके नेत्र तथा उस कुबड़े के झुर्रीदार

चेहरे पर छाए हुए आश्चर्य के भाव को स्पष्ट देख रहा है। याकोव विधान में सुधार करने के विषय में बातें कर रहा था जिसके द्वारा जार के अधिकारों को कम किया जा सके। यह पिल्ला जैसा छोकरा इस प्रकार की बातें करने का साहस कर रहा था!

तुर्की के युद्ध के समय लोगबाग इस प्रकार की कानाफूसियाँ करने लगे थे और वे फिर इसी प्रकार की बातें करने लगे हैं क्योंकि दुबारा लड़ाई भड़क उठी थी। नागरिक गण ही इस प्रकार की बातें कर रहे थे क्योंकि वे लड़ना नहीं चाहते थे। उन्हें यह भय था कि कहीं युद्ध में लड़ने के लिए उन्हें भी न बुला लिया जाय। तुर्की-युद्ध के समय उन लोगों ने जार को मा डालने की कोशिश की थी परन्तु चूक गए, इसलिए उन्होंने युद्ध के वा उसकी हत्या करदी।

"परन्तु यह सब बेवकूफी की बातें हैं! जोशुआ युद्ध में लड़ने लिए गया था। बादशाह डेविड शान्त स्वभाव का व्यक्ति था, इसलिए उ कविता लिखी फिर भी वह अपने को युद्ध में जाने से न बचा सका। पा भी युद्ध में गए। धार्मिक मनोवृत्ति वाले राजकुमारों को तातारों से करना पड़ा। सन्त अलेक्जेंदर नेवस्की ने निर्दयतापूर्वक स्वीडन वाल मारा था। परन्तु इनमें से कोई भी अपने ही आदमियों द्वारा नहीं गया। कितनी बेवकूफी है?"

सोफे पर पड़े पड़े वायकोव थक गया था इसलिए उठा और वि के पास जाकर बैठ गया और तारों तथा गोल और स्त्री जैसे कोमल वाले चन्द्रमा की ओर ताकने लगा। आकाश यद्यपि तारों से जगमग था फिर भी उसकी ओर देखने से मन में करुणा और उदासी भर जा वह सोचता रहा।

"चर्च का पादरी, फादर फ्योदोर प्रायः कहा करता था कि आकाश के अनुपम सौन्दर्य और भव्यता का उपभोग करना ना परन्तु दूसरी तरफ ताश के खेल में वह बेईमानी करता था इसलिए उसके साथ खेलना पसन्द नहीं करता था। उसे वह घटना याद है

उसके यह कहने पर पादरी से लड़ाई हो गई थी कि आकाश में ऐसी कोई भव्यता नहीं है और यह कि यह तुलना में मानव की नगण्यता बताता है और यह भी कि यह दिन में अधिक अच्छा दिखाई देता है जब सूर्य की रोशनी इसे प्रकाशित कर देती है। आकाश रात के समय देखने में बहुत सुन्दर लगता है जब वह बादलों से आच्छादित रहता है और दिखाई नहीं देता। उस समय यह प्रतीत होता है कि मानो आकाश था ही नहीं। मनुष्य का निर्माण इस ससार के लिये हुआ था। परन्तु जब पुजारी मनुष्य का ध्यान इस संसार से विरक्त करने का प्रयत्न करते हैं तो वह प्रयत्न वैसा ही घृणित होता है जैसे किसी दूल्हा को लामबन्दी के नियम के अनुसार विवाह के भोज से पकड़ कर बैरकों में बन्द कर दिया जाय। इस बात को सुनकर वह पादरी बहुत गुस्सा हुआ था ' ”

बाग के वृक्ष उस अन्धकार में इतने घुल मिल गए थे कि ऐसा ज्ञात होता था मानो किसी ने उन पर कोलतार पोत दिया हो। नगर एक दुखदायी शान्ति में डूबा हुआ था—इतना स्तब्ध कि यह चिल्ला उठने को मन करता था “आग ! आग !”

“मेरे ईश्वर ! तूने मुझे क्यों दण्ड दिया है ?” मानसिक पीड़ा से व्यथित होकर वायकोव कराहा—“क्या मैं दूसरे मनुष्यों से अधिक पापी हूँ ?”

उसने अपने परिचितों के व्यवहार पर विचार किया। वे सब उससे भी गए बीते थे, उससे अधिक लोभी, अत्यन्त लालची। वह इन सबसे अधिक सजग और चेतन था इसी कारण उसने इनमें से किसी से भी आत्मीयता स्थापित नहीं की। उसने अपना जीवन अकेले ही व्यतीत किया। धीरे धीरे उसने अपने लिए एक मजबूत और स्थायी घोंसले का निर्माण किया जिसमें वह अपनी सुन्दर और सुशील पत्नी के साथ शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करता। अपने साथ एक सुन्दर, स्वस्थ स्त्री को रखना सबको अच्छा लगता है—उसे गुड़िया की तरह सजाना, छुट्टियों में उसके साथ बाहर घूमने जाना, उसके साथ घोड़ा गाड़ी में सैर करना और उसके कीमती जेवरों को, उन रत्नों को जो उसकी उभरी हुई छाती पर सुशोभित होते हैं दूसरों को दिखाना जिन्हें

देखकर दूसरी स्त्रियों में ईर्षा भड़क उठती है। हाँ, यह सब बहुत अच्छा लगता है।

आँखों को संकुचित कर उसने सन्ध्या के धुँधलके में कमरे के भारी फर्नीचर को देखा और उसे याद आई कि इसे उसने कितनी आशाओं से खरीदा था। सम्पत्ति का महत्व बहुत अधिक है। इसके सहारे से मनुष्य ऐसे जीवन बिताता है मानो अपने किले में निर्द्वन्द्व और निर्भय बैठा हो। अगर इस कमरे में से सारा फर्नीचर निकाल दिया जाय तो कमरा एक खाली शव रखने के बक्स के समान दिखाई देने लगेगा।

"ओह, ऐसा क्या होता है? ओह! मेरे ईश्वर?"

और जब तक वह सोचता रहा उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वह कुबड़े के कमरे में याकोव की आवाज सुनता रहा है—एक कपड़े सीने की मशीन की सी आवाज, जिसमें वह अपने शब्दों के कौशल द्वारा अपने पाखण्डपूर्ण विचारों को सजा रहा था।

"वह अपने विचारों पर दृढ़ है। यह बुरा नहीं, चाहे भले ही वह विचार बच्चों के से क्यों न हों। जब मैं छोटा था तब यह नहीं जानता था कि मैं क्या चाहता हूँ।"

अलक्षित रूप से ही वायकोव के विचारों पर एक दूसरा रङ्ग चढ़ गया। किसी भी दशा में, याकोव को छोड़कर उसके पास अपनी सम्पत्ति का और कोई उत्तराधिकारी नहीं था। परन्तु उसने तुरन्त सोचा कि यह तो न्याय-विरुद्ध सी बात है और इसीलिए इसे उचित सिद्ध करने के लिए वह किसी नवीन संगत तर्क की उद्भावना में लीन हो गया परन्तु उसे इससे अधिक सशक्त और न्याय-संगत तर्क और कोई भी न लगा कि वह लड़का बड़ा नम्र और गम्भीर था और यह कि धनी बन जाने पर वह और भी अधिक बुद्धिमान बन जायगा।

जब, कुछ क्षणों के लिये उसने सांमोव को अपने उत्तराधिकारी के रूप में सोचना छोड़कर उसे केवल एक लड़के के रूप में, जैसा कि वह था, देखने का प्रयत्न किया तो वह उसे बहुत पसन्द आया। उसने बड़े आश्चर्य

के साथ इस बात को अनुभव किया कि उसके भतीजे के विचित्र और अक्खड़ विचारों में एक ऐसा तर्क था जो उसके विचारों से जिनके आधार पर उसने अपना जीवन बनाया था नितान्त भिन्न था। एक ऐसी विचारधारा जो उसके ही समान थी परन्तु एक ऐसे हृदय से उत्पन्न जिस पर जीवन की काली छाया का प्रभाव नहीं पड़ा था और जिसमें किसी वस्तु के प्रति अटूट विश्वास था। कभी-कभी उसने यह लक्षय किया कि उसके भतीजे के उन अटपटे और दुर्बोध शब्दों में कुछ समझने योग्य बातें थीं। उसे इससे शक होता था और वह ऐसे समय जान बूझकर क्रोध प्रकट करने लगता था जिससे अपनी उस अनिच्छित मुस्कराहट को छिपा सके जो उस समय बरबस उसके होंठों पर आ जाती थी। उसने सोचा :

"वह कितना चालाक है? वह अभी एक बच्चे के समान अनुभव-हीन है परन्तु उसकी वाणी में कितना मिठास है। लेकिन जब वह मेरे रङ्ग में रङ्ग जायगा उस समय बिल्कुल बदल जायगा। ऐसा करना उसके लिए बहुत आसान है...।"

वह, विशेष रूप से, याकोव के मुँह से उसके पहले मालिक के विषय में सुनना अधिक पसन्द करता था जब वह बताता कि उसका मालिक, टिटोव, कितना भयङ्कर शराबी था। उसके मुँह से टिटोव के किस्से सुनकर वह खूब प्रसन्न होकर हँसता—खूब मुँह फाड़कर दाँत दिखाते हुए--प्रसन्नता से खूब आँखें मींचता और नाक से शब्द करता जाता। उसे बहुत अच्छा लगता जब उसके दुश्मन को उसके सामने हँसी उड़ाई जाती और अपमान किया जाता। अपने उत्तराधिकारी की तेज, भेदक आँखें और मनुष्यों की कमजोरियों को पहिचानने की शक्ति देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता होती।

"तुम बहुत चौकन्ने हो। यह बहुत लाभदायक है। यह देखना सदैव लाभकारी होता है कि अमुक व्यक्ति किस पैर से लंगड़ा है। यदि दाहिने से लगड़ा है तो दाहिने पैर पर चोट करो और अगर उसका बाँया पैर लँगड़ा है। तो बाँए पर ठोकर दो।"

और याकोव अपनी स्पष्ट वाणी में कहता :

"जब टिटोव को इसका दौरा सा आता और बहुत अधिक शराब

पीने की इच्छा होती तो वह बालतिस्की, जो एक इन्जीनियर है, से मिलता और फिर वे दोनों लगातार दस दिन तक एक दूसरे को छकाते हुए, शराब पीते रहते। वे इस प्रकार एक दूसरे को छकाते थे-वे अपने नौकर क्रिस्तोफर को रात्रि के समय बाग में भेजते कि वह वहाँ जाकर शराब और वोदका (रूसी शराब) की लगभग वीस बोतलें विभिन्न स्थानों पर गाढ़ आवें। वह उन्हें इस प्रकार गाढ़ें कि उनकी गर्दन भी न दिखाई दे सके। दूसरे दिन सुबह दोनों अपनी घूमने की छड़ी लेकर बाग में 'कुक्कुरमुत्ता तोड़ने' जाते। इस मुहावरे का अर्थ यह था कि वे अपनी छड़ियों से जमीन को कुरेदते और जब उन्हें वोदका की बोतल मिल जाती तो वे प्रसन्नता से चिल्ला उठते—'एक सफेद'। उसे लेकर वे एक लताकुंज में घुस जाते और उसे खाली कर देते। उसके बाद वे और 'कुक्कुरमुत्ते' ढूँढ़ने निकलते। जब लाल शराब की बोतल मिल जाती तो वे चिल्ला उठते--'एक लाल टोपी'। अगर यह 'शैम्पेन' की बोतल होती तो वे इसे 'शैन्पिग्नोन' कहते। अगर कागनेक ब्रान्डी की बोतल मिलती तो उसे 'पीली टोपी' नाम दिया जाता और यदि मीठी सुगन्धित शराब की बोतल होती तो उसे 'भूरी' कहते। और इस प्रकार वे सारे दिन बोतलों को ढूँढ़ते रहते और जिस क्रम से वे मिलती जातीं उसी क्रम से उन्हें पीते जाते। कभी कभी वे सुगन्धित मीठी शराब की बोतल से पीना प्रारम्भ करते। पहले एक बोतल पीते औरफिर दूसरी लाते। वे पीकर इतने मदमस्त हो जाते कि टिटोव 'राजा नेबुचन्दनेजार' की तरह घास पर चारों हाथ पैरों से रेंगता और नृत्य का एक गीत गाता:

"मैं वह हूँ जिसे कोई प्यार नहीं करता। सब प्राणी गाली देते हैं।"

और बालतिस्की बुरी तरह रोता हुआ घास पर लेट जाता क्योंकि वह अपने दाँतों से बोतल को जमीन से उखाड़ने में असमर्थ रहा था। वह बुरी तरह कराहता और विलाप करता।

"मेरी सारी शक्ति कहाँ गई रे? मेरी सारी शक्ति कहाँ गई रे? कौन ले गया रे?"

वायकोव खूब हँसा यद्यपि इस हँसी ने उसके दर्द को और बढ़ा दिया परन्तु सोमोव दुख प्रकट करने वाली ध्वनि में कहता गया:

"इससे आपको हसी आती है परन्तु फिर भी मुझे ऐसे आदमियों के लिए दुख होता है। उनके पास बहुत धन है। वे उससे पहाड़ को भी हिला सकते हैं। परन्तु वे केवल दो उँगलियों से ही काम करते हैं। यह झूँठ है जब वे कहते हैं कि आदमी लालची हैं। नहीं–बिल्कुल नहीं। मुझे उनके काम में कहीं भी लालच की गन्ध नहीं आती।"

"तुम अभी छोटे हो इसलिए अभी इस बात को नहीं देख पाते।" वायकोव ने केवल उसकी बात काटने के इरादे से कहा परन्तु स्वयं उसने सोचा

"मैं इस लड़के को समझने में असमर्थ हूँ। जब वह व्यापार की बातें करता है तो उसकी बातें व्यापारियों की सी होती हैं। जो कुछ वह कहता है सब ठीक है। आदमी अपने काम में लालची नहीं होते। वे आलसी हैं। परन्तु यह सब बड़ा अद्भुत, बड़ा असंगत सा लगता है। कल्पना करो कि एक नौकर कह रहा है कि उसका मालिक ढंग से काम नहीं करता। वह कहता है कि आदमियों को शुद्ध हृदय से काम करना चाहिये। परन्तु यदि तुम यह चाहते हो कि आदमी ईमानदारी से अपनी पूरी शक्ति से काम करें, तो तुम्हें अपने दिमाग से इन बच्चों के से विचारों को निकाल देना पड़ेगा।"

"तुम्हारे विचार बड़े उलझे हुए हैं, याकोव," दुख और क्रोधमिश्रित स्वर में उसने भतीजे से कहा–"तुम्हारी बातों में तर्क का अभाव है। वह बहुत ऊँची उड़ान भरते हैं ... ...।"

सोमोव चुप हो गया, आँखें नीची कर लीं और अपने सिर के बालों को बैठाने के लिए उन पर हाथ फेरा परन्तु वे और अधिक खड़े हो गए।

अचानक नगर के व्यापारी किसी बात पर चौकन्ने हो उठे और दिन दिन भर सड़कों पर, गाड़ियों में बैठे हुए, बड़ी उदास मुद्रा में, इधर से उधर भागते नजर आते। वायकोव अपनी खिड़की पर बैठा हुआ उन मनुष्यों की इस बेचैनी को देखता रहता जो कभी किसी भी काम में शीघ्रता

करने के आदी नहीं थे। इसने किकिन से पूछा: 'वे इस तरह किसलिए भाग दौड़ कर रहे हैं ?"

उसने यह भी लक्ष किया कि उस कुबड़े का सदैव उदास रहने वाला चेहरा चमक उठा है और उसकी मुर्गी के बच्चे की सी आँखों का मिश्रित भाव दूर हो गया है। इस घृणित जीव की चाल में भी दृढ़ता आ गई है। अब वह अपनी उन मुड़ी हुई टाँगों पर लचकता हुआ नहीं चलता जैसे कि पहले चला करता था। अब जब वह चलता तो ऐसा मालूम होता मानो उसके शरीर मे स्प्रिंग लगी हुई हो—विशेष रूप से उसके कूबड़ में। तेजी से आँखें मिचकाते हुए, कभी हाथों को फटकारते और कभी पतलून को ऊपर खिसकाते हुए उसने ऐसी बातें बताई जो पूर्ण रूप से दुर्बोध थीं तथा जनता में फैली किसी अफवाह के विषय में भी कहा जिसके अनुसार नगरपालिका, मजदूर संघ, व्यापारी, सामन्तगण और पादरी तक किसी आन्दोलन में शामिल हो गए थे।

"मैं आपको बता रहा हूँ, येगोर इवानिच, यह एक भयंकर और बहुत बड़ा मजाक है," उसने कहा।

"जरा ठहरो," वायकोव ने कहा और पूछा—"क्या गवर्नर शहर में है ?"

"हाँ, हैं ?"

"क्या जार जीवित है ?"

"पूर्ण रूप से।"

"फिर क्या मामला है ?"

किकिन बड़ी भद्दी तरह से मुस्कराया, जो उसके लिए बड़ी अजीब सी बात थी और पूछा:

"आप किसके विषय में पूछ रहे हैं ?"

"मूर्ख !"

निस्सन्देह याकोव उसे नगर में होने वाली घटनाओं का पूरा रण बहुत अच्छी तरह सुना देता परन्तु वह उससे आज्ञा लेकर

गया था और वहाँ राजधानी के विभिन्न स्थानों को देखता हुआ लगभग एक सप्ताह तक रुका रहा। परन्तु इधर नगर में एक विचित्र उत्तेजना का वातावरण फैलता जा रहा था जैसा कि ईस्टर के त्यौहार पर या कहीं आग लग जाने पर दिखाई पड़ता है।

"यह सब क्या हो रहा है ?" उसने नाराज होकर किकिन से पूछा।

"तुम जानते हो, येगोर इवानोविच, यह क्या है, जनता माँग रही है · ।"

"एक मिनिट ठहरो ! इस तरह चीजो को उलझाने का प्रयत्न मत करो ! कौन से आदमी ? क्या किसान ?"

"किसान भी · ··।"

"क्या ? इस 'भी' से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"वे जमीन माँग रहे हैं।"

"किससे ?"

"खैर, आप तो देख ही रहे हैं · ····।"

और उस कुबड़े ने इधर उधर की बेकार बातों का विवरण सुनाना प्रारम्भ किया। खौलते हुए पानी में छटपटाते हुए केंकड़े की तरह कुर्सी पर इधर उधर उछलते हुए उसने दुष्टतापूर्ण मुस्कराहट के साथ बड़बड़ाना जारी रखा "प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक दूसरे व्यक्ति से प्रत्येक वस्तु का विवरण और सफाई माग रहा है ।"

उसने अपने हाथ मले। एक नशे की सी प्रसन्नता की चमक उसकी आँखों में दिखाई दी जो उसके बताये हुए विवरण का खडन सी करती प्रतीत होती थी। वह बडी बेचैनी से अपनी टेढ़ी टाँगें जमीन पर रगड़ता जाता था। फिर वह मूर्खों की भाति बे-समझे सोचे कहने लगा

"विश्वव्यापी असन्तोष की आवाज उठ खड़ी हुई है। सब गम्भीरता-पूर्वक इस बात पर एकमत हो रहे हैं कि अब इस तरह जीवन बिताना असम्भव है · ।"

"किस तरह, बेवकूफ शैतान कुबड़े, बताओ किस तरह ?"

"जिस तरह कि हम आजकल जीवन बिता रहे हैं! सब बड़ी निडरता-पूर्वक इन बातों की आलोचना कर रहे हैं। कुछ व्यक्ति इस तरह से बातें करने लगे हैं मानो अब तक वे गहरी नींद में गाफिल पड़े सो रहे थे और उनका बीता हुआ जीवन सपने की तरह बेकार था। यह ईश्वरीय सत्य है। दृढ़ विश्वास और धैर्य······।"

कुबड़ा वायकोव के बगल में अपना झुर्रीदार चेहरा उसकी ओर किए बैठा था। उसकी मैली जाकट उसके उठे हुए कूबड़ पर चढ़ गई थी जिससे उसकी गुब्बारे की तरह फूली हुई सफेद कमीज और पतलून की पेटी दिखाई दे रही थी। उसकी पतलून घुटनों तक कीचड़ से सनी हुई थी!

"कैसे दुष्ट और कमीने जानवर के साथ मुझे रहना पड़ रहा है।" वायकोव ने सोचा।

"यह एक बहुत बड़ा और गम्भीर मजाक है, येगोर इवानोविच!" किकिन ने कहना जारी रखा।

"प्रत्येक व्यक्ति घर से निकल कर सड़क पर इकट्ठा हो रहा है और उन्होंने नगरपालिका को घेर लिया है।"

"जहन्नुम में जाओ!"

अकेला रह जाने पर वायकोव ने सोचा: "अभागा कीड़ा मुझे परेशान करने का प्रयत्न करता है। मैं उसे कुछ पैसे देकर भगा दूँगा। अब मुझे उसकी जरूरत नहीं।"

एक शाम को जब पानी पड़ रहा था, याकोव आ गया। चाय पीते समय वह बहुत गम्भीर था मानो चर्च से प्रार्थना समाप्त करके लौटा हो। उसकी निगाह में कठोरता थी। उसके बाल पहले से अधिक बिखरे हुए थे। उसकी भौंहों में बल पड़ रहे थे जिससे ज्ञात हो रहा था कि वह किसी बात से बहुत उत्तेजित हो उठा है। वह मेज पर हमेशा की तरह शान्त और नम्र होकर नहीं बैठ पा रहा था परन्तु कभी-कभी कुर्सी को

से धक्का देने लगता था। इससे वायकोव चौकन्ना हो उठा और किसी होने वाले अनिष्ट की आशंका से भयभीत होकर उसने पूछा: "अच्छा, मास्को के क्या हाल चाल हैं ?"

प्रत्येक शब्द को एक दूसरे से टकराते हुए भतीजे ने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक कहना शुरू किया, परन्तु उसकी आवाज में एक अनोखी तेजी थी जैसे कि वह किसी अदालत में गवाही देने से पूर्व शपथ ले रहा हो। वह बहुत देर तक बात करता रहा। उसने अपने चाचा के गुस्से से पूछे गये प्रश्नों पर कोई ध्यान नहीं दिया, और कभी बीच में चुप हो जाता जैसे कुछ याद कर रहा हो या किसी बात को समझाने के लिए उचित शब्द ढूंढ रहा हो।

"वह झूठ बोल रहा है, मुझे भयभीत करना चाहता है" अपने प्रश्नों के प्रति याकोव की उपेक्षा से क्रोधित होकर वायकोव ने सोचा और क्रोधपूर्वक कुबड़े की ओर ध्यान से देखने लगा जो बड़ी बेचैनी से कुर्सी पर करवटें बदल रहा था और मेंढक की तरह मुँह खोल बीच बीच में एक आध शब्द कहने का मौका ढूँढ रहा था।

'वे सब एक दूसरे से मिल गए हैं। शैतान' ।"

याकोव ने कुछ ऐसी बातें कहीं जो पूर्ण रूप से अविश्वसनीय प्रतीत हो रही थीं। जनता के सभी वर्ग किसी कारण से क्रोधित होकर एक साथ उठ खड़े हुए हैं और अपने जीवन स्तर को उन्नत करना चाह रहे हैं। प्रत्येक वर्ग अपने स्वार्थों की रक्षा करना चाह रहा है और प्रत्येक दूसरे से लड़ने को तैयार है मानो सब शराब के नशे में धुत हो रहे हों।

"अच्छा, आखिर इस सबका नतीजा क्या निकलेगा ?" वायकोव ने क्रोध और शंका से भरकर पूछा।

सोमोव ने एक क्षण सोचा, गहरी साँस ली और कहा "इसका बुरा परिणाम निकलेगा यदि हम लोगों में एक विश्वव्यापी जागृति और पारस्परिक सहयोग की भावना न उत्पन्न हुई तो। येगोर इवानोविच, मुझे बहुत दुख है कि मैंने आपको चिंतित कर दिया है परन्तु मैं आपसे इस बात को नहीं छिपा सकता कि एक पूर्ण सशस्त्र क्रांति की सम्भावना है।"

"यह बिलकुल झूठ है!' वायकोव पूर्ण विश्वास और दृढ़तापूर्वक चिल्लाया "उन्हें हथियार कहाँ से मिलेंगे? यह झूठी बात है! तुम इस बात का नाजायज फायदा उठा रहे हो कि मैं बीमार हूँ इसलिए बाहर जाकर सब बातें मालूम नहीं कर सकता। तुम मुझे डराने की कोशिश कर रहे हो—मुझे डराकर मार डालने की।"

मेज पर जोर से घूँसा मार कर, जिससे उस पर रखे हुए चाय के प्याले और प्लेटें उछल पड़ीं उसने खरखराती आवाज में कहा और बोलते समय उसकी आँखें बाहर को निकल आईं :

"मैं एक बुढ़िया के समान अशक्त नहीं हूँ। मुझे इस बात का विश्वास नहीं हो रहा कि संसार में प्रलय होने वाली है। तुम मुझे डरा नहीं सकते। मैं किसी चीज से नहीं डरता। जब तक मैं जीवित हूँ जायदाद मेरी है • • •।"

वह चुप हो गया जब उसके भतीजे ने शर्म से लाल होकर, उसकी ओर अपना मुँह कर बुरी तरह खाँसते हुए बहुत धीमी और साफ आवाज में कहा जैसे वह किसी लकड़ी में कील ठोक रहा हो :

"ऐसी हालत में मुझे आपसे साफ साफ बातें कर लेनी चाहिए। आपको यह सन्देह है कि मैं आपकी जायदाद को हड़पना चाहता हूँ। मुझे इस बात का पता लग गया है। यह आपका भ्रम है और आपकी इस बात से मुझे बहुत दुख हुआ है। मुझे आपकी दौलत नहीं चाहिए। मैं इसे अस्वीकार करता हूँ। मै यह लिख कर देने के लिए तैयार हूँ कि मुझे आपका उत्तराधिकारी बनना स्वीकार नहीं। मैं आज ही रात इसे लिखकर आपको दे दूँगा। मैं केवल यहाँ आपके साथ आकर रहने के लिए इसलिए तैयार हो गया था कि आप बीमार और एकाकी हैं और आपका समय नहीं कटता। मैं जानता हूँ कि आप बहुत से दूसरे लोगों से अच्छे हैं क्योंकि आप स्पष्टवादी और सरल हैं। साथ ही आप में दूसरे और भी अच्छे गुण हैं। आप उस स्कूल मास्टर बेकर को और उन कार्शिमिरस्की लड़कियों को दर दर का भिखारी बना सकते थे परन्तु आपने ऐसा नहीं किया। इसी वजह से मै आपकी इज्जत करता हूं और इस बात को स्पष्ट कर देता हूँ कि मैं

आपके साथ इस घर में आकर क्यों रहा। परन्तु अब मैं आपके साथ एक मिनट भी नहीं रह सकता। अलविदा!"

इतना कहते कहते याकोव की आवाज भर्रा उठी थी और अन्तिम शब्द केवल फुसफुसाहट की तरह सुनाई दिए। वह खांसा, अपनी कुर्सी से उठा और दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोला—"वास्तव में, मैं आपका बहुत आभारी हूँ परन्तु मुझे अफसोस है · · ।"

"ठहरो!" अपने गाउन को मजबूती से कसते हुए वायकोव चिल्लाया और किसी विशेष कारण से उसने गाउन में बांधने वाली रस्सी के झब्बे को कन्धे पर उठाया। "ठहरो! इतने गुस्सा मत हो!" परन्तु याकोव जा चुका था। तब वायकोव उठा, बाहें फैलाईं और अपने गाउन की रस्सी के दोनों सिरों को पकड़ा मानो वे लगाम हों और किकिन पर बरस पड़ा

"उसे वापस लाओ!"

कुबड़ा उछल पड़ा, घूमा और गायब हो गया।

"यह क्या हुआ, उहँ?" सुनाई देने योग्य स्वर में वायकोव बड़बड़ाया। वह आश्चर्यचकित होकर दरवाजे की ओर घूर रहा था और दूसरी मंजिल को जाने वाली सीढ़ियों पर होने वाली कानाफूसी को सुनता जाता था। जिस बात से उसे आश्चर्य हुआ था वह यह नहीं थी कि याकोव ने उसका वारिस बनने से इन्कार कर दिया था परन्तु यह कि वह बेकर के विषय में जानता था—वह बेवकूफ आदमी जो एक सूदखोर के पंजे में फस गया था और उन कासिमिरस्की बहनों के विषय में जिन्हें उनके दुराचारी बाप ने लगभग बरबाद कर दिया था।

"मैं आपकी इज्जत करता हूँ" उसने कहा था। वह बुरा मान गया है। अभी वह बच्चा है। जब सोमोव कमरे में लौट कर आया तो वायकोव घबराहट की सी हँसी हँसा और बोला .

"तुम बड़े अजीब आदमी हो? तुम इस तरह क्यों बिगड़ उठे? यहाँ आओ और बैठो। जायदाद तुम्हारी है केवल इसलिए नहीं कि मैं इसे तुम्हें देना चाहता हूँ परन्तु इसलिए कि उस पर तुम्हारा कानूनी हक है।"

याकोव ने कुर्सी की पीठ पर झुककर दृढ़तापूर्वक कहा : "मैं इसके विषय में बातें नहीं करना चाहता।"

"तुम नहीं चाहते ? क्या तुम्हारा वास्तव में यही मतलब है ?"

"हाँ, मेरा यही मतलब है। शीघ्र ही, सम्भव है उत्तराधिकार का क़ानून ही समाप्त हो जाय।"

"यह तुम क्या कह रहे हो ?" वायकोव ने अपने जब्बों को हिलाते हुए पूछा—"बैठो" उसने ऐसा अनुभव किया जैसा उसने जीवन में कभी भी नहीं किया था। जैसे कि एक भूखे भिखारी को उस समय अनुभव होता है जब उसे अकस्मात ही कहीं से सुगन्धित भोजन भरपेट खाने को मिल जाय।

"तुम्हें एक बीमार आदमी से गुस्सा नहीं होना चाहिए," उसने कहा, "तुम्हें उस उत्तराधिकार से कोई भी वंचित नहीं कर सकता। कानून इसकी आज्ञा नहीं देगा।"

याकोव बैठ गया और बोला—"उस कानून को नष्ट कर देना चाहिए। इससे केवल दुख ही बढ़ता है।"

"अच्छा, हम इसे नष्ट कर देंगे।" वायकोव ने अपने वारिस की ओर गौर से देखते हुए मजाक किया। उसे ऐसा लगा कि याकोव को तबियत ठीक नहीं है। उसका लड़कियों जैसा चेहरा गम्भीर था, होंठ नीले पड़ गए थे और वह उन्हें चाट रहा था। नेत्र धंस गए थे और उनमें एक वेदना और उदासी की छाया थी।

"तुम्हें बुखार है, है न ?"

"नहीं," अपने माथे के बालों को पीछे हटाते हुए याकोव ने जवाब दिया—"मैं केवल यह चाहता हूँ कि आप गम्भीर होकर बात करें। जनता में धनवानों के खिलाफ एक भयंकर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है और कुछ यह आवाज उठा रहे हैं कि उनकी दौलत छीन ली जाय।"

"डरो मत," वायकोव ने दृढ़तापूर्वक कहा—"डरने की कोई बात नहीं। इसे कोई नहीं छीनेगा।"

"मैं डरता नहीं। मैं खुद इसी के पक्ष में हूँ।"

वायकोव ने खरखराती आवाज से खूब गहरी साँस खींची जितनी कि वह खींच सकता था और फिर उसे कष्ट से पीड़ित होकर, बाहर फेंक इस तरह साफ और धीमी आवाज में बोला मानो पादरी फ्योदोर उपदेश दे रहा हो . "आदमी जायदाद के बिना एक सूखे कंकाल की तरह है। जायदाद ही उसका रक्त और माँस है। तुम इस बात को जानते हो ? रक्त और माँस !"

उसने बड़ी फुर्ती से चमड़े की अपनी आराम कुर्सी के हत्थे पर हाथ रखते हुए दुहराया :

"रक्त और माँस ! और आदमी अपना रक्त और माँस बढ़ाने के लिए ही जीवित रहता है जिससे कि वह अपनी इच्छाओं को पूरा कर सके। सारा संसार अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही जीवित रहता है और मानव के सम्पूर्ण प्रयत्नों का यही एकमात्र लक्ष है। जो जितना कम चाहता है वह उतना ही छोटा है · ·· ।"

"हाँ, ठीक है और अब हर आदमी सब कुछ चाहता है",याकोव ने मुस्कराते हुए टोका।

"यह क्या ? वे क्या चाहते हैं ? वे जो कुछ कहते हैं उसका विश्वास मत करो परन्तु जो कुछ वे करते हैं उसका विश्वास करो। केवल किसी चीज को चाहना ही काफी नहीं है। तुम्हें उन्हें पैदा भी तो करना पड़ेगा और जब हर चीज बहुत ज्यादा तादाद में होगी तो फिर प्रत्येक व्यक्ति के लिये काफी होगी और फिर हरेक पूर्ण रूप से सन्तुष्ट होगा।"

और फिर वायकोव ने बहुत नम्रतापूर्वक, जितनी नम्रतापूर्वक वह कह सकता था, कहा—

"मैं बेवकूफ नहीं हू । मैं सब समझता हूँ। तुम चाहते हो कि हरेक व्यक्ति क्राइस्ट की तरह सरल और पवित्र जीवन बिताए। यह ठीक है कि क्राइस्ट सब चीजों का सब लोगों में समान वितरण चाहता था परन्तु वह गरीबों के बीच में रहता था जब कि हम अमीरों की दुनियाँ में रहते हैं। क्राइस्ट के समय में दुनियाँ में इतने आदमी नहीं थे और उनकी आवश्यकताऐं भी बहुत कम थीं परन्तु फिर भी पूरा नहीं पड़ता था। लेकिन आज

हम लोग अधिक लोभी बन गए हैं। अब हमारी तादाद भी बढ़ गई है और हरेक आदमी सब चीज़ पाना चाहता है। जब ऐसी हालत है तो काम करो, बचाओ और इकट्ठा करो''''''।"

वायकोव अपने इन विचारों पर स्वयं आश्चर्यचकित हो उठा। ये विचार जैसे अचानक स्वतंत्र रूप से व्यक्त हो उठे हों। वे अजनबियों की तरह थे, आकर्षक अतिथियों की तरह। इससे वह घबड़ा उठा। परन्तु इन विचारों में से एक उसे अधिक सत्य और बुद्धिमानी का लगा। उसने जीवन के पापों को इतनी आसानी से व्यक्त करा दिया और जैसे अपनी बात स्वयं ही सुन रहा हो, वह कहता गया—

"सबसे पहले हमको काम करना चाहिए और बचाना चाहिए और फिर उन्हें 'आपस में समानरूप से बांट लेना चाहिए। यहाँ तक कि बेकार और अपाहिजों को भी देना चाहिए जो किसी भी काम के योग्य नहीं। इसमें उनका भी हिस्सा होना चाहिए। जिससे कि कहीं भी गरीबी, गन्दगी और पाप की छाया तक न रहने पाए। हाँ, बिल्कुल इसी तरह यह हो सकता है। हरेक के पास खाने को काफी रहेगा, हरेक अपनी योग्यतानुसार अच्छी तरह रह सकेगा और कोई भी व्यक्ति न तो लालची ही होगा और न दूसरों के खिलाफ षड्यंत्र ही रचेगा। हरेक व्यक्ति पवित्र हृदय वाला होगा। हाँ, यह ठीक है, हरेक व्यक्ति को सन्त बन कर रहना होगा।"

वायकोव बातें करता रहा और उसे तब अधिक आश्चर्य हुआ जब उसने यह अनुभव किया कि उसके विचारों की शृंखला अबाधगति से बढ़ती चली जा रही है और उसे अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द आसानी से मिलते चले जा रहे हैं। उसे यहाँ तक अनुभव होने लगा कि उसके विचारों की यह शृंखला बहुत समय से उसके मस्तिष्क में धागे की तरह लिपटी हुई पड़ी थी और आज उसे खुलने का अवसर प्राप्त हुआ है जिससे अद्भुत और असीम शक्ति का स्रोत प्रवाहित हो रहा है। विचारों की इस शृंखला ने वायकोव को रुक कर सांस लेने के लिए मजबूर किया मानो वह जाड़ों के मौसम में किसी साफ और सीधी सड़क पर घोड़े की पीठ पर बैठा हुआ सरपट भागा चला जा रहा हो। उसने इन नये शब्दों को

बहुत आसानी से व्यक्त कर दिया जैसे कि वह सदैव उन्हीं के विषय में सोचता आ रहा हो । किसी भी व्यक्ति के लिए अपने को अकस्मात् इतना चतुर समझ लेना कितना गौरवपूर्ण होता है । कुबड़ा उसकी बातें सुनता जा रहा था और मुस्कराता जा रहा था । उसकी यह मुस्कराहट आश्चर्य और श्रद्धा से मिश्रित थी । याकोव कुर्सी पर बैठा हुआ उसे लड़की की तरह से स्नेहपूर्वक देख रहा था । और वाकोव इन दोनों को इस प्रकार आश्चर्य-चकित कर गर्व का अनुभव कर रहा था । और यह सब इतना मार्मिक था-उसका यह अनुभव करना कि वह उस भावना को भी पहिचानता है जो मनुष्यों को एक दूसरे से जोड़ देती है—कि वायकोव की आँखों में आँसू भर आए और अत्यधिक क्लान्त होकर वह आराम कुर्सी की पीठ से सट कर लेट गया और थकान से आँखें बन्द करते हुए बुदबुदाया, "मनुष्यों को सता कर किसे आनन्द आता है ? परन्तु आवश्यकता, काम करने की प्रत्यक्ष आवश्यकता, सबसे बड़ी है,बहुत बड़ी ! और हम सब को इसके लिए शीघ्रता करनी चाहिए क्योंकि मृत्यु हमारा इन्तजार कर रही है ।"

किकिन अपनी कुर्सी से उछल कर खड़ा हो गया और चिन्ता के स्वर में बोला

"तुम थक गए हो, येगोर इवनिच । जाओ और सो रहो । पाशा चलो इन्हें बिस्तर पर पहुंचा दें ।" वायकोव की हाथों का सहारा देते हुए वे उसे उसके बिस्तर पर ले गए । फिर सावधानीपूर्वक उसे लिटाकर दबे पाँव वहाँ से चले गए । कुबड़ा आगे उचकता जा रहा था और याकोव पीछे सिर झुकाए बालों को झटकारता चल रहा था ।

किकिन और याकोव की देख-रेख और सेवा में वायकोव कई दिनों तक अपने को श्रेष्ठ समझने की उस असाधारण दशा में पड़ा रहा जो कोई आदमी अपने जन्मदिन को अनुभव करता है । इन दिनों में वह बहुत कमजोर हो गया था इसलिए उसकी सेवा के लिए एक नर्स को बुलाना बहुत आवश्यक हो गया । एक लम्बी, चुप रहने वाली नर्स, जिसके चेहरे पर चेचक के दाग थे, इस कार्य के लिए रखी गई । यह अनुभव करते हुए कि दिन प्रति दिन उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही है, वायकोव ने, जैसे एक मुसीबत

में पड़ा हुआ मनुष्य दूसरे को भी उसी स्थिति में देखकर सन्तोष का अनुभव करता है, देखा कि किकिन का साँवला चेहरा चिन्ता से मुरझा गया है और उसकी आँखों से परेशानी झांकने लगी और याकोव भी पहले से अधिक चुप रहता है तथा उसका चेहरा पीला और उदास रहता है। वह दिन में कई बार ग़ायब हो जाता है और जब वापस लौटता है तो बाहर होने वाली घटनाओं के विषय में बहुत कम और अनिच्छापूर्वक बातें करता है।

"वे लोग मेरे लिए चिंतित और दुखी हैं," वायकोव ने सोचा, "वे दोनों ही मेरे लिए दुखी हैं। इसलिए मुझे छोड़ना नहीं चाहते। इससे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि मेरा अन्त समीप है।" परन्तु पहले की तरह अब मौत का भय उसे अधिक नहीं सताता था। इस विश्वास ने कि वह मर रहा है, उसका असन्तोष और दुख कम कर दिया था यद्यपि वह इस विचार से अपना पीछा नहीं छुड़ा सक रहा था—"अगर केवल मैं याकोव के साथ कुछ दिन और रह सकता! और किकिन भी अच्छा आदमी है। अब वे मुझे अच्छी तरह समझ गए हैं। मैंने अपना हृदय उनके सामने खोल दिया है इसलिये वे मुझसे घृणा नहीं करते।"

और हँसते हुए उसने अपने उत्तराधिकारी के विषय में सोचा : "मैंने उसे यह साबित कर दिया है कि सम्पत्ति का सम्मान करना ही चाहिए और अब वह लड़का इसलिए परेशान है कि वह कह चुका है कि इसे गरीबों में बाँट दो। तुम जनता के विषय में क्या सोचते हो? क्यों?"

"नगर में क्या हो रहा है?" उसने, किकिन द्वारा बताई हुई असम्बद्ध और याकोव द्वारा बताई हुई संक्षिप्त बातों की असलियत जानने की इच्छा से, नर्स से पूछा।

"वे अब भी बगावत कर रहे हैं," नर्स ने उपेक्षा से उत्तर दिया, मानो उसके लिए बग़ावत करना इस नगर के आदमियों का रोज का धन्धा है जैसे शराब पीना, चीजों की खरीद फरोख्त करना आदि। वह हर समय अपने मुँह पर हथेली रखकर जम्हाई लिया करती और परेशान सी होकर हट जाती। उसकी भावना हीन आँखों में हमेशा नींद की खुमारी भरी रहती

और उसकी निशब्द चाल में बिल्ली की चाल की सी सतर्कता और खामोशी भरी रहती।

शनिवार और रविवार के बीच एक बरसाती धुँधली शाम को नगर में गोलियाँ चलनी प्रारम्भ हो गईं। गोलियों का पहला शब्द कहीं बहुत दूर पर सुनाई दिया जो शीघ्र ही शान्त हो गया।

वायकोव कई मिनट तक गोली चलने की आवाज को सुनता रहा। यह आवाज सुनने में ऐसी मालूम हो रही थी जैसे एक कौवा छत की गीली लोहे की चादर पर चोंच मार रहा हो। उसने नर्स को जगाया और पूछा—'यह खटखटाने की आवाज कहाँ से आ रही है?"

नर्स ने साँप की तरह अपना सिर ऊपर को उठाया, खिड़की के धुँधले शीशों में से बाहर की ओर देखा, कुछ देर सुनने का प्रयत्न किया और बोली—'मुझे नहीं मालूम? क्या तुम दवाई लोगे?"

"चुप रहो।"

खटखटाहट की सी आवाज और स्पष्ट तथा और नजदीक आ गई। शीघ्र ही यह आवाज ऐसी लगने लगी जैसे कोई क्लर्क लगातार हिसाब जोड़ने की मशीन के दानों को इधर से उधर खटखटाता जा रहा हो।

"यह तो रायफल चलने की सी आवाज है," वायकोव ने उद्विग्नता पूर्वक कहा। वह एक पुराना सिपाही था इसलिए उसे पूरा यकीन हो गया कि यह रायफल की ही आवाज थी। "जाओ और दूसरों को जगा दो," उसने नर्स से कहा।

नर्स अपने बालों को रूमाल के नीचे बाँधती और उस धुँधली रोशनी में हिलती हुई, मानो तेज हवा के झोंकों से हिल रही हो, चली गई। वायकोव अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गया और कान लगाकर सुनने लगा। वह अपने सिर के बालों और दाढ़ी को काँपते हाथों से थपथपा रहा था।

"वे लोग गोली चला रहे हैं—शैतान की औलाद! मुझे ताज्जुब है कि कौन गोली चला रहे हैं और किस पर गोली चला रहे हैं?"

नर्स तेजी से भागती आई और दरवाजे में घुसने से पहले ही अपनी तीखी आवाज में चीखी—"वे गोली चला रहे हैं! तुम्हारी छत पर!"

"बेवकूफ," वायकोव ने गरज कर कहा, "वे खाली, बिना गोली वाले कारतूस छोड़ रहे हैं।"

"अरे नहीं, वे खाली कारतूस नहीं चला रहे।"

"चुप रहो! यह तो युद्ध का अभ्यास किया जा रहा है। उन लोगों को नगर में गोली वाले कारतूस चलाने की आज्ञा नहीं है।"

"अरे, नहीं, मेरे अच्छे मालिक, तुम गलती पर हो।"

वह दौड़ी और खिड़की खोल दी। खड़खड़ाहट का शब्द कमरे में भर गया: वायकोव ने पहचान लिया कि यह शब्द रायफल और रिवाल्वर का है। अचानक एक बम फटा। काँच टूटने की आवाज आई और सामने के मकान की खिड़कियों पर भयङ्कर अग्नि का प्रकाश दिखाई पड़ा। वह औरत जमीन पर बैठ गई और फर्श पर लेटकर कराहने लगी: "हे मेरे भगवान!"

ओवरकोट और टोपी पहने हुए, पंजों पर चलता हुआ किकिन कमरे में घुसा। लैम्प की रोशनी में चमकता हुआ उसका चेहरा ताँबे की निर्जीव मूर्ति की तरह लग रहा था।

"यह सब क्या हो रहा है?" वायकोव चीखा—"याकोव कहां है?"

"वह चला गया।"

"वह कब गया? कहाँ गया?"

कुबड़े ने अपनी टोपी उतारी और अपराधियों की तरह हाथ फैला कर बोला:

"मैंने उससे कहा था, येगोर इवानिच, मैंने उससे कहा था: इनसे दूर रहो, दूर रहो। यद्यपि यह बिल्कुल सत्य है कि उन लोगों ने हमें धोखा दिया है……।"

"किन लोगों ने?"

"अधिकारियों ने, सरकार ने।" और याशा बोला "नहीं, मुझे जाना ही चाहिये! हमारे साथी·· क्षुब्ध," उसने कहा। "वह कोनोनोव के कारखाने वालों के साथ हैं ।"

वायकोव को ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसके कोड़ा मारा गया हो। बिस्तर से नीचे पैर लटकाते हुए उसने घरघराती आवाज में कहा—"मेरा गाउन लाओ। मुझे खिड़की पर ले चलो! ए, औरत!"

नर्स ने खिड़की से बाहर देखा और कन्धे उचकाते हुए कहा—"तुम्हें जो दीखे सो करो! गोली चलना शुरू हो गया है। मैं घर जा रही हू।"

परन्तु वह गई नहीं। फर्श से उठी भी नहीं और अपने घुटनों पर बैठी हुई खिड़की की ओर देखती रही। किंकिन वायकोव को कपड़े पहनाता हुआ बुदबुदाया—"मुझे उम्मीद है कि खिड़की से होकर कोई चीज भीतर नहीं आ सकेगी।"

"चुप रहो," वायकोय ने गुस्से से कहा—"तुम भी उन्हीं के साथ हो, मैं जाता हूँ।"

गोलियों की आवाज अब और नजदीक आ गई थी। उन्होंने एक लम्बी कराह की आवाज भी सुनी—"आह।"

फिर टूटे हुए दरवाजों से छड़ें निकालने की, दरवाजों को जोर से खोलने की, कुल्हाड़ियों से एक पेड़ के गिरने की और एक भयभीत औरत के चीखने की आवाज सुनाई दी · "पीछे के बागों में होकर भागो।"

वायकोव लड़खड़ाता हुआ खिड़की पर आया और उसने एक काले घोड़े को, जिसकी पीठ पर एक व्यक्ति चिपका हुआ था, सड़क पर पूरी तेजी से भागते देखा। उस व्यक्ति के कारण घोड़ा एक ऊँट की तरह दिखाई दे रहा था। घोड़े की रुक-रुक कर पड़ती हुई टापों की आवाज से यह मालूम हो रहा था कि वह लङ्गड़ा है। बाग की चहारदीवारी और मकानों की दीवालों की छाया में तीन काली मूर्तियाँ, एक दूसरे के पीछे चुपचाप, आगे बढ़ती जा रही थी। सबसे पीछे वाले व्यक्ति के हाथ में एक लम्बा बाँस था जिसका पिछला हिस्सा सड़क के किनारे लगे हुए पत्थरों और मोड़ों पर घिसटता हुआ जा रहा था।

"चोर" अपने भीतर उठती हुई भयानक शान्ति और खोखलेपन की भावना को अनुभव करते हुए वायकोव ने सोचा जिसमें बाहर होने वाले प्रत्येक शब्द की प्रतिध्वनि सुनाई दे रही थी। और इसमें उसके अपने विचार डूब कर समाप्त हो गए। सूखे पत्तों को खड़खड़ाती हुई एक गोली निकल गई।

"तोप के गोले की आवाज है," वायकोव ने कहा और फिर उसने किकिन को धीमी आवाज में कहते सुना—"अच्छा हो कि तुम खिड़की से हट जाओ!"

वायकोव ने कुबड़े का कन्धा दबाते हुए कहा—"अच्छा तो यह बगावत है?"

"मजदूरों की बगावत, येगोर इवानिच।"

"क्या याकोव, यास्का भी इसमें शामिल है?"

"हाँ, वह कोनोनोव के आदमियों के साथ है।"

"जाओ!" खिड़की से सड़क की ओर इशारा करते हुए वायकोव बोला—"जाओ और उसे बुला लाओ! उससे कहो कि वह फौरन घर आ जाय! बदमाश! तुम अब तक इस विषय में चुप क्यों रहे?"

किकिन ने अपराधी के से स्वर में कहा—"याशा ने तुम्हें बता दिया था। क्या उसने यह नहीं कहा था कि सशस्त्र विद्रोह होने वाला है?"

"जाओ! अगर याशा मारा गया तो मैं तुम्हारे जीवन को नरक बना दूँगा।"

वायकोव की ठोढ़ी इस तरह से हिल रही थी जिससे ऐसा मालूम हो रहा था कि वह गिर जायगी। सीधा, मानो 'अटेन्शन' की हालत में खड़ा हो,। इस तरह लम्बा और साँवला, वह खिड़की से आते हुए प्रकाश में खड़ा हुआ था। उसकी आँखें बाहर को निकल आईं थीं, दाँत कटकटा रहे थे और टांगें काँप रहीं थीं। उसका गाउन कन्धों पर सिकुड़ गया था मानो वह उसके दुर्बल कन्धों पर लहरा रहा हो।

किकिन गायब हो गया।

"मैं घर जा रही हूँ," नर्स ने फिर कहा।

सड़क पर जो अब कुहरे से धुँधली नजर आ रही थी निगाह जमाए वायकोव थक कर आराम कुर्सी में गिर पड़ा। गोलियों की आवाज थोड़ी कम हो गई थी। कुल्हाड़ियों के शब्द भी कभी कभी ही सुनाई पड़ते थे। कोई भारी चीज चहार दीवारी पर गिरी या शायद कोई दरवाजा हो। और लकड़ियों के टूटने की आवाज आई। वायकोव यह समझने में असमर्थ रहा कि तार के खम्बे इतने मजबूत और गूजने वाले क्यों हैं। और फिर अप्रत्याशित तेजी से, सड़क पर शोर मचने लगा। भागते हुए पैरों की आवाज, टूटती हुई लकड़ियों की चरमराहट और एक परिचित सी भारी गले की तीखी आवाज सुनाई दी।

"दरवाजों को तोड़ दो! अहाते में शराब के पीपे हैं। उन्हें बाहर लुढ़का लाओ!"

"यह पीपे तो मेरे अहाते में हैं।" वायकोव ने अन्दाज लगाया।

"तार को बत्ती के खम्भे से बाँध दो। उसे सड़क पर खड़े होकर खींचो। लट्ठे को काटकर गिरा दो ...मेरे पैर! शैतानो, मेरे पैर का तो ख्याल रखो।"

"यह तो याश्का की आवाज है!" वायकोव ने जोर से कहा—"हाँ, यह वही है!"

वह यह नहीं सोचना चाहता था कि याकोव क्या कर रहा है परन्तु वह इस सबका कारण जानना चाहता था कि यह क्या हो रहा है और "वह मकान की रक्षा कर रहा है! वह उन्हें भीतर नहीं घुसने दे रहा।"

नर्स कमरे में इधर से उधर भागती फिरती थी और चिल्ला रही थी:

"ओह भगवान! मेरे भगवान डाकू घर में घुसे आ रहे हैं।"

"बैठ जाओ!" वायकोव चिल्लाया, "बैठ जाओ, वर्ना मैं इस डंडे से तुम्हारी खबर, लूंगा! खामोश रहो।"

और उसने झाड़ू वाले बाँस को उठाकर, जिससे छत को खटखटा कर वह किकिन को बुलाया करता था, नर्स की ओर घुमाया। उसकी ठोढ़ी अब भी काँप रही थी और वह मूँछों को मुँह में दबाकर चबा रहा था। उसने अपनी दाढ़ी और मूँछें नोंच डालीं परन्तु ठोढ़ी का हिलना फिर भी बन्द

नहीं हुआ। उसके हृदय की शान्ति और भी भयानक रूप धारण करती जा रही थी और उसका सूनापन और भी सघन हो उठा जिसमें सड़क पर होने वाला शोर, चीख, पुकारें, खिड़कियों के टूटने की आवाजें और दूर चलने वाली गोलियों की कड़कड़ाहट प्रतिध्वनित हो रही थी।

"इस सब को खत्म करो।" दरवाजे पर एक कर्कश आवाज ने आज्ञा दी।

दिन निकल रहा था। आदमियों की शक्लें उस धुँध में दिखाई देने लगी थीं। ये लोग संख्या में सौ से अधिक नहीं थे जो वायकोव के घर की बाँयी ओर सड़क पर इकट्ठे होकर तार के खम्बों को तारों की सहायता से घसीट कर मोर्चा बन्दी करने की कोशिश कर रहे थे। इसके लिए वे पड़ौस के अहातों से सूखी घास के गट्ठर उठा लाये थे और एक गाड़ी भी कहीं से खींचकर ले आये थे तथा एक दूसरे को उत्साहित करते हुए एक लकड़ी की चहार दीवारी को गिराने की कोशिश कर रहे थे। खामोश मकानों की खिड़कियाँ धुँधले शीशे से इस शोरोगुल को चुपचाप घूर रही थीं। कभी कभी उन शीशों पर आदमियों की परछाइयाँ दिखाई पड़तीं और गायब हो जातीं।

दूर, सब को तैयार रहने की सूचना देने वाला, एक बिगुल तीखी लहराती हुई आवाज में बज उठा।

"सावधान" वह धीमी आवाज गूंजी। फिर टूटने और खड़खड़ाने की आवाज आई और कोई वस्तु भरभरा कर सड़क के किनारे गिर पड़ी।

"वे इस जगह को बरबाद कर रहे हैं" नर्स की ओर घूमते हुए वायकोव जोर से चिल्लाया मानो उसकी सलाह माँग रहा हो—"तुम सुन रही हो? वे लोग सब चीजें तोड़े डाल रहे हैं!"

सर्दी से काँपते हुए उसने अपना गाउन छाती पर कस लिया, खिड़की में से सिर को बाहर निकाला और देखा कि याकोव एक लम्बी लोहे को छड़ कन्धे पर रखे फाटक की ओर भागा जा रहा है। उसके पीछे लगभग एक दर्जन आदमी रायफलों और कुल्हाड़ियों से लैस भाग रहे हैं। इनमें से एक के पास एक गाड़ी का लम्बा धुरा है। वे फाटक पर एक साथ

टूट पड़े। याकोव बिल्ली की तरह उछल कर अहाते में आ गया और चीखा:—

"फाटक को गिरा दो! शराब के पीपे बाहर ले जाओ!"...

वह सब स्वप्न की भाँति विचित्र और असम्भव सा लग रहा था। वायकोव को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह पागल सा खड़ा देख रहा था परन्तु उस नर्स की भयानक, पागलों की सी चीख ने उसे होश में ला दिया: "डाकू! डाकू।"

दरवाजे झटके के साथ खुल गए और वह अहाते में घुस आई।

"ठहरो! अपनी बची हुई पूरी शक्ति लगा कर वायकोव चिल्लाया—"ठहरो, शैतानो! यास्का इन्हें बाहर भगा दो!"

याकोव ने मुँह ऊपर उठाया जो मालपुए की तरह गोल था और चीखकर बोला—"बाबा, इन लोगों ने हमें धोखा दिया है। वे आदमियों की हत्या कर रहे हैं!"

और फिर उसने कुबड़े की भयभीत और शोकाकुल आवाज सुनी:—

"येगोर इवानिच, खिड़की से दूर हट जाओ

फाटक का बाँया दरवाजा उठा, हिला और भयंकर आवाज करता हुआ अहाते में गिर गया। आदमियों ने दौड़ कर उसे उठाया और सड़क पर खींच लाए। दूसरे आदमी बचे हुए दूसरे दरवाजे को तोड़ने और पीपों को बाहर लुढ़काने में लग गए। उनमें वह कुबड़ा भी शामिल था।

वायकोव ने घुड़सवारों की तरह कसम खाते हुए गमला उठाया और अहाते में जाकर आदमियों पर फेंक कर मारा परन्तु वह दूर जा गिरा। वायकोव ने इसे देखा और देखकर नर्स को आज्ञा दी:

"मुझे फूलों के गुलदस्ते कुर्सियाँ आदि सब कुछ उठाकर देती जाओ।"

उसकी आवाज भयानक हो उठी थी। वह औरत नीचे झुकी हुई कमरे में दौड़ दौड़ कर खिड़कियों पर से गुलदस्ते और कुर्सियों को घसीट घसीट कर लाने में लग गई। और वायकोव खिड़की पर खड़ा हुआ अपनी बची हुई पूरी ताकत से उन्हें उठा उठाकर नीचे आदमियों पर फेंकता रहा

और दर्द से कराह रहा। वह इस समय जंगली मनुष्य की तरह भयंकर हो उठा था और हाँफ रहा था।

"याश्का! मैं तेरा खून कर दूँगा! कोस्का! तू शैतान अपाहिज।"

एक गोली चली। शीशे टूटने की झनकार हुई। छत से चूना गिरा और नर्स बुरी तरह से चीख कर फर्श पर बैठ गई। वायकोव उसकी ओर घूमा और चिल्लाया :

"तुझे कुछ भी नहीं हुआ। तू मरी नहीं है! शैतान कुतिया, उठ, चीजें ला।"

सड़क पर, बिल्कुल पास एक साथ कई गोलियों की आवाज आई और कोई फाटक पर कर्कश आवाज में चीखा : "हम लोग घिर गए।"

वायकोव ने अपने भतीजे को जमीन पर गिरकर अहाते की ओर रेंगते देखा। वह अपनी एक टाँगको घसीट रहा था जब कि एक दाढ़ी वाले आदमी ने गाड़ी का धुरा, जिसे वह लिए हुए था, जमीन पर पटक दिया और पीठ के बल गिर पड़ा। उसका सिर जमीन पर इतनी बुरी तरह टकराया कि उसकी टोपी गिर पड़ी। उसी समय खाकी वर्दी पहने सिपाही दरवाजे की धुंध में दिखाई पड़े। वे लोग झुककर, रायफल लिए हुए और अपनी संगीनों को सामने ताने हुए आगे को बढ़े आ रहे थे।

"हथियार डाल दो! जमीन पर लेट जाओ।" वे चीखे।

भागते हुए आदमियों पर गोलियों की बौछार हुई।

वायकोव पागल की तरह हंस पड़ा। अपना हाथ बाहर निकाल कर सड़क की ओर इशारा करते हुए, पैर पीट कर कर्कश, भारी आवाज में वह चिल्लाया :

"उसके संगीन भोंक दो! वह जो टोप पहने हुए रेंग रहा है। उसके संगीन भोंक दो। और देखो वह रहा कुबड़ा, पीपे के पीछे छिपा हुआ कुबड़ा!"

नर्स ने दूसरी खिड़की खोल ली और चीखना शुरू किया :

"उनके संगीन भोंक दो!......संगीन भोंक दो। उन्हें भगादो...।"

नीली आँखों वाली औरत

सहायक पुलिस अफसर पोद्शिव्लो एक मोटा और विषादपूर्ण आकृति का उक्रेन निवासी, अपने दफ्तर में बैठा अपनी मूछें मरोड़ता हुआ, उदास निगाहों से खिड़की में होकर पुलिस स्टेशन के अहाते की तरफ घूर रहा था। दफ्तर में अँधेरा, घुटन और पूरी खामोशी छा रही थी। वहाँ सिर्फ एक ही आवाज सुनाई पड़ रही थी और वह थी घड़ी के पेन्डुलम के बराबर हिलने की आवाज जो मिनट पर मिनट गिनती हुई नीरसता के साथ आगे बढ़ी जा रही थी। बाहर अहाते का वातावरण रोशनी से भरा हुआ और बड़ा लुभावना था। अहाते के बीचोंबीच उगे हुए तीन भोजपत्र के पेड़ों की घनी छाया वहाँ पड़ रही थी जिसके नीचे कांस्टेबुल कुखारिन, जो अपनी ड्यूटी खतम करके अभी आया था, आग बुझाने वाली गाड़ी के घोड़ों के लिए रखी हुई घास के एक ढेर पर सो रहा था यही वह दृश्य था जिसने सहायक पुलिस अफसर पोद्शिव्लो के क्रोध को भड़का दिया। उसका सहायक तो सो सकता था जब कि उस अभागे अफसर को इस गुफा में बैठ कर पत्थर की चारों दीवालों से निकलने वाली दुर्गन्ध में साँस लेने को मजबूर होना पड़ रहा था। उसने कल्पना की कि वह भी उस सुखद छाया में, उस सुगन्धित घास पर आनन्द के साथ सो सकता था अगर उसकी स्थिति और समय उसे इसकी आज्ञा देते। और इस विचार के आते ही उसने अपने शरीर को ताना और जम्हाई ली और पहले से भी अधिक क्रुद्ध हो उठा। उसके मन में उस कुखरिन को जगा देने की एक दुर्दम्य इच्छा उठ खड़ी हुई।

"ए! ए, सुअर! कुखरिन!" वह गरजा।

उसके पीछे वाला दरवाजा खुला और कोई दफ्तर के भीतर आया। पोद्शिव्लो बिना मुड़े खिड़की में से बाहर की तरफ देखता रहा। उसके मन

में यह जानने की तनिक भी जिज्ञासा नहीं हुई कि कौन अन्दर आया था और जो दरवाजे पर खड़ा हुआ अपने बोझ से फर्श के तख्तों को चरमरा रहा था कुखरिन उसकी चीख-पुकार को सुन कुनमुनाया तक भी नहीं। वह सिर के नीचे हाथ रखे और दाढ़ी को ऊपर आसमान की तरफ सीधी किए गहरी नींद में सो रहा था और उस सहायक पुलिस अफसर को ऐसा लगा कि वह अपने सहायक को इस तरह उसका मजाक सा उड़ाते खर्राटे भरते हुए सोता सुन रहा था। इस बात ने उसकी स्वयं एक नींद ले लेने की इच्छा को तथा उसके क्रोध को और भी भड़का दिया क्योंकि वह ऐसा करने की स्थिति में नही था, उसके मन में आया कि नीचे जाकर कुखरिन के मोटे पेट पर कस कर एक ठोकर जमाये और फिर दाढ़ी पकड़ कर घसीटता हुआ उसे छाया मे से खींच कर जलती हुई धूप में डाल दे।

"ए, ओ खर्राटे भरने वाले ! सुना ?"

"सरकार, में ड्यूटी पर हूं," उसके पीछे से एक धीमी आवाज आई।

पोद्शिब्लो पीछे की तरफ मुड़ा और उस सिपाही की तरफ घूर कर देखा जो उसकी तरफ रीती प्रश्नात्मक दृष्टि से देखता हुआ इस बात का इन्तजार कर रहा था कि हुक्म मिले और दौड़ जाय।

"क्या मैंने तुम्हें बुलाया था ?"

"नहीं, हुजूर।"

"क्या मैंने तुम्हे आवाज दी थी ?" पोद्शिब्लो ने अपनी आवाज ऊँची करते हुए पूछा और कुर्सी में दुहरा हो गया।

"नहीं, हुजूर।"

"तो इससे पहले कि मै कोई चीज उठाकर तुम्हारे सिर पर दे मारूँ यहाँ से भाग जाओ।" उसका बाँया हाथ मेज पर कोई चीज ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा था और दाहिने हाथ ने कुर्सी को कस कर पकड़ रहा था मगर सिपाही ने दरवाजे में से छलाँग मारी और गायब हो गया। इस तरह भाग जाना उस सहायक पुलिस अफसर की रुचि के प्रतिकूल था। उसने

अपने को अपमानित अनुभव किया। और यह बात भी थी कि वह अपने गुस्से को किसी पर उतारना चाहता था जो वहाँ की घुटन, काम आने वाले मेले और दूसरी बहुत सी परेशानियों, जो बिना उससे पूछे उसके दिमाग में घुसी चली जा रहीं थीं, की वजह से बढ़ता चला जा रहा था।

"वापस आओ!" वह दरवाजे में से चीखा।

सिपाही वापस आया और भयभीत सा दरवाजे पर सीधा खड़ा रह गया।

"बेवकूफ!" पोद्शिब्लां गरजा। "अहाते में जाओ और उस गधे के बच्चे कुबरिन को जगादो और कहो कि यह अहाता खर्राटे भरने के लिये नहीं है। जल्दी जाओ।"

"जी, सरकार। एक औरत पूछ रही हैं... .."

"क्या बात है?"

"एक औरत.. .."

"कैसी औरत?"

"लम्बी सी . . . ."

"बेवकूफ! क्या चाहती है?"

"आपसे मिलना ....."

"उससे पूछो कि किस लिए। जाओ।"

"मैंने उससे पूछा था। उसने नहीं बताया। कहती है कि वह खुद हुजूर से बात करना चाहती है।"

"ये औरत भी बला हैं। उसे भीतर आने दो। क्या वह जवान है?"

"जी सरकार।"

"अच्छा, भीतर ले आओ। जल्दी, अभी," पोद्शिब्लां ने कुछ नरम आवाज में कहा। वह तन कर बैठ गया और मेज पर कुछ कागज उलटने पलटने लगा। उसके उदास चेहरे अफसरी कठोरता छा गई।

अपने पीछे उसने एक औरत की पोशाक की सरसराहट सुनी।

"मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?" उसने अपने मर्यादित की

तरफ आधा मुड़ते और उसे गहरी निगाह से देखते हुए पूछा। औरत ने बिना एक भी शब्द बोले झुककर सलाम की और तैरती हुई सी मेजकी तरफ बढ़ी। वह अफसर की तरफ तनी हुई भौंहों के नीचे से झाँकती हुई नीली आँखों से गौर से देख रही थी। उसकी पोशाक मामूली और सादा थी जैसी कि निम्नमध्यवर्ग की स्त्रियाँ पहना करती हैं। उसके सिर पर एक शाल और कन्धों पर एक पुराना भूरा लबादा पड़ा हुआ था जिसके छोरों को वह अपने सुन्दर नन्हें से हाथों की पतली उंगलियों से मरोड़ रही थी। वह लम्बी, मोटी ताजी और भरी हुई छाती वाली स्त्री थी। उसका माथा चौड़ा था। वह आम-तौर पर पाई जाने वाली औरतों से ज्यादा गम्भीर और कठोर मुद्रा वाली थी। उसकी अवस्था लगभग सत्ताईस वर्ष की मालूम पड़ रही थी। वह धीरे धीरे और सोचती हुई सी चलती थी मानो अपने आप से कह रही हो: शायद यह अच्छा होगा कि मैं वापस लौट जाऊँ।

"बहुत खूबसूरत नमूना है, पक्की निशानेबाज है," पोदुश्किन्लो ने जैसे ही उसे देखा, सोचा। "शैतान मालूम पड़ती है।"

"मैं यह जानना चाहूंगी," उसने एक गहरी शान्दार आवाज में कहना शुरू किया और फिर चुप हो गई। उसकी नीली आँखें उस अफसर के गलमुच्छे वाले चेहरे पर सन्देह के साथ लगी हुई थीं।

"महरबानी करके बैठ जाइये। आप क्या जानना चाहती हैं?" पोदुश्किन्लो ने अपने आप सोचते हुए कि बड़ी सुन्दर रसीली है, अफसरी आवाज में पूछा।

"मैं उन पत्रों के विषय में आई हूँ," उसने कहा।

"निवास-पत्रों के विषय में?"

"नहीं उनके नहीं।"

"तो किनके विषय में?"

"वे जो—वे दिए जाते हैं—औरतों को," उसने शर्म से लाल पड़ते हुए रुक रुक कर कहा।

"कैसे ? कैसी औरतों को ?"पोद्शिव्लो ने भौंहें ऊपर उठाते हुए और बनते हुए मुस्करा कर पूछा।

"दूसरी तरह की—जो सड़कों पर घूमती हैं—रात को।"

"तत्, तत्! तुम्हारा मतलब है वेश्याओं को ?"पोद्शिव्लो ने कठोर होकर कहा।

"हाँ, मेरा यही मतलब है।"औरत ने गहरी सांस ली और मुस्कराई भी मानो अब, जब कि उस शब्द का उच्चारण कर दिया गया था, उसे आसानी हो गई हो।

"सच! हुँ—अच्छा—"पोद्शिव्लो ने कुछ ज्यादा सनसनी खेज बात की उम्मीद करते हुए कहना शुरू किया।

"मैं उन्हीं कार्डों को लेने के लिए आई हूँ," उस औरत ने एक कुर्सी पर बैठते हुए और अपने सिर को अजीब तरह से झटका देते हुए कहा, मानो किसी ने उसे मारा हो।

"अच्छा! तो तुम एक चकला चलाने की सोच रही ? क्यों ?"

"नहीं! मैं खुद अपने लिए कार्ड चाहती हूँ," और उसने सिर और भी नीचे झुका लिया।

"ओह। तुम्हारा पुराना कार्ड कहाँ है ?" पोद्शिव्लो ने अपनी कुर्सी को उसके नजदीक खींचकर, एक आँख दरवाजे पर लगाये हुए, उसकी कमर को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाकर पूछा।

"कैसा पुराना कार्ड ? मेरे पास कोई नहीं है।" उसने उसकी तरफ तेजी से देखा मगर उसके स्पर्श से अपने को बचाने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

"तो तुम चुपचाप काम करती थी, क्यों ? बिना अपना नाम लिखाये ? कुछ ऐसा ही करती हैं। मगर अब तुम नाम लिखाना चाहती हो ? यह ठीक है। यह ज्यादा सुरक्षित है।" पोद्शिव्लो ने उत्साहित होकर उसकी तरफ और भी साहस के साथ ध्यान जमाते हुए कहा।

"मैंने यह काम पहले कभी भी नहीं किया है," उस औरत ने निगाहें नीची करते हुए धीरे से कहा।

"सच ? यह कैसे हो सकता है ? मेरी तो समझ में नहीं आता," पोद्शिव्लो ने अपने कन्धों को उचकाते हुए कहा।

"मैं अभी इस बारे में सोच ही रही हूँ। मैं पहली ही बार मेले मे आई थी," आँखों को बिना ऊपर उठाए उस औरत ने धीरे से कैफियत दी।

"तो यह बात है।"पोद्शिव्लो ने उसकी कमर में से हाथ हटा लिया, अपनी कुर्सी पीछे खिसकाई और निरुत्तर होकर उनका सहारा लेकर पीछे को झुक गया।

दोनों खामोश थे।

"तो यह बात है,? हुँ। तुम चाहती हो-हुँ। यह बुरी बात है, सचमुच। और मुश्किल भी। मतलब यह कि, 'तुम जानती ही हो—मगर फिर भी—खैर, यह बड़ी अजीब सी बात है। सच तो यह है—मेरी समझ में नहीं आता कि तुम ऐसा काम कैसे कर सकोगी ? मतलब यह कि अगर जो तुम कह रही हो वह सच है तो।"

एक अनुभवी पुलिस अफसर होने के कारण वह यह जान गया कि यह सच था। वह औरत इतनी सुन्दर और सुसंस्कृत थी,कि उस प्रसिद्ध पेशे के लायक नही जान पड़ती थी। उस पेशे की वे विशेषतायें, जो एक वेश्या के चेहरे और हावभाव पर अपनी छाप लगा देती हैं, फिर चाहें वह कितनी ही, अनुभवी क्यों हो, उस औरत के चेहरे पर नही दिखाई पड़ रहीं थी।

"मै अपने ईमान की कसम खाकर कहती हूं कि यह सच है," पूर्ण विश्वास के साथ उसकी तरफ झुकती हुई वह बोली।" जब मैंने एक बार इस गन्दे काम को करने का निश्चय कर लिया है तो फिर मुझे झूठ बोलने की क्या जरूरत है ? कोई जरूरत नही है। मगर मुझे कुछ पैसा कमाना है। मैं विधवा हूँ। मेरा पति जो एक स्टीमबोट का चालक था, गत वर्ष जब बरफ टूटी थी, तब डूब गया था। मेरे दो बच्चे हैं—नौ साल का एक नन्हा सा लड़का और सात साल की एक छोटी सी बच्ची। पास मे एक पैसा भी नहीं रहा। न कोई नाते-रिश्तेदार ही है। जब मेरी शादी हुई थी तब मैं अनाथ थी। मेरे पति के रिश्तेदार बहुत दूर रहते हैं। मगर उन लोगों ने मुझे कभी भी

पसन्द नहीं किया। उनकी स्थिति अच्छी है मगर वे मुझे एक भिखारिन की तरह देखते हैं। मैं किसकी मदद माँगू? बेशक, मैं काम कर सकती थी। मगर जितना कि मैं पैदा कर सकती थी। मुझे उससे ज्यादा पैसा चाहिए। मेरा बेटा स्कूल में पढ़ रहा है।" मैं सोचती हूँ कि मैं उसकी नि:शुल्क शिक्षा के लिए अर्जी दे देती, मगर मेरी–एक अकेली औरत की–अर्जी की तरफ कौन ध्यान देता? मेरा बच्चा बड़ा होनहार और चतुर लड़का है। उसे स्कूल से हटा लेना तो बहुत ही बुरी बात होगी। मेरी छोटी बच्ची के लिए भी हर तरह की चीजों की जरूरत है। जहाँ तक एक ईमानदारी के काम का सवाल है, ऐसे काम ज्यादा नहीं मिलते। और अगर मुझे कोई ऐसा काम मिल भी गया तो उससे मुझे ऐसे कितने पैसे मिल सकेंगे? और मैं काम ही क्या कर सकती हूँ? रसोईदारिन बन जाऊँ? इससे मुझे महीने में सिर्फ पांच रूबल मिलेंगे। इतने काफी नहीं। जबकि इस पेशे में अगर औरत तकदीर वाली हो तो वह एक ही बार में इतना कमा सकती है, जो उसके पूरे परिवार के साल भर के खर्च के लिए काफी होगा। हमारे यहाँ की एक औरत ने पिछले मेले में चार सौ से ज्यादा रूबल कमा लिए थे। उस थोड़े से धन से उसने जङ्गल के रखवाले से शादी कर ली और अब वह एक भली औरत की तरह रहती है। वह सुखी है। अगर इसमें लज्जा और अपमान की बात न होती। मगर आप खुद ही सोचिए। यह तकदीर की बात है, ऐसा मेरा ख्याल है। हमेशा तकदीर ही काम करती है। अगर यह इरादा मेरे दिमाग में जड़ पकड़ चुका है तो मुझे इसे पूरा करना ही पड़ेगा। तकदीर ने ही मुझे यह सुझाव दिया है। अगर मैं धन कमा लेती हूँ तो ठीक है, अगर इससे मुझे लज्जा और तकलीफ के अलावा और कुछ भी नहीं मिलता—यह भी तकदीर ही है। मैं तो इसे इसी तरह देखती हूँ।"

पोद्शिव्लो ने उसके प्रत्येक शब्द को गौर से सुना। पहले पहल तो उस औरत की निगाहों में डर झलक रहा था, मगर धीरे-धीरे उसका स्थान दृढ़ निश्चय ने ले लिया। सहायक पुलिस अफसर बड़ा बेचैन हो उठा और कुछ कुछ उद्विग्न भी।

उसने अपनी इस उद्विग्नता की व्याख्या इस तरह की कि अगर इस तरह की कि कोई औरत किसी मूर्ख को फाँस ले तो वह उसका सारारक्त-मांस चूस लेगी। जब वह औरत अपनी सब बात खत्म कर चुकी तो उसने रूखे स्वर में कहा:—

"मुझे अफसोस है, मगर मैं तुम्हारी कोई भी मदद नहीं कर सकता। पुलिस के प्रधान के यहाँ अर्जी दो। यह उसका काम है और मेडीकल कमीशन वालों का मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।"

वह उससे पीछा छुड़ाना चाहता था। वह फौरन उठ खड़ी हुई, तनिक झुककर सलाम किया और तैरती हुई सी दरवाजे की तरफ बढ़ी। पोद्‌शिव्लो होंठ पर होंठ सटाये और आँखें सिकोड़े, उसे जाते हुए देखता रहा और वह ऐसा करके ही उसकी तरफ थूकने से अपने को रोक सका।

"तो मुझे पुलिस के प्रधान के यहाँ जाना चाहिए?" दरवाजे पर पहुँच कर उसने मुड़कर पूछा। उसकी नीली आँखें पोद्‌शिव्लो की तरफ एक दृढ़ निश्चय के साथ देख रहीं थीं। उसके माथे पर एक गहरी रेखा चमक उठी थी।

"हाँ," पोद्‌शिव्लो ने जल्दी से जवाब दिया।

"गुडबाई! धन्यवाद!" और वह बाहर निकल गई।

सहायक पुलिस अफसर ने मेज पर कुहनियां टेक लीं और लगभग दस मिनट तक इसी तरह बैठा सीटी बजाता रहा।

"कुतिया!" वह बिना सिर ऊपर उठाये जोर से बड़बड़ाया। "बच्चे! बच्चों का इस बात से क्या सम्बन्ध? उँह! फाहिशा!"

और वह फिर बहुत देर तक खामोश रहा।

"मगर जिन्दगी भी—अगर उसने जो कुछ कहा वह सच हो तो—यह आदमी को अपनी उँगली पर नचाती है। आदमी को बड़ी भारी पड़ती है।"

क्षण भर रुक कर उसने अपने मस्तिष्क में छाये हुए समस्त विचारों को एक गहरी सांस में व्यक्त कर दिया, उँगलियाँ चटकाईं और जोश के साथ कह उठा:

"वैश्या !"

"आपने मुझे बुलाया था ?" ड्यूटी पर खड़े सिपाही ने पूछा जो फिर दरवाजे पर आ गया था।

"क्या ?"

"आपने मुझे बुलाया था, हुजूर ?"

"भाग जाओ।"

"जी, हुजूर।"

"बेवकूफ !" पोद्शिब्लो बड़बड़ाया और खिड़की में से बाहर की तरफ देखने लगा।

कुखरिन अभी तक घास पर पड़ा सो रहा था। यह स्पष्ट था कि पहरे वाला सिपाही उसे जगाना भूल गया था।

मगर उस सहायक पुलिस अफसर का क्रोध शान्त हो चुका था। उस सोते हुए सिपाही के दृश्य ने उस पर तनिक भी असर नहीं डाला। वह किसी चीज से डर गया था। अपनी कल्पना में वह उस औरत की नीली आँखों को देखने लगा। वे दृढ़ निश्चय के साथ उसकी तरफ देख रहीं थीं। और इसने उसे हतोत्साह और व्याकुल बना दिया।

घड़ी की तरफ एक निगाह डालते हुए ? उसने अपनी पेटी कसी और दफ्तर से बाहर निकल गया।

"मेरा ख्याल है मैं उसे कभी दुबारा फिर देखूँगा। मुझे मिलना ही पड़ेगा," वह बड़बड़ाया।

२

और वह फिर मिला।

एक शाम को, जब वह सदर दफ्तर के बाहर ड्यूटी पर खड़ा था उसने उस औरत को लगभग पाँच कदम की दूरी पर देखा। वह अपनी उसी धीमी तैरती हुई सी चाल से चौक की तरफ जा रही थी। उसकी नीली आँखें सीधी आगे की तरफ देख रही थीं। उसके शरीर में एक विशेष आकर्षण था, वह लम्बी और भव्य थी। उसके कूल्हों की हरकतों और छाती में एक अजीब सौन्दर्य था। उसके नेत्रों से झलकने वाले विरक्तिपूर्ण भाव में

कुछ ऐसा था जो आदमियों को उससे दूर रखता था। उसकी भौंहों पर पड़ी हुई गहरी रेखा जो भाग्य के सम्मुख आत्मसमर्पण कर देने की सूचक थी और जो अब पहले से भी, जब वे पहले मिले थे, ज्यादा ध्यान आकर्षित करती थी। उसके गोल रूसी चेहरे पर एक कठोरता का भाव झलक कर उसके सौंदर्य को बिगाड़ रहा था।

पोद्शिव्लो ने अपनी मूछें ऐंठीं, कुछ अजीब सी हरकतें कीं और उसे निगाह से ओझल न होने का निश्चय किया।

"जरा ठहर, ओ शैतान!" यह वह चेतावनी थी, जो उसने अपनी कल्पना में उसे दी।

पाँच मिनट बाद वह उसकी बगल में चौक में पड़ी एक बेंच पर बैठा हुआ था।

"तुमने मुझे पहचाना नहीं? पोद्शिव्लो ने मुस्कराते हुए पूछा।

उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और खामोशी के साथ उसकी तरफ देखा।

"हाँ, कहिए कैसे मिजाज हैं," उसकी तरफ मिलाने के लिए बिना हाथ बढ़ाये ही उसने हताश-स्वर में पूछा।

"कहो, क्या हालचाल है? तुम्हें कार्ड मिल गया था?"

"यह रहा," और उसने उसी विरक्ति के भाव के साथ अपनी जेब में हाथ डालकर ढूंढा।

इससे पोद्शिव्लो परेशान हो उठा।

"ओह, उसे मुझे दिखाने की जरूरत नहीं है। मुझे तुम्हारा यकीन है। और दूसरी बात यह कि मुझे अधिकार भी नहीं है। मेरा मतलब यह था कि तुम्हारा काम कैसा चल रहा है?" जैसे ही उसने यह सवाल पूछा, वह अपने आप से बोला: मुझे इसकी क्या परवाह? और मैं उसके विषय में क्यों परेशान होता फिरूं? इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं, पोद्शिव्लो।

मगर कितना ही उसने इस तरह की बातों से अपने को उत्साहित करना चाहा मगर वह यह नहीं सोच सका कि "उसे कोई मतलब नहीं।" उस औरत में कुछ ऐसा था कि जो एक आदमी को उसके विषय में पूछने को बाध्यकर देता था।

"मेरा काम कैसा चल रहा है? बुरा नहीं है, उसे धन्य···" वह चुप हो गई और उसका चेहरा लाल पड़ गया।

"बहुत अच्छा है। बधाई! मेरा ख्याल है कि जब तक तुम इसकी आदी नहीं हो जातीं, तब तक यह मुश्किल है, है न?"

एकाएक वह उसकी तरफ झुकी। उसका चेहरा सफेद और ऐंठा हुआ था। मुँह गोल था मानो वह रो पड़ना चाह रही हो। मगर वह उसी तरह एकाएक पीछे को हट गई और उसके चेहरे पर वही पुराना भाव छा गया।

"यह ठीक है। मैं इसकी आदी हो जाऊँगी," वह एक साफ सधी हुई आवाज में बोली। फिर उसने अपना रूमाल निकाला और जोर से नाक साफ की।

उसका सामीप्य, उसके हावभाव और उसके शान्त स्थिर नीले नेत्रों ने पोद्शिब्लो के हृदय में खलबली उत्पन्न कर दी।

नाराजी की झोंक में वह उठ खड़ा हुआ और बिना एक भी शब्द कहे, उसकी तरफ हाथ बढ़ा दिया।

"गुडबाई," वह धीरे से बोली।

पोद्शिब्लो ने सिर हिलाया और अपने को एक मूर्ख बनने के लिए धिक्कारता हुआ तेजी से चला गया।

"जरा ठहरो मेरी रानी! मैं तुम्हें अब भी बता सकता हूँ। एक बार तुम्हें यह पता चल गया कि मैं कैसा आदमी हूँ तो तुम अपने हवाई महल पर से नीचे उतर आओगी!" वह अपने आप बड़बड़ाया और साथ ही उसने यह अनुभव किया कि उसने इस तरह उत्तेजित करने लायक तो कोई काम नहीं किया।

और इस बात से वह और भी अधिक क्रुद्ध हो उठा।

३

आगामी सप्ताह की शाम को, जब पोद्शिब्लो कारवाँ-सराय से साइ-बेरियन-पीयर की तरफ जा रहा था, वह गालियों, किसी औरत की चीखों

और दूसरे-शोरोगुल की आवाजों को जो एक होटल की खिड़की में से आ रही थीं, सुन कर रुक गया।

"मदद ! पुलिस !" एक औरत की पुकार सुनाई दी। उसने कुछ भयानक घूंसों की, फर्नीचर के टूटने की और एक आदमी की भारी आवाज, जिसने और सब आवाजों को दबा दिया था, सुनी :

"यह ले। फिर लगाओ, सीधे इसके मुँह पर लगाओ !" वह जोश के साथ चीखा।

सहायक पुलिस अफसर तेजी से दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ा, होटल के दरवाजे पर खड़ी भीड़ को धक्का देकर एक तरफ हटाया और इस दृश्य को देखा :

उसकी वह नीली आँखों वाली परिचित औरत एक मेज पर पड़ी अपने बाँये हाथ से एक दूसरी औरत के बालों को पकड़े हुए, दाहिने हाथ से उस औरत के सूजे हुए चेहरे पर बेरहमी के साथ बराबर मुक्के जमाये जा रही थी।

उसकी नीली आँखें क्रूरता के साथ सिकुड़ी हुई थीं, होंठ एक दूसरे पर चिपके हुए थे, उसके मुँह से लेकर ठोड़ी तक दो गहरी रेखाएँ पड़ी हुईं थीं; और उसका चहरा, जो कभी इतना शान्त और सुन्दर दिखाई पड़ा था, इस समय एक खूंखार जानवर की तरह कठोर हो रहा था। यह एक ऐसे प्राणी का चेहरा था जो अपने साथी को निरन्तर यंत्रणा दिए जा रहा हो और जिसे इसमें आनन्द मिल रहा हो।

वह औरत जिसे वह मार रही थी, सिर्फ धीरे से बुदबुदा सक रही थी और उसे दूर हटाने की कोशिश में अपने हाथ हवा में चला रही थी।

पोद्‌शिल्वो क्रुद्ध हो उठा। उसके हृदय में किसी से किसी बात का बदला लेने की तीव्र लालसा उत्पन्न हो उठी और तेजी से आगे बढ़ कर उसने उस गुस्से से पागल बनी हुई औरत को कमर पकड़ कर दूर हटा दिया।

मेज उलट गई, तश्तरियाँ फर्श पर गिर कर चूर-चूर हो गईं। दर्शक लोग बुरी तरह से चीखने, चिल्लाने और हँसने लगे।

उस छटपटाती हुई औरत को अपनी बाँहों में पकड़े, आवेश में भरे पोद्शिल्लो ने अनेक तरह के विकृत लाल चेहरों को अपनी तरफ ताकते हुए देखा और उसके कान में फुसफुसा कर बोला :

"तो यह तुम हो, क्यों ? यहाँ एक तमाशा बना रखा ह ? भीड़ लगा रखी है ?"

नीली आँखों वाली औरत की शिकार वह दूसरी औरत टूटी तश्तरियों के बीच जमीन पर पड़ी हुई सिसक और पागल की तरह गला फाड़ कर रो रही थी।

लम्बे कोट वाले एक छोटेसे दुबले पतले आदमी ने, पोद्शिल्लो को जो घटना घटी थी, सुनाते हुए कहा—

वह उस वाली, इस वाली से कहती है, हुजूर 'कुतिया,' वह कहती है, "तू गन्दी सुअरिया !" इस पर यह उसमें एक चाँटा जड़ देती है और वह इस पर चाय का भरा गिलास दे मारती है और तब यह उसे बालों से पकड़ कर कस कर एक घूसा जमाती है—धाँय ! और फिर दूसरा-धाँय। जो मार उसने इसे लगाई है उसे झेलना हरेक के बश का काम नहीं ! उसमें बड़ी ताकत है, इस औरत में !"

"बड़ी ताक़त है, क्यों ?" उस औरत को अपनी बाँहो में और भी जोर से दबाते हुए पोद्शिल्लो जोर से चीखा। उसके मन में उससे खुद लड़ने की भयकर इच्छा उठी।

लाल गर्दन और चौड़ी पीठ वाला एक आदमी जो अपनी पीठ को अजीब ढङ्ग से मोड़ लेता था, खिड़की के बाहर झुका और सड़क की तरफ मुँह करके चीखा :

"सिपाही ! यहाँ आओ !"

"जल्दी चलो ! फौरन पुलिस थाने जाओ ! दोनों ! उठो, ये ! तुम्हें यहाँ आने में इतनी देर कैसे लगी ? तुम अपनी ड्यूटी नहीं जानते ? बेवकूफ ! इन्हें थाने पर ले जाओ, जल्दी करो ! इन दोनों को !"

एक लम्बे चौड़े पुलिस के सिपाही ने पहले पहली औरत की पीठ में धक्का दिया फिर दूसरी में धक्का लगाया और उन्हें बाहर निकाल ले गया।

"कोग्नेक और सोडा लाओ, जल्दी !" पोद्शिव्लो ने खिड़की के पास एक कुर्सी पर धम्म से गिरते हुए वेटर को हुक्म दिया। इस समय वह अपने को थका हुआ और हरेक से तथा हर चीज से नाराज महसूस कर रहा था।

\+ \+ \+ \+

दूसरे दिन सुबह वह औरत पोद्शिव्लो के सामने उसी तरह शान्त और तनी हुई खड़ी थी जैसे कि उन दोनों की पहली मुलाकात के समय थी। उसने पोद्शिव्लो की तरफ अपनी नीली आँखों से सीधा देखा और उसके पहले बोलने का इन्तजार करती रही।

पोद्शिव्लो, जो विशेष रूप से इस बात से चिड़चिड़ा हो रहा था कि उसकी नींद पूरी नहीं हो पाई थी, ने अपनी मेज पर कागज बिखेर दिए, मगर ऐसा करने से भी उससे कोई भी बात कहने में उसकी मदद नहीं की। किसी तरह ऐसे मौकों पर आमतौर से लगाये जाने वाले जुर्म और दफायें उसकी जबान से न निकल सकीं। वह उससे कुछ ऐसी बातें कहना चाह रहा था जो ज्यादा कठोर और कटु होतीं।

"इसकी शुरूआत कैसे हुई ? यह बताओ।"

"उसने मेरा अपमान किया था," उस औरत ने दृढ़ता के साथ कहा।

"जरा सोचो तो सही ! कितना बड़ा जुर्म था !" पोद्शिव्लो ने व्यंग्य करते हुए कहा।

"उसे कोई अधिकार नहीं था। मेरी उससे तुलना नहीं की जा सकती।"

"हे भगवान ! तो तुम अपने को क्या समझती हो कि तुम कौन हो ?"

"मेरी जरूरतों ने मुझे इधर ठेल दिया मगर वह···"

"हुं। वह इसे मजे के लिए करती है, यही मतलब है न ?"

"वह ?"

"हाँ, वह।"

"उसके कोई सन्तान नहीं है।"

अच्छा, खामोश, गन्दी औरत। यह मत समझो कि तुम मुझे उन बच्चों की कहानी सुनाकर बेवकूफ बना सकोगी। मैं इस बार तो तुम्हें छोड़ दूँगा, मगर फिर कभी तुमने ऊधम किया तो मैं तुम्हें चौबीस घन्टे के भीतर-

भीतर शहर से निकाल बाहर करूँगा। मेले से दूर, समझो ? डरो मत, मैं तुम जैसियों को जानता हूं ? मैं तुम्हें ठीक करूँगा ! ऊधम मचाने वाली, क्यों ? तुम्हें अच्छी तरह सबक दूंगा, कुतिया। शब्द उसकी जबान से आसानी के साथ निकलते गए, हरेक पहले से ज्यादा अपमान करने वाला था। वह औरत पीली पड़ गई और उसने अपनी आँखें सिकोड़ीं जैसे कि पिछली रात उसने उस सराय में सिकोड़ी थीं।

"निकल जाओ !" मेज पर मुक्का मारते हुए पोद्शिव्लो चीखा।

"भगवान तुम्हारा न्याय करे," उसने एक रूखी और धमकी भरी हुई आवाज में कहा। फिर तेजी से दफ्तर के बाहर निकल गई।

"मैं तुम्हें बताऊँगा कि जज कौन है !' "पोद्शिव्लो जोर से चीखा। उसे उस औरत का अपमान करने में मजा आया था। उस शान्त मधुर चेहरे ने और उन नीली आँखों द्वारा उसकी तरफ निगाह गड़ा कर देखने के ढङ्ग ने उसे पागल बना दिया था। वह अपने को क्या समझती थी ? बच्चे ? झूठ ! कल्पना। बच्चों का इस बात से क्या ताल्लुक ? सड़क पर घूमने वाली, उसका यही रूप है। वह मेले में पैसे बनाने के लिए आई थी और अब शान बघारती है। भगवान ही जाने कि ऐसा क्यों करती है ? शहीद है...मजबूर है . बच्चे। इस बात का कौन विश्वास कर सकेगा ? उसमें इतनी हिम्मत ही नहीं कि सच्ची बात कह सके, इसलिए वह परिस्थितियों पर ही सब कुछ डाल देती है। वाह !"

४

लेकिन बच्चे आखिर थे ही—एक शर्मीला लम्बे सिर वाला छोटा सा लड़का, जो एक पुरानी स्कूल की यूनीफार्म पहने और कानों के ऊपर काला रूमाल बाँधे था और एक नन्ही सी लड़की ८ट्टू की बनी बरसाती पहने, जो उससे बहुत बड़ी थी, वे दोनों काशिन घ ट पर, जाड़ों की ठंडी हवा में कांपते और खामोशी के साथ बातें करते हुए लट्ठों पर बैठे हुए थे। उनकी माँ उनकी बगल में गाँठों का सहारा लिए खड़ी उनकी तरफ स्नेह भरी नीली आँखों से देख रही थी।

लड़का उसी की शक्ल का था। उसकी आँखें भी नीली थीं। वह रह रह कर टूटी हुई चोटी वाली टोपी से ढके अपने सिर को उसकी तरफ मोड़ कर उससे कुछ कह रहा था। लड़की का चेहरा चेचक के दागों से बुरी तरह भरा हुआ था। उसकी नाक तीखी और छोटी थी, आँखें भूरी थीं, जिनमें जिन्दगी और अक्लमन्दी की चमक भरी हुई थी। उनके पास तरह तरह के बन्डल और पैकेट तख्तों पर बिखरे पड़े थे।

सितम्बर के आखिरी दिन थे। दिन भर पानी पड़ता रहा था। नदी का किनारा कीचड़ से भर रहा था और ठंडी और सीली हवा चल रही थी।

वोल्गा नदी उफन रही थी। चमकती हुई लहरें शोर मचाती हुई किनारे से टकरा रही थीं। हवा में बराबर रहने वाले शोर की गूंज भर रही थी। हर तरह के आदमी आ-जा रहे थे। सब के चेहरों पर परेशानी झलक रही थी और वे तेजी से अपने काम पर चले जा रहे थे। और इस व्यस्त नदी के दृश्य के पीछे एक माँ और दो बच्चों का यह खामोश समूह तुरन्त सब का ध्यान अपनी तरफ खींच लेता था।

सहायक पुलिस अफसर पोद्शिव्लो ने उन्हें देखा और उनसे कुछ दूरी पर रहते हुए वह उन तीनों को गौर से देखने लगा। वह उनकी प्रत्येक गति-विधि के प्रति चैतन्य था और किसी कारणवश लज्जित हो रहा था।

आधा घंटे बाद काशिन स्टीमबोट इस घाट से वोल्गा में ऊपर की तरफ जाने के लिए छूटने वाला था।

लोग-बाग जेटी पर बाहर आने शुरू हो गए।

वह नीली आंखों वाली औरत नीचे झुकी थैलों और बन्डलों को कन्धों पर और काँखों में दबा कर सीधी खड़ी हुई और अपने बच्चों के जो हाथ में हाथ डाले, अपने २ हिस्से का बोझ कन्धों पर लटकाये चले जा रहे थे, पीछे-पीछे सीढ़ियों पर उतरने लगी।

पोद्शिव्लो को भी बाहर जेटी पर जाना पड़ा। वह जाना नहीं चाहता था, मगर उसकी नहीं चल सकी और कुछ ही देर में वह टिकट घर के पास जा खड़ा हुआ।

उसके परिचितों ने टिकट खरीदे। वह औरत अपने हाथ में एक फूला हुआ भूरा बटुआ थामे हुई थी, जिसमें से नोटों की एक गड्डी ऊपर चमक रही थी।

"मैं चाहती हूँ," उसने कहा ऐसे कि देखो इस तरह से, बच्चे दूसरे दर्जे में जायेंगे—कोस्तोमा के लिए-और मैं तीसरे दर्जे में जाऊँगी। लेकिन क्या मैं दोनों के लिए एक ही टिकट खरीद सकती हूँ? नहीं? आप रियायत कर सकते हैं? ओह, बहुत-बहुत धन्यवाद। भगवान आपका भला करे।"

और वह बहुत खुश होती हुई चली गई। बच्चे उससे चिपटे रहे, उसका कपड़ा पकड़ कर खींच रहे थे और कुछ माँग रहे थे। उसने सुना और मुस्कराई।

"हे भगवान, मैंने कहा था कि मैं खरीद दूँगी, कहा था न? मैं तुम्हारे लिए, किसी भी चीज के लिए इन्कार न करूँगी? हरेक को दो दो। बहुत अच्छा, यहीं मेरा इन्तज़ार करना।"

वह दरवाजे के पास दूकानों पर गई जहाँ फल और मिठाइयाँ बिकती थीं।

फौरन ही वह अपने बच्चों के पास लौट कर कह रही थी—

"वार्या, यह देखो, तुम्हारे लिए खुशबूदार साबुन है—इसे सूंघो। और पेत्या, तुम्हारे लिए कलम बनाने वाला चाकू है। देखो, मैं भूली नहीं और पूरी एक दर्जन नारङ्गियां हैं। मगर सारी एक साथ ही मत खा जाना।

स्टीमबोट घाट पर आ लगा। एक झटका लगा। लोगबाग लड़खड़ा गए। वह औरत बच्चों के पास पहुँची और चारों तरफ चौकन्नी निगाहों से देखती हुए उन्हें अपने शरीर से चिपटा लिया। मगर यह देखकर कि परेशान होने की कोई बात नहीं थी, वह हँस पड़ी। बच्चे भी हँसने लगे। पुल नीचे गिरा दिया गया और मुसाफिर नाव पर चढ़ने लगे।

"धीरे धीरे चढ़ो! धक्का मत दो!" पोद्शिव्लो भीड़ पर चिल्लाया।

"ओ, बेवकूफ!" वह एक बढ़ई पर गरजा जो हथौड़ों, आरियों, बरमों, रेतियों और दूसरे औजारों से लदा हुआ था।" रुको, बच्चों के साथ वाली,

इस औरत के लिए रास्ता! भले आदमी तुम भी कैसे मूर्ख हो!" उसने और भी नर्म होकर आगे कहा जब वह औरत—नीली आँखों वाली उसकी परिचित—गुजरते हुए उसकी तरफ देखकर मुस्कराई और जब नाव पर पहुँच गई तो उसे झुक कर सलाम किया।

तीसरी सीटी बजी।

"नाव के रस्सों को खींच लो!" कप्तान ने पुल पर से आज्ञा सुनाई।

नाव काँपी और चलने लगी।

पोद्शिव्लो ने डेक पर खड़े हुए मुसाफिरों में अपनी परिचित महिला को ढूंढा और जब उसे देख लिया तो अपनी टोपी हिलाकर उसे सलाम किया।

उस औरत ने रूसियों की तरह तनिक झुककर जवाब दिया और अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया।

और इस तरह वह और उसके बच्चे कोस्त्रोमा को वापस लौट गए।

जब सहायक पुलिस अफसर पोद्शिव्लो ने उन्हें विदा कर दिया तो एक गहरी साँस ली और अत्यन्त उदास और दुखी होकर अपनी जगह पर वापस चला गया।



कवि

शुरा स्कूल से घर आई, कोट उतारा और भोजन-कक्ष में गई। उसने गौर किया कि माँ ने, जो सजी सजाई मेज पर पहले से ही बैठी थी, उसकी तरफ विचित्र रूपसे मुस्कराते हुए देखा। इस परिस्थिति ने शुरा की जिज्ञासाको तुरत जाग्रत कर दिया,लेकिन वह एक बड़ी लड़कीथी इसलिए उसने प्रश्नों द्वारा अपनी जिज्ञासा का प्रदर्शन करना,अपने गौरवके प्रतिकूल समझा। उसने माँ के माथेका चुम्बन लिया और दर्पण में अपने प्रतिबिम्बकी एक झलक लेकर,अपने स्थान पर बैठ गई। एक बार पुन उसे कुछ अजीब सा लगा—मेज पूरी तरह सजाई गई थी और उस पर पांच व्यक्तियों का सामान रखा था। तो इसके अतिरिक्त और कोई भी नई बात नहीं थी कि किसी को भोजन के लिए आमन्त्रित किया गया था। निराश होकर शुरा ने गहरी सांस ली। वह पिता, माता और बुआ के सभी परिचितों को जानती थी। उनमें एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो आकर्षक हो। हे भगवान! वे सब कितने नीरस थे और प्रत्येक वस्तु कितनी अरोचक थी।

"यह किसके लिए है?" उसने उस अतिरिक्त सामान के प्रति संकेत करते हुए विरक्ति के साथ पूछा।

उत्तर देने से पहले उसकी माँ ने अपनी घड़ी को फिर दीवाल-घड़ी की तरफ देखा, फिर खिड़की की तरफ मुड़कर कुछ सुना और अन्तत मुस्कराते हुए बोली :

"कल्पना करो।"

मजाक मत करो," शुरा ने यह अनुभव करते हुए कि उसकी जिज्ञासा पुन. जाग्रत हो रही है, कहा। उसे याद आया कि नौकरानी ल्यूबा ने भी उसके लिए दरवाजा खोलते समय कुछ अजीब सी बात कही थी.

"मुझे बड़ी खुशी है कि आप आ गईं, मिस !"

"ल्यूबा बहुत कम यह बात कहती थी कि उसे उसके आने से खुशी हुई है और इस तरह जोर देकर तो कभी भी नहीं कहती थी। शुरा इस बात को अच्छी तरह जानती थी, क्योंकि परिवार के उस नीरस दैनिक कार्यक्रम में होने वाली तनिक सी भी नवीनता उसके शान्त जीवन में एक हल्की सी हलचल उत्पन्न कर देती थी और शुरा के नन्हें से मस्तिष्क पर, जो नवीनता का भूखा रहता था एक स्पष्ट छाप डाल देती थी।

'लेकिन सम्भव है कि यह मजाक हो। अन्दाज लगाने की कोशिश करो न," उसकी माँ ने फिर कहा :

ल्यूबा के उस स्वर की मधुरता की कल्पना कर शुरा को पूर्ण विश्वास हो गया कि यह मजाक होगा, बहुत बड़ा मजाक। लेकिन किसी कारण वश उसने सीधा पूछना उचित नहीं समझा।

"कोई कहीं से आया है क्या ?" उपेक्षा दिखाने का बहाना सा करते हुए उसने पूछा।

"बेशक," माँ ने सिर हिलाते हुए कहा, "मगर कौन ?"

"चाचा क्रेन्या" अपने गालों पर खून की लालिमा दौड़ती हुई अनुभव कर शुरा ने अन्दाज लगाते हुए कहा।

"नहीं, कोई रिश्तेदार नहीं है। मगर कोई ऐसा है जिसके पीछे तू पागल हो रही है।"

शुरा ने आँखें नचाईं। फिर वह अचानक उछली और माँ की गर्दन से लिपट गई।

"ओ माँ ! सचमुच !"

"रहने दे; रहने दे !" माँ हँसती जाती थी और उसे परे हटाती जाती थी। "पागल बच्ची ! जरा ठहर तो सही, मैं उससे सब कह दूँगी।"

"माँ ! क्रिमस्की ? क्या वह आया है ? क्या पिताजी उससे मिलने गये हैं ? और बुआ जिना ? वे लोग किसी भी क्षण यहाँ आ जायेंगे।...माँ; मैं अपनी भूरी पोशाक पहन लूँ ? ओह, वे लोग आ रहे हैं ! वे आ ...!"

उत्तेजित और लज्जा से लाल पड़ी हुई वह माँ की कुर्सी के चारों तरफ कूदने लगी फिर। शीशे के पास भागी गई, कपड़े बदलने के लिए। वहाँ से भा ने ही वाली थी नीचे सदर दरवाजे के वन्द होने की आवाज सुन कर, वह फिर शीशे के पास लौटी, अपने वालों को थपथपाया, शान्त होकर मेज पर वैठ गई और आँखें वन्द करलीं, जिससे अपनी उत्तेजना को दबा सके। जब वह पुन' आँखे खोलेगी तो क्रिमस्की कमरे में होगा, उसके पास, सिर्फ एक कुर्सी की दूरी पर। वह कवि जिसकी कवितायें वह बार-बार पढ़ती है और जिसे सारा स्कूल आधुनिक कवियों में सर्वश्रेष्ठ समझता है। उसने इतनी सुन्दर, ऐसी आनन्दप्रद, ऐसी गहन, ऐसी सुरीली एव मधुर कवितायें लिखी हैं। भगवान! और वह पलक झपकते में अभी यहाँ होगा और वह उसके पास होगा, उससे बातें करेगा, ऐसी कवितायें सुनायेगा जो अभी तक शायद स्कूल की दूसरी किसी भी लड़की ने नहीं सुनी होंगी। कल वह उनसे कहेगी : "क्रिमस्की ने जो कवितायें लिखी है, तुम्हें अवश्य सुनना चाहिए।" "क्या?" वे पूछेंगी और वह नई कविता गा कर सुनायेगी और वे उससे पूछेंगी कि उन्हें ये कहाँ से मिल सकती हैं और वह शान्त होकर कहेगी—हाँ विना रुचि दिखाये! वह कहेगी कि ये अभी प्रकाशित नहीं हुई हैं, कि क्रिमस्की ने ये कल भोजन के समय उसके घर पर उसे सुनाई थीं।

उन्हें कितना आश्चर्य होगा, वे कितनी कुढ़ेंगी। वह लड़ाका किकीना उसे तो गश ही आजायेगा। इससे उसे यह सबक मिलेगा कि क्या अच्छा है— एक बहन के लिए एक गाने वाला रखना या एक कवि से मित्रता रखना। और दूसरी सब! वे बार बार पूछेंगीं : "शुरा, उसे हमें भी दिखा दो।" और कैसा हो अगर वह अकस्मात् उसके प्रेम में पड़ जाय? इसकी काफी सम्भावना है। क्योंकि वह कवि है। कवि तुरन्त प्रेमपाश में पड़ जाते हैं। भगवन्! उसकी मूछें कैसी होंगी? और उसकी आँखें। बड़ी और उदास और निस्सन्देह उनके नीचे कालिमा होगी। और नाक तीखी और लम्बी। मूछें काली होंगी। "शुरा," वह कहेगा, अपने हाथों को रगड़ते और उसके सामने घुटनों के बल बैठकर। "शुरा"! जैसे ही मैने तुम्हें देखा, नए जीवन की ऊषा मेरे

सामने खिल उठी और मेरा हृदय आशा से उद्वेलित हो उठा और।···वह तुम्हीं हो। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ—क्योंकि मेरी आत्मा ने तुम्हें पहचान लिया है।" ओह, लेकिन वह तो ये पंक्तियाँ पहले ही लिख चुका है। फिर ··· ।

"घुटन, धूल। भयानक दुर्गन्ध—मैं रात भर नहीं सो सका।"

वह स्वर, जिसने शुरा को काव्य और कल्पना के स्वप्नलोक से उतार कर पुनः वास्तविकता के सम्मुख ला खड़ा किया था, अत्यन्त कोमल और आकर्षक था, यद्यपि उसमें एक पेटू व्यक्ति की कठोर और कर्कश ध्वनि भरी हुई थी। शुरा ने आँखें खोलीं और जैसे ही एक लम्बा पतला व्यक्ति काली मखमल की जाकिट और चौड़ी भूरी पतलून पहने हुए उसकी तरफ बढ़ा, वह उठ खड़ी हुई।

"नमस्कार,। तुम मुझे भूल गई हो, क्यों भूल गई हो न? सचमुच भूल गई हो।"

"मैं—" शुरा परेशान हो उठी, "मैं सदैव आपकी कवितायें पढ़ती हूँ। मगर जब आप पिछली बार यहाँ आये थे, तब मैं बहुत छोटी थी।"

"और अब तुम बड़ी हो गई हो," अपनी निगाह से उसे तौलते हुए कवि मुस्कराया। वह कुछ और कहना चाहता था लेकिन सिर्फ होंठ सिकोड़ कर रह गया, जैसा कि बुड्ढे लोग किया करते हैं और शुरा के पिता से बातें करते हुए एक कुर्सी पर बैठ गया।

"मिखायल, तुम्हारा यह घर तो बड़ा आरामदेह है।"

शुरा सिर नीचा कर अपनी तश्तरी में देखने लगी और उसके चिकने तल पर उसने कवि की छाया देखी। वह उसकी भूरी पतलून, बालकटी खोपड़ी और पतली लाल मूंछों को पसन्द नहीं कर सकी—यह सब अत्यन्त नीरस था।

और उसके हजामत बने हुए नीले गाल, और उसकी ठोढ़ी और उसकी होठों को सिकोड़ने की आदत। उसकी आँखें बड़ी नीरस थीं—जिनमें कोई भी रंग नहीं था—और उनके नीचे का हिस्सा फूला हुआ था तथा माथे पर

झुर्रियाँ पड़ रही थीं। दरअसल, वह उस क्लर्क की तरह था, जिसे उसने डाक-खाने में देखा था। उसकी चालढाल में कुछ भी ऐसा नहीं था जिसे काव्यत्व-पूर्ण कहा जा सके। उसके हाथ ? शुरा ने उनकी तरफ कनखियों से देखा। । मोटे और छोटी तथा मोटी उँगलियों वाले थे। एक उँगली में वह सुले-मानी नग जड़ी हुई एक अँगूठी पहने हुए था। शुरा ने अत्यन्त व्यथित होकर आह भरी ?"

"तो तुम मेरी कवितायें पढ़ती हो ?"

वह यह बात उससे कह रहा था। उसने सिर हिला हिलाया और शर्म गई।

"अच्छा, और—मैं पूछ सकता हूँ, तुम्हें वे पसन्द हैं ?"

"ओह, ये सब तो तुम्हारी कविताओं के पीछे पागल हैं," माँ ने कहा।

"आह ! यह तो मुँह पर तारीफ की जा रही है।"

"नहीं, यह सच नहीं है," शुरा ने अपनी माँ की बात काटते हुए कहा मगर उसके शब्द कवि के शब्दों के बाद ही बाहर आ सके।

लड़की परेशान हो उठी—यह उसकी बदतमीजी थी। माँ, पिता, बुआ और वह सब हँस रहे थे। कवि ने किसी बात पर अपनी भौंहें भी चढ़ाई और उसकी मुखमुद्रा एक विदूषक की सी हो उठी। उसने अपनी भौंहें क्यों चढ़ाई थीं ? और वह दूसरों के साथ क्यों हँसा था ? वह एक कवि था, उसे समझदार और चतुर होना चाहिए। क्या शुरा की व्यग्रता उसे अजीब सी प्रतीत हुई थी, जैसी कि दूसरों को लगी थी ? क्या वह भी दूसरों की ही तरह था ? शायद वह केवल नम्र बनने का प्रयत्न कर रहा था और बाद में वह अपने असली रूप में आ जायेगा।

"तुम कौन से दर्जे में हो शुरा ?"

"छठवें में।"

वह क्यों जानना चाहता था ? उसने उसे शुरा कह कर क्यों पुकारा ?

"और तुम्हें सबसे अच्छा अध्यापक कौन लगता है ? मेरा ख्याल है ड्रायंग मास्टर ?"

"नहीं साहित्य !"

"ओह, हाँ, साहित्य का शिक्षक।" इसके बाद ही कान फाड़ने वाली हँसी गूँज उठी।

शुरा को ऐसा लगा कि उसके टुकड़े-टुकड़े किए जा रहे हों, उसे तकलीफ पहुँचाई जा रही हो, उसके शरीर में हजारों सुइयाँ भौंकी जा रही हों। वह मेज पर से भाग कर अपने को बचाना चाहती थी। उसे सर्दी सी लगी और उसे भय लगा कि वह अपने आँसुओं को रोकने में समर्थ नहीं हो सकेगी। उसने यह सब कैसे बर्दाश्त कर लिया ? गुस्से से काँपते हुए उसने कवि के चेहरे की तरफ देखा। उसकी आँखो में से क्रोध और तेज की ज्वाला सी निकल रही थी। उसे भय लगा कि जो कुछ उसके दिमाग में घुमड़ रहा है, उसे कहने से पहले ही उसकी हिम्मत जवाब दे जायगी। इसलिए वह एक सांस में मेज के नीचे अपनी उँगलियों को मरोड़ती हुई कहने लगी—

"क्या यह आपको अजीब सा लगा है ? मगर उसमें मजाक की तो कोई भी बात नहीं है। वह हमारे यहाँ का सबसे अच्छा अध्यापक है और हम लोग उसे बहुत चाहती हैं। वह इतनी मजेदार बातें करता है—हमें हर तरह की किताबें पढ़कर सुनाता है, साहित्य की नवीन गतिविधि से परिचित कराता है और संक्षेप में कहूँ तो वह एक बहुत अच्छा आदमी है। आप हमारे दर्जे में या सातवें में चाहे जिस से पूछ लीजिए। आप हँस क्यों रहे है ? बेशक इसलिए कि मैं —···"

"शुरा ! तुम्हें क्या हो गया है ?" उसके पिता ने कहा।

"हमने इस नवयुवती का अपमान कर दिया है," क्रिमस्की ने नम्र होकर कहा, "मैं मांफी माँगता हूँ।"

उसका क्षमा माँगना शुरा के कानों को बड़ा कर्कश लगा। उसे यह लगा कि वे शब्द बनावटी थे और यह कि वह कवि इस बात में जरा भी रुचि नहीं रखता था कि शुरा उसके शब्दों को किस रूप में ग्रहण करेगी। दूसरी बात यह थी कि वह यहाँ अपने को अजनवी महसूस कर रही थी। यहाँ किसी भी व्यक्ति को उसकी आवश्यकता नहीं थी। उसे अपने पर ग्लानि हुई

और वह भोजन समाप्ति तक गुमसुम बैठी रही। वह उस उदासी के विषय में सोचती रही, जो उसके हृदय में घिरती आ रही थी। एक मूक वेदना से परिपूर्ण उदासी।

"तो वह ऐसा है, यह कवि! बिल्कुल दूसरों की तरह," भोजन के बाद अपने कमरे की खिड़की में से बाग में उगी अपनी प्रिय बकायन की झाड़ियों को देखते हुए उसने सोचा। वह उन झाड़ियों को टकटकी बाँध कर देख रही थी मानों इन्हें पहली ही बार देखा हो।

"दूसरों की ही तरह। मगर क्यों। पिताजी भी तो कविता लिखते हैं। क्या वे इस कवि से किसी भी रूप में कम हैं?" कवि की कुछ पंक्तियाँ उसके मस्तिष्क में उभर आईं—इतनी विचारपूर्ण, इतनी मोहक—कोमल अवसाद से पूर्ण सुन्दर, सरस पंक्तियाँ।" उसने भोजन करते समय इनका जिक्र भी नहीं किया था। वह इनके लिखने का आदी हो गया होगा। जिस तरह कि सोन्या साजीकोना अपने अद्भुत कागज के फूल बनाने की आदी हो गई है। हरेक उससे जलता है मगर वह सिर्फ हँसकर कह देती है, 'ओह' यह तो बहुत आसान काम है।"

बाग में से बातें करने की आवाजें आईं। पिता और क्रिमस्की बातें कर रहे थे। अगर वे उस बकायन की झाड़ी के पीछे पड़ी बेंच पर बैठ जाँय तो वह उनका प्रत्येक शब्द सुन सकती है। गर्दन बढ़ा कर शुरा ने यह देखने के लिए बाहर झाँका कि वे किधर जाते हैं।

"तुम्हारी अन्तिम पुस्तक की कैसी बिक्री हो रही है?" पिता पूछ रहे थे।

"बुरी नहीं है। मैं दूसरा संस्करण निकालने की सोच रहा हूँ। मगर खरीदने वाले इसे जिज्ञासा के कारण ही अधिक खरीद रहे हैं न कि अपने कविता प्रेम के कारण। जैसे ही किताब छपी दुष्ट आलोचकों ने शोर मचा डाला—पतनोन्मुख! जनता यह जानना चाहती है कि पतनोन्मुख का अर्थ क्या है, जिसके विषय में इतना कहा जा रहा है। यह सब कुछ भी समझ में नहीं आता। इस सबसे मेरा ही लाभ है। वे पतनोन्मुख को जानने के लिए ही किताब खरीदते हैं।"

"जरा देखो न आजकल कौन लिखता है और कैसे लिखते हैं! गिद्ध हैं, कवि नहीं। वे भाषा को बिगाड़ते हैं, उसे विकृत करते हैं। मुझे कविता करने में आनन्द आता है और प्रयत्न करता हूँ ।"

शुरा ने उन दोनों को साथ-साथ बाग में होकर जाते हुए देखा। पिता कवि की कमर में हाथ डाले हुए थे। उनकी आवाजें धीमी पड़ी और फिर गायब हो गईं।

शुरा ने धीरे धीरे अपने शरीर को सीधा किया जैसे कि कोई भारी चीज उसे दबाये हो और हिलना कठिन प्रतीत हो रहा हो।

"शुरा! चलो, चाय पीलो!" माँ ने आवाज दी।

वह उठ खड़ी-हुई और दरवजे की तरफ बढ़ी। शीशे के सामने से गुजरते हुए उसने देखा कि उसका चेहरा पीला, उतरा हुआ और सहमा हुआ है। उसकी आँखों पर एक धुँध सी छा रही है और जब वह भोजन-कक्ष में घुसी तो वे परिचित चेहरे उसे आकारहीन सफेद धब्बों जैसे लगे।

"मुझे आशा है कि नवयुवती अब मुझसे नाराज नहीं होगी? कवि की आवाज आई।

वह कुछ नहीं बोली। वह उसके बालकटे सिर को देखती हुई यह याद करने की कोशिश करने लगी कि जब उसने इस आदमी की कवितायें नहीं पढ़ी थीं तथा इससे परिचित नहीं थी, तब यह आदमी उसकी कल्पना में कैसा लगा था।

"शुरा, तुम जबाव क्यों नहीं देती? कितनी बदतमीजी है?" पिता ने कहा।

"आप मुझसे क्या चाहते हैं," वह चीखती हुई उठ खड़ी हुई। "मुझे अकेली छोड़ दीजिए। दगाबाज आदमियो!"

सिसकती हुई वह भोजन कक्ष से बाहर भाग गई।

"दगाबाज़ो!" उसने पागल की तरह पुनः दुहराया।

बहुत देर तक चारों आदमी मेज पर चुपचाप खामोश बैठे एक दूसरे की तरफ आश्चर्य के साथ देखते रहे। फिर माँ और बुआ बाहर चली गईं।

"क्या इसने हमारी बातें सुन ली थीं?" पिता ने कवि से पूछा।

"गोली मारो इसे!" कवि ने कुर्सी पर इधर उधर होते परेशानी के स्वर में कहा।

माँ वापस आई।

"वह रो रही है," अपने ऊपर पड़ती हुई प्रश्नात्मक दृष्टि के उत्तर में उसने कन्धे उचकाते हुए कहा।

नन्हीं सी बच्ची

"वह एक नन्ही सी बच्ची थी, अजनबी।"

हर बार जब मुझे यह वाक्य याद आता तो वर्षों को लाँघ कर वृद्ध निर्बल नेत्रों के दो जोड़े मुझे देख कर मुस्करा उठते—एक ऐसी मुस्कराहट के साथ जिसमें स्नेह और दया की भावना लहराने लगती। और मैं दो लड़खड़ाती हुई आवाजें सुनता जो एक से स्वर में मुझे यह जताने का प्रयत्न करतीं कि वह 'नन्हीं सी बच्ची' थी।

और इस स्मृति से मैं प्रसन्न और आशान्वित हो उठता हूं। यह स्मृति उन सम्पूर्ण स्मृतियों में से सब से सुन्दर होती जो मेरे जीवन के उन दस महीनों में गुजरी थीं जब मैं अपनी इस जन्मभूमि--जो इतनी विस्तृत और दुखों से परिपूर्ण है—की टेढ़ी मेढ़ी सड़कों पर घूमता फिरा था।

जोदोन्स्क से वोरोनेझ जाते समय मेरी मुलाकात दो तीर्थ यात्रियों से हुई जिनमें एक बुड्ढा और एक बुढ़िया थी। दोनों की अवस्था सौ साल से ऊपर मालूम पड़ती थी। ये लोग बड़े धीरे धीरे और रुक रुक कर चल रहे थे तथा सड़क की तपती हुई धूल में से बड़े कष्ट के साथ पैर उठा उठा कर आगे बढ़ा रहे थे। उनकी पोशाकों तथा उनके चेहरों को देखकर यह भ्रम होता था मानो वे बहुत दूर से चलकर आ रहे हों।

"भगवान की मदद से हम तोबोल्स्काया प्रान्त[1] से पैदल ही चले आ रहे हैं," मेरी कल्पना की पुष्टि करते हुए बुड्ढे ने कहा।

रास्ते में साथ-साथ चलते हुए बुढ़िया ने मेरी तरफ करुणापूर्ण नेत्रों

१—यह प्रान्त सुदूर साइबेरिया में है जहाँ राजनैतिक कैदी भेजे जाया करते थे।

से—जो कभी नीले रहे होंगे—देखा और गहरी साँस लेते हुए करुण मुस्कान के साथ कहा :

"त्यासाया गाँव के क-नामक कारखाने से मैं और मेरा बुड्ढा, दोनों साथ साथ चले आ रहे हैं।"

"तुम लोग क्या थकान महसूस नहीं कर रहे ?"

"ज्यादा तो नहीं। भगवान की कृपा से हम अब भी रास्ता पार कर रहे हैं, अब भी रेंगते हुए बढ़ ही रहे हैं।"

"क्या तुम लोगों ने कोई मनौती मानी थी या सिर्फ बुढ़ापे में की जाने वाली तीर्थयात्रा पर वैसे ही चल पड़े हो ?"

"हमने एक मनौती मानी थी, अजनबी। हमने कीव के सन्तों और सोलोव्की के मन्दिरों की मनौती मानी थी, मनौती," बुड्ढे ने दुहराया और फिर अपनी साथिन की तरफ मुड़कर कहा: "आओ माँ, थोड़ी देर बैठ कर अपनी हड्डियों को आराम दे लें।"

"हाँ, ठीक है।" बुढ़िया ने कहा।

और हम लोग सड़क के किनारे खड़े एक पेड़ की छाया में बैठ गए। धूप तेज थी, आकाश निरभ्र था। हमारे आगे पीछे गर्मी से धुँधली दिखाई पड़ने वाली सड़क दूर तक फैली हुई थी। यह एकान्त और निर्जन स्थान था। सड़क के दोनों ओर जौ के पीले खेत खड़े थे।

"इन्होंने जमीन को सुखा डाला है," मुझे कुछ पेड़ देते हुए, जो उसने उखाड़ लिए थे, बुड्ढे ने कहा।

हम लोग धरती की और किसानों की धरती की दया पर निर्भर रहने की क्रूरता पर बातें करते रहे। बुढ़िया ने हम लोगों की बातें सुनकर गहरी साँस ली। वह कभी कभी एकाध अक्लमन्दी की चिर परिचित बात कह देती थी।

"अगर वह जिन्दा होती तो ऐसे खेतों में कितनी महनत करती," बुढ़िया ने अचानक सूखे और छोटे राई के पेड़ों की कतारों को और खेतों में उन खाली जगहों को जहां पौधे जरा भी नहीं उगे थे, देखते हुए कहा।

"ओह, हाँ, वह काम करते करते अपने को थका डालती," बुड्ढे ने सिर हिलाते हुए कहा।

कुछ देर खामोशी रही।

"तुम लोग किसकी बातें कर रहे हो ?" मैंने पूछा।

बुड्ढा प्रसन्न होकर मुस्कराया।

"एक छोटी सी लड़की के विषय में," उसने कहा।

"वह हमारे साथ रहती थी। भले घर की लड़की थी," बुढ़िया ने आह भर कर कहा।

और फिर उन दोनों ने मेरी तरफ देखा और फिर मानो मूक भाव से आपस में सहमत होकर एक से, धीरे और गम्भीर स्वर में दोनों बोले.

"वह एक नन्हीं सी बच्ची थी।"

कहने के उस विचित्र ढंग ने मेरे हृदय को छू लिया। इन दो लड़खड़ाती हुई आवाजों द्वारा कहे गए ये शब्द ऐसे लगे मानो मन्त्र की अन्तिम पंक्तियाँ गाई जा रही हों। और अचानक वे दोनों बुड्ढे बुढिया इतनी तेजी से बोलने लगे कि मुझे, जो उनके बीच में बैठा हुआ था, एक के मुँह से शब्द निकलते ही कभी इधर रुख करना पड़ता और कभी उधर।

"एक सिपाही उसे हमारे गाँव में लाया और बुजुर्गों को उसे सौंपते हुए कहा "इसे किसी के साथ ठहरा दो।"

"दूसरे शब्दों में यह कि-'इसके लिए एक घर तलाश करदो,' बुड्ढे ने समझाते हुए कहा।

"और उन लोगों ने उसे हमारे पास भेज दिया।"

"काश कि तुमने उसे देखा होता—लाल पड़ी हुई और ठंड से कांपती हुई।"

"एक नन्हीं सी बच्ची !"

"उसे देख कर हम लोग रो पड़े।'

"हम लोग सोचने लगे कि हे भगवान्। ऐसी जान को ऐसी जगह भेजा गया है।"

"किस वजह से ? किस अपराध के कारण ?"

"वह इसी तरफ की रहने वाली थी।"

"पश्चिम की, मतलब यह कि ···"

"पहले हमने उसे स्टोव की छत पर बैठा दिया···"

"हमारा स्टोव बहुत बड़ा है और काफी गरम रहता है," बुढ़िया ने आह भरी।

"और फिर हमने उसे खाने को दिया।"

"वह किस तरह हँसी थी !"

"उसकी आँखें काली और चमकीली थीं—बिल्कुल एक चूहे की तरह।"

"वह खुद चूहे की तरह थी--गोल मटोल और चिकनी।"

"जब उसकी तबियत कुछ सम्हली तो उसने रोना शुरू कर दिया। उसने हमें धन्यवाद दिया।"

"और तब उसने घर को किस तरह पूरी तौर पर सजा डाला।"

"उसने चीजों को किस तरह उलट-पलट कर दिया था !" बुड्ढा आँखें सिकोड़ता हुआ खुशी से हँसने लगा।

"घर में, यहाँ, वहाँ, चारो तरफ गेंद की तरह उछलती फिरती थी। कभी इस चीज को करीने से लगाती कभी उस चीज को ढङ्ग से सजाती फिरती। 'पानी पीने के इस टब को बाहर सूअरों के लिए रहना चाहिए,' उसने कहा। और खुद उस टब को उठाती है और फिसल पड़ती है और 'धम्म !' उसके हाथ ऊपर को तरफ उठ जाते हैं। ओह ! कैसा दृश्य था !"

और दोनो हँसने लगे और तब तक हँसते रहे जब तक कि खांसने न लगे और हाथों से अपने आँसू पोंछते रहे।

"और फिर वे सूअर··· ··"

"सीधा उनकी नाक का चुम्बन लिया !"

"इन सुअरों को भी बाहर निकालो !' वह कहती है। 'यह झोपड़ी सूअरों के लिए नहीं है।"

पूरे हफ्ते भर तक वह सफाई करती रही।"

"हम दोनों को उसने थका डाला।"

"हँसती, चीखती और अपने नन्हें से पैरों को जमीन पर पटकती हुई ''

"और फिर एकाएक गुमशुम होकर गम्भीर हो जाती ' "

"मानो कि मर रही हो।"

"आँसू बहाती और चीखती जैसे कि उसका हृदय फटा जा रहा हो। मैं उसके लिए परेशान हो उठती कि क्या बात हो गई। बड़ा अजीब सा लगता। और मैं खुद रोने लगती, बिना यह जाने कि क्यों रो रही हूँ। मैं उसे अपनी बाँहों में समेट लेती और दोनों पड़ी रहतीं-बराबर रोती हुई ."

"और यह सब स्वाभाविक था। आखिर वह एक बच्ची से कुछ ही तो बड़ी थी।"

"और हम दोनों अकेले थे। एक बेटा फौज में था तथा दूसरा सोने की खानों में काम करता था।"

"और वह लड़की सिर्फ सत्रह साल की थी।"

"सत्रह! कोई भी उसे बारह से ज्यादा नहीं बताता!"

"रहने दो, बहुत बढ़ा चढ़ा कर कह रहे हो, फादर। बारह बहुत ज्यादा है।"

"तुम क्या उसे ज्यादा की कहतीं? क्यों?"

"हाँ, वह एक नन्हें से पके फल की तरह थी। अगर वह इतनी नन्हीं सी थी तो यह बात उसके खिलाफ तो नहीं जाती?"

"क्या मैं उसकी बुराई कर रहा हूँ? च् च्।"

"नहीं, बुराई नहीं कर रहे हो!" बुढ़िया ने खुश होकर कहा। दोनों की लड़ाई खत्म हो गई और दोनों खामोश हो गए।

"उसके बाद? क्या हुआ" मैंने पूछा।

"उसके? बाद क्यों, कुछ भी नहीं," अजनबी," बुड्ढे ने आह भर कर कहा।

"वह मर गई। बुखार से मर गई" और बुढ़िया के झुर्रियों भरे गालों पर चुपचाप दो आँसू ढुलक पड़े।

"वह मर गई, अजनबी—हमारे साथ सिर्फ दो ही वर्ष रह कर। गाँव में हरेक उसे जानता था। मैंने कहा, कि सारा गाँव? नहीं, उसे और भी ज्यादा लोग जानते थे। वह पढ़ी लिखी थी और गाँव के पंचों के साथ पंचायतों में बैठा करती थी। कभी-कभी वह बड़े तीखेपन के साथ बोलती थी मगर कोई भी बुरा नहीं मानता था। बडी चतुर थी।"

"मगर असली चीज तो उसका दिल था। उसका दिल फरिश्तों का सा था। उसके दिल में हमारी सारी मुसीबतों के लिए दर्द था और वह उनको अपने सिर पर ले लेती थी। वह, शहर की दूसरी भले घरानों की औरतों की ही जैसी थी। मखमली जाकेट, फीते और जूते पहनती थी, किताबें और न जाने क्या-क्या पढ़ती थी मगर वह हम किसानों की कितनी बड़ी पारखी थी। हमारे बारे में जो कुछ भी जानने लायक था वह सब कुछ जानती थी। 'तुमने यह सब कैसे जाना, डियर?' 'यह सब किताबों में लिखा हुआ है,' वह जवाब देती। अजीब सी बात थी। मगर उसने यह सब जानने की फिकर क्यों की? वह शादी करके एक भली औरत की तरह रह सकती थी और इसके विपरीत उन लोगों ने उसे यहाँ भेज दिया, और—वह मर गई।"

"उसे सबको पढ़ाते हुए देख कर बड़ा अच्छा लगता था। नन्हीं सी जान और सबको बड़ी गम्भीर होकर पढ़ा रही है: तुम्हें यह करना चाहिए, तुम्हें वह करना चाहिए…"

"हाँ, वह पढ़ी लिखी थी, सचमुच पढ़ी लिखी थी। और वह हर चीज और हर आदमी के लिए कितनी परेशान रहती थी। अगर कोई बीमार पड़ता, वह फौरन इलाज करने चल पड़ती, अगर कोई…"

"जब वह मरी तब उसका दिमाग कहीं दूसरी जगह भटक रहा था। वह बराबर कहती रही: 'माँ, माँ,'—बड़ी व्याकुल होकर! हमने पादरी को

बुलवाया, यह सोचकर कि शायद वह उसे वापस ला सके। मगर उसने पादरी का इन्तजार नहीं किया, बेचारी मर गई।

बुढ़िया के आँसू बहने लगे और मेरा हृदय मुक्ति की सी भावना भर उठा जैसे कि ये आँसू मेरे ही लिए बहाये जा रहे हों।

सारा गाँव हमारे घर पर इकट्ठा हो गया। सब लोग अहाते में, सब पर यह कहते हुए भर गए: 'क्या? ऐसा हो सकता है?' वे उसे इत चाहते थे।"

"और ऐसी लड़की और कहाँ मिल सकती थी?" बुड्ढे ने भरी।

सब लोग उसके जनाजे के साथ थे। 'ओविताहृद' के दिन उस 'चालीसा' पूरा हुआ और हमारे दिमाग में आया कि हम उसकी आत्मा शान्ति के लिए प्रार्थना करते तीर्थयात्रा पर क्यों न चलें? और पड़ोसियों भी कहा कि हाँ, हाँ, क्यों नहीं! जाओ, उन लोगों ने कहा। तुम आ हो, कोई ऐसा काम का बन्धन तो तुम्हारे ऊपर है नहीं जो तुम्हें रोक स शायद तुम्हारी प्रार्थनायें उसकी और भी ज्यादा मदद कर सकें। और इस हम लोग चल पड़े।"

"तुम्हारा मतलब है कि यह यात्रा तुमने उसके लिए की है मैंने पूछा।

"उसी के लिए, अपनी उस बच्ची के लिए। कृपालु भगवान ह प्रार्थनायें सुनेगा हालाकि हम पापी हैं, और उसे पाप से मुक्त कर दे 'लेन्ट' नायक त्यौहार के पहले हफ्ते में हम रवाना हुए थे। उस दिन वार था!"

"उसी के लिए!" मैंने दुहराया।

"उसी के लिए, अजनबी'" बुड्ढे ने कहा।

मैं उन्हें बारबार यह कहते सुनना चाह रहा था कि वे लोग इन मील की दूरी पार करते हुए केवल इस लड़की की आत्मा के लिए

1200

करते आए हैं। इस बात पर विश्वास करना मुझे बड़ा अद्भुत सा लगा। और मैं इस बात का विश्वास करने के लिए कि यह केवल 'उसीके लिए' था, उस काली आँखों वाली लड़की के लिए, अत्यन्त इच्छुक था। कि उन्होंने इस अद्भुत कार्य को केवल उसी के लिए किया था। मैं इसके लिए और उद्देश्यों की भी कल्पना कर रहा था। मगर उन्होंने मुझे पूरा विश्वास दिला दिया कि ऐसा करने में उनका और कोई भी उद्देश्य नहीं था।

"और क्या सचमुच तुमने इतना लम्बा रास्ता पैदल ही तय किया है।"

"नहीं, प्यारे, नहीं। कभी कभी हम लोग एक दिन के लिए सवारी पर चले हैं फिर एक दिन पैदल रास्ता तय किया है। मेहनत के साथ, धीरे धीरे पूरा रास्ता पैदल ही तय करने के लिए हम लोग बहुत वृद्ध हो चुके हैं। भगवान जानता है कि हम लोग कितने बुड्ढे हैं। अगर हमें चलने के लिए 'उसके' पैर मिल जाते तो स्थिति कुछ दूसरी ही होती।"

और उसके विषय में बातें करने की उत्सुकता में उन्होंने पुनः एक बार स्वयं दूसरे की बात को काटा; एक ऐसी लड़की के विषय में जिसे भाग्य ने इतनी दूर ला पटका था, घर और माँ से इतनी दूर, बुखार से मरने के लिए ...।"

× × × ×

दो घंटे बाद हम लोग उठ खड़े हुए और अपने मार्ग पर चल दिए। मैं उसी लड़की के विषय में सोच रहा था परन्तु पूरी कोशिश करने पर भी मैं अपनी कल्पना में उसका चित्र बनाने में असमर्थ रहा। और अपनी कल्पना की इस दीनता को अनुभव कर मुझे अत्यन्त वेदना हुई।

कुछ ही देर बाद गाड़ी पर बैठा हुआ एक उक्रेन निवासी हमारे बराबर आ पहुँचा। उसने हमारी ओर उदास निगाहों से देखा और हमारी सलामों का उत्तर अपनी टोपी उठा कर दिया।

"गाड़ी पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें अगले गाँव तक ले चलूँगा," उसने उस वृद्ध-दम्पति से कहा।

वे लोग बैठ गए और धूल के गुब्बार ने उन्हें छिपा लिया। और रे धूल के उस गुब्बार में अपनी आंखें उस गाड़ी पर जमाए चलता रहा जो उस बुड्ढे और बुढ़िया को लिए जा रही थी जो हजारों मील की दूरी पार क सिर्फ उस नन्हीं सी बच्ची की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने आए थे जिसने उन्हें अपने प्रेमपाश में जकड़ रखा था।